८२५

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें
चीमनलाल सांकलचंद मारफतीयाने
मुद्रित कीया.

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
गीर्वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवा
नां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥ ७६ सरकृ०

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेपं गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
सुधर्मगणभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर
र्ध्यगणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्प्रसिद्धिपंक्तिसरदि ।
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुदंकृतीखरतरे त्यारव्यं
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभि
धः ॥ दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिनृप,
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमशाखी
चेरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
कानेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमाराधा, नि
धानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः॥१०॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं
देहयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचंद्रेण,
नामरसबांचनेः ॥ श्रीसंघकृत्सहायेन, सुवर्ण्यांशोसकाकरैः ॥१३॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेभ्योवै, नि
त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृह
द्दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ
हमारे पोषपुत्र शिष्य पं। श्रीक्षेमचंद चि। पेमचंद चि।
अमरचंदका है, हमने हमारा सर्व स्वहपातरा पुस्तक धनमालका
मालक इन तीनोकों किया है, दूसरा किसीका दावा हजर नहीं॥
शुभं ॥

दसकत। उ०। श्रीरामलालगणिःका खुद ॥



७६९
संस्कृत

॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रन्नवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंन्नवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोन्नद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंनूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीन्नद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीथूलन्नद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी न्नये सो वीरन्नगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका वहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगछ प्रसिद्ध न्नया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बमे प्रन्नावीक विद्यासिद्ध न्नये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध न्नई, तेसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध न्नया, इस तरे पट्टानुपाट न्नगवानसें ३८ में श्रीउद्योतन सूरिः न्नये सो एक तो निजशिष्य उर डुसरा साधुउके ८३ अपसे विद्यार्थी शिष्योंकों आचार्यपद दिया तबसें ८४ गछ न्नया, यह ८४ गछोंके आचार्य बमे प्रन्नावीक धर्मोद्योतक न्नए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः न्नये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः न्नये सो अणहलपुरपट्टणमें डुर्लन्नराजाकी सन्नामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊलऊलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बमे कगेर इस वास्ते खरतर विरुद पाया,

टिकगछ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदी
त शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बाद
ह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र
बोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके
भ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ और नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेव
भये, तत्पट्टे ४३ में अगरे हजार बागडीश्रावक प्रतिबोधक
जनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक
धान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोंनें चितोड और उज्जयणी
भसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साथ
वनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य
कों तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस
तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा
मुखा छाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत
करीब होगये है, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह
क बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध है, तत्पट्टे ४५
धारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-
जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनों
के भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहा-
क मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे
ट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद
वनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संयममें बडे२ उपगार
रमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप
दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण
स्वर्गवास भये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-
दरशण दिया, तिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्त्ति स्थूंन्न स्थापन कर दादा जीके नामसें वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात न्नया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी न्नये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि न्नये, जिनोंने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि न्नदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंकों गंटा गछकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गछ सागरचंद्रसूरिःसें न्नया, इ नोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गछ न्नया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनन्नक्तिसूरजी न्नये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलान्नसूरजी न्नये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी न्नये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी न्नये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौन्नाग्यसूरिजी न्नये, इनोके स मयमें महेंद्रसूरिजीसें मंमोवरागछ न्नया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरिःजी न्नये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः न्नये; इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्ये ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य म-होपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । न्न । श्रीजि नपद्मसूरिःजीके वखतमें साधुलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब-होत ओमे रहे उर बर्से२ ज्ञानवंत क्रियावंतोकों उर२ जगे चतु-

मांस करणे भ्रेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो न्नी गोचरी थंमिल्ल भूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलभूमीका हाथ धुलाणेकूं उठैं, अपणे विद्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका बमा अपरबलीपणा हे सो गछमें साधू वहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिवके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंमित विद्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोमे हें, तब उपाध्यायजीने कहा महाराज यह वृहज्ञ्छ खरतरमें किसी वातकी कमी नहीं रहेगी अन्नी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजायंगें, एसा कह दादासाहिवका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे, गुरूके ध्यानमें लीन न्नये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह करणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें शांतरशका न्नरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंनें विवाहकी वांग ठोम दीक्षा ली, दादासाहिवनें देवशक्तीसें सबोंकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीनें कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाम विस्तारन्नावकूं प्राप्त न्नई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची देशमें न्नई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस साखामें बमे२ विद्वान होते चलेआये जिनोंके बनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेममूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ। श्रीक्षेममाणिकजीगणिः तत् शिष्य। पंमित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं। प्र। लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं। प्र। श्रीधर्मशीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं। प्र। श्रीकुशलनिधानजिगणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलाश तच्छिष्य पं। क्षमासौभाग्यमुनिः चि। पेमचंद चि। अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया। श्रीबीकानेरमें सं। १९५९ की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु। श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.
११ रु। श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी श्रावक.
११ रु। श्रीसदारामजी गोलछा.
११ रु। मानमलजी केसरीचंदजी सांड.
११ रु। श्रीचूनीलालजी गोलछा.
१० रु। श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.
७ रु। श्रीश्रासकरणजी वरडिया.
११ रु। श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु। श्रीसिरदारमलजी तातेड.
२५ रु। श्रीबालचंद कर्नीराम श्राजम मुमईवाला.
३ रु। श्रीसगराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देगें तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगें, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपंमित तत्वज्ञानी बण जावेगें, जैनउपदेशक बधेगें, उर जो नहीं पं-

ढते हैं उनोंकों इरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेपधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोके वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों को दशवैकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजे गृहस्थ एसा कहते हैं हमारे भावे बिगमे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेंतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समऊसें तो जैनधर्म अमावश चंदताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भ्रष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें बिगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जम विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा. प्रश्न । हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रक्खे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे,. जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

प्रतिक्रमण करते हें, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे यह तो चलता उपगार हे, और जतियोंके वमेरोंनें तुमारे बमेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सवसें वमा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन् सुणाणे पढाणेवाले तो कम और धर्म लजाणेवाले वहोत जिनोंकों केसें माने? ॥ उत्तर ॥ सच हे, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करतें हें इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्ररुषननाराच संहणन विछेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें जी उत्सर्ग और अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकमीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोके चेला वणाणेमें इतना फायदा हे–मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे वाद आपसेंही छोमदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता हे, थोमेमें विचारणा ॥ प्रश्न–जिनोंकुं पढाया नही और गुरु मरे वाद गुरूके कमाये धनसें पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरूकुं जरूर लगे या नही? उत्तर–जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

मर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते हैं संतान वैस करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नहीं इस वास्ते करै करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

बीकानेर बडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीरामलालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेयांणक्य स्वरोदय भाषा	१	०
करुणाबत्तीसी दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्त्तिमंडणका अद्भुत यंत्र सिद्धमूर्त्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगछ तपगछकी	४	०
श्रावकव्यवहारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत ऊर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन ऊर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष ऊर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणाहही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अवे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य ऊर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख ऊर अयोग्य ऊर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥.

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने ऊर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं हे उहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधूउंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, उत्तो योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही; जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहींसें तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हें, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पडते समयमेंभी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हें उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जरू इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोप लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोंमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणाठाणी, इसी तरे साधुडके मुजवही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणठाणा समभणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ वलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणश्वालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केसें सधेगा वलीहारी उनहींकी हे जिनोंनें कषायकी चोकरी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जातीका चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर वहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालणेट करणेकूं तब वहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमसं वात नही निकालते मूर्खोके कहणेसें सोना पीतल नही वणता, दुष्टोंका स्वभा·

वही होता है सो गुणमें उगुण निकालते है, भर्तृहर लिखता है- सूरवीरकुं निर्दइ कहते है गमखाणेवालेकूं डरोकन केते है ब्रह्मचारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना नित्त फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि पट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती उघा मांडा चेद्दर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंडाणा, पादत्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूओंको पादत्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूंथणा तिरपणीके मोरे वणाणे माला वणाणी ढोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो भी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, भी शके सचित्त त्यागणा, राजदंडे लोकभंडे एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुवितनीयोंके संगतसे दूषण लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ- चेला लेणा उनोकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोकों रुजगार देके पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सत्र वोसराके परभव सा- देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलन्नबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिख
उस गुणोंकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधूउकी प्रतिपाल
रणेंसें श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य न्नगवंतनें कहा हे, बालक
न्नी करे तोन्नी मातापिता अपणे संतानपर अंतरंगसे कन्नी
नही करते हें, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चा
न्नेषधारीसाधूउमें कोइ तरेकी एब दीखपमे तो एकांतमें हित
देके उन्नाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें
काणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोकी वि
ता समजके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै, एसं
कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल
के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो
गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जि
र्मकूं लजावे एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिन
उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंन्नाल जरूर करे, विनासं
किये बहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजवीजें बिगम रही हे,
लोक खागये हे, उतो शक्ते इस बातका खयाल दरतरेसें करे
पणा लमका लमकीयोंकूं संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती
योंकूं पमिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्या
स्त्री अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर धर्म
लवंतोकी संगत करवाणी चहिये, विरादरीमें सनातन कुल
दसें जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखदेख आप न व
वणे जहांतक उणोंको न्नी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इल्म ल
कूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिख
क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा किताबोंके पढणेंसें पीछे

सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हें इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समझा है वोही जाणता है उर उसकूं मुसककी खसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अभी बहोत भवभ्रमण करणा बाकी रहा है उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ है मानेभी इनमें कोन सच्चा उर कोण झूठा ? (उत्तर) हे भव्य हमने पेस्तरही लिखा है न्याय जो जैनका सात भंगरूप है उसकूं समझकर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है. (प्रश्न) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हें सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? (उत्तर) जो इतना ही समझो तो जो ऋषभदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है वीच२ में अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये है, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार भगवान भद्रबाहुस्वामी उमास्वाती भाष्यकार जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीपे बुद्धीके धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझणा, श्रावगधर्मवालों पर बडा उपगार रत्नप्रभसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइएक पापारंभकी बातें तो इस जातीके कायदेसेंही बंध होगई है, जैसें मधका पीणा उर मांसादि अभक्ष खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस न्यारे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीपनें अधोगतीकी सडक वां-

धणे पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरन्नाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेंकते हो पीछे पछतावा होगा थोभे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें बावन उगुण हे एसेंइ मांसमें देखो जैनतत्वादर्श नामग्रंथ, यही चीज अछी होती तो तुमारे वगेरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों छोमते उर मुसलमीनोकों नी धर्मकायदेसें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना॥ जैनपाठशालाउं स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहिये, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण वियारहितपणा है, पंमित तो दुस्मन नी अछा होता है मूर्ख हितकारी नी कामका नही, वियावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके] विनाकारण द्वेष उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंनें कहा हे— दुहा॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास॥ जणनी जणके क्या किया, नार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपन्नोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता नाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य बोलानरूप हे, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिकसाधुउंकों देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे क्रमसें दान करे, साधर्मी तथा जैनपंमितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र नोजनादिक यथायोग्य दान करे, तीर्थंकर नगवान नी संवत्सरी दान देते हें, दानधर्म मुख्य हे नगवतीजीमें महस्यका अन्नंगद्वार कहा हे, नगवतीसूत्रमें तोन गुरु कहे हे सिल्पगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, कलागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावें सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अब चउभंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्व-विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्रायें जैनमंदिर भोजगही पूजते हैं उनोंमें इस वखत प्रायें मिथ्यात्वी वहोत सम्यक्ती वहोतही कम हे, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंकों अन्य देशमें गंधर्व कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंनें जैनधर्म कबसें छोडा हे ? (उत्तर) पहले श्रीऋषभदेवजीनें भोगवंश स्थाप-नकरे अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा; राजा सूर्ययशनें भोगवंशीयोंकों पूज्य जाण जिनमं-दिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवंशी नही लेतेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंकों अनेक तरेसें पर्व महोछव पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये पीछे कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ से वर्ष पहले उसीयामें जैनधर्म फेला तब राजाके पुरोहित राज-पूतोंके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-मार वगेरोंनें भक्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-पणा साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारेसेंमें रामानुज माधवाचारी वगेरोनें विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंकों दादा दत्तसूरजीने लाखों ओसवाल फेर बणाये, तब राजवीयोनें गुरूसें अरज की इस दयाधर्मके प्रन्नावसें निर्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नही राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरुनें कहा जो जिनमंदिरोंकी नक्ती उर जतीगुरुकी सेवा अन्नक्ष त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाइ नया, राजाउने अपणे न्नाई स्वजनवर्गी उसवालोंकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवाडोंमें उसवालोंका राज्याधिकार वर्णा तवसें उसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोंका पूजारीपणा न्नी न्नोजकोंकों सोंपा वह न्नोगवंशी फेर पीछे धीरे२ मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरेकी हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण न्नोजकोंकों कर्म कर करके मांनणे लगे पूज्यन्नाव उठगया, जो कन्नी न्नोजकलोक एसा समझते होंगें की हम तो अवलसेंही शैव वैष्णव थे (उत्तर) यह समझकी नूल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी वहुलायतमें प्रजा जैन रही, बोधोके अमल बोद्ध, शांख्यादिकोके अमलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोसें न्नी पाईजाती है लेकिन् जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतनो न्नोजकोंकों जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पमारादिकें परमजैन तुमारा लागा उर बहुमान उसवंश पर कन्नी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोंका जोर उसवाले जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समझणा, पीछेसें

विष्णुमंदिरोकी पूजा ऊर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया, इस तरेंही बहोतसें उसवंशी न्नी खुसामदीसे डुसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेथे, खैर इस वातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकोक कहणावट न्नी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसको न्नरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगन्नक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणां धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा न्नी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत मालणा नही, देव ऊर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो न्नावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सङ्कर्मों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सङ्कर्मों रुपै श्रावक देते हें वो सब देवगुरूका प्रताप समऊ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें वजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश मेंने लिखे हे कोइ कगेर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलन्नावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके गपणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते॰

श्री पूज्यजी मान्यजी पुस्त
बीकानेर

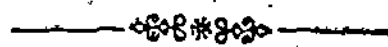
हैं, उनोंका मैं सदा आभार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिक्रियते ग्रंथ, संतिचयपिशुर्जना ॥ नहिदस्युभयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ–ग्रंथ संग्रह तोभी करताहूं यद्यपि दुरजन बहोत हे चोरोंके मरसें लोक कंगाल नही बण वेठते तेसे १ मेनें अपने हाथसे लिख२कर मुंबंइ भेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें संग्रह मैंने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें यें। अ। श्रीअवीरचंदजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. रूपभदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे बणा जो। राम। उनोंके मध्यवर्त्ती सब भगवंतोके गुणोका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, झुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिभव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री जिनदत्तसूरेः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनवयोगिनी, नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोभयं नोमारीनचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्याप्रणम्युच्चकैः ॥ यस्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसठ योगण पाय लगाई ॥ डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतप्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तरूक्क कड़क्क भटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई ॥ कहे अमसीह लंघे कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक दुहाई ॥ १ ॥ इति॥ राजै थुंभ गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, जगत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही भाव आय, पूजै लरक लोक पाय ॥ प्यासनकूं रांनमांझि, पाणी आन पायो हे ॥

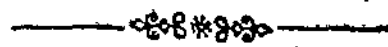
हाड पुर प्राटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कुशल देव देहरे, कुशल धन राजदुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ जणीजे, वाहण आवे कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिनचंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वसो संसार कुशल सज्जन घर चाहे, कुशले सहगल माल लच्छि घर कुशले आवै ॥ कुशलै धन वरसंत कुशल धन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोम्मां ग्रह कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणो ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



हाड पुर प्राटणमें ॥ देद गेद नेदसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसीन ह ध्यान् धरे, सेवकां कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल् अंग उवरंग, कुशल वणिजै व्यापारि, कुशल देव देहरे, कुशल धन राजडुवारे ॥ पुत्र पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ नणीजे, वाहण आवे कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिनचंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वर्मो संसार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लछि घर कुशले आवे ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल धन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोमां थट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जग रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणों ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ चुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ अथ वमा स्तवन संग्रह ॥

|| अथ

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

( )

(४२)

॥ अथ तपगछ सामाचारी ॥

——*——

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥

॥ मंगलाचरण ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सवही सिर भूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा ध्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सीस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥
धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे ध्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें२ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥
दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥
देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥
एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें ध्रमसो पदपंकज लीनो ॥३॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वतो मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ टृ दृ पृ नृ वृ मृ शृ सृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य द्य ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र घ्र ज्र त्र द्र प्र ब्र भ्र म्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व ण्व त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्न ग्न घ्न न्न म्न श्न ष्ण स्न क्ष्ण ॥ क्म ग्म ध्म च्म ण्म त्म न्म श्म ष्म स्म ह्म । र्क र्ख र्ग र्घ ॥ क्क क्ख ग्ग ग्घ ङ्क । च्च च्छ ज्ज ज्झ ञ्च

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न ॥ प फ ब भ म य र ल व श ष स ॥ ह क्ष ज्ञ ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृह्मस्था । पिंद्राह्मास्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृद्रल्युश्रेष्टात्म । त्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंम्तिते च गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताम्येत् ॥
प्राप्ते तु षोम्शे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥७॥
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समोबंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेनदुग्धदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १०
उपदेशो हि मर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानभूजंगानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमान तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्ज नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचप वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शपसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङ ञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शपसहाः अःइतिविसर्ज नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपध्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन विश्लेपयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अँहतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं। कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) जो पंचपरमेष्टिपदहे सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकूं मंगलकरो. केहे पंचपरमेष्टि (अर्हंतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री हंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोंकों हणे सो अरिहंत कहीजे. श्री अरिहंत केसेंहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे. फेर अरि-
 केसेकहे भगवंतहे भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतों सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालके फेर श्री अरिहंत भगवंत कैसेंकहैं (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहै सो बारे गुण एसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग और पसीना और मैलरहित बग्ना खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही और मांस गऊके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात् चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे और बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी बरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे। बीट नीचा रहे पांखमी ऊपर रहे २। (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी२ भाषामें यथावस्थित समझे एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे। संदेहदेहिणंसमंछित्ता ॥ तिहुअणमणुंसासंता। अरिहंताहुंतिमेसरणं १। ३॥ चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोलता रहे ४॥ आसनञ्च ५ भगवंतके बेठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहे ५॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिससें भव्यजीव भगवानके तरफ देखसके भगवंतके च्यारमुख च्यारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे और तीन दिसामें भगवंतकी प्र-

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥
उपदेशो हि मर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानम्भूजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्द्दशादौस्वराः द
तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोव
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेः
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुन
ङञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अः
नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपम्मानीयः अं इत्यनु
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अ
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः
समाप्तः ॥

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसें विराजमान एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्टिपदमें सरव साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंकें आराधक पांचे सुमतेसमता तीनें गुप्तेगुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंवल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सव साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोंके कल्याणार्थे ॥

॥ अथत्रिनंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	२ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतोजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी	४ श्रीअभिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभूजी

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयो
च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेन्नये दि
खाइदेवे ६ ॥ डुंडुन्नी ७ आकाशमें देव ते देवडुंडुन्नीवाजित्र वजावे
७ ॥ रातपत्रं ८ न्नगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन छत्र
रहें ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे एसे अरिहंत देवाधिदेव
चोतीस अतिशय विराजमान पेंतीस वचनगुण सोन्नित एकहजार
आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-
क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-
वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका न्नाव देखतेन्नये पृथ्वीमंमल-
पर न्नव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहें एसे अनंत गुणसें
विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥
(सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार
हुउ केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप
अग्निसें न्नस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तन्नये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-
नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक
न्नयादिकसें रहित चवदे राजलोकमें सव जीवोके मनोगतभाव एकस-
मयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेन्नये एसे
श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या-
जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-
स्कार हुउ केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज छत्तीसगुणोंसें विराजमान
मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रुकेविराधक पंचाचारपालक अनुभजीव-
प्रतिबोधक क्षमागुणन्नंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-
शासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-
राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्री
द्धांतसुपाठका) चोथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराज
स्कार हुउ केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रज्जूजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रवाहजी	१४ श्रीज्जुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्जजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाज्जद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी,

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषज्जाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्जवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रौपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुज्जद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्जावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐपरमेष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खमा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अब्भुठिउमि कहे पीछें खमासमण देकें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इच्छं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पचीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥३॥ मिश्र मोहनी ॥४॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती बिरियां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पचीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पचीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलाडें मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिथ्यादंसण-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंन्ने परिहरुं॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोन्न ॥ २ ॥ ए दोय माबे खंन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन माबे हाथे परिहरुं ॥

॥ नय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंढा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन माबे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं॥ इति मुहपत्ति पमिलेहणा संपूर्णा॥५॥

॥ पीछें खमा देय कें इछामि खमासमणका पाठ कहे कें इछाकारेण संदिस्सह नगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इछं कहे कें फेर खमासमण दे कें इछा० ॥ न० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इछं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-कार गणी इछाकारेण संदिस्सह नगवन् पसाउ करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि नंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पञ्चरूखाण ॥

॥ करेमि नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पञ्चरूखामि॥ जाव पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछैं खमासमण दे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इरियावहियं पमिक्कमामि॥ गुरु कहे पमिक्कमह. पीछैं इच्छं कही ॥ इच्छामि पमिक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियावहियं पमिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पमिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कम संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया गणाउ गणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि डुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणहाए ॥ गमि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उमुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं॥२॥ एव माइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ञ मजिअं च वंदे ॥ संज्ञव मज्ञिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्ञिथुआ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थय रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाज्ञं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंज्ञीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सव्वलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देइ इच्छा० ॥ ज्ञगवन् बेसणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें वली खमासमण दे कर ॥ इच्छा० ॥ ज्ञगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा० ॥ ज्ञ० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ ज्ञग० ॥ सिज्झाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा खडे हो कर आठ नवकार कह कर सज्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ ज्ञ० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ ॥ पांगरणो पडिग्गाहुं? गुरु कहे पडिग्गाहेह ॥ पीछें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सिझाय करेह. एसें कहे ॥ इति प्राजातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इछा० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इछं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ १ ॥ जरुअछेह मुणिसुव्वय, महुरिपास दुह दुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तिछयर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदु जिण सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लप्भई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं चरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स दुई, थुणिज्जइ निच्च विहाणं ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा छप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउसय छायासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अछवीस सहस्सा, चउसय अछासिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिछं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ङ्गराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीश्राणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिश्राणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोश्रगराणं ॥ ४ ॥ अजयदयाणं, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विश्रट्ट उउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुखय मवाबाह मपुणराविति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिश्र जयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उद्धेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥सवाई ताई वंदे ॥ इहसंतो तच संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ उुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न उुक्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावओ भयवं॥ भवनिव्वेओ मग्गा, णुसारिआ इट्ठ फलसिद्धी॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चा ओ ॥ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछैं खमासमण देकें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पाय च्छित विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? गुरु कहे करेह पीछैं इच्छं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायच्छित विसोहणत्थं करेमि काउ स्सग्गं ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउ स्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे. जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां दीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणां ठावी गोडालीयें बेठ कें मस्त क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहआगे दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

ऊगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्नयदयाणं, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट उउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मवाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ न्नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ न्नविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उढ्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाई ताई वंदे ॥ इहसंतो तत्र संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ न्नगवन् जावंत केवि साहू ॥ न्नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ दुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस ॥ भत्तिप्नरनिप्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावउ भयवं॥ भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा उ ॥ गुरुजणपूआ परच्छकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछें खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पाय छित्त विसोहणथं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीछें इछं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणछं करेमि काउ स्सग्गं ॥ अन्नछ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नव कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउ स्सग्ग पारीकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे. जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पमिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वां दीयें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पमिक्कमणां ठावी गोमालीयें बैठ कें मस्त क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहमें दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफ
न कहे ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ दुप्भासिय दुचिठिअ इच्छा
कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इ
॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछें नमुत्थुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते स
माइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें
च्छामि काउस्सग्गं जो मे राइओ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिओ अइआरो
ओ ॥ काइओ वाइओ माणसिओ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अ
रणिज्जो ॥ दुज्झाओ ॥ दुव्विचिंतिओ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ अ
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गु
णव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स
जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ य
हां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछें तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं कह कर चारित्रशु
द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करि
पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत
चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स
म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछैं अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी० ॥ सुयस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ भरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभो पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण; स्सप्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढउ सा सओ विजयओ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स भ गवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आज्ञा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछैं सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु वगयाणं, नमो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे,

दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वांदणां निमित्तें मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछैं वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर खडा हुआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कउक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उत्कट बैठ के मावे हाथमें मुहपत्ती ले कें मावे कानसें ले.कें जिमणा कान पर्यंत निलाम पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कउक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछैं फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खमा दोकें पीछैं पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे, दिवसो

वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पमिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणडुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोन्नाए, सबकालिआए, सब मिच्छोवयाराए, सबधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पमिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवछरीयेसंवछरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें जलो जाएयो होय, ते सबेहुं मन वचन कायायें करी मिच्छामि डुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिहने
मंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउ
॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिठि समाहिगराणं
इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नछ० ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ पीछैं संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सू
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती
पडिलेहे. पीछैं वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उन्ना हुआ आधा नीचा नम कर
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजा-
णह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभाता
प्रमार्जन कर कें उकडू बैठ के झावे हाथमें मुहपत्ती ले कें झावे
कानसें ले.कें जिमणा कान पर्यंत निल्लाड पूंजी, मुहपत्ती आगें
रख कें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो
कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर.कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो
॥ इत्यादि पाठ कहे. पीछैं फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर
कें खडा होकें पीछैं पगसें भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसें बाहिर
निकलकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए
॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो का
खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु

वश्कंतो जत्ता ने जवणिज्जं च ने, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वश्कम्मं आवसिआए, पमिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणडुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोनाए, सवकालिआए, सव मिछोवयाराए, सवधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कत्त, तस्स खमासमणो पमिक्कमामि॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउं वश्कंतो, पक्कीयें पक्को वश्कंतो, संवछरीयेसंवछरीउं वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह नगवन् देवसियं आलोउं इछं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें नलो जाएयो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सवस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोडा उंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भ०! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इच्छं कहि कें तीन ... अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछें खमा हो कें अप्पुठि ठमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिंछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठा य परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हं मइयारे ॥ सिरकाणं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयारिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अगुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पमिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव
पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप
गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ प
माणे ॥ डुपए चउप्पयंमि, पमिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य प
माणे, दिसासु उट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ वुमिृतइअंतरद्धा, पढमं
गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले
गंधमल्ले अ ॥ उवन्नोग परिन्नोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सचि
पमिबद्धे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि नक्खणय
पमिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाम्री, न्नामी फोमी सुवज्ज
कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२
एवं खु जंतपिल्लणं, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तला
सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मसल जंतग, तण
कठ्ठे मंत मूल न्नेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पमिक्कमे० ॥ २४
न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूव रसगंधे ॥ वत्थासण आन्नरणे
पमिक्कमे०॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण न्नोग अइ
रित्ते ॥ दंमंमि अणठ्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे
डुप्पणिहाणे, अणवठ्ठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए
पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ
पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिरकावए निंदे ॥ २८ ॥
संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव न्नोयणान्नोए ॥ पोसह विहि
विवरीए, तइए सिरकावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निरिकवणे, पि
हिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिरकावए
॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा
ासणाव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु
कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पत्तेगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मय हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पमिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विहुपावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपमिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव सुसिरिकिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंत मूल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ जरुव जारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंज्जरिआ पमिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥ अप्नुठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, नवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पमिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पमिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव जीवे, सवे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सव भूएसु, वेरं

मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव मइं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥२७॥ इहां प्रज्ञातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वांदणां देकर अवग्रहमांहियकोज कहे ॥ इच्छा-का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्रुच्छिमि अप्रिंतर ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमासी बेठ के, बे बाह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्रुच्छि ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् अप्रुच्छिमि अप्रिंतर देव-सिअं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं परपत्तियं जत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा ॥ तुप्रे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि दुक्कडं कहे. पीछें बे वांदणां देई जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगरों अवग्रह बाहिर आय के आय-रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, जावओ धम्मो निहिअ नियचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इछामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही वे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वस्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुरव्या गजपुरमथु- रापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशंव्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे न्नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने न्नूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री- मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौम्डले मानुषांके ॥ इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके न्नवंति त्रिन्नुवनवलये यानि चैत्या- लयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं न्नक्तिन्नाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री- तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम्॥ इति ॥ ३२ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सट्ठियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, न्नवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तन्नावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा नो, न्नवावहं मोहन्नरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी- रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलन्नरलोन्नालीढलोला- ऽक्षमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलन्नविकारागार

विच्छित्तिसारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला. ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनिवासे ॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे ज्ञवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञणी, शक्रस्तव कहे. पीछें खमा दो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नचू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पन्नमावइ धरणिंद ॥ प्रह उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण जाणणां ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सव्वलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखगाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पूरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्करवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवउ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग उ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सद्दहतां, छूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमोऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमासमणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अढाइज्जेसु ॥

॥ अढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा॥ अढारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं जी, यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, नवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तिर्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ उर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि कें सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उद्धारण हो तुम्हें, दूर हरो भव छुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंमणं पुणसेवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ इम होज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंमण ॥ जय जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतित्थं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढारे त्यासी मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा ॥

प्रजुके चरण परतापसिंदमें, कमारतन प्रजु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीछें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहिकें एक नवकारका काउस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषजदेव पुंमरीक ॥ शुज तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीछें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इछाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इछाकार जगवन् पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पमिलेह रक्के, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इछा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह ॥ पीछें इछं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पमिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीछें पोषधशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोजी दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबजी प्राये एही करते दिखते हैं ॥

॥ अथ सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जं० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीछें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ जं० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तवो ॥ पीछें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊनो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ जयवं दसणजद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसणजद्दो ॥

॥ जयवं दसस्स जद्दो, सुदंसणो थूलिजद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अजिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संजरइ जीवो ॥ जं च न संजरामि अहं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ जासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछें पडिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिस्साउं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चक्खाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्षें अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चक्खे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्खाण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चक्खाण करवुं छे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ सिद्याय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछैं इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछैं इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ ऊन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पीछैं खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछैं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पांगरणुं पडिग्घाउं ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीछैं इच्छं कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछैं इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पक्खी तथा चउमासी तथा संवच्छरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोंमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-घियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति झत्ति वर पुत्त कलत्तहिं, धण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जण भुंजहि रज्जहि ॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण मह जिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण वण्णणट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणखुण्ण

निरसल्लिअसूलिण ॥ तद जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणणव, जय धणंतरि पास मदवि तुडं रोगहरो नव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धि अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद पउत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणार्थभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थतित्थभित्तिपर निब्भर, रोमंच चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवण्णुअवण्णु सुण्णु वन्निउ छप्पण्णिहि, मुक्खधम्मुकामत्थकाम नर नियनियसत्थहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइअ मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइंसहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलइय ॥ मण्णइमण्णसउण्ण पुण्णअप्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिअ, वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहप्पव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणह्अगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेणि ॥जायइफलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसिपास मई मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणं ॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल चिठ्ठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणय पुरठ्ठिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणनेय वाया विविसंठुलु,नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिट्ठिकिठ्ठदेवदीणयमविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्फललल्लुअह्मेहिंदुहत्तइं, तहविन पत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय बप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु ॥ हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिभ्भग्गउ, लीणउ तुह कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपाविपसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किविसाहिपसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवछल ॥ २१ ॥ पचुवयारनिरीहनाहनिप्पस
पयोअण, तुहं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गवविमई पासनिरं-
जण ॥ २२ ॥ हवं बहुविहडुहतत्तगत्ततुहं डुहनासणपरु, हवं
सुयणहकरुणिक्कगण तुहं निरुकरुणाकरु ॥ हवंजिण पासअसामि-
सालु तुहं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मई ऊखंतइय पासन
सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विज्ञागनाहनहुजोअणतुहसम, जव-
णुवयारसु हावज्ञाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण नएइ
जुविदाहुसमंतत्त, इय डुहबंधव पासनाह मई पाल थुणंतत्त ॥
२४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुग्गय, जं जोइयत्तव-
याऊकरइत्तवयारसमुज्ञाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-
चत्तत्त, तो जुग्गतअहमेव पासपालहिमई चंगत्त ॥ २५ ॥ अहअ-
णविजुग्गयविसेसकिविमणहि दीणह, जं पासविन्नवयाऊकरइ
तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,
किं अणुंण तंचेव देव मामईअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पज्ञण नहु
होइ विहल जिणजाणव किं पुण, हवं डुक्खित निरुसत्तचत्तडुक्कहु
उस्सुयमण ॥ तं मन्नत्त निमिसेण एण एतविजइ लप्रइ, सच्चं जं
जुक्खियवसेण किं नंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह
मई अप्पपयासित्त, किज्ञत्त जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपित्त ॥
अएणु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयासत्त, जइअवगिणसि
तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासत्त ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ
पाइणवेलंवित्त, तत्रजाणुंजिणपास तुम्ह हवंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-
हइच्छिअ जं न होइ सातुहत्तहावण, रखंतह नियकित्तिणे य जु-
ज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसत्त, जं
अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धत्त ॥ इय मई पसि-
यसुपासनाहथंजणयपुरठिअ, इय मुणिवरसिरि अन्नयदेव विन्नवइ

आणिंदिअ ॥ १० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समत्थ परमत्थजाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयट्ठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवत्थु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्झत्ति संझ नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें शक्रस्तव कह कें खमा दो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने. पीछें पारी अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे, इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेना.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे, पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम निः

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछें पुक्खरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिके बेठ कें नमोत्थुणं कहे, पीछें एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछें श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोडालीयें बेठ कें मस्तक नमावी सबस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि डुक्कडं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछें खडे हो कर करेमि जंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजूना चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछैं संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह. पीछैं मुह-पत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीछैं अवग्रहमांहिज रहो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछैं इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अति-चार आलोवे. पीछैं सव्वस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमाने इच्छा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछैं इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कडं कहि कें संमासा प्रमार्जि प्रमार्जित भूमियें आसन पर बैठ कें भगवन् ! सूत्र भणुं एसा कहे. तब गुरु कहे भणेह. पीछैं इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि भंते भणीने इच्छामि पमिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछैं खमा दो कर अम्भुठ्ठिमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ अम्भुठ्ठिमि अभ्रिंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछैं इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमासीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछैं विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-ज्झाए इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि भंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सग्गं अन्नत्थ० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछैं दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थ० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें ...० कहि कें सुयस्स भगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थ०

॥ कहि कें एक लो॰स्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं॰ कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू॰ ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा॰ कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं॰ ॥अन्नत्थू॰ ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछें खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रमार्जि चकमूवैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ नें वरकनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सव्वामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुष्टदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ २ ॥ पच्चक्खाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पच्चरकाण, ए आवश्यक साधतां कानो, मात्रा, उंगो अधिको अक्षर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ इच्छामो अणुसट्ठिं० ॥ कही वैठे. पछें गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं, कही संसारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृङ्गीकुरङ्गं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकच कमलमुच्चैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥इति॥ ॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थुणं० कहि कें. एक श्रावक खमासमण दई कहे:—इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवनभणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर वैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें नमो स्तवन कहे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबम श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोमी, करिये केम अकाज रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अढाइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ।

देवसि पाय छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछैं इच्छं कहि कें देवसि पायछित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नच्छू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछैं खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ खुद्दोवद्दव ज्ञमावणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कही. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछैं खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंज्ञणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंज्ञने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याज्ञयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिज्ञिर्जलैः शिवफलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछैं नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंज्ञणयट्ठिय पास सामिणो' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंभणयट्ठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंज्ञणयट्ठियपाससामिणो सेस तित्थसामीणं ॥ ति समुन्नय कारं ॥ गं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरण काउस्सग्गं करेमि विक्कम सत्तीए ॥ ज्ञत्तीए गुण सुट्ठियस्स, संघस्स समुन्न ॥ २ ॥ ० ॥ ति ॥

॥ श्रीथंजणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमे दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कहो कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूडामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो ऊंचो करि कें खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास भुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणालिद्धउ ॥ नंनव जलहर तडिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छय वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्खी, चउम्मासी अरु संवछरीके रे...

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ उुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि! सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥ ए ॥ जक्तानां जन्तूनां, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥१०॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥११॥ सलिलानल विषविषधर, उुष्ट ग्रह राज रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

ॐ मिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भित: स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१८॥ इति ॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पम्या होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थ० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पं छैं प्रगट लोगस्स कही पूर्वलो परें सामायिक पारे. पीछैं एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहे ॥ नवखंमाभिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

---*---

॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरन्नानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ न्नवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स न्नवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनाद्वांछितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि न्नक्त्या रुषन्नं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंउन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंमित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोमि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अन्निराम ॥ रास क्रमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभुवनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, त्रन ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पमिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पमिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पमिलेहुं ? चनमासीएं चनम्मासियं मुहपत्ती, संवच्छरीये संवच्छरी मुहपत्ती पमिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पमिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पमिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चनमासी पमि० ॥ चनमासीन वइक्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो वइक्कंतो, एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पाक्खिक ॥ चनमासिक सांवच्छरिक जाणजो. छींक जयणा करजो. मधुर स्वरें पमिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांमलमें सावचेत रहेजो, पछें सयलादी तदत्ति कहे ॥ पीछें कही ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ त्र० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अप्भुट्ठिमि अप्भिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेक्कं ? गुरु कहे, खामेह ॥ प.वैं मस्तके अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३॥ कहो, गोडालीयें बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें पनरसह्नं दिवसाणं पनरसह्नं राईणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउह्नं मासाणं अट्ठह्नं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवछरीयें डुवालसह्नं मासाणं चउवीसह्नं पक्खाणं तिन्निसयसठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिछामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उपरता हुवे तो पाखियें तीन, चउमासीयें पांच, संवछरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछें उगी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछे इच्छं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते ह ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३. तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुकडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः--कालवेला-मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान होन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिझाई अणोझा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वहीं पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसासे मूक्यो कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइओ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिठ्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥. सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो. कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वदावदि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे. घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लोधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कह्यं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मानें माप वहोरयां, दाणचोरी कोधो, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदी गांठ कीधी, किणहीनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या. घरवरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाप कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषसुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो. माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छट्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ उर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प लगें विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो, अंघोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जोव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उजाही लागी. कण कपासोया माटी मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थकी कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्युं, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइ परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेळा देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारोयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खवणे० ॥ सचित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविपइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणा संसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ वाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहींयें उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंटसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ एकासणो वेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवां वीसार्यां. वेसतां नवकार भण्यो नहीं, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विपइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायच्छितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायच्छित तप लेखा शुद्ध पुहचाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नहो; वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, वेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो, अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजा[illegible] हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करो मिच्छामि दु॰

श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीछें सबस्सवि पक्किय ॥ इत्यादि इछाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चनछेण पमिक्कमह, चनमासे छठेण पमिक्कमह. संवछरीयें अठमेण पमिक्कमह. इछं तस्स मिछामि डुक्कमं कही. द्वादशावर्त्त वांदणां देवे. पीछें इछाकारेण संदिस्सह जगवन्; देवसियं आलोइयं पमिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अप्रुठिछमि आप्निंतरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेऊं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इछं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वें कह्यो, तिम कही मिछामि डुक्कमं देई खमावे, पछें बे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं पमिक्कंता पक्खियं ॥३॥ पमिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पमिक्कमह. पीछें इछं कही करेमि जंते सामाइयं॥इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिन ॥३॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबू०॥कही॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुथकी जूदा पमिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे, जणेह. एलो वचन मनमें धारी॥इछं कही, उजो थको, हाथ जोमी मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि जं ते० इछामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नबू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, उजा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि जं ते कही, इछामि पमिक्कमिउं जो मे पक्खिन ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पमिक्कमे देवसियं सबं ॥ एहने ठिकाणें पमिक्कमे पक्खियं, चनम्मासियं संवछरियं सबं कहे. पीछें उठी, अप्रुठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इछा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे करेह. पछें इछं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवछरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. वेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुठ्ठिओमि अभिंतर प-क्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पं-क्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीछें इच्छाका० ॥ सं०॥भ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसठ्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-बिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें देवसिक जाणजो. एम चउमासे ए सर्व डुगुणो कहणो, संवछरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछें बे वांदणां देई, अब्भुठ्ठिओमि अ-भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे, पीछें बे वांदणा देई. आय रिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि देवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष छे. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछें भवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें भवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरि-तान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहशो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणने रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संज्ञारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुट्ठसहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नचणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चख्काइ. अन्नथणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहिद्धसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्काइ. अन्नथणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संज्ञारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पच्चख्के. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्काइ ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुट्ठसी पच्चख्कामि, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणन्न०॥ सहसा०॥ पच्छन्नकालेणं दिसा मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० विगइओ पच्चख्काि

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चरकाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पच्चरकाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चरकाइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पच्चरकाइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपच्चरकाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढं अवढं वा पच्चरकाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० ॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पच्चरकाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपच्चरकाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सब० एकासणं बिआसणं वा पच्चरकाइ. डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चरकाण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पच्छका० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगठाणं पच्चरकाइ. डुविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठाव० मंह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अण० सह० पच्छ० दिसामो० साहु० सब० आयंबिलं पच्चरकाइ. अणउ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सब० एकासणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्नुठाणेणं पारिठा० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असण० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अण० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पमुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्खामि. अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्नत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्खामि. अण० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्नत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ्ढ पोरसिं पुरिमढ्ढ अवढ्ढ वा पच्चख्खाइ अण० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्खामि. अ०स० म० सव्व० वोसरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं पुरिमढ्ढं अवढ्ढं वा पच्चरकामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चख्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम दुविहार पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ नवचरिमं पच्चख्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ नवचरिम, दो आगारकान्नी होय ॥ इति नवचरिम पच्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अभिग्रह पच्चख्खाणकेन्नी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चख्खाण ॥

॥ अहणं नंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चख्खामि दवउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उच्च वा अणउवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चख्खामि नावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि उलेणं न उलिज्जामि असेणकेवि रायकेण वा एसो परिणामो न परिवज्जइ ता अन्निगह असन्नणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चख्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चख्खाण करे. तव देसावगासी नही पच्चख्खे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ठ आगार पच्चख्खे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवमेण वा

अलेवर्मेण वा अछेण वा वहुलेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार ठच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ- यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयन्नाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अनिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं- चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः—इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पचख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घरी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउ.वि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जवकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंठ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्- काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखडी नालेर खजूर द्राख सेक्या अनाज आंबा केला काकडी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेड़ा आंवला तुलसी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविडंग अजमा अजमोद कुलिंजन कथाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंजटिआ पानसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजड़ बावची बांवल-छाल धवछालि खेजड़ेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जड़ पांन लिंबी गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूड़ेकीछालि चंदन-कीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कथर बोरकीजड़ इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब भो-गणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नच्छणाभोगेणं कहिये अना-भोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे डालदी होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवे तो पच्चख्खाणमें भंग नही. डर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पच्छन्नकालेणं कहते कालकी प्रच्छन्नता. आकाशमें गर्द उड़ती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहाड़कीओट आजावे सूरज नही दीखे तब भ्र-मसें पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरवकूं पश्चिम जाणकर पच्चख्खाणका काल पूरा हुये विगर भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेमा आंबळा तुलछी कसेला काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविडंग अजमा अजमोद कुलिंजन कथावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंजटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजड वावची वांवलछाल धवछालि खेजडेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जड पांन लिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूडेकीछालि चंदनकीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कयर बोरकीजड इत्यादिक अनाहार चीज इछा मुजब भोजणा यह जो इछाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इछा संयुक्त लेवे तो आहारका दूपण लगे. पच्चख्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चख्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नथ्थणाभोगेणं कहिये अनाभोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत भूल जाणेसें कोइभी चीज भूलके मुंमे मालली होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवे तो पच्चख्खाणमें भंग नही. उर जाणे बाद भक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे भंग होय ॥१॥ पच्छन्नकालेणं कहते कालकी प्रच्छन्नता. आकाशमें गर्द ऊडती होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहाडकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब भरमसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा भूलकर पूरबकूं प[श्चिम] जाणकर पच्चख्खाणका काल पूरा हुये विगर भोजन क[रे तो] व्रत भंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां स[ह]सा[...]
दके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी

पगामसिज्झाए निगामसिज्झाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-
णाए पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए कूइए कक्कराइए छीए जंभाइए
आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-
रियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-
भोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिओ अइयारोकओ तस्समिच्छामि-
दुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उ-
ग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए बलिपाहु-
डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे आणेसणाए पाणेस-
णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए
पच्छाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंसट्ठहडाए रयसंसट्ठ
हडाए पारिसाडनिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए जंउ-
ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-
रिट्ठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउक्कालं सिज्झायस्स
अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-
णाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-
सिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे
असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं
पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं
पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए
पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्छादं
सणसल्लेणं पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं
सायागारवेणं पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए
दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पडिक्कमामि चउहिं क-
साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं
पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्ना

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतन्नी आहार करे तो व्रत न्नंग नही ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं कहतां न्नोजन करणेका थाल प्रमुख न्नाजन नसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगान्नया हे नसकूं हाथ वगेरेमें पूछ न्नाला नस परन्नी किंचित्वे मालम सालगारहे नसमें आयंबिलादि व्रतवाला न्नोजन कर लेवे तो व्रत न्नंग नही ॥ १२ ॥ नक्खित्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्चखाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख नसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत न्नंग नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें नगाय सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो नसके खाणेसें व्रत न्नंग नही ॥ १३ ॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां न्नोजन पुरषे जिससेती एसी कुरुछी आदि देकर न्नाजन विगय प्रमुखद्रव्यसें वेमालम खरन्नी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो नसही वासणसें न्नोजन पुरसे तोन्नी व्रत न्नंग नही १४ पडुच्चमुक्खिएणं कहतां सर्व था लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचिरमात्र घृतादिकसें वेमालम चोपरूणेमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नोवी पच्चख्खाणमें नस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत न्नंग नही नर जो धारविगय लेवे तो व्रत न्नंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पच्चख्खाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपणत्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपणत्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्देसरणंपव्वज्जामि साहूसरणंपव्वज्जामि केवलिपणत्तं धम्मंसरणंपव्वज्जामि ३ इच्छामि पडिक्कमिउं

पगामसिज्झाए निगामसिज्झाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंट-
णाए पसारणाए छप्पइयासंघट्टणाए कूइए कक्कराइए छीए जंभाइए
आमोसेससर क्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तियाए इत्थीविप्प-
रियासिआए दिट्ठीविप्परियासिआए मणविप्परिआसियाए पाण-
भोयणविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिच्छामि-
दुक्कडं पडिक्कमामि गोयरचरिआए भिखायरिआए उग्घाडकवाड उ-
ग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए मंडीपाहुडिआए वलिपाहु-
डिआए ठवणापाहुडिआए संकिएसहस्सागारे आणेसणाए पाणेस-
णाए आणभोयणाए पाणभोयणाए बीअभोयणाए हरियभोयणाए
पच्छाकम्मियाए पुराकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंसट्ठहडाए रयसंसट्ठ
हडाए पारिसाडनिआए पारिठावणिआए उहासणभिक्खाए जंउ-
ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिशुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तंवा जंनप-
रिठ्ठवणिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं पडिक्कमामि चाउक्कालं सिज्झायस्स
अकरणयाए उभउकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए अप्पमज्ज-
णाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-
सिउ अइआरो कउ तस्स मिच्छामि दुक्कडं पडिक्कमामि एगविहे
असंजमे पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतभी आ-
हार करे तो व्रत भंग नही ॥११॥ लेवालेवेणं कहतां भोजन कर-
णेका थाल प्रमुख भाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका
अंसलगाभया हे उसकूं हाथ वगेरेसें पूछ डाला उस परभी किंचित्वे
मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला भोजन कर लेवे
तो व्रत भंग नही ॥१२॥ उखित्तविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पच्च-
क्खाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत भंग
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उगाय
सके नही एसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत भंग
नही ॥१३॥ गिहत्थसंसिठेणं कहतां भोजन पुरषे जिससेती एसी
रुठी आदि देकर भाजन विगय प्रमुखद्रव्यसें वेमालम खरडी है

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ०सावयाणंआ०सावियाणंआ० देवाणंआसाय०देवीणंआ०इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ०सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ०सव्वपाणभूअजीवसत्ताणंआ० कालस्सआ०सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणारिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, दुठुपडिच्छियं अकालेकउसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमाहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं इत्थठियाजीवा सिज्झंति वुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउमि आराहणाए विरउमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं

ए परिग्गहसण्णाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्त-कहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-णीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनि खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-ईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-उमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं म-यठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिखुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठा-णेहिं चउदासहिं भूयगामेहिं पणरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए ना-यज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी साए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवझायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० देवाणंआ माय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणभूअजीवसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणारिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, डुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्स मिच्छामि डुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमाहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वडुक्खपहीणमग्गं इत्थट्ठियाजीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वडुक्खाणमंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं

पमिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अढार सहस्स सीलंगधारा ॥ अरकखयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मझं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय डुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणेचनवीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिथ्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवठ्ठितं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठ्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चख्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं [illegible] काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु [illegible] तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि [illegible] चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ [illegible] पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउगं पाणा

इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंती पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइवाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपजित्ताणं विहरामि
पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाउ पाणाइवायाउवेरमणं ॥ १॥
अहावरे दोच्चे भंते महव्वए मुसावायाउवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं
पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा
नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-
रेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-
क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-
व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं मुसा-
वाए सव्वदव्वेसु खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालउणं
मुसावाए दियावा राउवा भावओणं मुसावाए रागेणवा
दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्ख
णंस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि
यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खा-
वित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदो-
सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पंचमहव्व-
यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स
निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अ-
बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए
बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवग
एणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं
वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा
भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि
हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं
पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवइ

वा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्ञा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
यं इच्चइ भिक्खुवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पा-
कम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
स खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए
रगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-
सिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-
ए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे
हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए
म्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-
ज्जित्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसा-
याओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं
वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा
वा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं
ण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-
णुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए
भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से
दिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-
दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं
दिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा
वा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-
स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स वि-
मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स
भचेरवुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं
पडिपुन्नभारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ
इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सवं अदिन्नादा
णं जावज्जोवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
अदिन्नं गिन्नाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहूसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं
एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चख्खाय पाव
कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ
णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे
महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
दुख्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि स-
व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
व्वए मेहुणाओवेरमणं सवं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वंवा मा-
णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जावसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्याए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहि समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं,परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविचियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविसंवाइयस्स संसारपामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए अस
.१९ अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामिगरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
न्नंसंवरेमि अणागयंपचक्कामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
उहं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-
परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-
सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भि-
क्खुणीवा संजयविरयपडिहय पचक्काय पावकम्मे दियावा राउवा
एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए सं-
सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
उवट्ठिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
इभोयणाउवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पचक्कामि सेअसणंवा पाणंवा
खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-
जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि
तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-
भोयणे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं
राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभोयणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि·

देसिएपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए. संसारुत्तारणाए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छट्ठे भंते महव्वए उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठ्ठाइं अत्तहियठ्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अवदिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दारूवारसागंधा फासाणंचन्निआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामोअलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छठ्ठंवयमणुरक्खे विरियामोराईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामोअलियवयणाउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहु-

णाउं ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंच-
मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
मिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा
उ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहे-
णपडिक्कंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तं
एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
वज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वए-
पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतो-
गुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-
धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि-
महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उव-
संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ
वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच
॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतो
गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं
संवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिम-
हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंप-
न्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय-
भासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
छव्विहमब्भिंतरियं वज्जंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामि-
महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भंगा परिव-
ज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-
सत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयठाणाइं अध्यकम्माइंतेसिबंधिच परिवर्ज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अठयपवयणमाया दिठाअठविहनिठिअठेहिं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसारत्थायनवविहाजीवा परिवर्ज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परिवर्ज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवर्ज्जंतो परिवर्ज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥४०॥ एवंतिदंडविरओ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंवसाउ साहणगोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमठो उत्तमठो एससल्लुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुने भगवउ चिक्कट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्चक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपरव्खस्स अंतोचउमासीए अंतो संवच्छरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुरव्खरव्खयाए कम्मरव्खयाए मोहखयाए वोहिलाभाए संसारुत्ता रणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरव्खस्स जंनवाइयं नप ढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी रिए संतेपु रिसक्कारपरिकमे तस्सआलोएमोपडिकमामो निंदामो गरि हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तंपडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद थुत्त तंदुलवेयालियं चंदा विद्धयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार कप्पो चरणविसोही आउरपच्चरव्खाणं महापच्चरव्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सन्नि ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालंतेणं अंतोपरव्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुछियं अणु पेहयं अणुपालियं तंदुरव्खरव्खयाए कम्मरव्खयाए मोहखयाए वोहि लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप रव्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपा लियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अप्पुट्ठे मो आहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं न मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उठ्ठाणसुए समुठ्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नीदसाउ आसीविसभावणाउ दिठ्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयंमि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुरूखरूखयाए कम्मरूखयाए मोहरूखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिठ्ठिवाउ सुदिठ्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द
हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो
पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं
दुख्खक्खयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप
रियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस
क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो
विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिव
ज्जामो तस्समिछामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल
संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं
ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिछामिदुक्कडं ॥ सुय
देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं
सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अष्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्म-रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडि-लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थाप-नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीछें ख-मासमण देई, ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडि-लेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें उभो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिसाउं ? गुरु कहे, संदिसावेह, पीछें इछं कही, ख-मासमण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

गएह, पीछें इछं कही खमासमण देई ऊनो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-छकार भगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-च्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वो-सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पचरकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि भं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवउ बंभचेर पोसहं, सवउ अवावार पोसहं, सवउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहो-रत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भं ते पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुभाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं ? सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊनो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि भंते उच्चरी दोय खमासमणें बें-सणो संदिस्साउं ? बेसणो ठाउं ? कही, पीछें दोय खमासमणें सि-ज्झाय संदिस्साउं ? सिज्झाय करुं ? कही खमासमण देई ऊनो थको, आठ नवकारनो सिज्झाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं ? पांगरणुं पमिग्गाउं ? कहे. ए सर्व सामायिक-विधि पूर्वे कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छें. पहिलां इरियावही पमिक्कमी छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक उच्चरयां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कम
वेलासीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण क
पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांद्या पीछें खमासमण दे
कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे
संदिस्सावेह. पीछें इच्छं कही खमासमण देइ कहे. इच्छाका०
सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कहे
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मि
२, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नम
स्कार भणे, जो पडिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामी
चैत्यवंदनादि करी, सिज्झाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण
करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्टमां लिख्यो छे तो पण संक्षे
पें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें,इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमा
समणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं
कहे. पीछें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही
वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार भगवन्! पसाउ करी, प
डिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई
उक्त रीतें आग्या मागे, पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०
॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह.
पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०
॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सा
वेह. उही पडिलेहण करुं? गुरु कहे. करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके जीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछें इच्छं कही, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे; इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्सानं ? वसती पमिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय करुं ? गुरु कहे करेह, पीछें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पहुर दिन चढयां. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपमिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पमिक्कमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पमिलेही पान भोजन पात्र पमिलेही राखे. पीछें सिझाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमोत्थुणं कहे. अनो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुक्करवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बैठके नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसें ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे, पीछें जयवीयराय कही, नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पांचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन वृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजो गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चक्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चक्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ पाणहार अमुक पच्चख्खाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चख्खाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चख्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंज्ञवें अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चख्खाण पारी आहार करे. पीछे आसण बेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चख्खे, पीछें इरियावही पमिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चख्खाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो वहिर्नूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठ अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प मिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संमा सा पूंजी, थंमिलो पमिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंमियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही बेसे. पीछें पमिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पमिक्कमी खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इछं कही दूजे खमासमणे इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीछें इछं कही, मुहपत्ती पडिलेही. दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिसाउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरु वचनें इछं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणो प्रमुखलें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी एकांतें विलरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इछकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहणां पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० सिझाय संदिसाउं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पच्चक्खे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चक्खाण करे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहण संदिसाउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि थंडिलां पडिलेहुं? गुरु वचनें इछं कही, दोय खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणो संदिसाउं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो वे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेहवां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पछें कालवेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवच्छरीयें

संवछरी पमिक्कमणो करे. तिहां देवसी पमिक्कमणो पूर्वे लिख्यो
छे, तिमहिज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इछा० ॥ देवसियं आलो
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " गणे कमणे चंकमणे " इ
त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें दोय खमासम
णें ॥ इछाकां० ॥ सं० ॥ त्न० सिद्धाय संदिस्साउं ? सिद्धाय करुं?
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्धाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पमिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें
लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पमिक्कमणो हुवा पछे साधुको वेयावच्च करी पोरसी
सीम सिद्धाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ञ
कहेतो थको, भूमि प्रमार्जे थंमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे
प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पमिपुन्ना पो
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे, पछे राई
संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इछाकां० सं० ॥ त्न० ॥ राइ संथारा
मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पछे इछं कही, खमास
मण देई मुहपत्ती पमिलेहे. एक खमासमणें ॥ इछाकां० ॥ सं० ॥
त्न० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इछाकां० सं०
॥ त्न० राई संथारो ठावुं ? पछे गुरु वचनें इछं कही, चउक्कसाय
पमिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी
चैत्यवंदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे, पछे
शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन
नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमा
ईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिज्जिा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिझाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पडिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सीम सिझाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करो, धर्मशाला पूंजी काजो ऊद्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें ऊभो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

पारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संथारा पडिलेहे. गोडालोयें बेसी मस्तक नमावी, " नयवं दसन्नन्नहो " इत्यादि नावनारूप गाथा कहे. पीछें पोस हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविन्नागव्रत सा चवण निमित्तें साधु नणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु प ण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आ हार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चिंत थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पडिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पडिक्कमे. खमास मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पडिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो सहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंडक उच्चरतां जावदिवसं पज्जु वासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २, अने जो पूर्वें प डिक्कमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे २, तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्क मणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटें पीछें गुरु सार्खे पच्चक्काण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वे करी छे, तो पण आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे, नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चख्काण किया, पीछें दोय खमासमणें उही पडिलेहण संदिस्साउं ? उही पडिलेहण करुं ? कहे, पण थंडिला पद न कहे. अने थंडिला नहीं पडिलेहे.यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहण.विधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो उच्चरयो है. पीछैं संध्यानी पमिलेहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पच्चरकाण कियां पीछैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंमक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछैं सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो तिम करे पण सामायिक उच्चरयां पीछैं दोय खमासमणें सिच्चाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पीछैं दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ उंडी थंमिलां पमिलेहण संदिस्साउं उंडी थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पमिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरयो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पमिलेही इरियावही पमिक्कमे. पीछैं चउविहार पच्चरकाण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंमक उच्चरे. तिहां दिवससेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछैं बिहु खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पमिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिसाख्यां फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि भंते ... खमासमण देई सिच्चाय संदिस्सावी, आठ नवकार ... हुवे, ...मण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे... ण खपरणुं संदिस्सावे. पीछैं बे खमासमण देई, अंग... दई, पां...

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर बे खमासमण देई, तेही थंमिला पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण थानक शून्यता टालवा न्नणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछलो रातें वलो सामायिक न लेवे. इतनो निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा॰ ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, डुच्चिंतिय डुप्भासिय डु.चि.ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी,.आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अवखुविसयकायकी, सव्वस्स विराहअ, डुच्चिंतिअ, डुप्भासिअ, डुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंमणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लछी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, नवरसंति ते सव्व न्नवाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका वली पंकपरकाल

तोयं ॥ मणोवंठियछे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंभोजलीणा, कलारूव लावण्ण सोहग्ग पीणा ॥ वहे तस्स चित्तंमि णिच्चं पि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुहनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधीशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी; पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारब्ध पद्मालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका श्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ त्रवियणनें तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, करियें व्रत पच्चक्खाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सदसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ढेंढेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, धसकिधर, धपधोरवं ॥ दोंदोंकि दों दों, दागिडदि दागिडदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिंझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगृदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकि णेणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेंकि झेंझें, झणण रणरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकमल, मुकुलमीश, महे जिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठंहेंह ठ

ह्रिंक, ग्हिंपट्टा, ताड्यते ॥ ततलोंकि तोंतों, त्रेंवि त्रेंविनि, म्हविम्हेंवि नि, वाद्यते ॥ थें थें कि थें थें, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुच्चवे ॥ ३॥ पुंदांकि पुंदां, पुपुदुदि पुंदां पुपुदुदि दोंदों, अंबरे॥ चाचपट चचपट, रणकि रोंणों रुणण रुम्रें, रुंवरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाथ्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन०॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुद्ध समता रस धामी जी॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगे जी, ते मानव श्रीपालतणी पेरें पामे सुख सुर संगेंजी ॥१॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी। इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३॥ विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से वक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ ना यक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभणें, श्रीजिनलाभ सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दाख्या धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पमिक्कमण संवछरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें जलें जावें जरियें पुण्य जंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाम्ह फिरतां लाज्ञ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परज्ञावना धूप अगर उक्षेव, इम ज्ञवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा हम्मीवछल करियें वारंवार, केइ ज्ञावना ज्ञावे केइ तपसी शी· लधार ॥ अरुहीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध करे जिनलाज्ञ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन ज्ञविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदू नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदू सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी ज्ञाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ उहुं दिसें वालक दोय जेहने सदा ज्ञवियण सुखकरू, उख हरें अंबा लुंब सुंदर उरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्र भुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकीतै शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र भुम् ॥ १ ॥ यज्ज्ञानगमनोद्भव ब्रतवरज्ञानाकरातिक्रशे, संजूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्ततत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिजवादिवीरच रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नास्ति च ॥ २ ॥ अर्थादपर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थने कसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाज्ञावुकंकारकप्रवचनं चेतश्चम त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देव ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चंद्रसूरिमुनिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण कमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहि दुवालस अंग । थानक वीस भण्या तिहां चंग ॥ तिण ऊपर आणे रंग । ते नर पामे सुरक अनंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी चवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे तिहुअण ज ा मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः। स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः॥ सकलतीर्थकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविलासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकयभप्पयदेवगणं । सिरिअथुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ यणमोहमहीरुहमत्तगया॥ परिपालिअनिचलजीवदया। मम हुंति जिनागमसुक्खया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्दिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया। सुहझाणविणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया। मम वाशि सुहाणि कुणेसुतया ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिवपद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥
अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग उवालस
अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय भंग
प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां,
तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरि दे
वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी थो, वंछित नित सेवीजी
॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि
नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
णमे देव अने देविंद ॥ भवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।
श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
शय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि
त ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवी
स ॥ २ ॥ शुद्ध अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । स्याद्वादन
यादिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
नाणी । सुणिये नित भविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी
साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पयंपे होज्यो
जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिरताः ॥ तस्मै नमोस्तु
वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाभे
यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे
॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यताभिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुव्वयग्गा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधइसिपहुं, सीयलं वासुपूज्जं ॥ श्रेयांसं धमेशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथु अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमितो, पंच कल्लाण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

रोजी । संप्रति काले वीत विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग उपांगम अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय भंग प्रमाणे, जिहां पद्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरि देवीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणो यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणामे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्द अरथ अनोपम जिन जावित सिद्धांत । स्याद्वादनयादिक हेतुयुक्ति नवि ज्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी । सुणिये नित नविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । डुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो जयश्कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु डुःखेज्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे। तदंगिनामस्तुमतंनुमुकये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सदद्देवताभिः। सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नवतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवि यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोमी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अभियसुविहयं, नंदणं सुप्पयवा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविपज्ञसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं धर्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथु अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसो, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे,

मर्य गहणंखणे, केवले लोयकाले, पद्यणिवाणठाणे, पगवण समए, संघुश्रा ज्ञावसारं ॥ देवेदिं दाणवेदिं, ज्ञवणवणसए, विंतरे किंन्न रेर्दिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ देकं तित्थंकराणं, जमिदअणुवमं, ज्ञावतित्थंकरंतं । सयन्नूणं च पास अदमविनियमा, जायए सयकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएर्दिं, नियगममहणं बीयअंकूररूवं । अवावाइं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण ए ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिपी, हंससंगोरिहा । सवज्ञामाण वा, वरकमलकरा, रोहिणीछत्तअंवा ॥ पन्नत्ती छत्तपउमा, धणहस णाई, विक्त्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क ल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंमण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रज्नूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण ज्नरया॥ गिरि कमणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंमरगिरि महिमा जे मांह। ते आगम समरूं मनउछाह ॥ ३ ॥ चकेसरि गोमुख ऊ वमयक । मन वंछित पूरण कल्पवृक ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेव ता । ज्नणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु ज्नवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अठावय चंपा पावापुर गुज्न गण । आइम वारम जिण चउवीसम जिणज्ञाण ॥ अजिता दिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उल्हास ॥ २ ॥ जिणवर मुख दूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग णधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्तर नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस रि अंबा पउमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृक्ष ॥ ध्या वे सुख पावे श्रीजिनलाभ सूरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप रा णी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेमे भवना फंद । चित चो खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥१॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अ नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयभंग निक्षेपा स्या द्वाद मितसिठ ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन लाभसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गाउ उंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख कार । श्रीतीरथनायक बैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरो वर चामर ढोले इंद । देवंदुदुभि वाजे भांजे कुमति फंद ॥ भा मंमल पूंठे झलके जाणं दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य भाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर जाख्या सूत्र सिद्धांत मकार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार। शुज्ञ जावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो जवि प्राणी। सुयदेवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये रूषजदेव पुंमरीक । शुज्ञ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरजीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्रस्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस। अक्षत गिणतीसे चढता तिग चालीस ॥ पंचासनी पूजा जापइ इम जगदीस। तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनो पूनम चेत्र मास शुज्ञ वार। विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इन सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार। करतां नर नारी पामे जवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद। चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद। जिण नवपद महिमा जापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस। नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय। मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अरुबत्तीस पण वीस सग वीस सार। समसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । इव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल दे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायैं हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकूं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंन्नीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रन्नावना सार । इम शासन वछल करतां न्न वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद्र आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुरक सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहे मुख्य वखाण्या रूपन्नादिक जिनचंदाजी ॥ न्नाव धरी ने जे न्नवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुरक अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित्त संन्नारीजी ॥ नवमें न्नव न्नवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी । वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे न्नाखीजी ॥२॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सम्सठ इक्कावन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव दिहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाताजी । न्नली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गन्न जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद न्नुक्ताजी । जिन सौन्नाग्यसूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण न्नक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंमन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

शिखरे समवसरया सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषन्नादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम न्नावी काले आवस्ये सवि मुनिराय ॥ २ ॥ श्रीऋषन्नना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सव आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । न्नाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवम्ह पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंद्र उदार ॥ देवचंद्रगणि न्नाखे न्नविजनने आधार । सव तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत उपद्रव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे न्नवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सब सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे न्नवन्नय वंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी न्नाखीजी । द्रव्य न्नाव विहुं न्नेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विरय निवृत्ती सत् आरंन्ने विनय तपी ते जाणोजी । शुन्नयोगे नहि आरंन्नकारी न्नगवइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीझे जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गच्छपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सदाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांतिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो न्नावे न्नवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषन्नलंछन सुखदायाजी । विजय न्नली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि- ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणोजी । मोह मिथ्यात तिमिरन्नर नासन अन्निनव सूर समाणीजी ॥ न्नवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो न्नविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विडारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिन्नुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स- वाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक न्नाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो न्नविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक न्नव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर न्नवियण उपर सुथिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित न्नाजत मद पंच वाण

पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत। पांचम तपफल
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-
वाकारक जे नरनार। निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद। श्री
जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान। श्रीमल्लि जनम
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार।
पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक
अधिक गुण धार। इग्यारे वारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा
चिय अधिक जिनराय। मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥
॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास। वलि गुणनो गुणिये
अधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान।
एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवश
रा सम्यग् दरसणवंत। जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ
सकलमें आराधक बहु जाण। जिनशासन देवी देव करो कल्याण
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत। रोहिण तपनो फल
भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह। सुख संपत ली-
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥१॥ रूषभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार।
जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो
उपवास। मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥२॥ आगममें एहनो
भाख्यो लाभ अनंत। विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । डुखदो

हग तेहनो नासि जाय सब दूर। वलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण। सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार। जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पख्खी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गछ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजांण ॥ इण पर गाम२ तुम देखो चउदस पक्खी होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन ह रेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगछ मंडण कुमति विहंडण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पक्खी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री वृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल भावे, तेहं विउलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिठ सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुक्खप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमं सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पव ज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ म हमविअ, सुनय नय निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिवि ज, महिअं सयय मुवणमे ॥७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्त विच्छिन्न संथिअं थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पच्छाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहम णाभिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्डओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवो हरिउं॥ पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छण्णवइगाम कोडि सामी आसिजो नारहंमि नयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढो ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव नया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वि हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविउल कुला ॥ पणमामि ते नवनय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पठ सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ नावि अ प्पनावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल स सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा इरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नूअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिञ्चवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ, संतिमहं महा मुणिं सरण मु वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरिरइ अंजलि, रिसि गण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पनं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९॥ किसलय माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडि सयसंथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयत्त पणमे ॥२१॥ विज्जु विलसिअं ॥ आग यावर विमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स संभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीड सोहंत मउ लिमाला ॥ २२ ॥ वेढओ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंडिअ, सुठु सुविम्हिअ सव्व बोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरिअंगा, गाय समोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस वहुगामि णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललो अणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभरविणमिय गायल याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिं खिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणो हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निडालएहिं मंमणोमुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयत्त पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयत्त पणमिअ स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्द मी सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव भाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायओ॥ छत्त चामर पडागजूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसागयसोहिआ, सच्छिअ वसह सी हसिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा, अदोस दुठागुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि उलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु क्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउअ परि साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं दिसेणमभिनंदिं ॥ परिसाऽवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम

पयं, अहवा किरिं सुविब्भमं तुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणव यसे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनक्क निग्गयपहा दंमच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव पयम्ं निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसत्तो नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविहु इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म हव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु वहुमाणु ल्लासभत्ति प्पेरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता णंतसामत्थउत्तिं, फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णि च्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठ निट्ठोघट्टअट्ठं ॥ नमिरसुर किरीडू ग्घिट्ठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि णिंदे भिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भू रिदिव्वंगहारं, फुरुगणरसभावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज दंसणछे अभीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा छज्जए जा णिमुत्ती ॥ सरभस परिरंभा रंभनिव्वाणलच्छी, घणथणघुसि णिक्क प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं, सदसद णभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण मवय णिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए ताव मोहंधयारं, भमइजय मसण्णं तावमिच्छत्तछण्णं ॥ फुरइ फुरंप

संता एंतणाणं सुपूरो, पयम मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥ए॥ अरि करि हरि तिएहु एहंबु चोरा हिवाही, समर मनर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती, निविमतरत मोहा न्नरकरालुंखिअ च ॥ १० ॥ निचिअडु रेअदारु दित्तझाणग्गि जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छिं गाढसंथंभिअव ॥ ११ ॥ अमविनिवम्मिआणं पच्चिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिणं पक्क पाइक्कपुणं, सयलपुहवि रज्जं छम्मिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पमि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवणा हुंतु ते मे पसणा ॥१३॥ छणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणन्नरनमिरीहिं मुठिगिज्झोदरीहिं ॥ ललिअ न्नुअलयाहिं पीण सोणिछणीहिं, सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किम्मि न्नकुठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणच्छी कुच्छिकणाइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरुडुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर डुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिद्या एह झाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिछंकर सोलसम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर दुडुरिअमखिलं वि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं० ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि ॥ चलणजुअलं महान्नय, पणासणं संथवं वुछं ॥ १ ॥ सम्मिय

कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारोगानल, फुलिंग निद्दढ्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय वुढ्ढिय छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय जलनिहि, उभ्भड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निय्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डझ्झंत मुद्धमिय वहु, भीसरणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसि द्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह करुल्लाल वढ्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल हरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कबंधे ॥ कुंतविणिभि

न्न करि फल, द भुक सिकार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्झिय दप्पुद्दर रिउ, नरिंद निवहा नमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सबाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथ वमुग्रारं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जक्ख रक्खस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्ख पीमासु ॥ सं ज्कासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिउं, जमिउ तिग्राहि वेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, घ सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय लकिलेसा, निहय कुलेसा पसढ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिञ स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दडकम्म वीआ, वीआपरमि ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुहाणि तिञ स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय रिआ तह तिउं, निहय कुतिउं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणिंतु सवस्स संघस्स ॥५॥ निवाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ सव साहज्जा ॥ तिञ्पप्पन्नावगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निवाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिञस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्चमो सुअधम्मो, समग्ग न्नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

हं दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ नवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिहुअस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपडिवरकाजक्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्का ॥ सिरि वंभ संति सहिआ, कय नयरक्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिंवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्ञा देवी, उदिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अछुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रक्का, जक्का चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहभावा संतावं, तिहुअस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव्व हासेवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिहुअस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुत्तमग्ग, विहिअ नवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, डुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासक्कि, त्तवालया नवग्गहा सनक्खत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कंटएहिं, सविठिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सव्वे सव्वद्ध सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिहुअस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिहुअस्स भगवउ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स डुविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं सव्व भय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय नि

वंदा दिसंतु तिछस्स ॥ सब जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंभिअं सबं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तिछ, हिवेण तिछं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पय इएजहिआ जे, न्हाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंऊं, डुस्सवं तस्स नछि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएछिन, सुनिछिअग मुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थ स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं. नवहिव थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर तिछ जणिय संखोहा ॥ पमिज्जग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहछ सछोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सछवाहा, हय डुह दाहा सिवंब तरु साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुब अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह साहण सज्जा, न्नयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जासुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंऊं नामं, नामं न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पमिवज्जिअ जिण देवो, देवायरिछ डुरंत नवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, नज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयमीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पमिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुब सुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ण पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तऊाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ए ॥ पुरउ डुलह महिय, छहस्स अणहिल वामए नरं ॥ मुक्काविअ आरिकणं, सीहेणव दवलिंगि गया ॥ १० ॥ द

समंछेरय निसिवि, प्फुरंतु सछंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण इयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पय डिअ गुत्ती पसंत सुइमुत्ती ॥ पढय परवाइ दित्तो, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवंग सुत्तड, रयणकोसो पणासिअ पत्तसो ॥ भवभीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधसिअं ॥ सिरि अभयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व सारंग भग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइअ पवर कघरसो ॥ १५ ॥ भीमभव काणणमिअ, दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ, सूरी जिणव ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरहिअ सच्चरणो, चउरणुउंग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावउच भत्त ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होच्चा ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया भवा ॥ जेण जिणवल्ल हेणं, गुरुणा तं सवहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि रोमणी वूढ दुव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ सत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिउ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम सु हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्तसुहा ॥ सिरि जिणपाति, य सुहयंते कुणंतु सया ॥ २

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा,ससामि पयपउम पणय पा णीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआई ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पम्हिहय पम्हिवक्ख पक्ख लक्खा ते ॥ कयसुगु ण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पम्हिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासणउर, पुरहिउ वद्धमाण जिण नत्तो ॥ सिरि बंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निव्वुइ पुर प हियाणं, नवाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि पहरि उछिस कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सवहा ह रउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिहुवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो नयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा नय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, नयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमाण तिहुस्स बुहिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे घरंति धारिंति ॥ दंसिअसिव वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेन्नवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा,ससामि पयपउम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ दुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुरक जरका, पमिहय पमिवरक परक जरका ते ॥ कयसुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पमिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासचउर, पुरट्ठिअ वद्धमाण जिण भत्तो ॥ सिरि थंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निव्वुइ पुर पहियाणं, भवाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि पहरि उछिस कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिअवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो भयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो ऐस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा भय देवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, भयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, द्धमाण तिअस्स बुद्धिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदत्त गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ भवेभवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दु द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्धया विना पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बा लं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्ष मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिः, नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु ... किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव ...षु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावित
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामो ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि त
त्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिने
ंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रह
तांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योत
न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
रावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता
नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम
ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
॥ ३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भू
पतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
रतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पा
दपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषण
क्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितय
नपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभी
षणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपा
॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृ
ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विग
तबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमद्दोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति नयं नियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, नक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति नक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ नो नो नव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिनुवनगुरोरार्हतां नक्तिनाजः ॥ तेषां शांतिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रनावा, दारोग्यश्रीधृतमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेहसंनवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्मानिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति नव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, नगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुनूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवंकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयडुर्भिक्षकान्तारेषु डुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्धमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्धमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्धमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अछुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो र क्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषन्न १, अजित २, संज्ञव ३, अन्निनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रन्न ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रन्न ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनान्न १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रन्न ४, सर्वानुन्नूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, न्न द्रंकर २४.

॥ एते न्नावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा न्न वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयडुर्निक्षकान्तारेषु डुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनान्नि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, न्नानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंन्न १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रन्नावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति व र्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्त मानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अ शोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सि द्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रे- श्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो र क्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रम णसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यां गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयम वरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

मभ जवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु
वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो जवंतु ॥ अस्मिंश्च जूमं
म्मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस
र्गव्याधिडुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिरु
द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः जवंतु ॥ सदाप्राडुर्जूतानि डुरितानि पापा
नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा जवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना
थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य
र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे
गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ
न्मृष्टरिष्टडुष्ट, ग्रहगतिडुःस्वप्नडुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,
नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा
जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥
श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्जवतु, श्रीराज
संनिवेशानां शांतिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा
॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा
यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू
पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि
वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाजरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां
कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति
॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो
त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणजाजोहि जिनाजिषेके ॥ १
॥ अहं तिच्छयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह
शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु
सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी जवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छियंते वि

प्रवक्षयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, आकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवं शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वी तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्रयापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी डिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगछे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहं सः ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतव मणभितरि, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघव, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघव ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धव ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ कें

वलि न्नासिय रीत जिके नवकार आराहै, न्नोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण ऊाणे सुर रिद्धि पुत्त सुद विलसै बहु परि, इण ऊाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर ऊाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां बेठा अरिहंतदेव पत्नमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहेरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत ऊाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर न्नेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सो हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुवे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स हू जगधंद, मणमूलो उरध करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण दिसि पंखमी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाल ऊपर जे ध्यावे, पहरे नीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण ऊाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवऊाय सीस पाढंता पश्चिम, आराहिजे अंग पुव धारंत मणोरम ॥ पश्चिम दिसि पंखमीय कमल ऊपर सुहऊाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विउर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वड्ढा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिढा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके ऊाणे, पंचवन्न तिहां नाण ऊाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नदी इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दितिम्र गणेहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुठ पायालह सामी, समलीकुअर उपन्न जिल्ह सुर लोयह गामी ॥ संवल कंबल वे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ छींके वैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाठरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे, बीघ्यों कंटही उपर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंरया काज सबे सरे इरत परत त्रिमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर धाड़ संकट टले राजा वसि होवे, तिर्थंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुष्ठ जलोदर रोग सबे नासै एणाही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छउमत्र एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिथराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिर्थंकर गणहर पभिष चवदह पूरव सार, इस गुण अंत न को कहे गुण गिरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अड संपय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सतेव इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्ख कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

परमेष्ठि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि महिमा गर्भित वृह नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शप्तति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥१॥ पणवीसाय असिआ। पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल दुरियं। भवियाणं भत्ति जुत्ताणं ॥२॥ वीसा पणयाला विय। तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहभूअ रख्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥३॥ सत्तरि पणतीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चौरारि महाभयं हरउ ॥४॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रख्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसूंस । हरहुंहः तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिहिय नाम गर्भं । चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्जसंखला तहय वज्ज अंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता। कालि महाकालि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ठ तहय अछुत्ता ॥माणसि महमाणसिआ। विज्जा देवीउ रख्कंतु ॥८॥ पंचदस कम्मभूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो। वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तिछयर गयमोहा । झाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्दुम । मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सव्वामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि दुठ देवा । ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फल हेलिहिऊणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहभुग्गय । साइणि भूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं दुवार पडि

सिद्दियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निग्रंतं निच्चमच्चेद ॥ १४ ॥
॥ इति शसति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दरको, नालियायरवियासिगोपसरो॥ रयणत्तय
स्स जणउ, पासजिणो जयउ जय चरकू ॥ १ ॥ कय कुवलय प
म्मिघोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलउ ॥ विहियारविंद मह
णो, दीयराउ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्जिणंतो, सि
दूरं पुहवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअवक्को, सुमंगलो जयउ
पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंम्मल संघुउ इलानंदो
॥ रयणियरदारउमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय
वियट्टो, नायज्जो नागरायकय पूउ ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय
रिउ सुहं दिसउ ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा मम्मलो म
हाम्मूइ ॥ असुरेहिं नमिज्जंतो, पासजिणंदो कवी जयउ ॥ ६ ॥
तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा
सरिस सिरी, जय चरकु सुउ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो
सायर, मायंम्मरहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ म्मरणी म्मूयं, पास
जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो, सिंहावमालीनहो
म्मवणंकेउ ॥ दूरंतम रासीउ, सत्तम ठाण ठिउ हरउ ॥ ९ ॥ इअ
नवगह थुइ गप्रं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं थवणं ॥ तुह पास पढइ
जोतं, असुहावि गहा न पामंति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित
पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं ॥ ग्रहशांतिं प्र
वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेयाः, पूज
नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रनस्य मार्त्तंम, श्चंद्रश्चंद्रप्रनस्य च ॥ वासुपूज्ये नूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माराः, शांतिःकुंथुर्नमिस्तथा ॥ वर्द्धमानो जिनेंद्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रुषन्नाजितसुपार्श्वा, श्चान्निनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संनवः स्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥ नेमिनाथे नवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लग्ने च राशौ च, पीमयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिन्निर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च, वासोन्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल, बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोवतिष्टंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पूजिता नक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं नक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११॥ नद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रनावतः पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनगर्भित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रनूजीकी माला फेरणी. चंद्र । २ चंदाप्रनूजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्रीविमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्रीशांतिनाथजी, श्रीकुंथुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी ॥ बृहस्पति । ५ श्रीरुषनदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्वनाथजी, श्रीअन्निनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी, श्रीसंनवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥ शनीश्चर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु । ९ मल्लिनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजब दान गुरुसुपात्रन

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये ज्ञर
न्नावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यन्नेदि, न्नीतान्नयप्रदमनिंदितमंह्रि
पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमन्निनम्य जिने
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विन्नुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या
हमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव
वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश न्नवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥
३ ॥ मोहक्षयादनुन्नवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न
तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज
लधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्यतोस्मि तव नाथ जमाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना
मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं न्नवति तेषु ममावकाशः ॥
जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणो
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति
न्नवतो न्नवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विन्नो शिथि
लीन्नवंति, जंतोः क्षणेन निबिमा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो न्नुजंगम
मया इव मध्यन्नाग, मन्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मु
च्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि
॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपला
यमानैः ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं न्नविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म रुतः स किलानुन्नावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रन्नाव वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतन्नुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि डुर्द्धरवाम्वेन ॥ ११ ॥ स्वामि न्नतुल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रन्नावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा पि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संन्नवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश न्नवतो न्नविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपलन्नावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुन्नेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विन्नाव्यसे त्वं, न्नव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुन्नावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म नीषिन्निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र न्नवतीह न्नवत्प्रन्नावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विन्नो हरिहरा दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिन्निरीश सितोपि शंखो, नो गृ ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुन्ना वा, दास्तां जनो न्नवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विन्नो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमधएव हि

बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गम्भीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गम्भीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हता

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥ यगर्जदूर्जित घनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तमिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त मथ डुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन डुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंम, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवडुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधवडुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ डुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, डुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि

मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य नूयाः, स्वामी त्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४१ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगनागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विनो रचयंति नव्याः ॥४३॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रनास्वराः स्वर्गसंपदो नुक्त्वा ॥ ते विग लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा लासमं नाद, बिंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, म नोमलविशोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्टिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य ईशेन्य, ॐ सिद्धेन्यो न मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिन्यः, उपाध्यायेन्य ॐ नमः॥४॥ॐ नमः सर्वसाधून्यः ॥ ॐ ज्ञानेन्यो नमोनमः ॥ ॐनमः तत्वदृष्टिन्यः। चा रित्रेन्यो नमोनमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुनं ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्यं पदं शिखां रक्षे, त्परं रक्षेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्टं रक्षेच्च घंटिकां ॥ नान्यंतं सप्त मं रक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफोद्यद्वि पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेन्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतदसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेन्यो नमः। जंबुवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्टाधिष्टैरलंकृतः ॥११॥

मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-
त्लमंन्वितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥
ामि बिंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं
तं, बहुलं जाड्यतोझितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर
॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-
संबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं
सं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च,
र्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥
लं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं
संश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥
तिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-
तः, सरेफो बिंदुमंन्वितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-
जतः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनो-
ः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥
र्धेंदुसमाकारो, बिंदुनीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः
ो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥
ुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ,
स्थितिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ
४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ शिरईस्थिति-
नौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-
े नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥
ागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः॥ सर्वदा सर्वकालेर, ते भवंतु
ोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥
छादितसर्वांङ्ग, मामांहिनस्तमाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य०
हिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुराकिनी ॥३०॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु
शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव
मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५
देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षस
॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं
तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुदुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
मामांहिसंतुन्नूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या य
न्नुविलब्धयः ॥ ताभिरन्न्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
पातालवासिनो देवा, देवान्नूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे
रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनान्नूत-
वेत्ताला:, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रन्ना-
वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंडी सरस्वती,
जयांबाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला
काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-
त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंडलस्तव ॥ न्नाषितस्तीर्थे, जगत्-
त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ
॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यन्न-
ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं,
प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ न्नार्यार्थी लन्नते न्नार्यां, पुत्रार्थी लन्नते
सुतं ॥ वित्तार्थी लन्नते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे
रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,
गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ न्नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वजीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुज्जलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्तिनः शाश्वता जिनाः॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टे, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपःकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रजवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे, जवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो जवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, जूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंगल स्तोत्रं ॥ कैपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याजिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतोशुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः॥ निर्जयो निरहंकारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । निर्जयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रजुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्य
नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः॥
निःशद्वो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शु
प्राप्तः । कर्मद्योतिबलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः
क्षयो विभुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८
अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथ
बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ए ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञा
लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवाजितः ॥ १०
अजेयसर्वतो भद्रः । निष्कपायो भवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः
वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सद्ज्ञानंद । अवाङ्मान
गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनं
विमलज्ञानी । स्पृद्दीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः
लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदं
पितामहः ॥ सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरणयकः॥ १४ ॥ आनं
दरूपचैतन्यो । भगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य
कव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥
गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैव
ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र
दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स
र्वेशः सततसुखावासः। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम
ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोभगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य
कारकः ॥१९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
भुवनाधीशः । सच्चितः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मानं ।
विमुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच
रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः । सरर्माव्यत्रिपुरांतकः॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोटिमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः ।
सर्वपापविवार्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥
स्वयंभियो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रविदानंद ।
चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा
देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः । म
हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
त्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकृपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा
पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंतो ।
महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोध । एकानेकवि
निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो
महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ
द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारनिर्हंतो । निष्कामो विषयाच्यु
तः ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा
परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआ
त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना
कृतिं नाकृरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
जसंबोधः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्
धर्मनायकः ॥३४॥ बोधसत्तु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश
नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥
जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं
वंद्यः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि

ष्प्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लो संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोका शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुन ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्री इबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुपस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणाना पि गुणगुरुरौर्गैतुमनलम् ॥ नलम्न्नं लम्न्नं स्वाधिपमिहनयैस्सर्वकल । नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगन्नातः स्तो किल निरवकाशोप्यहमिहो । यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोस्नावच वचः । गृणीयां सह्यं तन्नुन्नुव इवेष्टार्थप्रतिन्नूपदोपास्ते पार्श्वातन यजनयित्र्या शिवमम ॥ २ ॥ त्वकांशमासूनोधुतनिधनमूनोयवस्तु ना । सुनामन्नोड्नो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोन्नानो न्नु वनन्नवने नो वृषन्नरं । व्यथांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥ सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । ऊगन्नय्यारामेमरकुरुहवामे यजिनपाः ॥ हतोग्राक्षग्रामे शितरसमकामेपुविजयी । त्वमर्कालीन्नामे ड्डरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे न्नुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ घृतारेकेतारे क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे हिड्वारे न्नवदहनवारे कुरुरूपां ॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान हिमिथुनमाराव्ययविन्नो ॥ ज्वलद्यस्योदारान्विपधरकुमाराधिपतिता । मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे चव्रजविदितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥ तनालान्नोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्पचलपदमेवस्तु तिकते ॥ ७ ॥ कजन्मार्ककायंकिरनगणहंकीर्निघवलं, कुवेरेज्यं

कूद्दाव्रतति परशुं केतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं ददानंकंकह्वोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं भवकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंछात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रभो पवित्रं सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंद्दगुदकभवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला भ वारण्येटन्तकथमपिभवंत्वंनदद्दसुः॥१०॥ नजानेद्दंनेतः कुमततिमर प्रावृतद्दशां गतिर्भद्रात्काणादरद्दरभवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य भिमतफलोत्सर्जनपरो त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवजनन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां भवास्ताघोदत्व जलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर णः शरण्योसिश्रेयान्प्रभुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा धरितकनकाद्दार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिभटगभोरत्ववि दितः दितःप्रत्यूहालिः शुभमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्चीरः कुमतिबसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविश्वद्वेधंपरमपुरुषः सिद्धिन गरीं गरीयः साम्राज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्तुंकर्म्माष्टकरि पुवलंप्रज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीभरमतुलमासः पृथुमहाः ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योऽरितरुसिन्धुरतिलको लकोनः पालाकः सकलभ विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसञ्जी यात्पार्श्वप्रभुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीभोलोकोत्तरपद सुपेतःसकलवि । द्रवित्रंदोषालोयवसलवनेप्रासविभवः भवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ भवन्तंसयोग प्रथि तपदवीचारिनिवहा अजस्त्रंविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमें इदंस्थाने यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोपान्तकत्तरुप्रकाशोधतमसं हरन्ने
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदल
गच्छतुः पार्श्वोदिशतुकुशलंमेसमयन्नः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्
मतनुमतांयन्नमृतगुःकलान्निःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः
षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताद्दामापुत्रः सपदिविपद
कंपतिः १९ स्फुरंत्यासिंडुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति मेंहोजन्म
स्यंयप्रन्नृतिडुःखान्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतंराजतनयो
यातोतोलोकेतनुन्नवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ घरादिस्थेशान
न्नतरुविन्नोगैरकरणः सदापायाद्दैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः
स्फारश्लोकस्तुतिसमुच्चितोन्नानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशल
केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठो-येन्यस्त्रिदसविसरेन्येवरतया
लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलन्नः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकम
न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २
प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यंश्रीयोगात्कमलनिल
सिन्नगवन् ननाकश्चिद्विश्वातिशयन्नरवित्तस्त्रिन्नुवने न्नवाहकोग
परमपुरुषोतोहरिहयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिन्नुवनजनैक
पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः स
जगदर्थौघकलना न्नशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविपमदृक् ॥ २
अवाप्तःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता वितेयाअक्षोणोरुदम
मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नःकृतकुमतन्ननःसुमनसां हित
ञेपाणांसुकृतपदवींत्वंककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंद्राहोरात्रंबहुविप
त्रंघृतमरं कलत्रंयेनात्रक्षतहरिहरादिःसुरगणः सकर्णानाकर्पा
चरित्तताधूर्त्तनिवह प्रतारीसहोरः मित्तसततरोपःस्थितिहतः॥ २
समग्रामग्रामप्रन्नवन्नयदो बोधरहितः सरुग्नन्यहेवीपुरुडुरितरु
नकलितः पुरानोदान्नतभिरमिहसशाहोनमहितः सदेवोश्रायत्वंब

मपिसमातादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवामेतैरज्ञिमतविधानैलसतरै
रपास्तोपास्यस्त्वंखलुजिनवरैएवोनवरतम् मनोलिम्मैंत्वत्पद्बनजयुगले
सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्रसुदृशा ॥ २८॥ अदम्भंद
म्भांतिन् द्रविणञरमड्डीसदृशं विदायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
दधत्सौवर्णानामुपरिन.लिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोम्नानांधुरिसमतिमद्भि
स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी
मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोप्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
क्ष्मांणिदधत कुतस्तैनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं
प्राज्यंराज्यंविदितविज्ञवापास्यलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
रतरम् कृतेनिर्ग्रंथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यमुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित
वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामाथोंत्स्पृष्ठ्या ततवनदस्पृप्रयातिशयितं जगद्दा
रिद्र्यांग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु
ग्मं सुप्रादया नतये स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि
त तवत्रातर्जन्माजनिजननमुख्याकगणद्धत् ञवेवेशस्तोथोंपिचनिश्र
मानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अधीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
सनाक्यस्येद्रकोयदिवदनुगंमघ्यलनितं नितम्विन्यान्वीतः सपदिकुश्र
तिंस्वपसमं समाह्लत्यंवाथप्रज्ञवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
तापायाच्चुद्धास्तवगुणगणाज्ञान्तिविशदा स्त्रिलोकीनूजानेसुरपयमणे
जानवश्व रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिपणोनव्यधिपणो नतानीटेसख्या
समदरपरार्ध्यंतुसरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे
नमस्तुभ्यंञीमामयसमदन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी
कृतसुधा समुद्रायामुद्रश्युदवसिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
हिमालयायसुमनः सन्दोहशुभ्रूपितां ह्रिदन्द्रायकलि.छेदेज्ञगवते
व्यावलीदेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडि
छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा न्नरनिर्जिततारकराजगणः कृत
क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारघहे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द
भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थ
हम् वितरविततबोधंयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य
स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहप
दप्रसादसनृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावर्त
प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकद्रुरुनामगर्भवसंततिलक
वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्य्येपुस्तम्बेरमशशिमितेहायन
यरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु
नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥
इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीउ मु
णिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो
कोम्री पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम
लगिरिमहं तिठमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर गांम ॥ सुरतरु सम
सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अभय
देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं
भिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥
आराहउ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कांत दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंडरीकनी जांण ॥ प्रभु थो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सुजगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । मंडण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामार्द्धे सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ यदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं नेराकारं शश्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशब्दघनोघा प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासितचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवड़ा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो बड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रुषभ समो सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज हु न बावड़े, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंचं भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्धि बुद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाड़ले, वसे पहाड़ां बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतड़ी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोड़ियो, लाखां ऊपर कोड़ ॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलडी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंडन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन भाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अभिराम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥ ३ ॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कला वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वंदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन मा हरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोम, पण प्रभु लग पहूंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आडा डूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलझे करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

फली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटफली वहने कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई आवी वामे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरतना वासी भविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुन ज़र सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं छे माहरो आत मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ सावे दिलथी मुझशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो बिरुद संभालो निज सेवकशुं रुपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर छतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे छे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुझ संग, लाभ उदयजिन चंद लहे नि प्रेम अभंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह भगते भणुं ॥ भेटवा पायकमल भाव हियमे घणो, करिय सुप साय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मशुं कूम अरिहंत शुं राखियें जिस्यो अछे तिस्यो कर जोमि करि भाखियें ॥ अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगमे, रीश चटको चढे

लोभ वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने डुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि एने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, डुःख हरि सुख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो श्रम्ह सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुम्ह समोवम नहिं अवर वा ल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, बारवर परपदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय भलगुं, किम करुं गम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिमा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकमा जेम हियमे वसे ॥ ए ॥ भल भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछे ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जी कहे ॥ तुह्म पय भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करूं, क्षीरसागर तणां दूध खमिया भरुं ॥ तुह्म मिलवा तणा सामि संदेशमा, इंद्र पण लखियं न शके अछे एवमा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात मुख जेटली, ऊपजे सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाभ ने कोभ प्रभु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुत्र नवि मोह वश नेह हुवे जेहनें, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल नम रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियमे वस्युं, वापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गाम जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कम्म सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुध्द चारित्र कहियें प्रन्नु पालशुं, ङःख नं मार संसार नय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवम्ही मारी नगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम ऋद्धि वृद्धि, समृध्दि कारण, ङुरित वारण, सुख करो ॥ नवकाय वर श्री, नक्ति लान्नें, थुएयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रन्नु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप नणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, नवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ *न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,* साचो सदह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलासें, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, नगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोम् वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया वे सही ए, पण पाळे केही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें ज्नरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ ज्नगवंत ज्नाखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजो ॥ काल्हरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांज्नलो, जिम पामो ज्नवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, ज्नवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण ज्नला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुज्नदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोमी ज्नावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंज्न टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज्न दृष्टि रे ॥पां०॥६॥

॥ ढाल त्रीजो ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव ज्नवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारु रे वारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्ग रली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूगां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति झली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पमपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम उजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखम अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीवे ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रें उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक महि ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख ले लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में शुण्यो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुंदर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥ मति अग्यावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोडी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि छबिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव दुःख भंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण तादृश माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिले नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरखित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही गाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत रेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जुहारता, मोरी स
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुश खड खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लह्यो जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न गते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊतिरें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत बारे परषदा बेठी जुमी, मागशिर शुदि इग्यारश वमी ॥ १ ॥ म ल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अ दीक्षा लीधी रूवमी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवमी ॥ मा ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे ति हीज, पंचासनी संख्या परगमी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवमी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अ नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखमी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम धमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें धर्मी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए विधि मोक्ष तणी पावडी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पडी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चख्खाण करो आखडी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो चाहडी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ सांत जपीने कीजे कामा, सोइ काम हुवे अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दालिद दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घटघट के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावे, कहितां मो मन अचरज थावे ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचे, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सहू प्रभु पास रहीजे, भिक्षा हारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम नायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सवै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै, नाम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिस न रहे प्रभु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना वावीस परीसह, सैन्या जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये त्रिगमो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर छत्र धरावे, नांम जती पिण चमर ढुलावै ॥ अभय दांन दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापै, लछ घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज पगठावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अदभुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकतणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक है वरुवीरा ॥ १८ ॥ तुम जैसें वरुभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो

श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसावै, श्री गुणसागरके मन भावे ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चे पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोज्ञा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पडे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस सभारण रुधिर क्रिया, चांदोनी नाखे चांमडियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आंखे, नख गाल वपुपना मल नाखे ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै छाणा छडे हुंढणियां ॥ सूकवै कप्पड पप्पड वडियां, नासीय छिपै नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा न कहे, इहां संख्या वैतालीस लहे ॥ हथियार घडे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखे रांधै ॥ ८ ॥ भांजो निस्सही जिनगृह पेसे, धरै छत्र ने मंडपमें वेसे ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर वींझै मन ठांम नहीं ॥९॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, भूषण तज आप कुरूप थियै ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसाडे उत्तरासंग न करे ॥१०॥

गीगो सिरपेच मोम जोमै, दमिये रमने वेते होमै ॥ संपणासुं जुहार करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥११॥ धरे धरणो झगमे ढल्लंगी, सिर गूंथे बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावंदियां, पग झटक दिरावे डुखमियां ॥ १२ ॥ करदम लूहै मैथुन मंमै, जू आवलि अंठ तिहां बंमै ॥ जघामे गुझ करे वयदा, काढे व्यापार तणी कयद्दा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरे, अंघेले पीवा ठाम ज्रे ॥ दूषण जिनज्ञवनमें ए दाख्या, देववंदनज्ञाष्यमें जे ज्ञाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावग सगति बतां, आसातन टाले थारसतां, परमाद वसे कोई थाये, आलोयां पाप सहू जाये ॥१५॥ तंबोल ने ज्ञोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री ज्ञोग हुआ ॥ दूषण पनरो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसे ॥१६॥ इव्यत ने ज्ञावत दोय पूजा, एहनादिज ज्ञेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रज्ञुनी मन शुद्ध करे, वंछित सुख लीला तेह वरे ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम ज्ञव्य प्राणी ज्ञाव आणी, विवेकी शुज्ञ वासना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजे, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थंकर अरजे, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री ज्ञक्तसिंह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं ऋषज्ञ जिनेसर पाय, धनुष पांचसे उंची काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसे, सांढ धनुष साढ़ाचारसे ॥ १ ॥ तीजो संज्ञव सुख दातार, उंची काय धनुष सो च्यार ॥ अजिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ ज्ञगवांन, धनुष तीनसो देहो मांन ॥ पदम प्रज्ञू पूरे मन आस, देह धनुष दोयसो पचास ॥ ३ ॥ सानि सुपारस सघन शेष, देह प्रमांण धनुष सो दोय ॥ चंद्रप्रज्ञु जिन मुझ मन वसे, देह

प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, ऊंच प्र मांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जंग सवे, देह प्रमांण ध नुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, ऊंच प्रमांण धनुष तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर ॥ अनंत ज्ञांन अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पैंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पैंत्रीस उदार ॥ अर अ ढारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि नाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवी सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो वीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर ऋद्धि सिद्धि उछ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरव आय ॥ बी जो अजित जसु सूत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती र्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो ॥ अभिनंदन पूरे मन आस, आउ लाख पूरव पचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थितः

जांण, लाख तीस पूरव परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव
वीस, दस लख पूरव चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरव दोय,
इक लख पूरव शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी
लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,
वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस,
वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम जिणंद,
लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवें,
श्री कुंथुनाथ तणी संभवे ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि
सहस पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसु
व्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित जणी, वरस स
हस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस
बहुत्तर वीरजिणंद ॥ ऋषभतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शंती-
सर वार ॥ ए ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-
वीस ॥ त्रिहुं श जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस
॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न
सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरे अमतालीस ॥ ११ ॥ ला
चमाल ठयाल हजार, पम्धिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्राव
लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोि
श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्वि
सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री
चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं
पन्नवसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ ऋषज्ञ अजित संज्ञव अ-
ज्ञिनंदन, सुमति पदमप्रज्ञु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्र-
प्रज्ञू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
थुनाथ अर मल्लि सुईकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
जिन चोवीस ॥ जग वच्छल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम ज्ञरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, ढठो
कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संज्रूमि सनाथ ॥
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
नाम, बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र ज्ञरत
सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ स-
ज्रूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते
प्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रज्ञ जा-
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये
ए ॥ ९ ॥ ढठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नामे
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए
पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
पांच ढठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नेर, चोथी आठमो, नवमो
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय ने ज्रद्र, सुप्रज्ञ सुदर्शन,
आनंद नंदन शुज्ञ मता ए ॥ रामचंद्र बलज्रद्र, बलदेव ए नव,
आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलज्रद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव रूप्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंन्न बलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नारक गति गामिया ए, ते पिण न्नावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह न्नव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत न्नव जूजूआ, देह तिणसाव पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव केरा पिता, एकहिज आप नव एण लेखे छता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय चौरे टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसे, माय सहुनी थई साठ लेखे इसें ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

इम थुण्या तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करे सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम न्नगत जयवंतो सदा, प्रह ऊमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वर्गत मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सेत्रुंजगिरि स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ युगल धर्म निवारको, नय नंदन न्नगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुक्त मन ... र धरो, सो दिन सफल गिणंत ॥ स्वामी श्री जिनेश्वर ... निरंजन ॥ श्री० ॥ २ ॥ नंदन निरख हियानां, ...

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचउमासे रह्या, थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामे शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंडरीक ॥ पुंडरगिरि तिण कारणें, जगति करो निरभीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस२ परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचले, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण डूंगरे, मुनिवर कोडा-कोडि ॥ पाज चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोडि ॥ श्री० ॥ ए ॥ जे बाधण प्रतिबूझवी, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवड मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंडण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजामी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीडा जात्रा निनाणूं करिये रे॥१॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या०॥ २ ॥ चेत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोडिसुं पूंडरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संते रे, बे बे कोडिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने तोडी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोडी रे, ते वंदो बे कर जोडी

॥ या० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पाम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा वसु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संब प्रद्युन कहाय ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाख्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नहीं कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, वहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनर ते नर ने नारी रे, भेट विमलाचल इक तारी रे, जस्यें तेहनसी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुरताये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिश्री ॥

वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धरया दुख धामी रे ॥ ज०
॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो
धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण
हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव,
हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,
निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक
देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या
तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥
लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता
सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥
तुझ सरिखा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥
तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ए ॥
मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥
ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥
ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥
ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, वीकानेर मझारो रे ॥ ज०
११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोडी हो कहुं मननी वात
बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी०
१ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामीसमुद्र म
ार ॥ दुख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥
वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल
तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल
वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढील नो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्यो हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी मांटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काठलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथो अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बार बरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण उधरयो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसो हो नहीं आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पले, नहीं तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी गंम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वामी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंमन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहावीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी॥ पू०॥१॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी॥गिलगिचिया जिम आयो गिमतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तोपिण तुझ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंमक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंमक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वैमाणिक, इम दंमक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखे नर तिरि, निहचै देव ज थाय जी ॥ निज आऊखै सम के उंचै, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर तांई, समूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०
॥ ८ ॥ आउ संख्याते जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बाद
पृथवी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९॥ पर्याप्त
इण पांचे ठांमे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण
आगै, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी
मांझी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला
मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परें, जीव भमै संसार॥दोय गति
नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-
ख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-
ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग
जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी
लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा
पणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊप
जैं गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै,
तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती
जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरया, जे
फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे भांगे करते कहूं, पिण निश्चे नही को
य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे, बीजी हरि
बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥
॥१८॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहे, छठि देसविरत्त ॥ सातमी
नरकनो समकितहीज लहे, न हुवे अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवे नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्याते नर सहु दंडके रे, आवी लहे अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाउ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आया आवे मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखी आवे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरनें मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ती ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवे रे, नर तिरियी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव भमें इण पर भव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिणं तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं देव ॥ पंचेंडी तिर्यंच संख्याते आउखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आउ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहे सरवविरति पिण मुगति न पावे, तेउ वाउथी आयो तेहनें समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहे अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवे दसे ठांमे, थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामे ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाउ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावे, विकलेंडी ते दसमांहि जावे एहाही आवे ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पांणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता त
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अने चौरिंद्री मझारै, संख्यात
वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां. न
तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहिये
॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवे छूटकबार, पिण छै माह
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अ
रिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥३२॥
तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो म
नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछूं इण भव तूंहिज देव
सूधै मन इक होज्यो भवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥
संवत सतर भगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद
समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम
गावे, धरमसी सुजगीस ए ॥३४॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं॥

॥ अथ इरियावही मिछामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ मन मनमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री
वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिडुक्कड तणी संख्या,
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ
विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डर ते क
रिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणसइ, पण
थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यार

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय दह भाल ए ॥ जल थल खचर भुयंग उर, पण इंद्रिय तिरि अभयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुव्वी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद भेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंभिय दस रे नव लोगंतिक जांणिये, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणिये ॥उल्लालो॥ वखाणिये दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसे विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणइ पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपजत्तग अगणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणिये असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए॥मेरुपिण पासती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासे दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसे भेद उइ आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सो एक समुर्छिम भेद तीनसे तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजे तेह ॥ पणसहस छसे वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागे दोसे दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह उइ सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितउर आण ॥मन-

वंच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात असी निःतंक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे घइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार बेसै अधिक तेआय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखे छगुण भाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिच्छामि डुकडंदेई भविक तरया भवजल नि धिकेई ॥ तरे अछे वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करे आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषै वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम सफल इम कीजे ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवझाय लक्ष्मी किर्ति सीसे जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो भावे करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिच्छामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु तत्त्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, बंधन

वेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रह्यो अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिल्यां अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बोध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले ऊपजे विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ काले गर्भ धरे जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसूत रे ॥८॥ काले दूधथकी दही थाये, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे वे बाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बार चक्कवे, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कविलत कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्प्पणी आरा, छै छै जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥११॥श्री०॥ काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्धपणे हुए बलिश दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करे रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निस्संक ॥१३॥ सुविवेक विचारो जुओ २ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वांझणि न जणे बाल ॥ मूछ नही महिला मुखे जी, करतल ऊगे न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सभाव नवि संपजे जी, किमइ पदारथ कोय॥

अंब न लागे नींवमें जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु०॥ मोरपं कुण चीतरे जी, कुण करे संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥१६॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अणि याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकें नित वसे जी, मणि हरे विस ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल॥१८॥ ॥ सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरे जी, बूमे काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परे सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरमे करे विरेच॥ सीझे नही कण कांगमो जी॥ सकल स्वनाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषे काठनो जी, भुंयमां थाये पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वनाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो ससि सीयलो जी, नव्यादिक बहु नाव ॥ उए द्रव्य आपापणा जी, न तजे कोइ सुनाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करे बापमो रे, वस्तु स्वनाव अकज्ज ॥ जो न होय नवतव्यता जी, तो किम सीझे कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो नावी नाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आकणी ॥ जलधि तरे जंगल फिरे जी, कोमि यतन करे कोय ॥ अणनावी होवे नही जी, नावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, माले केइ लाख ॥ खरया केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम नव तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवल मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसे विण चिंतव्युं जी, आवी मिले ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणोजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूदा कोवल करे जी, किम रावीस रे प्रांण ॥ आहेमी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥प्रा० ॥२९॥ आहेमी नागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूदो ऊभी गयो जी, कोत्र नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सस्त्र हण्या संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जो, राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मोहणी मनोहरणी ॥ ए देसी ॥

काल स्वभाव नियत मति कूडी, करम करे से थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वनवासे, सीता पामी आल ॥ कर्मे लंकापति रावणनुं, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुख पीडित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिननें जोत्र निमा रै, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥ चे० ॥ कर्मे एक सुखपाले वैसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढ्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जग हींडे हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंडीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो रूमझोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीये आपणं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए च्यारे असमर्थ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समर्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिन पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि करयां विना ए, नवि रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पमे कोलियो ए, मुखमां क्षेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे २ सरवर भरे ए, कां करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां गाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोमै दांम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय रसे जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥ ५० ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगे

कवल तणी पर, जे बूझै ते राझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वमाई ॥ जिम सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुजट जमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै, काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोक्तादिक, जाग्य सकल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ जवथितनो परपाक थयो तब, पंमित वीर्य उल्लसियो ॥ जव्य स्वजावें शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमांन जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंदणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी जाव अपार ॥ चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिगाएं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजे, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोज्ञ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणें, संस थी नाम मिथ्यात चोथो जणें ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अनंत अज्ञव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुज्ञव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चौथ पंचम छठे ठाण चढने पडे, किणहि कषाय वस आय पहलै अडे ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहीय सासादनें थित इसी सांज्ञली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि मिथ्यामतो ए ॥ ए वेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणां बेहं वती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहे नही, आउ बंधनपडे नवो ए ॥ के तो लहै मिथ्यातके समकित लहे, मति सरखी गति परज्ञवेए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहे, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचे धरे ए॥ सद्दु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करे ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव में रहे ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहे ए ॥ १४ ॥ च्यार कपाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरे ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ, तातें तिहां थकी, तीजे चोथे जव तिरे ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटे चोकडी प्रत्याख्यान ॥ जेण तजेवा वीस अजक्ष, पांम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारे, साचा बारे व्रत संजारे ॥ पूजादिक पट् कारज साधे, इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥आठ वरस कणी पुव्वकोड, पंचम गुणठाणे थित जोड ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणथान, इक२ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसे जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधे पट् आवस्यक सार ॥ उदयत चोथा च्यार कपाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१ ॥ रूधो राखे चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधे ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासे, अपरमत्त सत्तम गुण जासे ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणे, आरंजे दोय श्रेण संख्येपे

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहे, अष्टम नांम अपूरव करण तिणें कहे ॥ सुक्ल ध्यांननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अडिग ध्याने धरै ॥ २४॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणिये, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणिये ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणें, उदै नहीं जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहे सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करै किणही परे, तो थाये अहमिंद्र अवर गति नादरे ॥ च्यार वार समश्रेणि करे संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ पडि इग्यारम सीम समीप पहिले पडे, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडे ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नहीं, दशमथकी बारम्म चढे ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेमो आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकरी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरे श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ग्यानी परगट वात, महिमावंत अढारे दोषण रहित विख्यात ॥ आठ वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टे तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर मेलेसी करता निरुध्या मन वच काय, तब अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चवदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरे कोय, पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाभे पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहि मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहड मेरु मंडण, सुमति जिण सुपसाउले ॥ गुणठाण चवद विचार वरणवो, भेद आगमनें भवे ॥ संवत सतरैसे छत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणामी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा भासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सत्तावन बारे सौ नव क्रम भेदनी माल ॥ १ ॥ इग दु ति चौविह पणविह छविह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदे गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि पणिंदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदें होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए धम्म लक्षण लक्षत जीव द्रव्य इह लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंद्रिय पज्जती तीन, सासोसास

नाया मन पम ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षम पज्जत्ती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार ब सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम थाय, प्राणथी जेनि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूना त्रिण२ जेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विछेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नन्न कालें ए पांच न जीव॥६॥चलण सहाई धम्मेंथिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नन्न पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर नसप्पणी सप्पणी काल॥७॥पम इग दो सग सग सग पम इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण, केवलनाणी जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर नवंग कहाय ॥ आदि संघेण संगण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आ तप ने उज्जोय ॥ ए ॥ सुन्नखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तिछंकर पुण्य वयाल ॥ तस बादर पज्जत प त्तेय थिर सुन्न सोय ॥ सुन्नग सुसर आइज्ज जसँ त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनय बीजा नीचअसाय, मिथ्य थावर दशनादर्ग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एगेंदी वि ति चौरिंदी तेय, कूखगई उपधा अपसत्थ वण चौ जेयं ॥ ११ ॥ पढ म संघयण विना संघेण तेम संगाण, एम बयासी प्रकृति पाप त तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरें गेय, असुन दुन्नग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रत तिम जोग बायालीस सेव पचीस किया संजो

ी ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं
नकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वत्ती
तेम,, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि
य ने सत्थि सहत्थे जेह, आणापनकी वेयारण अणाजोगा तेह ॥
१४ ॥ अणव कंख पच्चयना उवत्तगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव
ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव
ए चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इ
रिया जाषा एषणा सुमतीना जेद होय, आदान जंम उच्चार नि
क्खेवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जांण, हि
व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा
सीत उसन मांसा निरवस्थ, अरति जोषा चरिया नेषिया सिज्जा
सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाज्ञ रोग त्रिण फास, मल सक्कार य
न्नां अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव
संजम सम्म, सत्य सौच अकिंचन बंजचेरज इ धम्म ॥ पढम अ
नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संवर निज्जर ज
वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुलज्ज इग्यारम गाम,
धरम साधक अरिहंत ए बारे जावना जाव ॥ सामायक छेदोप
स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चतत्यो जोय
॥ १९ ॥ तिम अहखाय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु
विधि आचरतें के जिय पान्या सिद्ध ॥ बारे विध निर्जर तत्व बंध
ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुजाग प्रदेस जेदें निरधार ॥२०॥
अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सलीनता
बाहिर तप षट जाग ॥ पायछित विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय,
ध्यान काउसग अभ्यंतर तप षट विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु
जाव काल अवधारण थित निरबंध, अनुजागें रस तेम प्रदेसे दल

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चि
कर कुंन्नकार न्नंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना न्नाप
जे जे न्नाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सन्नाव ॥ इम संले
विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावे पांम्यो वरण वस्युं शिव मो
तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपणा द्रव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन का
पांचमो छठो अंतर जाण ॥ न्नाग सातमो न्नाव आठ तिम अल
बहुत्त ॥ ए नव न्नेदें न्नावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष ए
पदवी छै जे पदेअविनान्नाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जि
नहीय अन्नाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवर
कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्ते क्षायक स
असन्नी वेसन्नि, अणाहारी आहारी अणाहारी कपथ्न द्रव्य प्रमाणे ति
जीव ॥ द्रव्य होय अनंत, लोग असंखम न्नाग एग सिद्ध होय अणंत
२६॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनं
थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां न्नावे नहि सिद्धां
तर जोय, सरब जीवथी न्नाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७
दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक न्नाव, जीवत जेहनें वलि परणा
क न्नाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेह
थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादि
नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सर
जिनेसर मुखथी न्नाख्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संम
निश्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त,
र्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते श
पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३
॥ इम नव तत्त न्नेद पमिन्नेदै विवरण कीध, श्रावक आग्रह की
सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुन्न सहन प्रकास नहो न्नवमान

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वमसाखानी पम्सिाख ॥ ग्यानसार ते पम्सिाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणें विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भ्रज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्त्व ञाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंम्क रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंम्क प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आन तेन वलि, वान वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गप्रथर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंम्क चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनायें ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर नगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि नवयोग, नपपात वलि चवण ठिई पज्ञत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संक्षेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुचो हुं तेहथ। कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महिनानी ॥

चौ गप्रय तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य में पांच दंम्क इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य नक्कोसे देह

प्रमाण, नाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवने
जघन्य स्वन्नावक अंगुल नाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागर
विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गन्नय तिरि वणस्सय काय, जोयण
सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगा
वेइंदी जोयण वार, एग जोयण चउरेंदी देह ऊंचै आकार ॥ आरं
काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, नाग एक इग आंगुलनो संख्या
तम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख
नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ सान्नावकथी डुगणो नारय
वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४
सुरनें पक्ष एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो थावर सु
नारकनी माल ॥ गन्नय नर तिरनें षट् विगलनें छेवठ एक, सर
जीवनें च्यार दसेसणाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट् सुरनें सम
चौरंस संठाण, हुंमग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणावि
धयसूईमसूरनी चंड् आकार, वणसइ वाऊ तेऊ नू बुदबुद अप्पा
कार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गन्नय षट् नर तिरि दोय, वेमा
णिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस
रह्या ने च्यार, दार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७
समुद्घात सग नरनें पण गन्नय तिरि देव, नरग वायुनें च्या
सेसनें तीनुं जेव ॥ दिट्ठी दोय विगलमें थावरने मिण्यात, सेसन
तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर वि ति नें एक अच
क्खू दंसण होय, चौरिंडी ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजने
च्यार सेस दंमगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर ति
नारगनें तीन ॥ ए ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण
गन्नय मणुनें तीन अनाणनें पांच नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें
तेर जोग, मनुजने प.रे च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायनें पाच तीन थावर संयोग, मनुजने वार नरग तिर देवनें नव उपयोग ॥ विगल दुगै पण पन चौरिंदी थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीत ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या चवण पपात, गप्रय तिरि विकलेंद्री नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ, वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास दिवस छम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अंस वेमानीय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें पट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अढारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय छए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सव मझार, इह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्रय मणुजनें होइ कालकी सन्ना कइय, केइक आचारज कहे दिठ्ठिवायनी होय ॥ निच्चय पज्जत्ता पंचेंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखातपज्जत पंचेंदी तिरि नर तेम, पज्जत्ता भू दग पत्तेय वणस्सई तेम ॥ ए सरवेमें निश्चे सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गप्रय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर होवै न हुवे सेस, भू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजे असेस॥ पुढवाई दस पयमें भू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ जंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥२१॥वेइंदी तेइंदी पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अडम चौमासो कर जेपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी मुरली मीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सवा जिने सिद्ध अनंते कर्म अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस होय प्रकार, तु अप वाउ

तेत्र वणस्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ ओफल तूरी उस भूमि पाइए जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विभेद ॥ भूमि आकास उस हिम करग आकना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय विण पाइए जेम ॥ ३ ॥ अंगारा ऊाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उप्रामगउकलिका मंमल वलि सुख वात, सुद्द गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल, भूंफोमा अद्दत्तिय सरबे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ काटी माल भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, लाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुर्तें आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलष न कोय॥ कवमी संख गंमोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहाकम पौरादिक बेइंद्री होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय ॥ दीपक ईली घीवेलो गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कृम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्गोप तेइंद्री एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार, तीमा माखी मांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवमोला मांकम पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विभेद॥

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेह वाकथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसे चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥२१॥बेइंदी तेइंदी पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अन्म चौमासो कर जेपुर नग मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी मुरली महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता सिद्ध जिने अनंते रूप अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, तु अर बाद

भेद वणस्सइ थावर धार॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ ओडल तूरी छस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विछेद ॥ भूमि आकास छस हिम करग आकना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूंअर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा काला ओजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उभ्भामगउकलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंवाल, भूंफोडा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठा भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, आल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुर्त्तें आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय वाहाकम पौरादिक वेइंडी होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी होय ॥ दीपक ईली घीवेलो गोगीडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंडी एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इंडी च्यार, तीडा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडोला मांकडिय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंडी च्यार विछेद॥

घम्मा वंसा सेला अंजन रिठा जात, मघा माघवई नारग ए नामे सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नन्नचारी तिरयंच, मछ कछ सुंसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि जुजपरि साप जुचारी तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय॥१२॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेम्न कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगयं पंख होत ॥ सरवे जल थल खचर समुछम गप्नय दोय, कम्म अकम्म जूमि अंतर दीवा मणु जोय॥१३॥असुरादिक दस होय वाण व्यंतरियां अठ, जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु तें दिठ॥ पनरे नेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार॥१४॥ देह आवखो एक सरीरे थितनो मान, प्राण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण॥अंगुल नाग असंखसहू एगिंदी काय, जोयण सहंस साधिक पत्तेय वणस्सई काय॥१५॥ बि ति चउरेंडी अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास, बारे जोयण तीन गाउ इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइयां धणु सय पंच प्रमाण, तेहथी अरध२ कह्या अनुक्रम रयणाए ॥१६॥ जोयण सहस गप्नयर मछ उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त जूनारी पंखी जेह खेचर नव घणु उरग जुयंग जोयण नव होय, नव गाउ परिमाण समुछम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खम्न गाउ उंचास घउपंय गप्नय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहिंदे पम्न ब्रह्म लांतक पांच, शुक्र सहस्सारे उक्कोस च्यार कर वाच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथे तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय जू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार वरस गुणचास दिवस तिम वलि बम्मास, अनुक्रम बेइंदी तेंदी चौरिंदी आउ ॥ २० ॥ सर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, पंचेंद्र

तिरिय मनुजनो तीन पल्योपम थाय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कोसे पुव्वकोडि, पंखीने इग जाग असंख्य पल्यनो जोड ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समूछ्म मणुं जेह, जहन्न उक्कोसे अंतमुहुत्त नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंदी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवछर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेंद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंद्रिय सासोसास आउ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंद्री दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जे वियोग जिय मरणें होय ॥ जोम सायर संसार अपार अनंती वार, जमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार॥२५॥सग सग सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रें साख ॥ जू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ परा तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुसक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७॥ नाण दरस चारित वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धातै सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथाथी जाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ जट्टारक श्री जिनलाज सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर मझार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्भित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आविहां, त्रिगमो करे तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह क अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूढ सूर्य वेख दरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत भले आविया जी, गावे अपछरह गंधर्व। समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० । भुवनपति वीस इंदे मिल्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ३ दस वेमाणिय जुम्या जी, चोसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परमारजे जी, भूमि योजन सम भाव ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिड़काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुभ्र धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण उरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ भवणवइ देव त्रिगमो भलो जी, करय ते सुणज सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपातणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी, कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ भींत ऊंची धणुं पांचसै जी, सवातेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी वीस हजार ॥ थाक श्रम नदिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ उत्तय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें फाकफमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देवछंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसे जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ तिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखे सहू ॥ दीपे असोक तल वारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी, भगवंत उपदिसे बार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग निकूणें करी, गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊभी सुणे ॥ त्रिहूंतणा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ बारह परखदा मद मछर छोड ए, भूख त्रिस विसरै सुणै कर जोड ए ॥ १९ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उंच आकास ए, फलहलै तेज धुत्र चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु घरिय पहिले गढे, होय पगचार नर नार ऊंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्टंग अ र्चि माल ए, रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगमो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण गाम ए॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह ध धन धन्न अवतार पायो तियै॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-दहै ते लहै शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसाय पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूर मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजार कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुझ ऊपर महिर धरीजै रंजन दरसन दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया ना पातिक टलिया, प्रभु जो मुझसे मुख मिलिया ॥ कृ० ४ ॥ समरयां संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुज

ातम पुन्य नरावे ॥ कु० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजे, केसर
दन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणीजै ॥ कु० ॥ ६ ॥ प्रनु दरस
रस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद
कोरो ॥ कु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रनु पंचम आरै, वीस माहा नय
कट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ कु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि
दा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोन सवाई ॥
कु० ॥ ए ॥ नाभिराय कुलंबर चंदा, नव जन मन नयण आनंदा,
लगे सुर असुर सुरिंदा ॥ कु० ॥ १० ॥ जयकारी रिषन जिनंदा,
ह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन नक्ति सूरिंदा ॥कु०॥११॥
ति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंरुण गुण निलो
तवन करिस प्रनु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥
री नाम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रूढे हसी ए ॥ तेण पूरी
दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु
नार ए तसु गुणहि न लनै पार ए ॥ तास नयर अवतार ए,
अतिशय रूप नदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,
क्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै नूपतिनें कह्या ए,
जोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै
न नदार, धरणी जिण धरयो नार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,
बल कोय न मांन॥ चनथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी
॥ पांचमैं पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप कदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर भत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम कगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तें सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोछव जननी पासें ठावै, तिहांथी सुर सव मिल दीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी कगो दिवस कदार, ~~~ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२कला ...म चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला ... विद्यातणो निधांन, जोवनवय आयो परणायो राजान १९

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रभु रहतां काल सुखै गमे ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समे ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावे अवसरू ए, देइ संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरे महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गोंडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पद्मावइ जास वदे सिर आंण, सांमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुण-शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोडी पार्श्व-जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडहि लाख पचास ए, सागर जिनसासण भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, इखाग सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ नयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उच्छाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु पाले पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हथणापुर गाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवर्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवतर्यो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिश नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पतलो लोक कुरंग ए ॥ तो छलयो सति संक ए ॥ तिण पाम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर अति खलभल्यो ए, भव भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदि मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला परले घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल बल अयण जोगवे ए, पीय राज भलो पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमरलें मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेनें दिण जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह ए, वरतावी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निद्धि, सह सोल सहस जक्खे अहो ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर

वरा ए, बत्तीस मौमबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम ए, निन्न
वे नमें बे कर जोम ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस
सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्कण ला
वएय लीला नरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह
स अंतेकरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
यण नंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुनपु रे पुण्य प्रमांण
ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस
सहस पचवीस ए, सव पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं
तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
सार ए, बिहुं लीधो संजम नार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर
ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण
समाण ए, बिहुं पाम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम-
हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय लहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण
ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,
बिहुं आगलि इंड अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर छत्र चमर विमल, बिहुं
पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग
न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं नवयार नुवन नरी ए, बिहुं
सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं नंजी नव फंद ए, बिहुं उदयो
परमाणंद ए ॥ २ए ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर
तरु समो ए ॥ सुणि अति संऊ विहाण ए, तिहां इह परनव नवि
हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उछव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय
हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज नुवण
रयण ॥ ३१ ॥ इम नगते नोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय जणि ए ॥ सरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ भविक जन धर श्रीजिनउपदेस, छूटे कर्म कलेस ॥ भ० ॥ आंकणी॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, भाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए भाव विचारिये जी, इम भाखे जगदीस ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ भ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ तीय वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोडा आदरो जी, नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ भ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ भ० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति ग्रहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जांणनें जी, तीने दंड विशुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पडिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज भय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ भ० ॥ धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ भ० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक च
घात ॥ १२ ॥ न० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्दे ३
होय ॥ ए पडिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ न०
इम पडिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम
करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ न० ॥ कलस ॥ इम वीर जि
वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ करे सूत्रवांणी मन सु
णी, सुणो भवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, सु
थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पडिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत ग
कही ॥ इति श्रीमुंहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए घन सासन वीर जिनवरतणो, जास परसाद भप
थाये घणो ॥ सूत्र सिद्धांत गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकि
अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप ग
करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमु
आलोइयै, जीव निर्मल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष ल
तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किण
कारण वसे पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकल्प कहीजियै॥
कीजीये भेद कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी
कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नांम करि दोष ती
तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथो आ
ह्रिया दोष ऊपजे तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एक
दोष धर प्रायछित्त भेद विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरण- तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंमित थाये अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपमिलेह्यां पुरिमढनो तप धार, गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदे मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी सादमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथी वृद्ध॥ बहु वि ति चौरें- डिय हएयां वि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ९॥ उदेही कुलियावमा कीमी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंडी उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपद्रव उठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें उठ विचार ॥ साध समक्ष लोक समक्ष राज समक्ष, कूमा आल दियां डुइ चौथरु उठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंमायां तेम मरायां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवमना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतं॥ेे रोस ॥ करीग डुगालस बार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छादुक्कड देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमण
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधे जणणा,
क२ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल,
गे आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गु
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल अ
रां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कि
वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयें ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आ
चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरण
छुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावे युद्ध, रा
भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परदे
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदा
नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण
पवास, संकल्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोल
मिरखावाद, अदत्तां दांन स्युं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अ
उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२ आंणियै ए ॥ २१

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत लागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सि
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलत
नववाडि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फ
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधुअने श्राव
पोसाध, एकेंद्री सचित्त संघट्टे कीध ॥ वीसर भोले सचित जल

ध, देह एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्रे, एकासण तिम पुरिमड्ढ मात्रे ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो, तिम हवे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार जीमतो राखे, व्रत पच्चखांण करे पट्ट साखे ॥ दोषे मिच्छामिदुक्कड दाखे, आलोयण लेतां अभिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावे पार ॥ तोपिण संक्षेपे तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयने ॥ ए कांत पूछे गुरु बतावे, शक्ति वय तसु जोयने ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीपद्मसिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरे ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत, वलयाकार विराजे रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर गाजे रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अभिरामा रे ॥ मूले प्रथुल सहस दस जोयण, उवरि सहस कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे वि विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैइ इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण ... रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुगामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसे आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उछव करवा, सुरपति ज्ञक्के आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं ज्ञवेरे, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ वाव२ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्तंगे, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥ ए॥ वाव२ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसे, कह्या नही ए कूमा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारया रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणे रे ॥ जिनपमिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणे रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जूना वावन, नंदीसरवर दीपे रे ॥ द्रव्य ज्ञाव विधि पूजा करतां, मोह महा ज्ञम जीपे रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवाज्ञिगममें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेके, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचे तिहां पूजा, ते अनुज्ञव इहा ल्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपे वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरे जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारे तारे कर उपगार, किण २ ठामे कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्र सोई द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरे करमाज्ञूमीनो कहूं अधिकार ॥ २॥ पहिलो जंबूदीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणथी दिशि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिशि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय॥ इण बिहु करमभूमी छ आरा फिरता जाय॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि भजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधरस्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, वीतसोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार॥ एहवो जंबूद्वीप मह गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद॥ ९ ।

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपे बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ पिहुलो विहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छे जिहां, छणहिज नामें एह ॥११॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम धातकी, खंड गिणीजें दोय, विजयमेरु पूरव दिसे, पश्चिम अचलमेरु जोय॥१२॥ दी०॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन२ ॥ निज२ मेरुथी मांहिले,

खो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो;
कि स्वयंप्रज्ञु ईस ॥ ऋषज्ञानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस
१४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥
त्र धातकी खंममें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली
हुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें,
जयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रज्ञु नमूं, दसमो
विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥
० ॥ १७ ॥ वारमो चंद्रानन जिन, पच्छीम धातकी मांहि ॥ विचरै
ारुं जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी
क ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-
धि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूरी जेम विचाल ए ॥
लह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥
ालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधे पगे ॥ विच पड्यो
वत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख
जन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमज्रूमी ठ ए कहीजै, धात-
खंम जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधे पुष्करनें पूरव दिसे, मंदिर
मे मेरु तिहां वसै ॥ पच्छिम विद्युमाली मेर ए, इहां किण इतरो
मे फेर ए ॥ त० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥
२ मेरे तीन तीने, करमज्रूमि तिहां कही ॥ इम ज्ररत एरवत
हाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली,
सता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंमे तिम पुष्कर
ी, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही ॥ वार २ कहनां ए विसतार ए,
हला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ त० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमदिज मन गमें ॥ पूरवे पछिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरवे पुष्कर अरध मांहे, सरव जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन संतरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ॥ देवजसा भगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए॥ ज०॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पछिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए॥ चौरासी पूरव लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ हिव उत्कृष्टे भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ ज०॥ जिण लहे पांचे तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहा पिण छै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरे नही जिनराज ए॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन गुणगेह ए॥ ज०॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आ तारण तरण विचरै, केवली दोय कोड ए ॥ दोय सहस कोडी सुसा बीजा, नमुं वे कर जोड ए॥२५॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करम भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजय हरखे जिनंद सानिध नेह धरि प्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप .... संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधोपुष्करद्वीप एवं द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विच

रता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीभाइाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र तणी फ मदेज्यो, तुम्हे नरभव लादो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो मांहे गाजै, आबू मारूमे देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला गो, ऊंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावे, निरखंता भिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी है बारह पाला रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला गायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढार वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू लमानो रंग सुहावे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्केसरि देवी सहा ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाम वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाइण आरास मंमायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी फेरणी, दल मारबण जेम ऊकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया फिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ ऊत्तरे पाहण जेतो, जोखीने पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ ऊगणिस कोम सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागे, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठे चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवम कोई, भूमंमल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि ति ण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

नगर तिमदिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेदनी ते, ते
अनुक्रमें॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंगईसर नेम च्यार तीर्थंकरा,
अरध मांहे, सरव जीव सुखंकरा॥ २१ ॥ ढाल॥ वैरसे
सेंतरमो, श्रीमहाभद्र अगरम निम नमो ॥ देवजता
देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए॥ भ०॥ जिव
अरध मांहे, कह्या पश्चिम भाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युन
दिसि, विचरता वीतराग ए॥ चौरासी पूरव लाख वरतां
२ जिण तणो ॥ पांचसे धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण
॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिन वीस ए ॥ ि
भेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर
भरते जिम पांचे लहे ॥ भ०॥ जिन लहे पांचे ते
एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे बत्रीस
तिहा विण ते जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनव
नवसय केवली, नव सहस कोमी अवर मुनिवर, वंदिजे
वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पं
नही जिनराज ए॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वी
गुणगेह ए॥ भ०॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां
ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए॥
तारण तरण विचरै, केवली दोय कोम ए॥ दोय सहस कोमी
बीजा, नमुं बे कर जोम ए॥२५॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे ...
भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीत...
ए॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखवि...
जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी
स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंम ३ पो...
३॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस भिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवे नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरूत्रीस सहस सत साठ अंबे गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंरूल रुचक वखाण, चउ२ चेईहर साठ सवे त्रिहुं गण ॥ इकसो चोवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसे चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसे सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ए ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सही ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुक्ष, इग्यारेंसे सत्तर सुक्ष ॥ कुंम त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणिये॥१२॥ त्रिण लाख सहस वलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवाले सव मेलीजे रे, जिनवर प्रासाद नमीजे ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्षा रे, दोयसे निव्यासी कयरुक्षा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजे

हवो जिणहर पांसे, वार कोमनी लागति न्नासे रे ॥ जा
णी जेगणी, आलानी अनव कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥
ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा०
वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३
वाम्रो दीठे, ते तो लागै नयणे मीठेरे ॥ जा० ॥ तिहां वे
पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण
गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख
ऱ्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवन
घातो, झिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥जा० ॥ मण चवदेसै
लौ, जिण बिंबनो न्नाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ थं
न्नोम सोन्नागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥
॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥
॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन न्नावी
जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥
॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो
जा० ॥ सादमी वछल कीज्यो, जातम्लीनो जसलीजो रे॥
॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली
जा० ॥ सुणिये छै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा
॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे
जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा
२१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषन्नाननं वयमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि
णा ए॥१॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिन्नुवन सासता, प्रणमुं बिंब
मणा ए ॥ २ ॥ नेऊ्हर सग कोमि, लाख बहुत्तर, नेरय

घदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, कुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीतरुणा मुखथी सांजलवा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरवा रे, नेमी सुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर लोजतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भराविबो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अगरह सत्तावीसमे रे, माधव मास मकार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी लघु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हांरे हुं तो भरवा गयी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवड़लो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्ये कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातड़ली तव थास्यें महारी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उलवस्ये नहीं क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छे दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्था

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस क
अरुवन लख अधिके जोमी ॥ छत्तीस सहस अधिक कह
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो
पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी।
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, प्र
तिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर ज्पो जी ॥ २ ॥ वि
जिनप्रतिमा बोली जिन सारखी, हित सुख मोक्ष निदानो ज
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥३॥वि
जीवाजिगम प्रमुख मांहि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो ज
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी॥४॥वि

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, वि
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारि
समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो
सदा मुक्त परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिं
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्टा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चं
प्रजूजी विराजै रे सूरत बिंदरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज॰ ॥
जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीव
सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रजु देह ॥ २ ॥ ज॰ ॥
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घन
घन जिम प्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन जाण ॥ ज॰ ॥ ३ ॥

खंता सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियं· तरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपुरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाडलो जी, दीठे मीठे आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाडा सम संवेगना जी, अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजे जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजे, म्हारो मनमो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

करी रे लो ॥ २॥ हांरे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्धि जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठडी रे लो॥ हांरे कांइ कूडूं खाइ ते मिराईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतडी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक भगत वछल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उमोगलो रे लो॥ हांरे कुण जांणें अंतर गतिनी विण माहा-राज जो, देजे रे हसी वोलो ढंमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंसमली अणियाली का-मणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुझ जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे वलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो कलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजे नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें भुहारघा भोंयरा रे लाल, सूरां छत्र सवेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देस जाणीनूं देहरूं रे लाल, मंडो देस मेवाड ॥म०॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ खरतर वसई मनरमूं रे लाल, नि-

अमल अखंम अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध ॥ समरचो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव॥अ०॥ता०॥८॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ए ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूम कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुफ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुफने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीगं दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुक्ख ॥ परदुख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवकने द्यो सुक्ख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखे जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकाले दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछे नहीं जी, गमरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुफ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धरम१ सहू कहे जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, संशय पमयां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे
जे दरसण विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥आ०॥२
नय एकांते दरसन थापै, पिंम भरे ते पापे रे॥ आप आपणा मति
आलापैं, ते भूलो भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या
द्वादनें संगे, जे ग्रहे आतम उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजे तसु अंगे
सिद्धरमणने रंगे रे ॥ आं० ॥ ४ ॥ भव कोमाकोमीमें भमतां, तुम
दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज भले
हुं आयो रे ॥ आं० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो
जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण
उपजाउं रे ॥ आं० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, स्वामी दर·
सण दीजे रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै
रे ॥ आं० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांभलतां
ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥
तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे·
हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय
प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि का·
रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम जोग
॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह नि·
हाल ॥ तिम प्रभु भक्ति भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥
॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अभेद॥ निज
पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥
अंहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

सरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी; कीधो अधिको लोज्ञ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज्ञ ॥ कृ०॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुजनें लालचें जी, रात्रीज्ञोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण ज्ञव परज्ञव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुज मिछामिडुक्कम्ं जी, ज्ञगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुज आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषज्ञदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रज्ञु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कम्ं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, ज्ञव २ ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण ज्ञेट्या नाज्ञिनंदन जिन तणा, करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि ज्ञणें ॥ ३२ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रुषज्ञ देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

रुषज्ञ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, डर न चाहूं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, ज्ञांगे सादि अनंत ॥ रु० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

उमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कु० ॥ ए ॥ ज्ञ
वंत ज्ञाण्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाख
खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ कु० ॥ १० ॥ आ
पर्रूपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादिये
जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी
तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाम्रिया जी, किहां जइ करुं
पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उग्रत करूं अ
विहार॥ धीरज जीव धरे नहीं जी, पोते वहु संसार॥कु०॥१३॥
सहज पड्यो मुऊ आकरो जी, न गमें ज्रूंमी वात ॥ परनिंदा क
रता थकांजी, जाये दिन नें रात ॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखे धंदे पड्यो जी,
नरके करसी रीव ॥ कु० ॥ १५॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो
हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख ज्ञली दिये जी, तो मन आणूं
रीस ॥ कु० ॥१६॥ वादज्ञणी विद्या ज्ञणी जी, पररंजण उपदेश
॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कु० ॥ १७ ॥
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इ
मनमांहे ऊपजे जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ कु० ॥ १८ ॥ त्रिवि
२ कर उच्चरूं जी, ज्ञगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञांजू वली जी
छूटकवारो दूर ॥ कु० ॥ १९॥ आप काज सुख राचतां जी, कीध
आरंज्ञ कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर ठोम
॥कु०॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंम ॥
कूम कपट वहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंम ॥ कु० ॥ २१ ॥
अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान॥ ते दूषण लागा घणा
जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही
जी, राचे रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कु० ॥ १३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ कु०॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीभोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कु० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कडं जी, भगवंत तोरी साख ॥ कु० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कु० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कु० ॥ २८ ॥ रिषभदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कु० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कु० ॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, भव २ ताहरी सेव ॥कु०॥३१॥ ॥कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, करजोडि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणें॥ ३२॥इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री ऋषभ देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहूं रे कंत ॥ रीझ्यो साहिब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहियै संभवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ माहं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुज नांम ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह प्रड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन भेद ॥ सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंचलता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए निजमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ मत२ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलुं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग संचरुं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पानने, किम न्नाजे विप पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल न सुलन्न कृपायकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, वहिरातम धुरि न्नेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक म ह्यो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानो थइ थिर न्नाव॥परमातमनूं हो आतम न्नाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, न्नरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिन्नंगी, विविध न्नंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्णा रे ॥ ... रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नेता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ भयदान ते मल क्षय करुणा, तीक्ष्णता गुण भावे रे ॥ प्रेरण विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी भोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भं ग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनडो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो भाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज नी वासर वसती ऊजड, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखडुं थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यान अभ्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरनें हाथे, नावे किण विध आंकूं॥किहां कणे जो हठ करी हटकूं, तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांहे ने सहुथी अ लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडित जन समझावे, समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ छै नर, एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स गलूं सध्युं, एह वात नहीं खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य तें

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परां सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार तं णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी॥३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुस्क अनेक न कारज को सरयो मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जग जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्य कीध सचेत जरा दूरे करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल नगर महानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ ।ल, वाट विहमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परताप,

वीता सहु विखवाद ॥ आवेलाल, मन वंगित मुऊ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाय, मिलिया गो प्रजु आप ॥ आवेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमाकल्याण ॥ आवेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥ तीन कमल मुऊ संग, आतम दरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं गाजे रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुएय संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजुगुण अनुजव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगे रे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखे रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखे रे ॥ नगर मदेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद सुरिंद, वांगित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई क्रतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांखीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो ने नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो क्रमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो प्रेमनो, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवले, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करे, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संजारज्यो, गो० ॥ इम जंपे जिनराज हो ॥गो०॥वा०॥ ७ ॥ इति पदं॥

॥पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥१॥ गुण गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अटवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरामी रे ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज है, जवदुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रजूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितमांमें लागी वे चूंप ॥ सवाइप्रजूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजे अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वसेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पामीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणिये, सो य घमी सुप्रमांण ॥ स० ॥ जगतवछल जल जेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंदनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घमी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो जवर चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुम पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थाये बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥४॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण लांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गछपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं मदिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छे प्रभूजी म्हारो अंतरजामी, पूरव पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाणयो छे साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभुजीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी तादृरो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगे हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठां आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा ऊलसे कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका कांइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छे जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे

तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोम, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फळ्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधां सघलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी माहाराज, कारज सगला सीझै ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भ्रमरतणी पर मोह्यो, भेमायो नवि छूटे ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने, नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छे बहुला, मो सरिषा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम नही तुझ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुझनी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतों, कहो कुण मति नपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणे किंचित गुण भाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुझ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मेमायो ॥ लाभ उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरूं पलपलमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं छिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ का हूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रनु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन नुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ नाव दयासागर प्रनु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रनु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण नरतमां ॥ कुण करशे उप· गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथमाय ॥ वीर विहूणा जीवमा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नवसमुद्रनो रे, नव अटवी सञ्चवाद ॥ ते परमेसरविरा मिल्यां रे, किम वाधे उल्लादो रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो नवि· जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा· रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ नव नव आगम संगथी रे, देव· चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम ॥

॥ शत्रुंजय ऋषन्न समोसर्या, नला गुण नर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गर्या रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, शद्धे जरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोमी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा गती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं वहेनी, विमलाचलगिरि जईयें रे ॥ आ० ॥ सुण वहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम जांखी ॥ जरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणगिरिवरियें काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख गोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजावें ॥ कोमि जवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीगे॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ ने दीगे रे॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें हलग करस्यां ॥ अभुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती बिच भमतां, भवस पर नितरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ हवे ए गिरिवर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युय गति लहे, नवग्रैवेक हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेशालापुर बाहिरे जी, आव्य श्रीमहावीर ॥१॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, भले में भेट्या श्रीजिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग सं ध ॥ पच्चक्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीय ॥ ज० ॥३॥ [illegible]सेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण ठेठ ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे तपवा जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से द्रव्य देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, होे सी सफल मुझ आस ॥ पक्ष मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जो, जीरण कीधी तइ यार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, वेवों घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे जे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्यूं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवसर कऱ्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने वा कला जी, प्रभूने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही लियइ जो, तिहां प्र भू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव बजावे डुंडुभि जी, जै बो ले कर जोडि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढाबारे कोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ क्षीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा दिक सहूए कहे जी, धनश् पूरणसेठ ॥ तेंजी करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा जित डुंडुभिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो विखवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंडल ठांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर धन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आपा पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकांस्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछे जी, जीव पुन्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण बांध्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घमी एक सुर डुंडुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहिनो जीरण तो सही जी, केवल अविचल गांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें थापियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुझ मिच्छामिडुकडं ॥ १ ॥ अरिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु० ॥ २ ॥ साते लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चवदे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार२ प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

वियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध २ करवोसरुं, दुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निंद्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आंण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारया दिन ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भव माछला, झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लांने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालभवमें किया, आकाराकर दंड ॥ बंदीवान मरावियां, कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना अति तिख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारने भव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीभव तिल पिलिया, पापे पेट भराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खडयां, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूडाने दान किया घणा, दीधा बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधेवाही आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया नावी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छींपाने भव छेतरयो, कीधा रंगणपास ॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूरपणे रणझूझतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

छलंव्या ॥ आरंज्ञ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, घरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूमा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली ज्ञव ऊंदर गिल्या, गिलोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे ज्ञवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ ज्ञामज़ूजातणे ज्ञवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पामंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंज्ञ अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाम्यिा, रोदनविखवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने ज्ञांगा, मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे ज्ञवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २ए ॥ सूआवमे दूषण घणा, वलि गरज्ञ गलाया ॥ जीवाणी ढोव्या घणा, शीलव्रत ज्ञंजाया ॥ ते०॥१०॥ ज्ञव अनंत ज्ञमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ कर वोसरुं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणज्ञव परज्ञव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुऊ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अहम्मदावादे पास ॥ गोमीनो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुज्ञ वेला शुज्ञ दिन घमी, महुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने ...ी, थई प्रतिष्टा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी भूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वास विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुऊ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ महक ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ठगे मले जे, टका पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी, लाव घणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुऊने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकमो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संजलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥११॥ पाछलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संजलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी॥ जतन करी पहुंचाडे थांनक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुऊने होसी बहु फलदायक, ज्ञाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रदक्षीने थुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो,

आपणे थानक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाह, ईम तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिलक निलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपुं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ए० १९॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उछव दिन२ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठाम२ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी भजाम ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥ ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोडी काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वहिण एक वृषेभ जोतरे ॥ पारकरथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ घारे कोइ आया जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुछ को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंडावुं किम घरघे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटा किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, पद्मराज आवी इम

फडे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी जलटस्ये खांण॥ २ए ॥ श्रीफल सजल तिहां किए जुत, श्रमृत जल निसरिस्ये कूत ॥ खा राकूश्रानो इह सहनांण, भूमि पड्यो ठे नीलो गाण ॥ ३० ॥ सि लावटो सीरोही वसे, कोढ पराज्ञवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो॥रोग गमाडुं ने पूरुं आस, पासतणो मंमे श्रावास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, देम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुश्रा, सिलावटेने गया तेम्हवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांम घृत चूरमो॥ घमे घाट करे कोरणी, लगन ज्ञवे पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज्ञ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंमप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंमे श्रावास ॥ दिवस विचारी इंमो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुज्ञ लगन शुज्ञ वेला वास, पबासण बेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगमे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांज्ञली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विडारण जरु जग, तेहनो अकल सरूप॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखामे निजरूप ॥ ३ए ॥ गिरद गोमीपास जिन ॥ आपे ारथ ज्ञंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चूकां मांनवी, ाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प
वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ नि
धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो
धरे, पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ दोजागीने दे सोजाग ॥ पग
विहूणाने आपे पाग ॥ गांम नही तेहने ये गांम ॥ मन वंछित पूरे
अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने ये आधार, जवसायर उतारे पार ॥
आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां
साद दिये जक्रराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
प्रकाश ॥ गूंगाने ये वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो दा
तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेरीतणा, श्रीपार्श्व
नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध
दूरे टले, डुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विष
अमृत उपकार ॥ विषधरना विष उतरे, संग्रामे जय जयकार॥४९॥
रोग शोग दालिड डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजतनू २ डंज उपशाम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर ज
पंते ॥ जूतने प्रेत ओटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते
॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ डुष्टा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा उ
सपंते ॥ गर्जबंधन मणं सर्प विछू विषं, बालिका बाल मेवाजलंते
॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका
दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वा
आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लीहो मिले सुजस वेला वले
सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाभय ह
कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग भणंते ॥ वदत वर प्रीत
प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नाम अभिराम मंते ॥ ५५ ॥ इ
श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं न
संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, भम
आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २
एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फे
दाणभत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लप्नामो ॥ नहि कोइ उ
हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥ महुक
समा वुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वु
ति साहुणो त्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्या
कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शाशनं ॥ १ ॥ मंगलं भगवान्
रो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थलभद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आ
रक्षा करं वज्र, पंजरा भस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं
शिरस्क शिर संस्थितं, ॐ नमो सव सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥
॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उ
झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव साहू
मोचके पादयो शुभे ॥ एसो पंच नमोक्कारो, शिला वज्रमई त
॥ ४ ॥ सव पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च

ष्ठेसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रनावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिन्निः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य नस्यान्नयं व्याधि, राधि श्रापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा स्तोत्रं संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण नवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोम, नूयमंम्ल विचरे तारे नवियण कोमि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे नेदे सिद्ध थया नगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गछनार धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंन्नीर, तीजे पद नमिये अचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र नणावे सार तप विध संयोगे नाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण माइण नूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गे, अहो भव्य लोको भुला कां भमो गे ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गे, पड्या पाश मे भूतभाने भजो गे ॥ सुराधेनु छंडी अजाने अजो गे, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो गें ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाडने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना डुख दालिद्र दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो गे, कुशीले करी देहने कां दमो गे, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअडे मेह वूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्रांण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयरकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पम तंबोल ॥ घरे सुघरणो निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम नदयो अविचल जांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहांण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वारू विलसे वंछित कोमि ॥ महियल मांने मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे बहू ॥ कहे ला वण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥९॥ इति पदं॥

॥ अथ शील शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रनात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजियेए॥ १॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी न्नरतनी बहिनमी ए॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुबल न्नगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रुपन्न सुता ए ॥ अंग रुपी त्रिन्नुवनमांहि, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उमदना बाकला वीर प्रति लान्या, केवल लहि व्रत न्नाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लन्ना ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव डुल्लन्ना ए ॥ ५ ॥ पंच न्नरतारी पांमव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशं बिक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नामे सुरन्नुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां ।
पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो
भण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अ
शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधी
वाग्रकी जल काढियो ए, कलंक उतारया शतिय सुनञ्ज चंपा
उघाम्यिो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिव
गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नामनं
॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांम्वरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पां
माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ श
वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम
ता पातिक जाए, दरसन दुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधान
नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पम्यिां शीलज रार
त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन. जं
पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोल
शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरें दाखी शास्त्र वे साखी, उदय
जापे मुदा ए ॥ बह उवीनें जे नर जणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ पृथ्वी
रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ
वतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गं
करत धरत गात्र पात्र, विरुद्ध विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ वि
प्रजु आये चंग, वाणी गुण सस जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शं
तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रे
वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी
अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, जये

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नंद चंद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक ऋद्धिसारीज०॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हांने० हाथ लकड़िया कांधे कंबलिया, शिर शोभित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्जल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जं यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३॥ थिवरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥५॥ करतरामऋद्धिसार वंदना, निरखत एसो भेस ॥ म्हां०॥६॥ इति पदं॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहंत२ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय२ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ स्वाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुंदुभि नाद बजाते हे, धर्म ते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मन लाते हे ॥ रामऋद्धार कहे ऋद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ३

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं उठे परभात, चार घडी ले पाछ [illegible] समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायरपार ॥१

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म, कवण अ मारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले ले मन शुद्ध, धर्मनी हैये धरजे बुध ॥ पमिक्कमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पच्चखाण सूधि पाले जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सझाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखमी, धर्म न मूकीश ए के घमी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंगा अधिकानो परिहार ॥ म जरिशकेनी कूमी साख, कूमा जनशुं कथन म जांख ॥ ए ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अजक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गु ली, मधु धावमी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बेबे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंमी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म जरजे पिंम ॥ १५ ॥ समकि

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिनकार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो करसंचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरविवर्जितजंतुगण, प्रातीहारिज आव तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंता प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेडे वेदपयेण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमसुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उववासे पारणो ए, आपणपें विहरंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंदभूइ इंदभूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि संचरतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज संजायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिक्ख लेई सिक्खा सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३
जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गे
यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु नक्ति, सामी गोयम ऊपनि
॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग नरे ॥ २४ ॥ जो अ
पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चर
सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणह
संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥
पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे इ
काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुज ए अनिमान, तापर
जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि
रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस ध्वज वम सहिय
पेखवि परमाणंद, जिणहर नरतेसर महिय ॥ निय निय काय
माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गो
यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक
जृनकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन नणी
वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ
चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांम घृत आण, अमी
वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंच
यां शुन नाव, उज्जल नरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग,
वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण
प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे
णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाण
हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण
पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी ज
गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम नणे

गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस वहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए वालक जेम, अहवा केर्म लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें जोलव्यो ए ॥ आपणो ए ऊंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लह, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गुणनिलो, होसे सिवपुर गउ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह कार पल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधि ॥ जिमगंगाजल लहिरपां लहके, जिम कणयाचल ते जें झ लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

देसा, जिम सुरतरुवरे कणयय तंसा, जिम महुयर रा॰ रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, ति॰ रु केल घने ॥ ३७ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरत॰ मा जिम जगमांहे, पूरब दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम रिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि॰ वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम भू मीपती भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलवधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अटमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥४२॥ पणवक्खर पहिलो पभणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें॥ श्रीमिति सोभा संभवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय भमी जें, कवण काज आयास क रे ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पभणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

गो
॥ एँ ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो रास,संपूर्ण ॥

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपण्णं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयमं सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ ईंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो नहीं छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटंता भव सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे दीप ए, दक्षिण ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

सेत्रुंजो ने श्रीपुंडरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विमने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजेना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पुरवे सुखकांम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने गांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपणे, छवीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यांन धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपणे, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणें विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो पर्वत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुंजसाधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, तेगरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

हूं अंगज तुझ ॥ इंद्रे आएया अकृतवात, प्रभु आपे संघवीपद ता स ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभरा बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष भदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी कीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेमिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू की सहु देस, भरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भगत कीधी अतिघणी, सं घ चलायो सेत्रुंज भणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम साथे लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्धि, भरते साथे ली धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण गंमे रही महोछव कियो, भरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊम पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे बलि दीयो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, भरत करायो सुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ भरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इस अनेक प्रतिमा प्राशाद, भरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, लगलोदी जाणे संसार ॥ १८ ॥

ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १
डंकर सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ अतलवा
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करावे
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब जंभारीयो,
ति तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी
कियो भवतारो जी ॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धा
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी इव
इशानेंद्र कराविया ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥
देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंज
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनं
ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविये, ए
उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इंद्रनो कियो, ए छ
जी ॥ चक्रवर्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥
अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरें
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु
पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय करावि
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय कराविये, ए
उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दशरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्र
वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविये, ए इग्यारमो उद्धारो
॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी
॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पार जावो जी ॥
॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेट्या भगारो जी, ए

स्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करो, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अढोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचारे जी, वाहमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते वे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पांमीजे न्नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांजलो जिम वे तेम॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो न्नेष मांनता, लान्न हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे बोम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक न्नणी, न्नोजन पून्य विशेष॥ सेत्रुंज साधु पमिलान्नतां,अधिको तेहथी देख ८

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो आसाउरी ॥

॥ जरततणे पाट आठमे, दंमवीरज थयो रायो जी ॥
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रु
उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात वी
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपा
णो, सोनानो विंब सारो जी ॥ मूलगो विंब जंमारीयो, पश्चिम
सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफ
कियो अवतारो जी ॥ दंमवीरज राजातणो, ए वीजो उद्धारो जी
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंमवीरजथी जिवारो जी
इशानेंद्र कराविया ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथ
देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो क
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी
ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचम
उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ जुवनपती इंद्रनो कियो, ए बठो उद्धार
जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८
अजिनंदन पासे सुणयो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कर
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ए ॥ चंद्रप्रजु स्वामीनो
पोतरो, चंद्रशेखर नाम मव्हारो जी ॥ चंद्रयशराय करावियो, ए
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो
उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रत
मी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र करावियो, ए इग्यारमो
से० ॥ १२ ॥ पांमव कहे अमे पापिया, किम छूटां
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप
॥१३॥ पांचे पांमव संघ करी, सेत्रुंज

ख्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करो, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स त्यासिये, वेसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते वे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पांमीजे नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांन्नलो जिम वे तेम॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ नगवंतनो नेष मांनता, लान हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह त्या, पापथी नाखे गेम ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलान्नतां, अधिको

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेत्रुंज गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ ए सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैत्रुंज चढी, एक उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि जी ॥४॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते भेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ से तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभ जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, वली बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते आये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भैंस घोडा मही, गज मद चोरणह जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ छूटे छम्मा तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥१०॥ कुंवारी आजका, सधव अधव गुरुनारी जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छमासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक पहनो पातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज पा

करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ छहरी पालतां चालिये ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मिल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वडने चोंतरे आवि ॥३॥ से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परभात ॥ सेत्रुंजनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥४॥ चढिये हिंगलाजने हडे ए, कलिकुंड नमिये पास ॥ वारीमांहे पेसीये ए, आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ॥६॥ वंस पोरवाड परगडो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमतीमांहे भला बिंब ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अदभुत आदि प्रबंध ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ए॥ धरमदुवारमांहि नीसरुं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमतीमांहे भमंत ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कलशा अगोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंडरीक गणधार ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३॥ से० ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी भूमि बिंबावली ए, पूंडरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंड निहालिये ए, अति भली छलकाछोल ॥ चेलणतलाइ सिद्धशिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

ज. ततरूं ए, सिद्धवधूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, ली धा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल क्षेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठां ज्ञणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव त सोल वयालिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत णो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गञ्च खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, सम यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद था य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ शि खरसमेतनो, महिमा वर्णी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियल प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन टो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनो कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए त रथ होय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा स जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धर ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर वली ॥ विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उछव धरे॥
तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु
क्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग ॥ अवस
र दे संवत्सर दांन, संजम लीनो आप सुजांण ॥४॥ कर्म खपावी
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधांन ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि,
भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पं
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक
श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवि
यां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठाणुं सही, दोय लाख
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी सं
ख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पुरवनो आय, कंचनवरण सरीर
सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं
भीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत
सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेच
र किन्नर सुरी, इंद्रादिक सहु उछव करी ॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो
सही, अगाढ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे
त सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खाणी, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण सरीर मनोहर प्रभुनो जाण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधान ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसे उच्चपणे प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशंभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयजयकार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरसमेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रगट्या चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढा तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥ पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि छलाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी दो लख श्रादनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकएयाी संख्य जाण ए, नायकयक्ष कालिका गण ए ॥ उल्लालो ॥ गण ए शिला

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर जए नंदन सदा होत सुमंगला॥३॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रौंच सोहै सुभगे हसै॥ पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुणगण जाउ ए॥ उल्लालो ॥ जाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धर नृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलत णो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई से त‸ कही, तीन लाख पूरब थित कहावै एकसो गणधर लही॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहतर श्रावक संख्या सार ए॥४॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई, ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनंद गहजहो ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमरसु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिया ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोहता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुप दोयसें देहनो कंचनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, धू त्रिण लाख दोय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस धवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रा संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावक न्नाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि व र लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार लरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्र वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनु दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, से सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आवखो, तेणवे गणध दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि मणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ स मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, जाए सुविध सुजन जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जाए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रजु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महिपत्ते, प्रगटी च्यारुं उर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ जहिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंबन सुन्न श्रीवछनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥९॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या उर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रजु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ धनर संभवि साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रजूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिनुवन राजा, खम्ग लंछन प्रजु पाय जी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणध
षट्उत्तर सहस चोरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन स
स वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न०
अमतालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज
क्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥
न० ॥ सहस मुनीसरनें परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा
स संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥
५ ॥ हिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या
मादेवी अंगज रूपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥
कर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख
वरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सह
मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सह
दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥
एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजा
साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ए ॥ नगरी नाम
अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सु
जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन स्येन सो
वन सम काया, धनुष पचास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वरसनो
आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस
मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय
श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख इ
ग्यार चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघ
निध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ सातसौं मुनि
परिवारे, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर विधि
पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमो२ जयन्नांण ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमांण ॥ श्रमणी बासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर पन्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जयकार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छतीस गणधर सीस ॥ ज०॥७॥ बासठ सहस मूनि वसै जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रमाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसे मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ ऐसें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गज लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥१२ ॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ वसे साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्खनो जी, श्रावक संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरघा जी, देवी बला गंधर्व॥कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ज०॥१५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्ये लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी बिछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरुाए देशी॥

॥हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥२॥ श्री अ०॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांण लाला ॥सहस बहुत्तर लाखनी लक्ख श्राविका संख्या आंणरे लाला। श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवा रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सारे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचावन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रतिबोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा ..सहस मून सरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस ... लक्खनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म०॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला॥ श्रीम० ॥९॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला॥श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरस तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब हुंतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने सरू॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस वलि दोय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥
जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे
सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ काशी दे
स वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या
ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील
वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,
गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर
अरु श्रमणी, कही अरुतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि
जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इ
क श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं
ख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते
पुहता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो ज
में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ छहरी पाले जे न
र आवे, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए इ
हतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे भक्ति, सं
घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो
सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जा
त्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव था
ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविज
न भाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ
छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां
नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो म
न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गच्छपति महिमाधारी,
कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत
सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

श्रुतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत नगशोसै सितमोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, नणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

ऋषन्न प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंमरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ प्रह सम सुधा साधु नमुं नित, नावे श्रमण सुगुरु नगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ नरत महामुनि प्रथम चक्रीसर, बाहूबल नपशम नंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल नवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषन्नवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सोधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महाबल संजम सहि ॥ अचलादिक बलदेव अठ मुनि, राम ऋषीसर नवन अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ब वसुंदर, श्रीमल्लिनाथ पूरबन्नव मित्र ॥ पहुंता परम ऋषीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमणं सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोन्नसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने नवयालो, पुरतसेण वारिसेन प्रज्जुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावञ्चा

सुते, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्रं० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ रांग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनि वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंडरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अं तर प्रकासे तिमर नासे, भविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रमुख नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय गुणी, म. मरु देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांडव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती बालक पुत्र मेहल शिव आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म लाख्यो सोपि सिवपुर म क्कियो ॥ कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रं डरीक महामुनीसर प्रणमिये शुद्ध संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वलकलची र केवली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरं डुमह नमि निग्गया, निज २ देसे नरवर श्रीहुआ ॥ उल्लालो ॥ हुवा ए वृषभादि देखी थया वर वइरागिया, संजमसिरि भज नहिवा तजिम्र जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थ एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं महं समे ॥ ॥ चाल ॥ खंतें क्षुल्लककुमारसु ध्याइये, सोहग्गा मुनि चरणे लय इये ॥ काल हदाई प्रमुख महामुणी, संजम शुद्ध जपंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पामिय ॥ श्रीश्रमणभद्द सुभद्द सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ तीत सुव्रत, साधु सुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोतम गहरा गु ॥ सागरो ॥ १३ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुषीसर वंदिये, दसार्ण ॥ नमुं दुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदर्शन

री सिवरमणी वरो ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगडू क्षमावंत प्रसिद्धह, कोम्नि दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिह्योत्तरा ॥ गो तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गुरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद्र प्रणम्यां सुख पाईये ॥ खं दकुमार सदा अभिनंदिये, नमिह उरह मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुप इ लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीइंद्र नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सु दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअभयसुत आद्रकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमत्कार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर देवनिधि जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत हि त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसील धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल ऋषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७॥ ॥चाल जति जयघोष विजयघोषे जुत्त, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुत्त॥श्री इखुकार नृपति कमलावती, राणी भृगुसुं प्रेदित सुजसती ॥ उल्ला लो ॥ सुजसती जेहनी जसाजाया पुत्र दोय वखाणिये, ए छहूं लेइ चारु चारित्र सुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रंथनाथ अनाथ वंदूं समुद्रपाल सुसं मती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विषसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं स्यो तप गुण वीर ए ॥ २० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुजइ नं दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसील खंदग क्षमानिधि कहिये इण कले, कुरुदत्त सुत सीसग सरोरुह, रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नेकुमा मुनि अज्ञयंकरो, दक्ष विदक्षसु आतम हितकरो ॥ उल्लालो ॥ हितकरो दयापर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनक्ष नै सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू भ उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालजद सुधन्न मुनिवर समरत मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वयवैरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रज्ञव सिय्यंभव परगमो, सुजस जसोजद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जो, नांमे घर नवनिध्य थाये रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संतिविजय जयो, ज्ञद्रबाहु रुतज्ञद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनि श्रीथूलज्ञद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ ज्ञद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शि मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥ म० ॥ २४ ॥ आर्यमहागिरि जाणिये, आर्यसुहस्ति विसाल ॥ संप्रति नृ पप्रिबोधियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आर्यजिन वसंतिवो, आर्यसुजद मुनीस ॥ आर्यमंगु महिमा निलो, ... रो समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवय स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिन्न मुनि अपहरयो, ज्ञद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावह, श्रीरहगुप्त गुरु ... ॥ पुष्प मित्र दुबल गहगहो, मनु उपसमका पद ॥ म० ॥ २० ॥ ... सुविहत जाणो, श्रीउज्जित सुविहत ॥ पुष्पमय रतने जाणो, रत्नाथमनव देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, ... रमे सूर दयाल ॥ शुद्ध क्रिया तपनर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ ३० ॥ इम थवर कमंत्रूनी शिष्टे, सुमा ... ... आसापुत्री ॥ ... गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ...

सुंदरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल ब्रतीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री गतिलक सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणियै, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणगण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख भरपूर ॥ म० ॥ ३६ ॥ सदा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम दालिद्र घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधे नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मइ सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियै, जेहना नाम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीत, सिवकर स्यंदन संमति नांमे, वंदीजे जिनवर चोव
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे ज्ञविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रि
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज्ञ प्रण
मीस सद्दीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नांम सुपास ए, हुती
जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत ज्ञवाइ नरिंद ए
त्रीतरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोट्ल
साव ए, चोथो स्वयंप्रज्ञू नांम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिं
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुज्ञू ते प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते उठो स्वांमि सलहीजिये ॥ सं
श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जि
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्ल जिणं, सतक श्राव
शतकीर्त्ति दसमो ज्ञणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, स
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषा
जिन तेरमो, वलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो नि
मम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥
समाध जिन सत्तरमो श्रावका रेवती, अढारमो शतालजीव संव
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोश्जीव
ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो,
देव बावीसमो अंबड श्रावक ज्ञणुं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनं
वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते ज्ञद्र चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम
जिन जांणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आंणिया ॥ केइ ए
साम्र अनुसारथी साय करमरदया

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदिये, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंधिर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा भद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नाम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चं-द्रानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ९ ॥ आठ कोडि उप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे बयासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोडिया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसे, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विभू जिणवर नांम ए, समरया सुखदाय॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम कित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम भ्रिण चोवीसी वीस विहरमांण चऊ जिणवर सासता, संयुण्या सतरेसे बयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता मणितणो पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूर ए॥ १३॥ इति श्री विभूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवछरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो॥इइ विहरिया निरसणा, जए अएओव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ बहुआइ असरिसज

णस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सवसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न
ऊंइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ न्नद्दो विणीय विणउ, प
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हि
सुणइ सवं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इच्छंति
इय गुरुजण मुह न्नणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ ज
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पया
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो,
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुए
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्क
॥ गंन्नीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अन्निगहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, प
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयराम
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए न्नगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न क
माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग,
अन्निमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउ
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू
अन्निगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ ध
पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिठो ॥ लोएवि पहू पुरिस
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाण
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६
तह वि य सारायसिरी, उच्छहंती न ताइया ताहिं ॥ उयरहिए
देके, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि,
उ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिस

जहिँ नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिँ वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह जरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओ मिऋहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहछिउ अप्पसक्खिउ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्झ मिउ ॥ संव ज्वरमणसीउं, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग प्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गव्विउ निरवणा मो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्वकेइ बुज्झंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिँसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं जन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स डुक्कमल्लियए ॥ जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह स्सेहिँ, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई ॥ जह बंजदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, जरिय जरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू णवि जीवाणं, सडुक्कराइं ति पावचरियाइं ॥ जयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पम्हिवज्जिकण दोसे, नियए सम्मं च पायवंमियाए ॥ तो किर मिगायईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिखा० ॥

एस्स ॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सवसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न
ज्जइ चलिउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ न्नद्दो विणीय विणउ, प
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हि
सुणइ सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इछंति
इय गुरुजण मुह न्नणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ ज
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पया
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो,
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुण
त्तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेदस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्क
॥ गंन्नीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अन्निग्गहमई य ॥ अविकछणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए न्नगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे
माणं, परिय छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स
अन्निमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेछइ आसणगहणं, सो विणउ सा
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू ॥
अन्निगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाणा
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किरुवयंतीणं ॥ १६ ॥
तह वि य सारायसिरी, उत्तहंती न ताइया ताहिं ॥ उवरध्धिय
इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥
इति इह समत्त मरतारो ॥ १९४

हिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं
कयं ॥ इह जरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि
यमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं
मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओ
अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा
णइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह,
अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥
२३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउण्ह वायविज्झडिओ ॥ संव
रणासीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग
र विं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु
वएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गविओ निरवणा
। साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥
ण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारुव्व केइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
र देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण
वि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥
। ॥ कहतं जन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्कमल्लियइ ॥
मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह
, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई ॥ जह बंजदत्तराया, उदाइनिव

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें, अणुजाणह जि
ज्जिा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंभिअसरीरा ॥ बहु
पमिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं,
बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुम पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए
नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पमिलेहा ॥ दव्वाई
उवउगं, ऊसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोसिरियं
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा नरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंसु, मुक्ख
मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं
॥ ६ ॥ एगो हं नछिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदी
मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, ना
दंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा नावा, सव्वे संजोगलरकणा
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजो
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ए॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जी
सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १०
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि
पन्नत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा
लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं प
पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि
मज्झ, अरिहंता मझ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअ
पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मझ सिद्धा य मा

देवया ॥ सिद्धा य किंत्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आ यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया॥ आयरिया किंत्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझायां किंत्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो किंत्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लक्खाउं ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउं ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मझं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मझह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरयां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम टुटकवारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणां रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिझाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाळ अपार रे ॥ सु जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेंरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे प माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणे राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पा पासें आय रे ॥ सु० ॥ जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, क करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ ज्ञस्म हुशी इण आगमें रे लाल, रा करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आ में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जल भरयो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें उ तरी रे लाल, साख भरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स हुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥

॥ इति सीतासती सिझाय समाप्त ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिंझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढयो, पेखियो मुनी ए कंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझ पिता परि गल धन्न ॥ परिवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी, ओरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ॥ वीतरागनो धरम वाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समय सुंदर वेदना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पडिक्कमणो भावसुं, दोय घडी शुभ ध्याण ॥ लाल रे ॥ परभव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणु भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुचरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लगु ते वली, एम

दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लग ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलुं वंदन दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म नि वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यानथी, पच्चक्खाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सया यें ते वलो, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीये अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ मह उठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियें खिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ केवलि भाख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ आतुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए च मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥ भ० ॥ ए चारूं तहत हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतनां हो ॥ भ० ॥ सिंह चित सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ ज ध्यावे नरनार ॥ भव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणांको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ खो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ व आनंद सुख सदा हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ दिन पाछु ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ क इ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ यहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोड़ कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चे पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनद सकार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिज्झाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवा री लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति करे गोचरी हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न लै अणसूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हुंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आएयो जाव वि सेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छै शुद्ध रे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधे मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वछ ताहरी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, च्याल्या परठ-

न काज रे हुं० ॥ इंट निवा दे जायने हुं० चूरे करम समाज हुं० ॥ ७ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांम्यो केवल नाण हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमें तो मांनी रे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचाव ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अ मति देतां रे जीज वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या म कोम बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे सा हावणो ॥ ८ ॥ घरश जिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कह रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥ १ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ को केता रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अ फूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो॥ सुख अजिलाषी हे अम्मा, फूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर म जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही पर थि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४

में इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छट्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूमा जाणे ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना रुषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर दुखं महा पूत्रनो दुखियो, कर्म्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ वत्रीस सहस देसांरो साहिव, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म्मे कीयो तनु छार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ बारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संभूम नामे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जूझा देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

न काज रे हुं० ॥ ईट निवा दे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती ज्ञावना हुं०, पाम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण ऋषि सिज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सिज्ञाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमें तो मांनी रे नंदन ताहरे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनरुो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसी दीले रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीज्ञ वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तीसे नारी हो धन्ना अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०। कोण वत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो मो० ॥ ज्ञोगवि लेज्यो रे ज्ञोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर२ ज्ञिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम ज्ञणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केता रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें ज्ञाख्यो हे अम्मा, कूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो॥१२॥ सुख अज्ञिलापी हे अम्मा, कूठ न आखी मोरी अम्मा॥कायर मारग जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमारथ मोरी अम्मा, वीर वखाणयो परखदा सहु सुणये ॥ १४ ॥

में इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगले ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा जणे ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर हुआ महा पुत्रनो दुखियो, कर्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्मे कीयो ततु गार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्मे हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ बारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा०॥ क०॥ ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥प्रा०॥क०॥६॥ संभूम नांमे आठमो चक्री, कर्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मे कीधो आंधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ छपन्न कोड़ि जादवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि मूंत्र एकलमो विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रडवडिया, भमिया जेम भिखारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलडे जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥क०॥१३॥ सतिय सिरोमणी द्रोपदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकडो, कर्म्मे नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुष कहावे ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन२ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें, भांज्या ते पिण सीजा ॥ ऋद्धिहरष कर जोडीने विनवै, नमो२ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय सं०॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे भाइ सातेइ, आपे दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवानें रे विसन, पमयांथकां, पाम्डव पां
प्रसिद्द विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसनें पड्यो, खोइ सहू
जरिद्द वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस, ज्रक्षण अवगुण घणा, क
पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक ग
निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन
तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिपि दूहव्यो जा
बवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे
स्याघर वसे, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो
कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेडे
कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे
णिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छडे
चोरीने विसने करी, जीव लहे डुख जोर वि० ॥ मुंजदेव रा
जायें मारियो, चाचो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय
संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु दोष वि० ॥ राणो
रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥
इम जांणीने ज्रव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण
ज्रव परज्रव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥
॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निर्मंथ॥राति वन
मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा
णी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेमाराजानी
साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत
ठंगार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें
वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊवक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्ये तेह ॥ कुसती मनमांहि ए कुण वस्यो जी ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ नगवंत सांसो नांजियो जी, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मकार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो नवंत णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ नूलो मननमरा कांइ नमे, नमियो दिवस ते रात ॥ मायारो लोनी प्राणियो, नमियो परमल जात ॥ १ ॥ नू० ॥ कुंन काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ नू० ॥ केहना बेरू केहना वाबरू, केहना माय ने बाप ॥ अं जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नें पाप ॥ ३ ॥ नू० ॥ आस्या तो मूंगर जेवमी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ नू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखे बेठता, नए जल बल राख ॥ ५ ॥ नू० ॥ नवसायरजल डुख नरयो, तिरबो बे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अबे, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ नू० ॥ उलट नदी मारग चालवो, जायवो ...ले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे सार ... नू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ ... जाय पोहवो, लखपति लाकम माय ॥ ८ ॥ नू० ॥ मह ... वस्त वोरीयें, जे कुब आवे रे साथ ॥ अपणो लान उवा... लेसो साहिब हाथ ॥ नू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझे रे ॥ मू
ठउपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गज
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भाखै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बा
हूबलनें पासे रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो
॥ लघु बांधव बांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३
वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडियां वींटाणो रे ॥ पंख
माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी
चन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में
रिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन
वालियो, मूंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊप
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहू
बल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी॥
पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०
१ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठे
जी ॥ खरै उपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठे जी ॥ २
॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो
जी ॥ दासीने कहे जाय उतावली, उ रिषि तेडी आंणो जी ॥
३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी
॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥
४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातो

इक दिन गोखे रमतो सोगठे, तव दीठो निज मातो जी
अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियै२ मझारो जी ॥ ५
ण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥
। उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिल
॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो
७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिल्ला उपरै, अरणक अणस
यो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल
जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

ाम इलापुत्र जांणिये, धनदत्तसेठनो पुत ॥ नटवी देखी रे मो
जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरव नेह
॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥
॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां
ावा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय
री रे पावड़ी, वंस चढ़यो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो,
नवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर
पायनल घूघर घमघमै, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥
ाय चिंते रे राजियो, लुबधो नटनी रे साथ ॥ जो पड़े नट
ाचतो, तो नटनी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै
ी, नट जांणै नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछै
त ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन२ साधु
। धिग्२ विषया रे जीवना, मन आण्यो वैराग ॥ क० ॥
संवर भावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि महि
र करे, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै रागीयो जी, ए संसार असार रे मायरी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे जोल व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ कणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें जव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछै जी, जोवन जरयो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरघातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियौ कांन हे मायरी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांवलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ जुंइ पाला नित हींमणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायरी ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो वनजर ठोरू नदी जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजरी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि सुंहाली देहरी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ए ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विष विषम महुरा कह्या जी, किम जोगविये सोय हे मायरी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमिश माव पसाय करी जी, मैं दीधुं तुझ दुख॥ दित्त आदेस जिम हुं सुखो जी, वीर चरणें ब्युं दीख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुवो

सुगुरु मुखे भविश्रण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए ॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर विहनै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवे दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी ऋतु दिन तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इंडो फूटै प्रसवे गाइ, जां जर रुधिर पडै तिन ठाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो॥ १२॥ असाढे चौमासे दिने, पडिकमणा गयांथी गिणै ॥ वार पोहर असिझाई कही, काती चौमासे इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छे बहू, गीतारथ गुरु जांणे सहू ॥ सांभलि ए में कही संखेवि, हरखे पय प्रभू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह, च्यार मावठबीजे तेह ॥ सतम वर्ग बीअं अक्षरै, तब कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरो, सहि पालो रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ मन खरो समकित शुद्ध पालो, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो भवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परंह केरा, दोष सम काढो वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोभी नर कूडो करो, जांणी सावद्य रे अ भक्ष बावीसे परिहरो ॥ वड पींपल रे पिलखण नें कठुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लाला ॥ रखे तुमें भक्षण करो मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ठंभि पहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

ीजोजन, प्रथम डुरगति वारणो ॥ मम करौ व्यालू अति
ो, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय स
र ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंग
तुच्छ फला सवि ठांम ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविवं
॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंमए व्रत नियम लेइ, वेइ फ
जंगनो ॥ अज्ञात फल बहुवीज जोजन, चलित रस दो
नो ॥ संवर आणी अजक्ष ग्यानी, तजो ए बावीस ए
वयण विगतें वली पूठयौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ।
ती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जकण रे पातिक बोल्य
गहू ॥ कचूरो रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद
कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखे, चाखे
र नर आंविलो ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण
। ॥ गाजर मूला गिलो रींगण विरहाली टुकवत्थुलो, पल्यंक
ा वाल वीली मौथ नीली सांजलो ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे
त कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी
रमरवृक्षनी वालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ए ॥
ी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, नूय नूंफोमा ठत्रा
जांणो नील फल सेवे जूआ ॥ यत्त.स बोल प्रसिद्ध बोढ्या
नीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी
वि सुख लहे ॥ १० ॥ इति बावीस अजक्ष तिजाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिद्याय ॥

॥ संवेगरसभे ऊीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोदग
तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १॥ यादवराय पनर गजसुक
हने करुं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रनु
.न आदर्यो, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वति

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
यवा अलजयो, पजुसैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उचरतो
पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाए
काउसग रह्यौ, तिण सांझि प्रजुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चि
तवे, एहनैं साची रै छै मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन
अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगडी रचि सिर ऊपरै,
चिहुं दिसि वांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढयो, मु
निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई,
ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे
प्राणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रजु मांझी करी, रातिनी वी
तग वात ॥ हरि देखी हियझो फूटसी, तेणें कीधो रे रुदिजीनो
घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अ.वेवलरा
ज ॥ मनरंग साधु मदंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥या०॥ ९॥

॥ अथ प्रषणचंद्र सिघाय ॥

॥ राज ऊंमी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागे
मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रष्णचंद प्रणमूं तुमारा
पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग रह्यो
, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं उंची करी, सूरज सांमी दृष्टी
लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन
जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविधश खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु
ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढयो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
डयो, जोव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे,
हनी सी गति थाय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-
क जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि वि

मांन ॥ वाजी देरनी डुंडुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥ रिद्धहरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरभावासे जीवडो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाभी छै दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥ नाभी वांसतणी भरिये घणी, रूयाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजे नर नारी मिल्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवडो, जंपे जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहे, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थायें पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूंखे नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणें इहां, आयो गरभावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासे जोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने स्रोणिततणो, नहीं कूछ लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ परजापत पूरी नहीं, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारे तूं थयो, उदारिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अछे उदरे तिको, उपजावे अंग ॥ अगनि करे थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणे पृथवी रचे, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करे प्रकास ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारे महुरत तां पछे, विलसे नर नारि ॥ गरजतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हुवे दिन सातमें, अरवुद दिन सात ॥ अरवुदथी पेसी वधे, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवे, अरूतालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सुथिर मास बीजे हुवे, दिव तीजे मास ॥ करमतणे वसि ऊपजे, माता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथे मासे मातना, प्रणमे सहु अंग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पित्त रुधिर छठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसे, पेसी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोडि ॥ ऊपजे ऊणी केतले, इम आगम जोडि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मासें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ जंपे सिर वेदन सहे, जंपे जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने वम्नीत ॥ वात पित्त कफ गरजथी, थाये नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सूंटि लगे, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ल्ये आहारते, जाय नाभोनाभ ॥ रोम इंद्री नख चख वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे कल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गर्न्ने सुविचार ॥ ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, आवे ज्ञान विभं ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥उ० ॥ ३२ ॥ कटक करे वैक्रियपणे, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंचे मुख गोमा हिये, सहितो बहु पीम ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी भींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर पिण वस्त्र जलादिके, ऊपजे आ धान ॥ अथवा बिहुं नारी मिल्यां, कह्यो गर्न्नविधान ॥ उ० ॥ ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डुखावास ॥ पुन्य करी तिम नीकलूं, नावुं गर्न्नावास ॥उ०॥ ३६ ॥ कंठ कोमि चांपे सुई, कोइ समकाल ॥ तिणथी गर्न्ने अठ गुणो, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥ ॥ ३७ ॥ माता दूखो दूखीयो, सुखणो सुख थाय ॥ माता सूती ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गर्न्नथकी डुख लख गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां डुख वीसरे, धिग्२ मोह वि कार ॥ उ० ॥३९॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिंम अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु रत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवे, पीये दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करे रंग अपा र ॥ लाम कोम माता पिता, पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिने, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहे, चैतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, ठे सातसे ना मि ॥ नवसे नामी पिंममें, तिम तीनसे हाम ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि एकसो साठ ठे, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसे, ... ठे चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेशाब ... ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ ज० ॥ पित्त टांक चोसठ अछे, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सुलेखमां, जाणे जगदीस ॥ ४७ ॥ ज० ॥ इण परिमाणथकी यदा, उगे अधिको थाय ॥ व्यापे रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ ज० ॥ पेरुयो पहिले दाइके, इम वधियो अंग ॥ खान पान नूपण नला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ ज० ॥ हिव बीजे दसके नणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसके तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ ज० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम्म ऊपाय ॥ ५१ ॥ ज० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ ज० ॥ उठे दसके प्रांणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ ज० ॥ आवे दसके सातमें, हिव प्रांणी तेह ॥ बल नागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ ज० ॥ आवमें दसके मोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणें, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ ज० ॥ नवमें दसके प्रांणियो, तन सूकत जाय ॥ साले वचन वहुआंतणो, दिन ऊरता जाय ॥ ५६ ॥ ज० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाज हुकम हाले नही, दीयो परिजन छेह ॥ ५७ ॥ ज० ॥ आंख गले वे पुम मिले, पमै मुंहमे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संनाल ॥ ५८ ॥ ज० ॥ दस दृष्टा ते दोहिलो, लह्यो नरनव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम नव पार ॥ ५९ ॥ ज० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ ज० ॥ कोमि रतन कवमी सटे, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

४१

संसार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदे राज प्रमाण ए, ते लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचते, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरा न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवे, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० श्रीनमि रायतणी परे, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन२ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अछे, एह नो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरनें कह्यो, नही कूड लिगार ॥ ७० ॥ उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परि सिंह केरा सदा पाले नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीत रंगे इम कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति भतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा! हे चेतन! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घरी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कभी तूं मिश्रमोहनीमें, कभी तूं कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कभी तूं कुगुरुमें, कभी तूं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामें, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी व

वनदंममें, कभी कायदंममें, कभी हास्यमें, कभी रतिमें, कभी अरतिमें, कभी भयमें, कभी सोकमें, कभी दुगंछामें, कभी कृष्णलेस्यामें, कभी नीललेस्यामें, कभी कापोतलेस्यामें, कभी तुं रुद्धिगारवमें, कभी तुं रसगारवमें, कभी तुं सातागारवमें, कभी तुं मायासल्यमें, कभी तूं नियाणासल्यमें, कभी तूं मिथ्यादर्शनसल्यमें, कभी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कभी तेरे वाहिर कर अठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा दुष्टी, महा दुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणदृष्टी, अरे तूं अयोग्य कामका करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ट जीव, थें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोभरी चोकडी, विचारा तेरे खपी नहीं, गुणगणा तेरा पलटा नहीं, धैर्यगुण तेरे आया नहीं, तृष्णा द तेरे मिटी नहीं, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नहीं, दरियाव सा कल्लोल तेरे उगल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें की जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन नहीं लेवे सो पापी, डर लेकर भांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय, रात्रिभक्त, शीलव्रत, जरदा, भांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन कर खोटा किया, तेरा कहां छूटकवारा होगा, रे चेतन ! तें पुद्गलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधान, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये वाते तेरे हमेसा ऊपजे, इसमे गुणगणेवालेकेही लोभका पार नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरें, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

है मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पु॰
ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा
संसारमें न किसीका तुं है, नहि कोइ तेरा है, रे चेतन ! तूं
तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पुत्र
पणे, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें ठगकी बेटी
नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण भो
गेगा ? मा बोली–बेटी, करेगा सो भोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्
है इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, ऊर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क
ऊएकूं उडाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि
रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-
डंबरी कुगुरुउंके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें
होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा भया, मांनरूपी गज
पर बाहूबल चढा ऊर संज्वलनमांन था, ऊर बाह्मी सुंदरी बहिना
जैसी समझाणेवाली थी जब समझे, ऊर तेरे तो एसा मांन, अरे
चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणेके
केसीक राजऋद्धि सो केसीक भावना भावतां, धिःकार राज्यनें, धिः
कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोंकूं,
धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते है, धन्य
जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दांन देते है, धन्न जो
सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो भावना भाते
हैं, एसें भावना भावतें भरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोंकी बराबरी मतकर, वहतो तेसब

सलाका पुरुष चौथे आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्रका कीमा ऊनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जीववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसें क्यों करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गिराया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्र भाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं भिगाय दिया तो तेरी तो विसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीछे लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्रकी फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परिचय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंतें तिर जांय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्तें गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका ज.पक, नवविध ब्रह्मचर्यको वाभ़का रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, वारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंवल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुझै कब उदै आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पडिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पडिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणै षडावश्यक कर, मुझेभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणामोसे बुरीही गती उदय आयगी, सामायक मनसुद्ध करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण हे, ज्वर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुझें पढणे गुणनेकी लगन नही, तेंनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया, जो श्रुतज्ञानकी ज्ञक्ति करते हे ज्ञनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञान ज्वर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका ज्ञर्त्तार होता हे. दिवस प्रते दे कोई सुजांण सोना खंमी लक्ष प्रमाण, ज्ञसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस ज्ञरोसे मत ज्ञूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि ज्ञत्तम पुरुषोंकी, चंज्ञावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे कांम काज घरका चिंतवे, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौद्रध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें हे अपणा पराया सरपा गिणे, कंचन पत्थर समवरू धरै, साचो ओमो आगम ज्ञणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा ज्ञला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेंनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रक्के, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे ठाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे; अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा डुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन ज्वर कोण तेरा डुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं वाल ज्ञस्म कर जिस्से तेरो गरज सरे, अहोहो में ज्ञव्य हूं अज्ञव्यहूं अथवा डुरज्ञव्यहूं, मेरे संसार पोते बहोत दिखता हे, प्रायेतो में अज्ञव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने ज्ञाव देखा सो सही, हे रे ज्ञाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खुणे खाज मोमें

करमका, बंधतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिं- कारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंदा आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आत्मनिंदा करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आत्मनिंदा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहानिसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे व्रती शक्ति साधू जिनमंदिरमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका दंड और श्रावककूं बेलेका दंड ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घडी रात रहे पिछली तब ऊठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कुल्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके घोडा हाथी रथ पालखी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे, जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुभजी कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखकीथी सोभी छोडे २; (इसमें द्रव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भावपूजाही करे, लेकिन् द्रव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक–ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक–मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक–प्रभूकी अंग१ अग्र २ और भाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे और फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुभी देवकार्यकों रोकके, और कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ हो सो विकथाको रोके, जन्म और कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया भया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले, निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोपेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके भावसे निस्सही होय, और जिसने दूखणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र द्रव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, भावसें दुसरी निस्सही कहते मूलगुंभारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अच्छा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें भगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवरा जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखे–दर्पण १ भद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्युग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसें अष्टमंगलीककूं पूजे, अच्छे केसर चंदनके हथ्था देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अच्छे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग भक्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रभावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित भव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा ३. द्रव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक–तीन अवस्था विचारणी. पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, और केवलअवस्था कों विचारणा सो पदस्थअवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक–तीन दिशा छोडके प्रभूके सामने नजर रखे.

उर्द्द १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ वांइ पिछाडी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक–तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक–वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ८.

अब नवमा त्रिक–तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ए.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाई इह संतो तहसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंरू विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आजवमखंमा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हें. सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट छत्र खम्ग चमर पाडुका अचितवस्तुउहाजी ओमणा आजूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजुवणबंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह डुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार–दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके जगवंतकूं वांदे; स्त्री वांइ तरफ बेठके जगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा है. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बेठके देव वांदे, २, उत्कृष्ट६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद है. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते है पांचदंमक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब बठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सचित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परवल भींमी तोरी केला मतीरा ककमी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण. तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपर्ण अंगली विगर जो चीज मुंमें न्हालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे न्नात दाल रोटी कढी मांमिया कट्ट तरकारी सब जात पापम् खीचिया लम सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचमी तो वह अनेक द्रव्यसे वणी नई हे तोन्नी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण डुसरा नियम २.

अथ तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ उर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लोंग इला यची डोटी उर वमी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ बहा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघमी १ जामा २ कमरबंधा ३ ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

करईजे. एसेंइ स्रोके स्रो मुजब. जो एसा नहीं कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र जूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अथ सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली वेला केवमा केव की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धार णा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गामी वहली इक्का वग्घ कोच पालखी घोमा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक स्थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुम्दोम लचका मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारण रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्द कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चट ई सफ दरखतकी छालका चमम्का कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे इति शय्या नियम ए.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका ते फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादि शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेप फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लग णा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १

अथ ब्रह्मचर्य निमय. रातकों तथा दिनकों सूइ म्होटे दृष्टांत नेगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरव. १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठ्ठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रक्खे, घड़े प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत दुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रक्खे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रक्खे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंड तंदुल मुठ ३ थालमें रक्खे उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पडिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइअआरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाये पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करयावे पीछे सतरे थुईमें नवकार १ एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके वडा स्तवन कहे पीछे उप

वीयराय कहे इति नंदी विधिः। पीछे खमासमण देइ श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायक आरोवणार्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोवनार्थं करेमिकाउसग्गं. ४ लोग स्सका काउसग्ग करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मनमें धारणा रक्खे. सूत्रं अहन्नंनंते तुह्माणं सम वे मिच्छताउ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतिच्छिएवा अन्नतिच्छिदेवयाणिवा अन्नतीच्छिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा दवउ खित्तउ कालउ भावउ तत्थदवउ दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउ जाव अरहमझिमखंमे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावउलेणं नउ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नभविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढताथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वंदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थ सत्तावीस उस्सास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १, पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके उन्नतिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिको दुविहार तिविहार चउविहार और बावीस अभक्ष बत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे छेडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमांण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंडक लि० ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणं समीवेथूलगपाणाइवायं संकप्पित्त निरवराहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंडक तीन वेर उच्चरावे॥१॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसावायं जीहाछेयाइहेउअं कन्नालीयं गवालीयं भूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पच्चक्खामि दक्खिन्नाए अविसए दवउ खित्तउ कालउ भावउ सहउणं मुसावायं खित्तउणं इच्छवा अणछवा कालउणं जावज्जीवाए भावउणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवडइ तावअभिग्गह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इच्छवा अनइछवा कालउणं जावज्जीवं भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि असेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवडई ताव अ

रिगहं दुविहं तिविहेणं अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव० वोसि
: ॥ ३ ॥ अहन्नंन्तेतुम्हाणंसमीवे हंडारिय वेक्रिय नेयं थूलमेहुणं
वक्खामि अहागहियभंगएणं दिवंतिरिरं माणसियं एगविहं एग
हेणं पच्चक्खामि दवत्त खित्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं मेहुणं खि
नुणं इत्त्वा अन्नत्थवा कालत्तणं जावज्जीवाए नावत्तणं जावगहेणं
गहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
तें तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पत्तुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चक्खामि
ाधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
यभंगएणं तंजहा दवत्त खित्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं नवविह
रिग्गहं खित्तत्तणं इत्त्वा असत्थवा कालत्तणं जावज्जीवं नावत्तणं
वगहेणं नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ ५ ॥
न्नंन्तेतुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चक्खामि तंजहा दवत्त
त्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं दिसिपरिमाणं खित्तत्तणं धारणाप
णं कालत्तणं जावज्जीवाए नावत्तणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
तावअन्निग्गह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंन्नं
तुम्हाणं समीवे नोगोवनोगयेनोयणत्त अनंतकायबहुवीया राइ
यणाइं परिहरामि कम्मत्तणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायान्निओगंच परिहरामि तंजहा दवत्त
त्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं नोगाव नोगवयं खित्तत्तणं इत्त्वा अन्न
ा कालत्तणं जावज्जीवाए नावत्तणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
० मह० सव० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंन्नंते तुम्हाणंसमीवे
त्थदंमं पच्चक्खामि अववज्झाण पापोपदेश हिंसोपकरण
पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंमं जहासत्तीए परिहरामि तंज
दवत्त खित्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं अन्नत्थदंमं खित्तत्तणं इत्त
अन्नत्थवा कालत्तणं जावज्जीवाए नावत्तणं जावगहेणंनगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा स त्तीए पमिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वयं सत्तसिरकावयं डुवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सवस० वोसिरइ ॥ ए ॥ पद् साख ब छंमी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थानक रे गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ भविश्रां बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पुंमरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि; आचारज भगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवझायाणं रे छठ्ठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी भगति करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयकारीणं विनय वखानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो बंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते तेनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं नणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअन्नत्तीर्णं रे नगणीसमे न्नविया सुणउं, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पन्नावगाणं कही, संघन्नगती रे यथाशक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पमिकमणे लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये, आरंन्न वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेणे नामकर्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, गणांगे रे सौधर्मस्वामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास उदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थांनक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी चयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, न्नेटे सहु न्नवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रन्नु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखमिया, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय फलके, शशि सूरज सम न्नास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिन्नुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥३॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखझली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय भन दोस्ती कीनी, ले पीछें बिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लईरे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद विन अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम विन डर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घमी तमको अब रहियो, उठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरवीच धार ले, डर भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भव दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कनखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज मैं सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंमार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रूपजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्रेसरू, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूते एक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उध्धारण गो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपुं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावन शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां शून्न जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने कन्न जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोई ने कन्न जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुजनें पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह ऊगमते सूर जी॥ म०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कछुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चाकी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो में विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, चरणशुं प्रभुपद लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत भंजाली, प्रीत अमें हिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली बाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी आस तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीप्रमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कीना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तु-
मारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी,
मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार
न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही छे, परतक्ष
दरिसण दीजें ॥ धूंवामे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥
॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंमण साहिब, वीनतमी अवधारो ॥
कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, जवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥
जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मझ र
॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आमो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु
मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाम्ला, कागल द्युं किण
हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकवा, दिनमें
दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता
घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलशो जीहो
अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण
जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥
मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥
॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रजु सुखवास ॥
॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥
नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥
मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ
सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रलो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणिंद्र पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासन व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत्र, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईजे चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिग्रगुण०अ०रम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु ग्गल संगेजे द अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो न्नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोमे टीकी दीजे)॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहथन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, न्नविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर मानंदतणी नीसाणी, तसु न्नगते मुज मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधेके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्म दिठ्ठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्षतणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण मंत ठवेयी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रन्नुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि हि संगविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंक र, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, न्नत्तहि न्नावे पूजिया, करो संघ सुज गीस ॥ ढाल ॥ न्नव तीजे समकित गुण रम्या, जिनन्नक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थानक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रन्नावता, मन न्नावना एहवी

नावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी नावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं नलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आउबंध विचे इक नव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरनव उदार, नरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्ज्वल सुंदर, निरमल वृषन मनोहर ॥ निरनय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें नुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने नासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, हूपना जिणताह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांनले सो नागी ॥ त्रिनुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्राउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, नवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ नवअमविय पारग सद्ववाद, केवलता णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, वलयादिकमां तनु न माय ॥ सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन कंद ॥ ३ ॥ सग अम पय समुदा आवि तह, कर अंजलि

प्रणमियं मज्ञ सत्थ ॥ मुख जापे एं कारण आज सार, तिंप लोपें पहू होगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समांन, मिथ्या विप चूरण गरुडवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समज, प्रगट्यो तसु प्रणामो हुउं सनत्थ ॥ इम जंपी सकलेव करेवि, तव देव देवो हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तव रंभा गीत गांन, सुरलोक हुउं मंग लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस गांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्यां त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइ२ थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खमा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख कार, नरखित्त मंमण डुह विहंमण जविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख उच्छव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु मरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकंती आ णंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव वायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूइयकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींझणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवरं ज नर्नि मज्जणकार ॥ वर राखडी जिन पांणे बांधी दिये इम आसी स, जुग कोडिकोडी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला लानी ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता धरे, शुभ लगनेजी ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर मातांघरे, तिण अवसरजी इंद्रासण पिण थरहरे ॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए धन्यो, जिन जन्म उछवकाल जांणी अतहि आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण ज्ञगते ऊ मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिराव ए॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुउ अछे, तसु ज्ञगतेजी सुरप ति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर ज्रुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउछव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज्ञ लजी सुरवर कोमि वहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं कु लपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुन्ये ज्ञरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले व्व्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तब वत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ म्हे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा वती, अछरा कोमी हाथ जोमी हाव ज्ञाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम त्रांण सरण आ धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां मुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व ज्ञगते कलश श्रेणि व णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर लावो सवे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पज्जमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, छत्त चामर सिंहासण सुजतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमे जालिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उछंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा॥ इंदोदेवा अणाइकालो अदिट्ठपुव्वो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिच्छत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्वो२ हियकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पन्नणंति वण जवण जोईसरा, देव वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइउछगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुय२ इंद आदेस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदनुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पारग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अजिषेस ॥ ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हामे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अजिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तवईता णसुरिंदो, सक्कंपन्नणेइकरिसुपसाउ ॥ तुम्हअंकेमहत्ताउ, खिणमित्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासांकिंदोपन्नणइ, साहमीयवछलम्मिबहुला

हे ॥ आणाएवं‍णं गिण्हह होउकयत्थाज़ो ॥ २ ॥ (कलस ढाले) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आभरण अभंग ॥१॥ तव सुरवर बहु जयश रव कर, नाचे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, भांज सु हिव भवफंद ॥ २ ॥ कोमि बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति भगते सहित नंदीस र, करे जिन भक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सव निर्जर, कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन भगते गायो, जनम महोछव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा भगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विभाव निज भावमा, रमता सिव राज ॥ ३० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ३० ॥ २ ॥ जन्ममहोछव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ ३० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां भव पार ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी, कही सुत्र मझार ॥ ३० ॥ ४॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल भासन भास्करं, जगत जंतु महो दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि वि शुद्धये ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं- दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्च्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरंचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन भाव समुद्भवेः ॥ सुपरणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संवर भावसु धूपनं ॥ अशुभ पुफ्ल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींप० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ भविक निर्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतु भाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधति नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुफ्ल संग विवर्जनं, सहज चेतन भाव विलासकं ॥ सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति भाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पकफलव्रज ढोकनं॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना॥ ८॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्घ) इति जिनवर वृंदं भक्तितः पूजयंति, सकल गुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व मुद्भावयंति, परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० वस्त्र यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेबीमें कुंकम दया केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेबी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भले भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठे अधिकार ॥१॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि मुणिंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद॥१॥ गाहा॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५॥ मालारोहण ६ वन्नयं ७ चुन्न ८, पडागय ९ आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुवंसुघरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अठमंगलयं १३॥ धूव भखेवो १४ गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपदि परें, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोछ० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वानो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिधारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसुमांजली, कलस विधि मन रली, नचति जिन इंद जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

सें पूजा साचवे, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उछयोरी सुधारस, तपत बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभूकुं विलोक नमि जतन प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत, पंककु वरप जिम घनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि भवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूंमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिल्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौरंगभरकरतां, आत फलो मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका प्रमार्जनकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहे)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हांरे देवा नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकम भेलीये, कर लीये हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचोलिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे देवा, भाल कंठ उर उदरंत रे ॥ डुख हरे हांरे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजीये ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरे, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरे, तिम करै हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजिये ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजे

[illegible] ॥ मि० ॥ [illegible] चंदन मृगम
[illegible] ॥ मि० ॥ १ ॥ [illegible] जानु
[illegible] ॥ [illegible] अब मेरो
[illegible] ॥ मि० ॥ २ ॥ नव अंग न
[illegible] ॥ कहै [illegible] तन शुचि
[illegible] ॥ मि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय
[illegible] पूजा ॥ २ ॥ [illegible] नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतिय [illegible] पूजा ॥

॥ [illegible] ॥

॥ दूहा ॥ [illegible] अंग ॥
[illegible] ॥ १ ॥ राग गोडी ॥
[illegible] अविरतिया ए, हारे
[illegible] बतन मुन कंति
[illegible] सुविधि शको
[illegible] अंकूहणो दे-
[illegible] ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरागी ॥
[illegible] मांगुं ॥
[illegible] ज्ञानी वे
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] नाण,
[illegible] अमृत
[illegible] ॥ २ ॥ इति तृति-
य [illegible] पूजा ॥ ([illegible] ॥)

॥ अथ [illegible] पूजा ॥

॥ [illegible] दूहा ॥ [illegible] परै, सुमति वधारण
कुमति [illegible] पात ॥ १ ॥ राग
[illegible] विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजे जिन अंग उवंगू ए ॥ हा० लाहि भवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अभं गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौडी ॥ मेरे प्रभुजीको पूजा आनंदमेलै, पू० ॥ वासभवन मोह्यो सबलो ए, संपदा भेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासे, पूजिये जिनं राजं तत्ताथेइ, चतुर गति दुख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार॥ प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥इति॥ राग कानडो॥ सोहे री माई व रणें, मन मोहे री माइ वरणें॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनच रणे ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सर णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विपै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो०॥ कहे साधुकीरति भगति भग वंतकी, भविक नरां हांरे भ० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छट्ठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छट्ठी पूजाए वती, महा सुरभि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी थापे गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज रो ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिघ कली

ए ॥ भला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाल पाडल जिली ए ॥ भलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मोगरा वेलला मालती, पंचवरणे गूंथी मालती ए ॥ भलां गुं० ॥ दे माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥ भलां स०॥२॥इति॥ राग आसावरी ॥देखी वामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा है जै० वलि सुदमंदै ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोमरपूजा सब भार धूजे ॥ सब अरियण हारें सं० दोइ तिम वंदे ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख, भविक जगत हारें भ० जे जिन वंदे ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोमर पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगे फूल केसरसें अंगी रचे ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवडा, सोभै तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवे, सातमीये सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गोडी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हांरे अ० ॥ कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकर्यि, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगिये ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग भैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुसम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं०॥ ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, चंप जुई बेउलजाती ॥ पाधि चरण कव्वार मंदारो, विण पटकूल वनी भांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमणी गाती, भैरवी कुगति मत तिराती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ आठमी धूपनी पूजा ॥ अगरवती अगरा धूप खेवा करता गे ॥

दूहा ॥ अगर मेलयागर सार, सुगंधी पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु ज्ञावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी देवा, अशुन्न करम चूरीजै जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तव सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधे, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारे, गोत्र तीर्थकर वांधइ ॥ जलां२ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस, लावे जिन तनु रागे ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी मति जागे ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥दूहा॥ मोहन ध्वज धर मस्तके, सूहव गीत समूल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा, परतिक्ष नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौडी ॥वस्तु॥ सहसजोयण१, हेममय दंम ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुग्घरीय वाजै ॥ मृडु समीर लहके गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल संपल जाजे ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, दां ए वि० ॥ नवमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥ आपै दांन अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि०॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सवद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधववधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जांति वसन पंचवरण वन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईजे ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप कराके प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारे ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारेमें ॥ दसमो पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अति भंति ॥ २ ॥ राग अथभास गुंमनमल्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणे जड्यो, कांने कुंडल हारे अति जुगते जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ भाल तिलक बाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहे मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक भालस्थल, पहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसे अलंकरयो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धरयो, अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक द्रव्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोभतो, फूंदे लहके फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पुज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलु ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पाडि पाडल ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिभुवनकूं रुचे, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झूंबकाडम्बरं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद झिलें, फू० ॥ असत उसत दाम वघरी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिले ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंरुप थंन्न गुह्य चंद्रोदय, कोरणी चारु विनाण सऊै ॥ इग्या रमी पूजा बणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि भ्राजे ॥ ॥श॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजे ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषे बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फून्न ॥ दर ण ताप दुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग भ्रीम मल्हार कऱखेकी जाति ॥ मेघ वरसै भ्ररी पुष्फ बादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वएणो विकच अनुक्रम चिएयो, अधोवृंते नही पीम पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै भ्रमर भ्रमरी भ्रिलै, सरस रसरंग तिण दुख निवारी ॥ जिणप आगे करै सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग भ्रीममल्हार ॥ पुष्फ बादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ योजन अशुचि दर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम भ्रनणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण थुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीम नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ३ ॥ बारमी पूज भ्रविक तिम करै, कुसम विकस हस नचरे ॥ तसु भ्रीमबंधन अधरा हुवे, जे कराहिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुष्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रूपा चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरे, मंगल आठ विधान ॥ युवति रचे सुमतें सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणे भ्रिल्या, साल रजततणा तंदुला ए ॥ श्रवण समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखे सयल मंगल अखे, जिनप आगे सुथानक

धरे ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें, रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण भद्रासन नंद्यावर्त पुर्णकुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रभु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुंदरुक सेल्हारस सार, गंध वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटो घनसार चंदन, मृगमदारस भेलिये, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलिये ॥ वेरलिय दंड कनक मंडित धूपधाणो कर धरे, भवभृत्ति धूप करंति भोग रोग सोग अशुभ दरे ॥ २ ॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ ऊर्ध्वगत सूचंत भविकुं, म धमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीये रयण विसाल रे॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतगान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भले आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ भावो अधकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्वदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भापालयेयुक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतं, ... जयतादि ताल करणेश्च, चतुर चारोचारी गीतं गानं सुरीपूर्वं राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अ ...नं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ त्रिगुण

कुमार कुमरी आलापै, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र बंध धयो प्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मान शिव श्रीगीतं, पनरमी पुज हरे डुरितं रे ॥ जि० ॥३॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करे ॥)

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करे, सऊ सुंदर सिणगार ॥ नवनाटिक ते नहि जमे, सोलमी पूजा सार॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ जावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा सम रुव वेस वयसो मणेज कुंजत्थणा ॥ लावन्ना सगुणा विकस्स रवई रागाईआ जोवणा, कुम्मारी कुमरावी जेन पुरउ नच्चंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अट्ठसयं कुमारकुमरीउ सूरियाजे णंदेवेणं संदिट्ठा रंगमंमवेपविट्ठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥२॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागमदि तत्ताथेइ ॥अ० ॥ डागमदि२क थोंगिशन, सुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे णु वीणा मुरज बाजे, सोलही सिणगार साजे ॥ तनन्नन्नेईय ॥ अईयो० ॥ प्रणण प्रणण प्रणणण घुग्घरु घमके, रणणणणणेईय ॥ ॥ अइयो० ॥ २॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी ऊँकार क रणी ॥ सोजंती कुमरीय॥ अइयो० हस्तकं दावादि जावे, ददन्ती भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाजे रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगतें जविक लोणा, आणंद तत्तत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥४॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततवन सुखिरे आनधे, वाजित्र चौविध वाय ॥ जगत जली जगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर महल कंसालो, महुयर महल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरं, पम्मणइ तूं नंद जिणनाद ॥ २ ॥ राग मधुमायवी ॥ तूं नन्दिअ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी॥ तूं०॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिवल वोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवे जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव भविक मधुमाधव फेरी, भवनी फेरी नप्पभणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सव, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ भवि तूं भण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, धुय रंगे हम वाजै ॥ भवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आवाजे ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, भणी में भगति हित काजै ॥ भवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ भ० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ भ० ॥ ४ ॥ इति सतर भेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करकै तिलक करके रकेवीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं वलिहारी॥ जै जै० ॥१॥ विश्वसेन अचिराजीकेनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ४ ॥ मंगल आरती भोरहिं कीजे, जन्म२ को लाहो लीजे ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्काम खजली मिश्री पतासा थोला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेवी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निजश् शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणं दिय सज्जणाणं, नमोश होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ करया कर्म दुममर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालै ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्य ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करया घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोप ग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगदपंचकल्याणके सुख पांमै, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकांमै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ तो० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आतम भावे चरण थिरता वास

ता॥ जिन नामकर्म प्रन्नाव अतिसय प्रातिहारज सोन्नता, जगजंतु करुणावंत न्नगवंत न्नविकजनने थोन्नता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे॥ ए देसी ॥ तीजे न्नव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चन्नसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे न्नविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ न्न० ॥ जिम चिरकाले नंदो रे ॥ न्न०॥ उपशमरसनो कंदो रे॥ न्न०॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ न्न० ॥ सेवे सुरनर इंदो रे ॥ न्न० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ न्न० ॥ सि० ॥ ८॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, न्नोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे॥ न्न० ॥सि० ॥ ए ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने गाजे, ते जिन नमिये उच्छाह रे ॥ न्न० ॥ सि० ॥ ॥१०॥ आठ प्रातीहारज जसु गाजे, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोधै करे जगजनने, ते जिन नमियें उच्छाह रे ॥ न्न० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्याये रे ॥ न्नेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांन्नलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, रुद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुन्न करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चन्नक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयका

रगाणं, जम्मंजरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि न्नय जेरा वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा॥ १५ ॥ त्रिन्नागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा॥सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्न्नवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रन्नुतामई, आतम संपत न्नूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे न्नूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालन्नावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वन्नाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परन्नणी, मुनिराज मानसहंस समवड़, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिन्नाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ न्न० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ न्न० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥२०॥न्न०॥सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी न्नवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ न्न० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ न्न० ॥२१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वन्नाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ॥ ह्रीँ० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

इतिमर दूरै हरै, सूझै जाव असेष ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽस्तरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ रकंऊबत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंड्राग में प्रौढ साम्राज्यजाजा॥पट्वर्गवर्गित गुणै शोजमाना,पंचाचारनें पा लवे सावधाना॥२॥ जविप्राणिनें देशना देशकालै,सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्रीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निक्कामो जी जल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ॥ जविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, इ विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग जाखै साचो ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या चो रे ॥ ज०॥ २६ ॥ सि०॥ वर छत्तीसगुणेंकरि सोहै, युगप्रधान जगमोहे ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचो यण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथुंज आचारज, ते मान्या मुनिम नने रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी ते जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो ॥ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं त्र शुज ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोजित गात्र ॥

उवज्झायापद अरचियें, अनुज्ञवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्थ विच्चारणतप्पराणं, नमोरवायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायरा णं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सूरिगुणने सु हाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदा नें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगु णौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंजपूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्तप्रभूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता श्रुतधरा॥ स्या द्वादवादई तत्वसाधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधनधी रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानसमरथ, नमोपाठ कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिझाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविभागे, आचारज उवज्झाय॥ भवत्रिणहें जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाय रे॥ भ० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणे ॥ ते उवज्झाय स कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणे रे ॥ भ० ॥३६॥ सि० ॥ रा जकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंद नरस समवयणे, अहितताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिझाये रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपा ठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ सांहूणं सं साहियसंजमाणं, नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयठिआणं ॥ केरसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तेनहाकाम ज्ञोगेपुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलोबाह्यअन्यंतरैग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयोगचारित्रपाली शुन्नष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निःकामो निस्संगी जी ॥ नवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अन्यासी सदा ॥ तप तेज दीपैं कर्म जीपै नैव छीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिज्जुवन प्रणमों हितन्नणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूलें जमरो वेसे, पीमा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ ज० ॥४४॥ सि० ॥ पांचइंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आरावे, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ ज० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ एहवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसे, दिन२ चढतें वानें ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानें रे ॥ ज० ॥४८॥ सि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, स्युं मुंडे स्युं लोचे रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर जाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु
पततेरुइलरकणस्स, नमोर निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छनासाइसमु
ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममदाडुमस्स ॥ विपर्यासहेवासनारूपमिथ्या,
टलेजेअनादीअछैजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तैहुईसहजथीशुद्धध्यानं, कहि
येदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि
चित्रंभवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमेक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेस
दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू
पी जी॥जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥
जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रग
टै अनुभव करुणा उछलै॥बहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण
पणै, निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध
देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पामीजै तेह नमीजै,
सम्यग्दर्शन नांम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उ
पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे,
जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश
म लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्,
दर्शन नमीई असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र
माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे
विण लहिये, समकित दरसन बलिहु रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥
सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श
न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥
ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते
ज आतमा, स्युं होय नांम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीँ
दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञानने, सिद्धचक्र तपमांह ॥ आ

राधीजे शुन्न मनें, दिन२ अधिक नछाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा रगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइंजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुपट्द्रव्यन्नावा, नहोवे विकछानिजेछास्वन्नावा ॥ ५९ ॥ होइंपंचमत्यादिसुग्यानन्नेदे, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदई ॥ वलीज्ञेयहेयाउपादेयरूपे, लहेचित्तमांजे मध्यानेंप्रदीपे ॥ ६० ॥ ढाल ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्र काशक न्नावे जी ॥ परयाय धरम अनंतता, न्नेदान्नेद स्वन्नावे जी ॥ चाल ॥ जे मोक परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादवर्त गी तत्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ न्नक अन्नक न जे विण ल हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञांन ते सकल आधार रे ॥ न्न० ॥ ६२॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञांन नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांतें न्नाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा ख्युं रे ॥ न्न० ॥६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रध्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञांन नितश् वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ न्न० ॥६४॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश क तेह ॥ दीपकपर त्रिन्नुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ न्न० ॥६५॥ सि० ॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सव जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धी रे ॥ न्न० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजा महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया खंडिअसक्कियस्स, नमो२संजमवीरिअस्स ॥ सप्पावणासंगविवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वत्विज्ञानफलतैथरियेसुरंगे, निरासंसताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेदचारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ ६८ ॥ होईजासमहिमाथकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथाये, थईसिद्धलेकर्मनें पारजाये ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकलसिद्धिअनुकूलो जो ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भे द धरमैं यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कस्मल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही तिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजें तास प्रणाम ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्र ते पिण वरिउं, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरि रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद रिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउं ज्ञान आनंद रे ॥ ० ॥७३॥ सि०॥ वार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ क्क२ अभिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ सि०॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र न निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे लेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १॥ काव्यं ॥ कम्म दुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिवतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधण स्स, दुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥७७॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्जास मिद्धं, पयमियसरवग्गंह्रीं तिरेहसमग्गं॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव यारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कपाय टाले, निकाचितपणें बांधिया तेह बाले ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होई जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद पावे, नवभव शिव जावे देव नर भवज पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभा वे, सवि दुरित समावे विश्व जयकार पावे ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी ॥ आतम सत्ता एकत्व ता, पर परणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अ क्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आ त्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न वपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, स म्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥निरधारसेती गुणे गुणनो करइजे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत म हंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भ विक पूजो मन रली ॥ उवज्झाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोजनता ॥८४॥ ढाल॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जावे, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमिये तेह दीपावे, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज०८६॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रजावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटे, नमिये ते तप जावे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोहुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमांहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिकरण नित नमिये, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासे चोथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इआराधन संबरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावे थिर हूउ, परजावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी०॥९३॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे ॥ ए हतणे अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीँ प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसें तिलक करे, हाथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चैत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरेमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्टे मुजब पट्टे पर नव साथिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढावे ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल और उछाला पढ वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दोष निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं पदारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंदुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पुंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुभिर्वटकेपकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखज्र्झकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप वदांगजे, प्रसरिताखिल दिक्सुसुगंधकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनस मोच सदाफल कर्कटै, सुफलदैः

किल श्रीफल विन्नदे ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्चरुप्रदीपक धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पुजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सद्गुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पयंती धारा, जयवारण तूंही सुखकारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरौं सब दुर्मति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ सकलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांभ्नोवज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजै, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनशास्त्र खरतर गणधारी, सद्गुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ९ ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ डर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भैंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ और जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. और जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख कें संवरपणार्मे रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहिं. स्थापनाजीके हाथ लगावे नहिं. और जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भैंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणों कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांडादिकको न छुवे. २चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, भेंसके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडा, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, अर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीछें, संमूर्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे. विशेप विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असझायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंआरी धमे, तांलोम असझाय आणवी.

२ सर्वदिशामां राती गाथा तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर धमे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह परसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अमे न रहे तो असझाय होय.

५ मांसबृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगें होय, तां लीम असझाय. अने जो रुधिरबृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहूंती पडिवा लगें असझाय. तेरस, चौदस, पूनम तीन सभी सांजे. अचित्त रजउह्रावणडं काउस्स ग्ग करुं ? इच्छं. अचित्त रज्ज उह्रावणडं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स उद्योयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असझाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असझाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे लीम असझाय.

११ अकालें वीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असद्याय,

१२ अजवालीये पक्षें समी सांऊ, पऊवो, वीज, त्रीज, इयारी असद्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असद्याय.

१४ नूमिकंपें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ वार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असद्याय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ वार असद्याय.

१७ आसाढ चउमासा पमिक्कमण ठायाहूंती प्रहर १२ वार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीठें पमिवा लगें प्रहर वार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्झाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय,

२२ फागण चउमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उम्मे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ दंमको मार पमते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि नय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र नणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहम्मे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहम्मे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणउठ्ये एठले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असझाय.

२८ तिर्यंचना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो महि अहोरात्र असझाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो माहे अहोरात्र असझाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विसकी जणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार असज्झाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर २०, ठार्नी प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवडां प्रहर २४, घोलवडां प्रहर ४, तदयां वडा प्रहर ४, पूडी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा कण्या प्रहर १२, जवार कण्या प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चावलकी

खीचमी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी उनीजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वर्मी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिगूपाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गूरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणडोरा मंत्राय के बांधे ॥ (उँ नमो परमेष्टि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरुआरमरक्षा करावैं. पीछे एक थालीमें १०, एक थालीमें ए, फेर एक थालीमे फेर ए, एसें २८ नागरवेलका पांन रक्खे. जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकड्व्य यथाशक्ति धरै उरची पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नैवद्य तरे२ के गीले उर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजाप्रेका सामान रक्खे. फेर स्नात्रपूजा को थापना रक्खे, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीछे दसदिगूपाल के पट्टे ऊपर जलका छींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेल पान चढावे ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ ॐइंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहअस्मिन्जं बूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो त्सवे आगच्छ२ वलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐइंद्रायन मः इति इंद्रआह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य च ढावे) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ ॐअग्नये सायुधाय सवा हनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिगृहाण२ उदयमभ्यु दयं कुरु२स्वाहाः ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ ॐय माय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन० अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिंगृ० उदयम० स्वाहा ॐय मायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ ॐनैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोत्सवे आग० बलिं० उदय० स्वाहा ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि ग्पाल पूजा ॥ ॐवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐवरुणाय नमः॥ पश्चिम० ॥५॥ अथ वा यव दिग्पाल पूजा ॥ ॐवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहोत्सवे० आ० वलिं० उदयम० स्वाहा ॐवायवेनमः॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ॐकुबेरा य सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु कपूजामहोत्सवे आ० वलिंगृ० उदय० स्वाहा ॐकुबेरायनमः उत्तर दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ॐईशानाय सायु० सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० वलिं० उद० स्वाहा ॐईशानायनमः॥ ईशानकूण ॥८॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥ ॐब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० वलिं० नदय० स्वाहा ॐब्रह्मणेनमः ॥ नर्द्धदिशि० ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ ॐनागाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचेत्ये अमुकपू० आ० वलिं० नदय० स्वाहा ॐनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ ऊपर कसूंमल वस्त्र वांधे मौलीसे, पीछे ॥ ॐदशदिग्पालायनमः ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमद्रव्य समेत नागरवेलका पांन आदि सर्व द्रव्य चढावे, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक दीपक आगे धरे ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ ॐनमोआदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षणभरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक चैत्ये अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिपूजांगृहाण२ नदयमभ्युदयं कुरु२ अत्रपीठेतिष्ठ२ स्वाहा ॐसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि अष्टद्रव्यचढावे) ॥१॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐचंद्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि ग० नदय० अष्टपीठेति० स्वाहा ॐचंद्रायनमः ॥२॥ अथ मंगल पूजा ॥

ॐनमोभोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे नदब० स्वाहाः ॐभोमायनमः३॥ अथ बुधपूजा॥ ॐनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० नदयम० अत्रपी० स्वाहा ॐबुधायनमः ॥४॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ ॐनमोवृहस्पतये सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० कमुकचै० अमुक पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० नदय० स्वाहा: ॐ वृहस्पतयेनमः॥५॥ अथ शुक्र पूजा ॥ ॐनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू द्वी० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिग० अत्र

पीठे उदयम० ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥ ॐनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ॐन मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिनजं० द० अमुकन० अमुकचै त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० ॐराहवेनमः॥८॥ अथ केतू पूजा ॥ ॐनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि नजं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२उदय० स्वाहा ए ॐ केतवेनमः॥ इति॥ (इसी मुजब ऊपर लाल वस्त्र मोलीसे बांधे पीछे नागरवेलके पान आदि अष्टद्रव्य रोकड द्रव्य समेत सांमने भेट धरे फेर एसा कहे॥ ॐनवग्रहायनमः॥ च्यारों तरफ नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः ॥ वाये तरफ मंडलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे वाजू दसदिग्पाल की थापना करे ॥ जिस महोछवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो छवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल सें पवित्रपणे बणायाहुवा सधवस्त्रीके या पुरुषके हाथसें पांचरंग के धानके वाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा मालपूवा पांचरंगकेलडु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें सब द्रव्य एकठो करे उर घृत खांड अत्तर गुलाबजल पंचरंगेफूल यहत्ती वाकलोंमें मिलावे पीछे गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन वेर वाकुलो पर वासक्षेप न्हाले,) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ ॐह्रांह्रींसर्वोप द्रवंबिंबस्यरक्ष२स्वाहा ॐणमोअरिहंताणं ॐणमोसिद्धाणं ॐणमोआ यरिआणं ॐणमोउवझायाणं ॐणमोलोएसव्वसाहूणं ॐणमोआगास गामीणं ॐणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड गंधर्व जक्ख रक्खस पिशाच भूअ साइणप्पभइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसघेविलेवणं धूवपुप्फफलवत्थवसणाइं वलिपमि छंता तुष्ठिकरान्नवंतु पुट्ठिकरा संतिकरान्नवंतु सर्वजणंकुर्वंतु सवजि णाणं संदणप्पन्नावन पसन्नन्नावतणे सव्वत्थरक्वंतुकुर्वंतु सवडुरियाणी नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु ट्ठपुट्ठिसिवसत्थयणकारिणोन्नवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासकेपकूं मंत्रके बलवाकुलोमें नाखके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखछोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्त्रान्निया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खो लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा छेता, ५ पांचमा धूप धाणा, ६ छण दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग लवाजित्र. इस तरे सब श्रान्निये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहे. जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल बा कुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो स्तु बलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावे) (अग्निकूणके सांमनें) ॥ सदावह्निदिशो नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु बलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥ (एसा कह बाकुलादिद्रव्य चढावे) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० बलि० ॥ ३ ॥ (बलबाकुल चढावे वाजित्र वजावे) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ यमापरांतरालेको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० बलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ पः प्रतीची.दिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोवाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मेस्तु संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकवि भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ थोर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्ध अमुकन गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोछवे सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअ ग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐन मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिपवाहनाय दंडआयुधाय कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गछ२ स्वा हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्षिरक्ष२ गछ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रछ० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

णां सन्निहियाय तेसवेविलेवणं धूवपुप्फफलवश्वसणादिं वलिपमि छंता तुठ्ठिकराज्ञवंतु पुठिकरा संतिकराज्ञवंतु सवंजणंकुर्वंतु सवजि णाणं संदणप्पन्नावन पसन्नज्ञावतणे सवत्थरकंतुकुर्वंतु सवडुरियाणी नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु ठिपुठिसिवसत्ययणकारिणोज्ञवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें नालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखवोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्लाम्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके वाल खो लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा ओता, ५ पांचमा धूप धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग लवाजित्र. इस तरे सब स्लाम्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहे. जब गुरु शुद्धमंत्र नच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल बा कुलादिक चढावे, चामरकरे, आरीसा दिखावे, वाजित्र वजावे ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो स्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलबाकुल चढावे) (अग्निकूणके सांमनें) ॥ सदावह्निदिशो नेता पावकोमेपवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयछतु ॥ २ ॥ (एसा कह वाकुलादिद्रव्य चढावे) (दक्षिणदिशाकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी [illegible] संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥ बलबाकल [illegible]) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ [illegible] संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥ [illegible] वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्द्धदिसि) ब्रह्मलोकवि भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥
॥ ओर बलबाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्त्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकन गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोछवे सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअ ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन० अमुक० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐन मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गच्छ२ स्वा हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ ॐनमोनेरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिम दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्गच्छ० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृपभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे वाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्म्मशक्ताः, आयातास्नात्रकाले कलुपहृतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेपापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षमतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्पणी अमृतंश्रावय२ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावांवाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रौं॥(स्नान के० इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रौं अर्हते

नमः.) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीछै) ॐ ह्रीँ अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ॐकवलीकः क्षः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमफली मंत्रायके हाथके बांधे ओर जव मंगलजीके च्यारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोमके वेठे तव गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा है नससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछे तीन वेर नवकारमंत्रसें मं त्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सव स्ना त्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्टा मंगलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहियें. पीछै मं दिरजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टद्रव्य चढावै. पीछे चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपाला यनमः) एसा बोलता हुवा चढावै. पीछे मंगलजीके दहणे तरफ़ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे वांये तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजव पूजा करै.) पीछे सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावे.

अढारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पडिकमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे वेठके द हिणागोडा धरतीपर रख के मावागोडा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंघि मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी ४थी गाथा कहे. पीछै बेठके नमोत्थुणं कहके खमा हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै रजितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात् द्वादशांगीजिनोभवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्री भुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ९ ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितडिंभामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवी नंदतानिवताच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअच्छुप्तादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड वाणपाणिस्तडिद्युतिः तुरंगगमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्वे श्री पार्श्वस्तपरक्षका श्रीकुबेरानरारूढा सतांकावतवोभयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाय
हीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १ ५ ॥
(ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्र
दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिता
देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धायि
का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति
कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापात्
चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बेठे चैत्यवं० नमोत्थु
जयवीयराय पर्यंत कहे ॥ इस तरे १८ स्तुतिसे देववांदण विधि।

॥ अथ मंडल प्रतिष्टा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दी
पक करे. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखे (पीछे) से
ने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करे, हाथमें
कलस लेके सात नवकार गुणे.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु
स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों त
फ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करे, धूपखेवे (पीछे
नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे
पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेंढल मरोडाफली चारुं तरप
बांधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके॥ ॐ आँ ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः
इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छींटा देवे (ऊपर) च
वलोंको साथियो करे, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चाव
लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरे. (पीछे
केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क
रे ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूरसीभूतधात्रीविश्व

धारेनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलभूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ त्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछे) स्त्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापन कों धरे (पीछे) स्त्रिया मंदरके भीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रि गडेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐन मोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्टिने दिक्कुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ष्ठ२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ३ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्ठा करकेपीछे सिद्धचक्रपूजा सरू करै॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथ- में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज क- र्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोल्लसद्बोधा नाम्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजेसमस्ता तिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह द्भयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछे रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालव स्त्र, ८ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान नि दधेन्नक्तिनिर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे रतितःप्रणष्टः डुष्टाष्टकर्मामधिग म्यशुद्धि प्राप्तान्नरानसिद्धिमनंतबोधान् सिद्धानयजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करे. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछै) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढे (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिनद्दलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उपोपसर्गैकानवारणार्थं मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमःस्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करे इति ॥ पीछै) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालडु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे, उपाध्याय पद पूजा पढे (यथा) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राणयनिशंप्रशस्ये पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराञ्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करे इति ॥ पीछै) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उमदकालडु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढे (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपश्रगलानवारान् साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्दादशधाशरीरे येषासुदक्यवगतानसुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करे इति ॥ पीछै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढे (यथा) जिनेंद्रोक्तमनश्रद्धा, सद्रूपोदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूणमें दर्शनपदकी

थापनापूजा करै इति ॥ पीछे) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोकालङ्गु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे. काव्य पढे (यथा) सामायिकादिभिर्जेदै, श्चारित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैदनैरुतेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरुतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥) पीछे) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढे (यथा) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्वयं ॥ निधाययामिन्नत्तयात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगुतपसेनमः स्वाहः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ) निःस्वेदत्वादिविख्यातिशयमयतनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणज्ञृदाचारसाराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंशं, स्तत्सिद्ध्यैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनमः (इति मूलामंत्र) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें च्यार दिशिमें च्यार विदि

जोंमे एतें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंडलके मध्य भाग में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीछे) दूसरे वलयमें कृनीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (और) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा दे उनमें अनाहतपद (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) एसा पद स्थापन करे (पीछे) एक रकेबीमें मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खडा रहे. अनाहतपदमें मिश्री लवंग चढावे और आठ वर्गमें दाखां चढावे (यथा) (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः (ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः) (इहां) १६ दाख चढावे २ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ (ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख चढावे ४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ५ च छ ज झ ञ (ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ड ढ ण (ॐ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ९ त थ द ध न (ॐ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ११ प फ ब भ म (ॐ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) १३ य र ल व (ॐ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावे सब ९६ (उर) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गमें ६४ चोसठ दाख चढावे इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिशा चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करे इस आठ कोठाके बीच२में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एके

क खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरो में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावे. उर लब्धिपदका नाम बोलके खा रका ४८ चढावे (यथा) ॐ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसवोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोकुठ्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोदिठ्ठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअर्हणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हणमोदसपूवीणं॥ १७॥ ॐह्रींअर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ ॐह्रींअर्हणमोअठ्ठंगनिमत्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हणमोविउवणइढ्ढिपत्ताणं॥ २० ॥ ॐह्रीं अर्हणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२॥ ॐह्रींअर्हणमोपन्नासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हणमोखीरासवेणं॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐह्रींअर्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐह्रींअर्हणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हणमोभयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हणमोउग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हणमोअरकीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐन्हींअर्हणमोतत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐन्हींअ
र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐन्हींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ
न्हींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐन्हींअर्हणमोघोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥
ॐन्हींअर्हणमोघोरबंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐन्हींअर्हणमोआमोसहि
पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐन्हींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐन्हींअ
र्हणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐन्हींअर्हणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥
॥ ४४ ॥ ॐन्हींअर्हणमोसब्बोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐन्हींअर्हणमोम
णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐन्हींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐन्हींअर्ह
णमोकायवलीणं ॥४८ ॥ ॐन्हींअर्हअमृतालब्धिपदेभ्योनमः ॥ इस
तरे लब्धिपदका नांम वोल२ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका
चढावै ॥ (पीछे) मंगलजीके गलेमें न्हींकारजी स्थापन किया है
(जहांसे) साढातीन नवलाका मंगलजीके चोतरफ देके नीचे
(क्रों) एसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दि-
शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव
(यथा) ॐन्हींअर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥१॥ अनारचढावै ॥ ॐन्हींसि
द्धपादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐन्हींआचार्यपादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ
न्हींगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐन्हींपरमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥
॥ ५ ॥ ॐन्हींअदृष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐन्हींअनंतगुरुपादु
काभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐन्हींअनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ
न्हींअष्टगुरुपादुकाभ्योनमः स्वाहाः ॥ इस तरे छट्ठे वलयमें ८ दा
डम चढावै (पीछे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८
देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐन्हींजयायैनमः
स्वाहा ॥ १ ॥ ॐन्हींजंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐन्हींविजयायैनमः
स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐन्हींथंभायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐन्हींजयंत्यैनमः
स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐन्हींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐन्हींअपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐर्‍हीअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावे (पीछे) आठमें वलयमें १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपारी चढावे (यथा) ॐर्‍हीरोहणयैनमः ॥ १॥ ॐर्‍हीप्रज्ञसेनमः॥२॥ ॐर्‍हीवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐर्‍हीवज्रांकुशायैनमः॥ ४ ॥ ॐर्‍हीचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐर्‍हीपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐर्‍हीकालीयैनमः ॥ ७ ॥ ॐर्‍हीमाहाकालीयैनमः ॥ ८ ॥ ॐर्‍हीगौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐर्‍हीगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐर्‍हीसर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐर्‍हीमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐर्‍हीवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐर्‍हीअच्छुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐर्‍हीमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐर्‍हीमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करे पीछे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ २४ की थापना कर पूजा करे ॥ २४ पूंगीफल चढावे (यथा) ॐचक्रेश्वर्यैनमः॥१॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालीयैनमः ॥४॥ ॐमहाकालीयैनमः ॥५॥ ॐश्यामायैनमः ॥६॥ ॐशांतायैनमः ॥७॥ ॐभृकुटियैनमः ॥८॥ ॐसुतारकायैनमः ॥९॥ ॐअशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायैनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पाययिनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधारणयैनमः ॥ १८ ॥ ॐवरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिण तरफ २४ यक्षराजकी स्थापना करे वरकलपेटी २४ सुपारी चढावे ॥ (यथा) ॐगोमुखशांतयैनमः ॥ २४ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ ॐनृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥१६॥ ॐकिन्नरायनमः ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐपण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायैनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरुयैनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछै चार दिशामें ४ द्वारपालकी थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे (यथा) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनमः ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनायनमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुष्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछै चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावै (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐकपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछै पूर्ण कलसके आकार ऊपरसें कियाजया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पढे. तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा मालके स्थापन करै) (यथा) ॐनैसर्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीछै कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें वंगलीका आकार किया है (जहां) ॐह्रींविमलस्वामिनेनमः १॥ एसा

फदकेचढावे ॥ फेर कोहलाफल हाथमें ले के बांयेनेत्रके पास वंग
लीमें (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा बोलके चढावे २ ॥ पीछे तीसरा
कोहलाफल) हाथमें ले के नीचे पींढ़िके दक्षिणे तरफ वंगलीमें)
ॐचक्रेश्वर्यैनमः (एसा बोलके चढावे ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा को
हलाफल हाथमें ले के नीचे पींदेके वांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्र
तिहतसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः) एसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ (पीछे
दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करे. बणसकेतो अ
पणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे अथवा सर्वको
एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनक
वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आ
दि सर्व द्रव्य चढावे १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्ण
का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः
॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैऋतकूणे)
ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे (पश्चि
मदिशा) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावे ५ (वा
यव्यकूण) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च
ढावे ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव
र्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐइशाना
यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥
(अधोदिसि) ॐनागायनमः ॥ ए ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य
चढावे ॥ ए ॥ (ऊर्ध्वदिशि) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका
वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था
पन पूजन करे ॥ (पीछे यंत्रके पींदीके स्थानक नव कोठा किया
गया है जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करे (यथा) ॐसूर्यायनमः
लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल रंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐवृंहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोल. वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐशनेश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ९ ॥ छींटरंग व स्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इस तरे नीचे नवग्रहकी स्थापनपूजा करे. पीछे स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावे चैत्यवंदन कर थुइ क हकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछे गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करे पीछे यथाशक्ति साध मीं वात्सल्य करे ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहियें (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करे तब तो ९ए महीने मं गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहे ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उछव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगरणोसें उ द्यापन करे. जलजात्रादि अठाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारे (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च ढावे. रुद्धिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (और) पंचा यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहे ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सवर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबुद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणभद्रस्वामीसर्वज्ञाय नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ रतमेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र. प्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ अजितचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ति ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ डुक्तिनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ महल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंभृत सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेंद्रसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥१८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० [illegible]नाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रजसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुंमंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीजूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेण नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रजनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीजूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थजूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीश्ररचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वरसर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्रारसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीवरक्षकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

ईंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरजूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमा चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाः सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रजसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलजद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीजमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २८ ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्विर्तियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंदसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नाजसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंदसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीसुढथसदस्त्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० २ ॥ श्रीब्रह्मजूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजितनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ (धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननाम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरतेजिननामः) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात कीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव तेजिनना०) आमादिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीवल्लिभइनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्याम, ३० लाल, २८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त- स्पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाईथैकासरदातणो, उर धरि समरण शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु चि भक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर भवि तेहनें, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु प्रतिदिशा, कथनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि भावीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

णिये, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध भाग जसु उत्तमें, गिरि यु
जलद समांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो बत्तीस
॥ धारो गणित अनुक्रमें, पएयुत्तर शत ईश ॥ ७ ॥ एह अढा
द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, भाष्ये
श्रीजिनभाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनर
य ॥ ते हूं प्रति विजये भणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल
पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥अ
जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ भविकजन ध
रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां
णी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥
भ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि
चरया महियल बोधता जी, विजय मझार सनंद ॥ भ० ॥ ३ ॥
पंच२ भरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता
रता जी, समरयां संपति थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन
वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी,
अकल कला द्युतिवांन ॥ भ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी,
नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल भाधरू जी, कनकवर
ण बत्तीस ॥ भ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
विमल प्रकाश ॥ भविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचा
स ॥ भ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित
अपमाद ॥ त्यक्त कषाय शुभातमां जी, धरिये भाव विशाल ॥
भ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥
कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी भक्ति ॥ भ० ॥ ए ॥ ए त
पविधि भवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ
नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पत्नुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवल्लज्ज कथनधर ऱूर ए ॥ गुरु खरतरांवर तरणि सन्निज्ञ जैनचंद सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती–मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसिद्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव प्रकृती ए)–चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रचला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)–सातावेदनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)–सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुवंधीक्रोधर० २०, अनंतानुवंधीमानर० २०, अनंतानुवंधीमायार० २२, अनंतानुवंधिलोन्नर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्याख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोन्नर० २७, प्रत्याख्यानीक्रोधर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोन्नर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमांनर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोन्नर० ३५, हास्यमोहनीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, न्नयमोहनीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुगंगमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपूंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृत।

णिये, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध भाग जसु उत्तमें, भि
जलद समांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो
॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्टयुत्तर शत ईस ॥ ७ ॥ एह
द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा,
श्रीजिनभाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे
य ॥ ते हूं प्रति विजये भणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥
पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज
जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ भविकज
रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी
णी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ई
भ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥
चरया महियल बोधता जी, विजय मभार सनंद ॥ भ० ॥ ३
पंच२ भरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन
रता जी, समरयां संपति थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जि
वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी
अकल कला द्युतिवांन ॥ भ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी
नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम भलहल भाधरू जी, कनकव
ण बत्तीस ॥ भ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
विमल प्रकाश ॥ भविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचा
स ॥ भ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित
जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुभातमां जी, धरिये भाव विशाल ॥
भ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥
कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी भक्ति ॥ ९ ॥
पविधि भवि जे करे जी, प्रेम
नुमोदता जी, ते लहे दिव

संवत मूनि सर लोक नारद चंद्र ज्येष्ट पकुर ए, वदि सप्तमी रवि दिने हितवल्लज्ञ कथनधर न्नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि- न्न जैनचंद्र सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावणकर्मकी नव प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)—सातावे दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोन्नर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोन्नर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोन्नर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमांनर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोन्नर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, न्नयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुगंगमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृत।

१)–देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)–देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, वेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकआंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदारिकवंधनर० ६६, औदारिकतेजसवंधनर० ६७, औदारिककार्मणवंधनर० ६८, वैक्रियश्वंधनर० ६९, वैक्रियतेजसवंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणवंधनर० ७०, आहारकश्वंधनर० ७२, आहारकतेजसवंधनर० ७३, आहारककार्मणवंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणवंधनर० ७५, वैक्रियतजसकार्मणवंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्मणवंधनर० ७७, तेजसतेजसवंधनर० ७८, कार्मणकार्मणवंधनर० ७९, तेजसकार्मणवंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषभनाराचसंघयणर० ८६, रुषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुकरसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुररसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, स्निग्धफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुकु-मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०, ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभविहायोगति १२२, अशुभ-विहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, ऊसासनामकर्मर० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अगुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थंकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनामकर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बादरनामकर्मर० १३३, पर्याप्तिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म १३५, थिरनामकर्म १३६, शुभनामकर्म १३७, सौभाग्यनामकर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०, यशनामकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३, अपर्याप्तिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अथिरनामकर्मर० १४६, अशुभनामकर्मर० १४७, दौर्भाग्यनामकर्मर० १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयशनामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृती २) उच्चैर्गोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर० १५४, लाभांतरायकर्मर० १५५, भोगांतरायकर्मर० १५६, उपभोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद विदघन ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयडि विस्ता

ज० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सवीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क० ॥५॥ अपूरब अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत बंध, ज० ॥ सुक्ष्म संपराय दशम गणे, विन मोहायु षट खंध ॥ जवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, यो ग युगत च्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद होय ॥ जवि० क० ॥ ए ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार, ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चउत्थउत्त तप सार, जवि० ॥ त प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण जला, अष्टमंगल वृद्ध थाल, जवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १०॥ इह्या रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-चंद सूरि मुणिंद खरतर गण ए शशि सम युगवरा, तासु वचने स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवऊाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरबतणो, नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अक्षरे, संपूरण पांचसें मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध, सिंहावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी बेय, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, वीजे भव राजसिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्र, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥ नवकारने परभाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ गामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम न मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउनें कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्टित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्ष करे नरने तिहां, दे बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

नडा नामे नारि सुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरथो नृप द्वारा, गणिका
ीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली
ीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पछतावे, चोर समीपे
ानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रभावे वंछित
ीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥
३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंमक पापनी वेठ ॥
कदा चोरी करतां झाल्यो, राजा हुकमें सूली घाल्यो ॥ ४ ॥
डक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार
ीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥
ापानगरीमें जे कीधूं, सुभद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार
साद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥
रतनृप भावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वीजली
थी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपाडी चलावियो ए,
नुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाघरूया एक चारतो ए,
ेष प्रभाद्यो वास, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो
काल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करचा पाप
ेक, न० ॥ ढुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥
४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती
र पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२
ेकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयाकुसल वाचक
ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका
ढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका
ना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ।२०००६

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा वास ७ ॥ ४ । णमोउवझायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सबसाहूणं ॥ उपवास ए ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ८ ॥ ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ८ ॥ ८ । मंगलाणंचसबेसिं ॥ उपवास ८ ॥ ए । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ए ॥ एसें नवकार मंत्रका ६८ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वमानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उछव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रनावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुनभाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण नणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणें पक्खि पंचमि दिणें, नाण संनवतणौ खयकरम चिहुं तणेः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरनवणथी बारसें, पनमपह जम्म वलि दिक्ख तसु तेरसें ॥ वीर सिवमां वसें पक्खि द्दिव ऊजलें, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार सि मिले ॥ २ ॥ नास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि यो, सोइ उठें रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे संयम आदर्यो, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यो ॥ सिर वर्यो मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसें वलि मल्लिजिणने जम्म दिक्ख सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्खा नाण उठे अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संना विधे, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण नाविये ॥ ते परि सवि रे गीतारथ सदगुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सद्दहे ॥ सद्दहे

सहूये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चवद्दसि जनम संभवनौं थुणौ ॥ पूनिमें संभव दिख पांमी दया धरि जगजीवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिखा पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो के-वली, पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनि मैं धम्मैं वसें ॥ माहाइ छठे पउम चवियो बारसैं शीतल थयौ, वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५॥ अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपूजनौं, कल्याणकरे ज नम ठांण अनुक्रम मनौं ॥ अनुक्रमें मांनौं बिहू त्रीजे विमल धरम सुजांणिया, श्रीविमल दिखा चउथि अठमि अजित ब्रतपति पांमि या ॥ नवमियें दिखा अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥६॥ ढाल ॥ फागुण वदि छठे सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंदप्रभु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्रय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिझंस तणो चवदस वसु पुज्ज, जम्म हुउ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्रय वय उब्भव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पक्खि चउथि नाण च वणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम विण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं भवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नांण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना ह केवलसिरि पायो ॥१०॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वदेंपभिवा दिन, कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशी तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिरका नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, ध रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पखि छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुव्रय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ सिव पत्त, धवलो पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतस्यो ए ॥ श्रीसुपास जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥ ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसदेस, चवण सत्तमिहि सिरि विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेप छठे चवण ॥ वीरनो अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधु कर परवस्यो ए ॥ बहुतर वरस सख पुरि चंपापुरें, करमखणि मुग ति रमणी वर्यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अह निम्मल बीजे, सुमति चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजे ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर नेमि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्रय पूनिमरपणि, चविउ मु
ि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाद्रव वदि सत्तमें संति सति चवण नव अठमि नविय मुगस नवमि सुदि सुविधु सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गय ॥ इरण अम्मावसी ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कल्याणक रासि ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कल्यांश नीते कोडि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कल्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कल्याणक हुवे इण दिन सुर करे उच्छव घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कल्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कल्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताक्षर संलक्ष्य० यह ऋषिमंडल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणें. ऋषिमंडलमें जो मूल मंत्र हे सो शुज दिन शुज घमी हाथमें फल फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करे. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा करे. ऊजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीछे शक्ति होय तो विधि संयुक्त ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति करे तो १४ प्रकार पूजा करावे, गुरुजक्ती करे, साहमीवछल करै. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ ऋषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवाले जव्यजीवके घरमें कजी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऋषभ चरण अंगूठडो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खडा२ केवल लह्यो, पूजो जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमांन ॥ ३ ॥ मांन गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, भुजाबले भवजल तरया, पूजो खंध म हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना भिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, वाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंडनें, हृदयक मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतुल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तथैकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ॥ व सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवडा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे, जल विन कुंभ न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दांन ॥ भावें भावना भाविये, भावें केवलज्ञान ॥ ४ ॥ पांच कोडीनें फूलडे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पाइसें, भयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिंनाम· तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन हद तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्मकायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एणां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर टेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, करवा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण सभै देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तीजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

ऋषन्न चरण अंगूठमो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले क
उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खमा२ केवल लह्यो, पूजो
जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान।
कर कंमे प्रन्नु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय
अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, नुजाबले नवजल तस्या, पूजो खंधम
हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ न
निकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंमनें, हृदयक
मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतुल,
मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तथंकर पद
पून्यथी, त्रिनुवन जन सेवंत, त्रिनुवन तिलक समा प्रन्नु, नाल
तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक नगवंत ॥व
सिया तिण कारण विन्नू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव
तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध नावथी, कहे शुन
वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें
परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंने बांध्यो जल रहे,
जल विन कुंन न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न
होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
गुरुवाणी वेगला, रमवमिया संसार ॥ ३ ॥ नावे जिनवर पूजिये,
नावे दीजे दांन ॥ नावें नावना नाविये, नावें केवलज्ञान ॥ ४॥
पांच कोमीनें फूलमे, पाम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व
रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिनाम० तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ वादरकायें मन वच भोग, तनु२सें फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्मकायसें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, वेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एणां योगथी समयें एक, हीना संख गुणो कर छेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण समें देव, आपो ता जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तीजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जो, वारे गुणां करि एहवा अरिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुव्व पन्नयपसंग सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण निरागी ॥ चेतनभूपें आतमरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्टो करे वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजे भवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहे कर्म दले गुण श्रेणिता, म्हा० दले० ॥ १ ॥ हस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नगरभूसें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इक्कु गुण नव परमाण योजन लखें कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाभास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मखी ' क्ष्यी हीन भणी सिद्धांतमें, म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपब्भारा ना सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें भाग अलोकक्रुं ह' र्शनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणारें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ । मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धा रम्य सिरिद्दो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म नगहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल भये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ०

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिद्रासी जी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहको, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत, नव तत्त्व विस्तारी ॥ नवकूर्वे पार्पे परत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खग्गथी जेणे, हणयो क्रोध सुभट सम देणे हो, गण पति गुणपेखी॥टेर॥मान महा गिरि वयरे, अति शोभन मद्दव वयरे हो॥ ग० ॥१॥ दंभरूप विसवेली, वर अज्ञवकीले छेली हो ॥ ग० ॥ मुर्छावेलथी भरियो, लोहसागर मुत्ते तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो॥ ग०॥ मोह माहा मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो॥ग०॥ अंतरंग रिपु जेया, सुरवर पिण जिण सिपेया हो॥ग०॥४॥ रस कृति गुरथी लीणो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संजम पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवफाय राय । सठता घन ञंजन । जिन वर दिसत उवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण ञं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए।आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने२ दूरी हुयने, चेतन ञापे सठने, दूरी हुयने ॥ तुं मुफ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुफनें कुण वतलावे, दू० ॥ एआंकणी ॥ तो संगे निज पंचेंझीनो, रचना चरम ञुलाणो ॥ नाणावरणो खयउपसमसें, ञावेंड्री मंफाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ ड्व्यै ते परजाते कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क में उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुफकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णकी समता लेती, में ञयो तोसुं रागी॥ दू० ॥ ३॥ उप कहिये हणियो ञवियानो, अधियां लाञतआय॥ आधीनांमन पीफानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सठताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

नये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण भरचो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ माल्हर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकपाया जगजन कहे, धारे चनगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० वहै पूरब कोम्ह हो मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु काले गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानद्धीनिद्रा छदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रचलानिद्रामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथे, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु नवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पाले दोष बयालीस टालै जी, षट् काया गोकुल रखवाले नव विध ब्रह्मव्रत पाले जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जी, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तब करि लहे, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवसम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लक्षन अभिरांम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध नणयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लछण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज सप्तम नरक नलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही छांह लहेरी ॥ नपशम क्षायक भेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ नवसायर हे अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाने ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद्नावे अप्रमाण, नाण चारित्र नलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाने कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपरात्ततत्त्व सूधा सरधै समकित गुण नजवाले जी, नेद भेद करि आतम निरखो पशु टाली सुर पावे जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य नाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो नवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ नाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ नव गुण पज्जविहिं दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल नांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तपदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर नाषित आगम नणिया, तत्व यथास्थित गमि जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, नविज अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ नक्षानक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय यथंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जा निचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय है इंडी तारु

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ नंदी मण केवल दे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अथविजस्स वलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिनुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुन्न अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें नवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखे जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कहियै लहियै गुण गंन्नीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो न्नविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करे शुन्न न्नाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद॥ सुमति पंच तीन गुति युत, दे सुरक्ष अमंद ॥ २ ॥ इखु कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदान्नास निरसंग ॥ सुग्यानी साजलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्य कारण न्नाव ॥ सु० ॥ रुत्वा जो गसुधामता, लब्धा संख स्वन्नाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते हीते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ प्रासा यस्त्र प्रकारता, सत्त एन्नूतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तहो घन रूपी न्नलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल ज्नवतु अज्निराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावें आतम ध्यान लगावे जी, धारे ज्नावना सूधी ज्नावे सागर पार ऊतारे जी ॥ खट खंम राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारे जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारे जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषज्नादिक तीर्थनाथ, तज्नव सिव जाण ॥ त्रिहि अं तेरपि वाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ ज्नेदें समता युत खिर्णे, हग्घन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद ज्नलो ए, इछारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर ज्नवतु ज्नवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस ज्नेद ज्नएया जिनराजे, वाह्य मध्यतणा जग काजे रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण ज्नव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारें शि० ॥ १ ॥ समता सहितें जिनतें ज्नारी, ज्नली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारें शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे रुद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप ज्नानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति उक्कर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इछा रोधन रूपी कहियें, तपपदही चेतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पावक [illegible] रूपासे, नवपद कुसलाकूं ज्नासे रे॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते जाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य जावसें द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्रृषज सर्वज्ञ, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाद्य, नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ स्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न रत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-स्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ त्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वर्यात्, संजवः संजवाजिधः ॥ नाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-तिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांक हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन मानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रोस, तन मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जूहेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं नतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तॄणां, स्वर्ग रुवा वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण कः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णे, डुस्तरे पततां नृणां ॥ ाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ट नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, स्तं नौमि सदा विभूं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिछ विज्ञान, तमोव्यूह विनाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ (अत्राद्यश्छत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोबोधवस्वाशु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वांछितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरामा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्रीमछीतलनाथेश, नन्दाढढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांहांकधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राकृतंतूंजनव्यूहं ॥ उत्पंशंभोयदेविभो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यभः ॥ श्रेयोवृध्धिकरोजसं, खड्गलांछिनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्घ, श्रेयांसश्रेयसैः सेद ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरीवार्त्तितरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिछेदितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंहि, वासुपूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इति वासपूज्य स्तुतिः॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पुत्रकल्पाणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदांघस्मरणंविना॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपुत्रस्य, सुयशःसिंहसेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, यर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रा

योपियस्यांतं, गुणानांलेभिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं
नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापुत्रवज्रांक,
भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रभसर्वज्ञ, धर्मनाथाभिधेश्वरः ॥ २९ ॥
तवागोपिपुरश्चारो, भूतलेयास्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सता
संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी
सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥
॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां
वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री
सुतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यभ ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागल
क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं
पापसंदोहं, भवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः
सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तांकतंयुतं ॥ अंभोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसु
वर्णभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी
कर्म्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥१८
॥ कुंभप्रभावतीपुत्रो, नीलवर्णोघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त,
नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ छत्रत्रययुतोभाति, देवयोविष्टपत्रये
॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना
थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्म्मल
क्षणभृत्कर्म्म, दायकस्यामलद्युते ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक
र्म्मारिमंकल ॥ देहिस्वंमेव्ययीभावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ
ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिर
ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पललसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते
पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र
संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव
र्ये, समुद्रविजयोद्भवे ॥ हरिवंसहरोशंभो, शंखांकेकमलप्रभे ॥४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्रत्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४॥ इति नेमनाथ स्तुतिः॥२३॥ अश्वसेनाक्ष्मापाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनाशनचिन्हाय, नीलवर्णायसंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्प्रणे ॥ महानादध्वजार्हत, कल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोहेन्नहननेमृगात् ॥ स्वभक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः ॥२४॥ इति श्रीक्षमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः॥

अथ नवपदजीके ढालीके देववंदनमें कहणेका चैत्यवंदन पहली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्धसरूपी रे लोय ॥ अहो स०॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय॥ अहो सु०॥ आचारज तीजे पदे, वंदू अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं वमभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें ढलखे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुन्न न्नावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परन्नाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक दस धर्मनो, जेह वे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे वलि तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर न्नेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुन्न न्नावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि०॥ ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ०॥ व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ०॥ अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ न्नविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यो नवपद ध्यान ॥ न्न० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ न्न० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोन्नता जी, साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥ न्न० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ न्न० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुन्नव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ न्न० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जंमार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अमसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी वलिहारी, सुरतरु वीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इम जिन जए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज जज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर हार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज जाव, हिव कारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुऊ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इग तुऊ अनुग्रहथी सुख संपति मुऊ थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत नमिये सिद्ध सूरी उवझाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

डुग विधि चारित्तें वुच विच तप मन ज्ञाय, ये नवपद ध्यावता निरुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे ज्ञाप्यो एह विचार, ज्ञविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणज्ञंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ हिव निद्धि उवय करि चारित्रनंदी मम ज्ञाय, जिनचंद सूरीसर खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू करे, कन्नी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीछे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रिकाल पूजा करै. प्रज्ञातसमें राईपमिक्कमणा करके पीछे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करे. जहां सिद्धचक्रकी थापना है उहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीछे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पूजा करे, पीछे केसरचंदनसें पूजा करे. गुरु पास आयके अप्पुछिन्नमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका पच्चरकाण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग है इस वास्ते चावलोंसें उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीछे अरिहंतके बारे गुणोंकों विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोंमे इच्छामिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
६ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
७ दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछे स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछे मध्याह्न समय पांचे श क्रस्तवे देव वांदे. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चक्खाण करे पाणहारका। फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीछे पडिक्कमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही पडिक्कमके चैत्यवंदन करै, फेर र.5 संथारा गाथा सुणें ॥ निद्रा नहीं आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रभात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धका लाल रंग है इस वास्ते गेहूंकी रो;

ं आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार
ना करे. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके आठ लोगस्सका
उसग्ग करे, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रजात कर्त्तव्य करे. आचार्यपद पीले वर्ण हे
। वास्ते चणाकी दालका आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरि
णं ॥ इस पदका दो हजार जाप करे. आचार्यके ३६ गुण हे.
ीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ आकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३३ निर्जरा नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३४ लोकस्वरूप नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३५ बोधडुर्लन्न नावना नावकाय श्रीआ० ॥
३६ धर्म्मडुर्लन्न नावना नावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह बत्तीस नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके बत्तीस ६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी मसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो उवझायाणं ॥ इस पदका २, हजार जाप रै. हरेमूंगका आंबिल करे. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके मस्कार करे ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
३ श्रीगणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
५ श्रीन्नगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
८ श्रीअंतगरूदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपुर्व पठनगुण यु० ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
२५ लोकबिंदुसार पठनगुण यु०॥इति पंचविंशत्योपाध्यायगुण

इस तरे २५ नमस्कार करें. खमा दे के अन्नत्थू० कहके लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वो करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करे. साधुपद काले वर्ण है इस वास्ते उग्द के बाकलोंसें अबिल करे. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करे

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० वाऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ एकेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ चोइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वखे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सव गुण मिलाएेसें १०८ होता हे, इस वास्ते माल
एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप क
दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. सम्यत्त
सड़सठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वेयावृत्तरूप सद० ॥
८ अर्हविनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूपसद०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषण रहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद० ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद० ॥
२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद० ॥
२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद० ॥
२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
२ए नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद० ॥
३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्याज्जृत्प्रज्ञावक सद० ॥
३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद० ॥
३३ कविप्रज्ञावकरूप सद० ॥
३४ जिनसासने कौसलता ज्रूषण सद० ॥
३५ प्रज्ञावनाज्रूषणरूप सद० ॥
३६ तीर्थसेवाज्रूषणरूप सद० ॥
३७ स्थैर्यताज्रूषणरूप सद० ॥
३८ जिनसासने ज्ञक्तिज्रूषणरूप सद० ॥
३ए नपशम गुणरूप सद० ॥
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ आस्तिका गुणरूप सद० ॥
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥
॥ इस वजे समसठ नमस्कार कर खमासणे अन्नत्थू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शेनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेंद्रीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनैनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय ममः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करे, खमा होके अन्नत्थू० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसलिंसं तंदुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्रे० ॥

११ संयमधर्म्मरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ बंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ पृथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ वेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रन्नकादि परठन त्यागरूप संयम चारि०
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वेयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंमगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुड्यंतरसहित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ उणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायश्चित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरूप चा० ॥
६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥
६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥
६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥
६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥
६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥
६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥
६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥
६९ माया निग्रहकरण चा० ॥
७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरे ७० नमस्कार करे. खमा दो के अन्नवृत्तसि ७० लोगस्सका काउसग्ग करे. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त रणी करे ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करे तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करे, पचा भेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥
२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरी तपभेद त० ॥
५ द्रव्यतपवृत्ती संक्षेप तपभेद त० ॥
क्षेत्रतप वित्ती संक्षेप तपभेद त० ॥
कालतप वित्ती संक्षेप तपभेद त० ॥
८ भावतप वित्ती संक्षेप तपभेद त० ॥

९ कायकिलेस तपन्नेद तप० ॥

१० रसत्याग तपन्नेद तप० ॥

११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंमकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥

१३ आलोयण प्रायछित्त तप० ॥

१४ पमिक्कमण प्रायछित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे० ॥

१६ विवेक प्रायछित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायछित्त त० ॥

१८ तप प्रायछित्त त० ॥

१९ न्नेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायछित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायछित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधू वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥
३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥
३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥
३७ संघ वेयावच्च तप० ॥
३८ कुल वेयावच्च त० ॥
३९ गण वेयावच्च तप० ॥
४० वायणा तपसेनमः ॥
४१ पृछना तपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥
४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥
४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद भेदाः ।

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नथ्थूससि० इत्य दे करके ५० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे पीछे पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घर्मी देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अक्षत ...ी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकद्रव्य लेके नवकार गुणता ...५ गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

वै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे
खी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीको लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंडल करै. सिद्धचक्रजी
चो तरफ तीन गढ चूडीके आकार बनावे. पहिले गढमें अष्टदल
मलके आकार नवपद स्थापन करै. पद२ के रंग मुजब गुण
माणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव
तिरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजब धीवुरेसे भरके चढावै
रंगी ए धजा चढावे, दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा सु-
ी चढावै. तीसरे वलयमें ४८ वूहारा चढावै, नव निधानोंकी
नव बेरू फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पकान्न रंगरं
चढावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें
उर जिनमंदिरमें वाहिरले मंडपमें ए ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें
ल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करे, नवपद
की पुजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि
जावै, महा महोछव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्र
करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंडल वि
॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप
तको विधो आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानभक्तिके कार
ए पूठा ए वीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव भिल
ए रुमाल ए मेरा ए सिंजासणा ए थापना ए चंद्रुआ ए पू
ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रति
२ तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणवावे, शक्ति नहीं
तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुप
गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायेग्य
षेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

स नाम नगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा हे, एकार्थ
ाचक हे इस वास्ते नद्वाह् उमास्वातिवाचकादिकोंके बनाये
र्यु क नेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये,
क क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोंके बनाये अनी नंमारोमें मोजूद हे ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) सें लेकर पूर्णमासी तक
केइयक नव्यजीव) अष्टापदजीकी उली करते हें (जिसमें)
मेक्रमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी
ी तुल्य करे. (इतना विशेष हे) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः
इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करे. अरिहंतप
; १२ गुणका नमस्कार करे, १२ लोगस्सका काउसग्ग करे, आं
त्र (वा) एकासणेका पच्चखाण करे, पीछें पूर्णमासीके दिन अ-
ष्टपदपर्वतकी थापना करे, मंमल रचे, सो विधि लिख्यते हें॥

पूर्व
१ । २ ।

त्रिवेदिकमध्य
असोकवृक्ष
उर्द्धः

६ । ७ । ८ । ९

उत्तर

१ । ५ । ४ । ३ । २ । १ । ० । २ । २ । २ । २ । २ । ३ । २ । ४

८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ ।
पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमउ
अठ्ठउत्तरार्ई ॥ दस पुव्वाए दो अग,
वंदामि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुव्वा
ई उसन्नमजियं ॥ दक्खिणउं सं
नवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमा
इ, धम्माइ दसउत्तरउं ॥ २ ॥)
इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम
यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंमल
में बणाणा. इहां कांकणमोरे मो
ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके
मंमलवत् जाणना. नवग्रह दश
दग्पाल थापना करे. पीछे एक२
काव्य पढ२ के एकेक कोठेमें एक२

जिनेश्वरके नामके चिठी जस पर वरक चढा सुपारी
एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशलं, नं
सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्दतीनेता, नंद्यायतसितांशुकः ॥ १ ॥
श्रीं अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ट२ स्वाहा ॥
उपाध्वमजितंजत्त्या, कंदथानामनेकपं ॥ प्रणतोबोधितंज्ञान,
धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ।
श्रीसंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति,
तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंजवस्वामी० ॥
येनिनंदनतेतीर्थं, राजपादसनाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, रा
दसनाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनि० ॥ ४ ॥
तांह्नीद्वयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाद्द:, कां
जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्म
सुदृष्टीनां, नूरिशोनातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूर्वेव, नूरिशो
पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रन० ॥ ६ ॥ सु
तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्प्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प्प
क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व०॥ ७ ॥ नवां
प्रनेंद्रेण, यैरन्नाजिसमुन्नतः ॥ यैरन्नाजिसमुन्नतः॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेस्वद्विधिंप्राप्य, प्रमा
समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमार्थंतसमाहितः ॥ ९ ॥
ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलस्वामे, देवसं
केवलं ॥ अपिमुक्तिर्नवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्षगतिर्न
न् ॥ अनंतानसत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं
अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥११॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः॥
स्वंदिरहंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ श्री
र्दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री
मल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्व
यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअ
त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्म
नद्धर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म०
॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेघृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंव
सारंगविदधेघृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६
कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाहृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच,
धुतारोवृषाहृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७
येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽरनाथकुर्वीर्जव्या,
नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥
ह्रिपद्मसुतःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजियतेमल्ले, प्रतिप
सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९
श्रीसुव्रतजिनाधीश, मक्रमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्द, म
मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २०
देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सद्दामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्ञत्त्व
सद्दामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि०
॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षे, शमितादानवारणा ॥ श्री
मेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकुस, महाहारतरंगिताः
नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्र
पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातु, तत्वानःकांचनश्रियं ॥
प्रन्नमेपुनिरस्सीमां, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पो

चोवीस माहाराजकी पूजा करावे, पीछे बलनाकुल देके दिग्पालों को विसर्जन करे ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक भया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोछव करे. एसेंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उछव करणा. एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोछव पूजन करणा चाहिये. इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजयपर्वतकों स्थापन करे (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करे. अक्षत मोतियोंसें पर्वतको वधावे, केसरचंदनसें पर्वतको पूजे. सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछे) पूजन सरू करे (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहर्इ॥चन्नउच्छवअठम, दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं. एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावे, पीछे श्रीसंघ खमा होके (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करे. यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यें नारेल १ सुपारी १० हर फल

फूल यथासंभव चढावे, धूप खेवे, कपूरकी आरती करे; पीछे सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० ख मासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करे. पीछे (श्रीसित्रुंजय पुंमरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं; अन्नत्थूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उच्छव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करे १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र बजावे ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अब इसी तरे (वीस । तीस । चालीस । पचास । यह चारों पूजाके भेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करे ॥ तीसरी पूजामे १० की जगे ३० की विधि करे. चोथी पूजामे १० की जगे ४० की विधि करे. पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करे. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करे. उत्कृष्टसें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढावे. जघन्यसे पांचूं पूजा किये पीछे १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करे. गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछे सिद्धगिरीकी जात्रा करे, ग्यानपूजा करे, गुरुभक्ती करे, साहमीवच्छल करे (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीऋषभदेवस्वामीके प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोमी साधु साथ अक्षय सुखको प्राप्तभये. (इसवास्ते) भरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्रीपूनमकों आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया. यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोके पूत्र पूत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परन्नवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होएसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसान्नले, पुंमरगिर रे गाईस हूं सुन्न न्नावले ॥ मति सुरगिर रे सहस जीन्न जो मुखहुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण छे अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण न्नापियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरे राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति न्नरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंमरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणे न्नलो ॥ (उल्लालो) गुण न्नलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंमरीक गणधर प्रथम विहरे सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंमरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) दिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपे थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै, बहु न्नाव न्नत्ते त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ न्नावना न्नावे तेण दिवसे पंचकोमि गुणो फले, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिले ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पच्चासा रे श्रावक निरतो सद्दही ॥ चउअंत ... म दसन दुराजसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसै ॥ (उल्लालो) मन वसे पूजकपूरपूर मासखमण फल बली, सामग्र

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ दिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीश्रठे परंपरा, ते मोद माया कपट ठंमी सुणो जवि पण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा श्रादिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां श्राग, करमबंध दूरे करि श्राग॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊना थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदे, जघन्यना वंदण पाप ठेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंद सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाणु, वेला प्रमाणे श्रहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज एह, इसी परै बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै, एक चित्त सूधै शुज्ञ पून्य कीजै ॥११॥ धजातणी रोप तिहां करीजै, एकेक पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे श्रारति मंगलेवो, पठी प्रज्ञु श्रागल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगै संघपूजा आदरो, साहमोवछल करो जविका जवसमुड लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहू लहै, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥१३॥इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वेमे स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज्ञ धर्मी शुज्ञदिन गुरूके पास नंदीश्वरतप ग्रहण करे. नंदीश्वरदीपके च्यारुं दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस२ (५२) बावन उपवास

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामकी २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक ढली होय. ४ ढली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब उजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंम्ल बणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोछवकरकेग्यानपूजा, गुरु पूजा करै,साहमीवछल करै, मंम्लकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२पदाम्की रचना करै चार दिसामें ५२ करै, वीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके वीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैसाख सुदि ३ है सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें वारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती भया. इस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीवारे कोम्ि सोनइयोंकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उदघोषणा ४, देवदुंदुभी वाजित्र ५, एसे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

आ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणेसें सब आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछे गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चरकाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमैं, उर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहैंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोछव करावै. शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) वहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उछव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोसुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्य

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंडण हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पडिक्कमणा पोसा करै, कोइ भगवानके मंदिरमें नानाप्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पाले, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवे सो करे, इसमें विरोध नही. लेकिन् कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदे, पीछे गुरूके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवे, सांझकूं चोमासी पडिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कोंभी सेवन करें ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते हें, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस देसमें श्राविकायां इस महीनेंमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हें. जिसमें उत्तमफलको देणेवाली केइएक तपस्या विधिप्रपाग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हें ॥

॥ अथ दुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ लडी) इस तरे पांच लडी करै. तपोदिन २५. उजमणे २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

उली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणैं १६ लडू चढावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उली ३ करै. तपोदिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दति १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उली. इसी तरे उली आठ करै. तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूडणतपः ॥ ७ ॥

भाद्रवा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा त्रिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अच्छे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे भरै, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥इति अक्षयनिधि तपः ८॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगें) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पात्र

एकासणादिक तप करे. अंबिकादेवीकूं वेस चढावे॥ इति अंबिकातपः।

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करे. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करे. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि डर करै. ऊजमणे एकसो वीस लडू मंदिर चढावे, स्नात्र करावे ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः॥ १४॥

वरसातका च्यार मास डर पोष, चैत्र, यह षट मासटालके छोटी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति छोटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवासके दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढावे, सत्तरभेदी पूजा करावे, साहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढावे. इस तरे वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल चणाके सा ते राज सात पावर्डी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावे ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावर्डी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावर्डी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावर्डीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लड्डु देव आगे चढावे ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंडित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंडितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गको पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका पारणा (चोथे तेले) लड्डूसें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पार णा. पारणे प्रथम साधुको वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृतते लातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतप: ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावे तो सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाभ होय भगडेमें जीत होय॥ इति धर्मचक्रतप: ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरे करै॥इति पंचमहाव्रततप:२८ उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो१. उपवा १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पडिलाभै, ग्यानपूज करै ॥ इति दालिद्दहरणतप: ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, बेइंद्रिये छठ १, तेंद्रिये अठम १, चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, छकायें चतुर्दसम १, तप करै. ऊजमणें सुखडीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति छकायआलोयणतप:॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतप: ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतप: ॥ ३१ ॥

छठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतप: ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतप: ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति भर्तारसुखतप: ॥३४॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतप: ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतप: ॥ ३६॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतप: ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी श्रावकणयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोंके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्धार करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा साहमीवच्छल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोमें अपणा धन.

खरच करे, धर्मका उद्योत करे ॥ इस तपस्याके प्रभावसें इस भ
वमें संसारसंबंधी दुःखदालिद्र दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा
होय, परभवमें देवादिक ऋद्धी प्राप्त होय. (किंबहुना) इति गु
कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भाद्रव महिनेमें मिति भाद्रवा सुद ४ तथा केइ मतकी
अपेक्षासे ५ तिथिकों संवछरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे (प्रथम इस
संवछरी पर्वकी महिमा कहते हे) जेसें जगतमें अनेक मंत्र हे
र नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ
तीर्थ नही २, पांचदानमें अभयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही
, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष
नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा
द ९, अलंकारमांहि चूडामणी १०, ज्योतषीमें चंद्रमा ११, ते
वंतमांहि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु
में पंचवल्लभकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे
न १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९,
ववंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२,
सुखमांहे शाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५,
जित्रमें भंभा २६, स्त्रीमांहे रंभा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता
कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें
त ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक२ चीज
म होती है. इस तरे सर्व पर्वोमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री
छरी (दूसरा नाम) श्रीपर्यूषण पर्वकों भगवंत श्रीमहावीर
मीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूषणपर्वके आगेसें प्रथ
मीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जावके की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अ शुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महो छव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागर ण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम आजूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इं द्राराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट गलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके तरफ पुरुष अछा वस्त्र आजूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्ण करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखै. श्री घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपड वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जमजूंजा इत्या दिक सबका आरंज छोडावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रजावना करै ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकट्ठा कर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावे ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवछरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ स खमावे १२, पारणेके दिन पोसह पडिक्कमणेवाले साधर्मीजाइ

थोंकी ञक्ति करै १३, गुरुञक्ति करै १४, संवत्सरी दान देवै, साहमी वत्सल करै १५. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करनेसें आठ ञवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे (उर) केश्यक ञव्यजीव अत्यंत शुञ्ज ञाव ञरतेञये अठमादि तप करके युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे उर सुणनेवाले प्रमाद निद्रा विकथा बोडके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धञाव रखके इकवीस वेर सुणते हे, सो ञव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे ञव सिंद्धिस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो ञव्य जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रञावीक हे, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे उर नमस्कार करते हे॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरण कियाञया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययम हे. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीञद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे ञी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीञ करके कहे तोञी महात्मका एक अंस ञी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाणजो ञव्यजीव शुद्ध ञावसें सेवन करेंगें सो अनेक तरेसें रुद्धि वृद्धी सुख सौञाग्य कों प्राप्त होंगें. उर परञवमें देवादिक रुद्धि पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगें ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की उली तथा अष्टापदजीकी उली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी हे उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्त्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिती कार्त्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें
सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त
साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें
यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व वात जव्यजीवोंके सामने नि
पण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके
कशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह दे
के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं जेजा.
गमी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंम देसना दे
जये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन
गली दो घमी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस सम
जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चोसठ इंद्र देवता
णके आणे जाणेसें वमा उद्योत जया, उर जो राजा पोषधमें बै
जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्य
उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा उर
चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दि
सुदर्शना बहिन अपणे जाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीम
या, शोक दूर कराया जिससें जाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह
दीवाली पर्व वमा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना
करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥
श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः
॥ इस एकर पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर
ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण
कल्याणकका अधिकार सुणै । गोतमरास सुणै. इत्यादिक उदार
... सर्व श्रिकाऐं दीवालीपर्वका उच्छव करणा चाहिये ॥ दिवा
... स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढे ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंच मी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन सर्व जव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम प दार्थ कुछ जी नही हे. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंच- मीके आराधनसें अनेक डुष्कर्म नाश होय. गुंगापणा, मूर्खपणा, व क्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साथिया करै, फल फूल प्रमुख चढावे, पांच वत्ती का दीपक चढावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावै तथा पूग विटां- गणादि चढावै. (ज्ञानपूजा लिखते हे) नमंतिसाअंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविहेयपुव्विं॥ जत्तीयचित्तेमणिदामएहिं, मंदारपुप्फेपसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्दामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसएहिं ॥ पू यंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सलाजायजवक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै, (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे जावपूजा करे सो लिखते हें) खमासमण दे के। इरियावही पडिक्कमें। लोगस्स कहे। बेठके। मुंहपत्ती पडिलेहे। अणूजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिजास जानु

निरमल सुखकारण, सम्यगदर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ सं यमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापित जिन गारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति परिबोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रजुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, जेद प- चास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां डुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश जास ध्रुव केवल अपर मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन जासै, बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति जाष्य पडि शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोगद्वार शास मा- नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव जपगारी, अभ्यासो आग- म अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देवचंद्र आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरुवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसिवपं चमीए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० १ लोगस्सका काउसग्ग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापदके) पीछे ॥ आन्नणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवउ हिना पंच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञानायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकप्रकाशकरश्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच नमस्कार करै, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंकों नमस्कार करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करैं ॥ पीछे (ॐ ह्रीँ णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढे वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आचरांग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे न्नाषियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोन्नता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरपदने जेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए न्नाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वन्नाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सांन्नलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे न्नव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे मोहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥सु० ब० ८ ॥इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥मोरासाजन॥ त्रिणसे तेसठ पाखंमीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे इथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरे, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय छे, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो०॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मीठो०४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥मो०॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥मो०मी०५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण माहि ॥ मो० ॥ कुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे माहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिम पणत्ता रे भाव ॥ मो०॥ भापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मीठो० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मो० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी॥ ए चाल॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो॥ दारे देखी२ भाव, दारे जीवाजीव स्वभाव ॥मो०॥ सयल जगत करी छाजतो रे जि०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो०॥

गुहिर जाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंम ॥ मो० ॥ नहर आगर इह नदी रे जि०, जेहमेंछे रे उदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ रस गण अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त हनी वाचना रे जि०, संखगाता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेढ सि लोक निजुत्तुं रे जि०, संगहणी पडिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं- ख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय ध इक राजतोरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक स छै रे जि०, पद बहुतर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा न तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ एचाल ॥ श्री समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा अंग करो सोना वणी, हो लाल करो सो० ॥ अरथ मागधी जापा खा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित जाव कुसुम परि- व्याप्यो घणो, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव ासरी, हो लाल जो०, लहीये एहथी जाव विरोध कांइ नथी, लाल वि० ॥ जांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल ०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ प्रकी छै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोडाकोडि प्र क जीव निरूपणा, हो लाल जो० ॥ बारसविह गणी पिटकत संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छै एहना , हो लाल छै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके जला, हो उ०, संखगायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहल तेत्तरा, हो० स०, पदनें अत्तदत्र संख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां ज्ञेद गंज्ञीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावे अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं मांहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे ज्रृंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर शिर सुरगंग तज्ञी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन निर्ग्रंथतणो जुगते वम्रो, हो० त०, साकर सेलम्री ज्ञाख थकी पिण मीठम्रो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहे, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ढाल पंथीमानी॥ पंचम अंग ज्ञगवती जाणिये रे, जिहां जिन वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगम्री रे, जेहनी हें उद्दाम ज्ञवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति ज्ञलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हजार उद्देसा जेह ना रे, जिहां किण प्रश्न उत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरथे ज्ञरथा रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालोक स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परज्ञावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र ज्ञगवती रागसूं रे, तो होय ज्ञवसागरनो त्याग रे ॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे द्रव्य चढाइये रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम रे ॥ कीजे साधु तथा साहमीतणी रे, ज्ञगति युगति मन आणी

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण जव सीझे वंछित काज रे ॥ परजव विनयचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिझाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरे मालियै ॥ ए देशी ॥ छठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना छै अरथ अनेक उहंम हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातड़ी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंम हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्ती उपांग छै जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अनुजवे जी, चर्चिक मुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंम सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जो, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चरकाण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुज कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाज वलि तंत ते अंतकृत्या कही जी, धर्मकथाना होय छै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबंध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोमि तिहां सकल कथानक जापिया जी, जाप्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला पद एहना जी, एह थकी जाये कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परे जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिले जोया एककै होय हो ॥म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवे सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहे, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्देस विचार रे ॥ दसर संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आ दादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जा मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो चतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नही, तेहसुं करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पि सूत्र भएयो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अर नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपिये, निस्सं पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद कहे स्युं थयो, जो कुमती रस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझाय: ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ज० ॥ ए देशी ॥ आ ठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणो करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म क ठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भा सता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न य भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी लहि का जी, कहिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोश्र छे रे मीगास ॥ सरस अनुन्नव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुणयां थाय, जिम माद्दा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुणया जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, [रत लहै अन्निप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ आवक सूत्र सुणो । सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ आ० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥ आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजें, तिम२ अंतरगति न्नीजें हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ आ० ॥ नगरादिक न्नाव वखाएया, ते तो छहै अंगे आएया हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध चारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ आ० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ आ० ॥श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगावुं हो॥ आ०॥ ६ ॥ जे सुणतां करे चकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ आ० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहुको राचो हो ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रश्नव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणावुं ॥
पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अं
ष्टादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूमा ॥ ते छै अष्टोत्तर स
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इह
आएया, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि ने
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुयखंध एक छै दसमे अंगै, पणयालीस
अझयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणे नही कानें, केवल पोपे काया ॥
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥
सूत्र मांहि तो मारग दोयछै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलि
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम
डुकृतफल भोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल भो
गवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु०२॥ दोयश्रुत
खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥
सु०॥३॥ सरस चंपकलता सुरभि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि
माटे ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ
चल खाटे ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअछे, डुकृतने
जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव

न धारिये गुण संभारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंदा नि॰
ण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज
हज संतोष भज, लाग श्रुत सांभली धरमधंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
दुःख विपाक फल दाखव्या, श्रंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो
र शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७॥

॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ श्रंग इग्यारे में थुण्या, सहेली ए ॥
ज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
ख्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
॥ पसरी श्रंग इग्यारनी, स०॥ मुझ मन मंडप वेल कि ॥ सींचू
हरखे करी, स० ॥ अनुभव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
सांभलै, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू
, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी
, स० ॥ अहम्मदावाद मझार कि ॥ भास करी ए श्रंगनी,
॥ वरत्या जयरकार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
॥ वरषाऋतु नभमास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥
राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रत्ननिधान जो, स० ॥
तिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ श्रंग
र सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे श्रंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर भप
सुगुरु बताई, पांचु भेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, बाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे० ३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि भलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीभुवन तिलो ॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणधरगुरु भाष्यो, तदुभयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग भाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग छै अति रूड़ा, छ छेद पयन्ना नहि कूड़ा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूड़ा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि भाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहिये, संवेगपखो वलि सरदहिये, ए त्रिण विन भवमारग कहिये ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करिये, उपचारे दूषण परिहरिये, आराध्यां निज अनुभव तरिये ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावे ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा ब्यासणादि तप करे, दोनुं टंक पडिकमणा करे, देववंद

दि करै, (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका
प करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको
वै. कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै,
ाई महोछव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, (२१)
सेत्रुजरास सुणे (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः)
पदसें २१ जेती देवै. (कदास) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति
ी होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंम्या होय नहां महोछव
क दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, ठन्नत्त कर
ा चतत्यन्नत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुन्नक्ति करै, सा
ीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें
अशुन्नकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दि-
ीद्रावम वारखिल्ल प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त
जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता है नसका नि-
शकोमि गुणा फल होता है ॥ इस न्नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके
न डुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतु-
मुंबईमें था. नहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोंके
श करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठ
ी संख्या मिली, ठर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना है, अन-
ाधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत न्न
ीव होंगें सो शुद्धन्नावसें इस तीर्थकों सेवेंगें, जो सेवते हे
न्य हे. गुजरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी
यन्नक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक
जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी
ीं न्नव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत सं-
न्नवन्नमण समझके वर्जना, एसें डुरबुद्धियोंकी पूजान्नतपच्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगभीन करणा. शुद्धभावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनि ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेम हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयें गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आदिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ भोली भगत भली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर भरिय कचोलमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूमी रायणछांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद उदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरव निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० । अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभुत उलकाझोल, मो० ॥ सिद्धवरू सेत्रुंजेनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये नित रंगरोल ॥ मो० ६ । इण डुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजे परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर छांहमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंद्रप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरव निनाणू समोसरया रे, प्रथम जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सी- द्धि ठाम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोम रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कल्याणक ज्ञूमिका रे, महिमावंत महंत रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो० ४ ॥ कोमि ज्ञवांतर जे किया रे, पातिक विविध उपाय रे ॥ से- त्रुंजै सनमुख चालतां रे, पगर ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥ धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ वहरी यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर उत्सव अतिघणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम ज्ञगत साहमीतणी रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व- धती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्युं रे, रजत सोवन ज्ञर थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव- न मोरी काय रे, ज्ञगति जुगति उदारस्युं रे, नाज्ञिनंदन जिनराय रे ॥ नमो० ए ॥ द्रव्य ज्ञाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥ ज्ञावे ज्ञावना ज्ञावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥ रत्नत्रयी ज्ञमती ज्ञली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ ज्ञवज्ञव ज्रमण निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथे धूलेवा सुपसा- यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहे जिनहरष सूरीसरू रे, हो- यजो मंगल वृद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, ज्ञेटवा विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाज्ञिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु- देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं वोले रे पंथी म्हारा वहिलुं वोले रे ॥

सेत्रुंजो छे कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूमी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे वरुला घणा, झुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवमा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊम हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वहि० ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, झीणी२ झमे खेह रे पंथीमा मैला थावे संघना कापमा, निरमल थावें देह रे पंथीमा ॥ वहि ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा। जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीमा॥ वहि ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा। फूलाइंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीमा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीमा ॥ मोने भेटणरो जी कोम छै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथीमा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरिये, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोमिसहस भव पातक तूटे, सैत्रुंज सामे मग भरिये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढिये गिरवरिये ॥ विम० जा० ॥ पूंमरीक पद जपिये हरषे, अध्यवसाय शुभ धरिये ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरिये ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरिये ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पमिक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापपमल विष हरिये वि० जा० ४ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम भवदरियें ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहे भव तरिये ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥राग प्रभाती॥ भाव धर धन्य दिन आज सफलो गिणयो, आज में सजन आनंदपायो ॥ भा० ॥ हर्ष धर निजर भर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूजतां, धन्य दोय चरण जिहां चलत आयो॥ भा० ॥आज धन दोइ जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह में सुजस गायो ॥ भा० २ ॥ दुर दुरगति टरी जात्र विधसुं करी, पुन्यभंमार पोते भरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरिसिखर, ऋषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन डेढसें कल्याणक भये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के भये, श्री अरयनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान भया. एसें इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक भये. इस तरे पांच भरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पचास कल्याणक भये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें डेढसे कल्याणक भये. इस वास्ते यह दिन बमा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करें, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इछा होय तो महीनेंमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारे अंग जा· वसें सुणें, इग्यारे अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवच्छल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुजूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुजूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुजूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१९ श्रमल्लिनाथायनमः
१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रजुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुजंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुजंकरनाथायनमः
६ श्रीशुजंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः
१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्कराद्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्कराद्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन पंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्कराद्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन पंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत २४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिभद्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिभद्रनाथायनमः
६ श्रीहरिभद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४पंचकल्यालकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीअक्षोभअर्हतेनमः
१९ श्रीअक्षोभनाथायनमः
१९ श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः
१ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
१ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
१ᗅ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
६ श्रीब्रमणेंद्रअर्हतेनमः
६ श्रीब्रमणेंद्रनाथायनमः
६ श्रीब्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वेएरवतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणकनाम॥१६॥

[illegible]
[illegible] अर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः
६ श्रीअभिनंदननाथायनमः
६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४
जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायन।
१ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
१ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
१ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
१ᗅ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जि
नपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४
जिनपंचक०ना०॥२॥

४ श्रीयशादिकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीयणिकअर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः
तकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥
२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः
तकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जनपंचकल्याणकनाम॥२१॥
श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
श्रीदिलादित्यनाथायनमः
कीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥
श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
श्रीअवबोधअर्हतेनमः
श्रीअवबोधनाथायनमः
श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६१

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनम
पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥
२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायन
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनम
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनम
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥
४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः
पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥
४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीहरअर्हतेनमः
१९ श्रीहरनाथायनमः
१९ श्रीहरसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त० २४जिनपंचक०ना०२९

२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१९ श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना० २४जिनपं०क० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेरुसें माला होती हे. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे नवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे॥इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प०॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक हे, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी हे, इस दिन श्रीपार्श्व नाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चरकाण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय तहां जात्रा करणेको जावे, जो कभी यात्रा करणेको नहो जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय वहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावे, जलयात्रादि महोछव करके अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावे, तोरण बांधे, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करे, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढे वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि रोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करे, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगे चढावे, बीचमें १ बडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावे. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावे । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करे, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावे. पीछे श्री ऋषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करे, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करे. अतिथिसंविभाग करके पारणा करे. इस तरे १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करे, पीछे शक्ति मुजब उछवसें ऊजमणा करे, तीर्थोंकी यात्रा करे, साधर्मीवछल करे ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥	पुष्करार्द्धपश्चिमएरवतेवर्त० २४जिनपंचक०ना०२१
२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः	२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्हतेनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीनंदिकेशनाथायनमः	१ए श्रीविवेकनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥	पुष्करार्द्धपश्चिमएर०अ० २४जिनपं०क० ॥३
४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः	४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः	६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः	६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः	६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः	७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती है. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे थोमे नवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प०

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नाम पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चरकाण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा [illegible]. जो [illegible] को नही जा सके तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करकै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढै वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि रोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा है॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगै चढावे, वीचमें १ बडा मेरु, च्यारुंदिस छोटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावे. पीछै श्रीऋषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करकै पारणा करै. इस तरे १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें उजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमर भागिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब त-पस्या पूर्ण नयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपेमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत ती-र्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान नक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देके श्रीसुव्रताचार्य-जीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व क-र्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त नया. जो नव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस नव नर पर नवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चौ-मासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा है ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ श्रमणनगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वर्मे पर्व कहा है. ३ तीन चोमासे, २ उली, १ पर्यूषण. जिसमें उली २ का नर पर्यूषण का एवं ३ अगाईका महोछव तो प्रायें सर्वत्र होता है. जिसमेंनी जेसा वीकानेरमें खरतर गछवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उछ-व हाथीके होदे वर्मे आमंबरसें होता है वा वरघोमा पुस्तकका मुंब-इमें नी होता है. लेकिन् हस्त्यारूढ नहीं. नर कार्त्तिक महोछव अ-न्यत्र नी बहोत जगे होता है लेकिन् कलकत्ते जेसा महोछव स्वमतमें त-था परमतमें कहांइ नी नारतवर्षमें हमने देखा नहीं. दक्षणमें मले-वार तक हम गयें, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटणा तक में नहीं देखा. नगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उछव कलकत्तेमें देखा था, नर फागुणमहोछव मकसूदाबादका बहोत अछा होता

हे, ऊगणीससें सुमतालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहांइ भी देखा, लेकिन् किसीभी धर्ममहोछवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अछा नही. एक तो भगवंतके समवसरणके संग आजकलके भाग्यवानलोक धूपके मरसें रेतीके मरसें आप तो जाते नही फक्त बेसमझ अदम्योंको भेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते भागते समवसरणको उछालदेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तोजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धभावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनु भव सफल हे. वोही महोछव लायकतारीफके हे इस वास्ते आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेसका चोमासापर्व आराणके सर्व जगें भगवंतके धर्मका उद्योत करतेभये शुभध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्टको जलाके होली करते हें, पीछे सुबोधजलसें स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हें. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हें. द्रव्यें भाव भावे. सो प्रथम द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हें॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञानीजीव विवेकविकल भयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त भये थके लकड गाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हें, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हें. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीडा करते हें, खोटे वचन बोलते हें, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंको दुःख देते हें, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा गेरुके भांड भरमेंकी कुलमर्याद करते हें, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हें, दूध गेरु पेसाब पीते हें. एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हें, अनर्थदंडसें अनंत भव संसारको स्थिती बांधते हें. इसवास्ते आत्मार्थी भव्यजीवोंको भावहोली करणा चाहिये. सो इस मुजब–प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोले, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकाले, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नानातरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतऋतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गुलालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहोत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूलसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद गेमणा, वमेरोंकी लज्या गेमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरुषोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ भई हे. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हज्जार वर्ष करीब भया. पीछै स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तबसें धीरे२ अज्ञानी जीव एकको देखादेख वहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता हे उस वखत तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मातापिता भाई बहिन सबोंकी लज्या गेमके वहोत दिलमें खुसवखती मानताभया पागलके माफक भांमोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वेस्याउका नाच होता होय उहां तो हज्जारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हें हमने वमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभगतीके पाये पूरे मजबूत बंध करणेमें आये. एसी लज्जया गेमके जिनमंदिरका महोछव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगे उर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें झूठी ठहरावेंगें, और मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगे यह वात सच्च हे. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंड लगता हे, लेकिन् हम इकेला क्या करें, भाइबंधोंकों एसा करते देख हमभी करते हें, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छी है. इस वास्ते हे भव्यजीवो इसमें समुदाणी कर्म बंधता हे. छोडे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत और वात तक नही करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख उसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों भवमें लाभ होय. इस इव्यहोलीके खेलमें वडी२ लडाइयां होजाती हे. मेडता सहर हालीके ख्यालसें पुष्करणे और भोजकोंकी लडाइमें तमाम उजाड होगया. और परभवमें अेरगैर बोलणेके फल सब धर्मोमें बुरा लिखा हे. इस वावत जो जो कठोर लबज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचनानुसार लिखा हे. हितोपदेस समझके छोडणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अडसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु हे. जिसमें भी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मिच्छामिडुक्कडं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर वहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति भली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अथाणो अति भलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मादल भाव झफ रे, क्रोध मान दोय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

गिरूकाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥ हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, रुपचन्दैव गुण गाय ॥ श्रीजिनचंद इम खेलतां, वारी भव२ पातिक जाय॥ हो० ४॥ इति पदं॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिनेसरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसरकी ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंडित तनकी, स्यामघटा जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ भगाय वाय ज्युं बादल, जीत करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपाये, श्रेणि चढया जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहे जिनचंद्र मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान गुलाल अबीर उडावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत रूप धरम जिनवरको, शुध क्षमा कहे करजोरी॥ म० २॥ इति पदं॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या०॥ संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या० २॥ मोह छोड गिरनार सिधाए, नव भव नेह अलग कियो रे ॥ या० ३॥ तुम हो तीन भुवनके साहिब, सुरनर कहे तुमे चिरंजीवो रे ॥ या० ॥ ४ ॥ बार२ मेरी वंदना होयज्यो, चंद कहे मन हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ०॥ इह संसार गहर तरु सिंधु, भमर पमत जिहां भव फेरी ॥ इ० १॥ क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥ एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण बिरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो दुखकी वेर
क्षमागुण दायक लायक, अनुपम कीरत जग
॥पुनःहोरी॥ सांवरो सुखदाई, जाकी छवि
सां० ॥ श्री॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन गाई।
तसिखरगिरि मंमरा प्रभुको, देख दरस हरखाई–हृदय मेरो
हुलसाइ ॥ सां० १॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनं
ई ॥ तीन भुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई–
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पा
व२ भटक्यो मैं भाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत,
कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत
खी ॥ ने० ॥ भव२ संचित पाप करम सब, देखत दूर पुला
मति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल उलसाइ ॥ आ
॥ वामानंदन अति छबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ ई
याल दयाकर दीजे, आनंद हरख सवाइ ॥ आ० २ ॥ इति प

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त मही
खोरी, देखो स्याम सखी मोपै छोरी ॥ एसें० ॥ व्रजकी सखी
वन२ निकसी, खेलत मिल२ होरी॥ मारे गुलाल अबीरमुठोभर,
ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सभी वन
मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियत
गोरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस द
प्रभु मोरी ॥प्रो ? तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोर
व० ऐ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने
समुद्रविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपुंज त

रिम खेलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी–अरज नहीं लीनी मोरी हो ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन नाए, लाये बल दल जोरी ॥ तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी डरी–मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल नई हुं वरस विन देखे, रहि हे मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करे करजोरी· लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे नविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर उमावो फोली नरश हो० १॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल वजावो, गुण गावो प्रनु हित ध ॥ हो० २ ॥ अनुनव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस म हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूम उमावो, ज्यूं तेरा पाप र ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलइया, तूं तो प्रनू नज वि व न कर रे ॥ हो० १ ॥ विमय संनारी नर पिचकारी, हांरे तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल ; फोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घर२ रे ॥ हो० ३ ॥ सील सु आनूपण अंगे, हांरे तूं तो नावना वामा पहिर रे ॥ हो० ४॥ न रंजन प्रनुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुनव वर रे हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत म मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो ज गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलान कहे प्रनु संगे हांरे तूं तो अनुपम नव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाके ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलेंगे होरी॥ वा० ॥ जिनशासन प्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुना मिल, ऋजुता मुक्ति सुहाई ॥

उर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥आ० वा०२॥ भाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, भक्ति जिणंद वधाई ॥ आ० वा० ३ ॥ खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित विन जीव जगत भटक्यो, स० ॥ चउरासी भव भमतां२, नरभव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरभावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश भयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संभाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रभु गुण गावो, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नाभ कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन भुवन सिर है टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ बहुत हगसुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोर्मे, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनवरभूषण कहै भविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भरयौ, दिशि दूजी गिर वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकु मार ॥ ग० १॥ फूल्या केवडा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २॥ आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजे पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आं ब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचे नेमकुमर अ नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिलं विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छ टे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जोरें य दुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहे, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ व पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण सोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ, फूल चढाउं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, भवर दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फा गुणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, दोय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरिय कचोरी, प्रभुजीके अं गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल उडाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निशिम दुरित जर शिखर जि दुरकी, जवसागर तारण तरकी ॥ ब० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ ब० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब जनको, बंछित पूरण सुरतरुकी ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंमल मंमनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाजेय जिनेसरकी ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, दुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जुवन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज लंबन सोजाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद जरकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, जवश एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥ त्रिगढमें विराजमान, उंडुजि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, जामंमल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रनु पदकज लंछन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे डुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिनुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सेत्रुंजगिरिया॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसिया ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथे, संजम लेइ नवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सेत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रनु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे नव हारो रे॥ जि० ॥ रथ पालधारे चंदाप्रनुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि तन कर हियरा हरख नरे, प्रनु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरनव सफल जमारो ॥ नवि जन मन नमरा रंग नरे, प्रनु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २॥ नवडुख नंजन नाथ निरंजन, नाम लीधे निसतारो॥ ममता तज सम ता संग नेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें वधाई, घरश् मंगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, सुख

जयर सवद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी दिव सरणा ग्रही, नवसा यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सूंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि छोरी, कोन चूक मोपै काढी नामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ मैं न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत वणी जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, वाल कहे भई मुगति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥ पर मंदिर तज अविचल लीजे, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ दिल मिल आप परम रस चाखे, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहे अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमे, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावे, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारे, वंछित पावे दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजे तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत रांमी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, डुरजनकी लाज मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर भरावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद भरावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही मैं तेरी आय२ ॥ डु० हो० ४॥ इति पदं॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी वात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भरयो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो ऋषभ बेठे अलबेसर, मारो गुलाल मुठी भरके ॥ बावो० ॥ मुठी भरके पसली भरकै, बावो० ॥ चूआ२ चंदन भर अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजडित शिर छत्र विराजे, अंगी जमाव जडी जरके ॥ बावो० २ ॥ बांहे बाजूबंध बहिरखा विराजे, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान है दास तुमारो, तार लीओ अपणो करके ॥बावो० ५॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःडुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं ऋषभ जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१॥ बीस कोसथी दरसन दीठो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके वीस गोमटजी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पावो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा–संघयात्रा करणसें पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन्न जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जवरका छुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रुद्धि तेरी में देखी, सो अब मुजकुं सजदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ जूवरवास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंडपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी छूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवाडी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आजूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना गहर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजूत पंच महाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद्र प्रजुकी कृपासें, जी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीके दरवार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलाबकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग वीण डफ वाजै, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहिये मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, छोड चले अभिमानी ॥ ई रे लाला छो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीतो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत वंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी–श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें नेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजै, रंग विजय सुख दानी–आवा जर गमन छिदानी ॥ सा० ३ ॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवारी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम बागा अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुमसुं अविहड रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी भाव अभंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ महदवंधीकी भांत भली हे, बुंटिया नवर रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोन्नत हे, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस घर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर हे साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ भावना भावो जिनगुण गावो, अमर घणै उच्छरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल भविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर२ मुठियां चलावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, भाव शुक्ल जल न्हावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुष्प बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य भंमार भरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद वधावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग बजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत छोरुं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारे, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीये ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहुला, कबहु तो मिलना कीजीये ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटे ज्युं शुभ ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाण्यो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुखियारी ॥ लाल ते० २ ॥एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें भारी॥ लाल ते० ३॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥लाल ते० ४ ॥इति पदं॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, अहि मानवभव मुंही गम्यो ॥ द० १ ॥पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेडो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे, एक बार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवछ लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुशोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सचे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजे गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥ ने० २ ॥ मंगलधन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥जय२ खेमकुसल गुरु जंपे, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-जी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीये ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाण्यो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, वहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुखियारी ॥ लाल ते० २ ॥एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पावे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें न्यारी॥ लाल ते० ३॥ धर्म विना कोई सरणा नही हें, एसो निश्चे धारी ॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव युंही गम्यो ॥ द० ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

२॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रें चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेमो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवत्स लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुशोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पुरव आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजे गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी बिच सार ॥ ने० २ ॥ मंगलधन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपे, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम जाष प्रकाश करतां जव्यजन मन गहगही ॥ निधि वाण नंद सुचंद विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गछ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंतके कल्याणकके हे सो सर्व जव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले जव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि·

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंजवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रजुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रजुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रजुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ए ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंजवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंजवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्टिने०
१ श्रीशीतलनाथजीअर्हे०
१ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१ श्रीऋषभदेवजीपारंगता०
० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्टिने०
. श्रीऋषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्टिने०
श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्टिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्हे०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्हे०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्हे०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्टि०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्टि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्टि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
४ श्रीआदिनाथजीनाथाय०
वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९
१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०
ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥
८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०
आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०
श्रावणकृष्णपक्षे । ४
३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपार०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०
वैशाखशुक्लपक्षे ८
४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०
ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥
५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०
आषाढशुक्लपक्षे १
६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्टि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०
श्रावणशुक्लपक्षे ५
२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०	६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०
ए श्रीकुंथुनाथजीपरमे०	८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥	१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्ठि०
७ श्रीचंद्रप्रनूजोपारंग०	भाद्रपदशुक्लपक्षे १
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०	ए श्रीसुविधनाथजीपारं०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०	आश्विनशुक्लपक्षे १
आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २	१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्ठि०
३ श्रीमहावीरजीगर्भाप०	
० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०	

ते श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुन्न दिन शुन्न घमी गुरुके पास पंच कल्याणक ग्रहण करै. उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चरकाण , तीन टंक देववंदन करै, पमिक्रमणा करै. जिस दिन जो मा-ाजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै. उर पहली वा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहां न्न-की कल्याणक न्नूमि होय उहां घमे महोछवसें संघ समेत ा करणेकों जावै. उहां विधी संयुक्त सर्व न्नगवंतोके पंच क-णकका उछव करै. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-ीरस्वामीके पट् कल्याणकका उछव करै ॥ अब २४ न्नगवंतकी क्षायें पांच, श्रीवीरप्रन्नूके अपेक्षायें पट् कल्याणक संक्षेप उछव ा लिखपते॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्ठिनेनमः) कहियै. इस चवदे स्वप्नादिककी पूजा करावके च्यवन कल्याणादिकका करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) ा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

जगतगुरु नयभंजण नगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अज
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सी
वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुन्नदिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१)
मिवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति न
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पमिया १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज,
अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वा
के पांच कल्याणक नावगर्भित स्तवन पढै. गुरूका संयोग
तो गुरूके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः)
पदका २००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी है उस मुजब वि
जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणेसें उत्तम
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पचक्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर नगवंत ॥ त्रि
बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम
समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पच्चक्काण किसा कह्या, कीधां
फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांनल गोयम ताम ॥ दस पचक्का
थकां, लहिये अविचल गाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी पोरसी
२, साढपोरसी पुरिमड्ढ ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण
श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ९ उपवास १० ही, एदिन
॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूआ कहुं वखाण
॥ रतनप्रना १ सक्करप्रना २, वालुक त्रीजी जाण ॥

४ तिम धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६ तमतम ७ नाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताड़ना, भूख तृषा वलि त्रास, रोम२ पीड़ा करै, परमाहम्मी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल भर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे भोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री०९॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै भाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ भावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जै नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥ करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोड़ि वरसां लगें, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां भावसुं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोड़ि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोड़ी परिमाण ॥ इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोड़ी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करे इक जावसुं, तो पामे सुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ अठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही, जीव लहे तिहां डुक्ख रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे सुक्ख रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर करे खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेष फल कह्यो, पांचम करे उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला, करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करे, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावे पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करे जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहे जव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आगम तप आराधतां, जीव न फिरे संसार रे ॥ अनंत जवाना पापथी, छूटे जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तस्या, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एहमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चक्खाणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद विण छे घणा, करतां में अप वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चक्खाण दस विध फल पयम्पा महावीर जिणदेवए, जे करे जवियण तप अखंमित तासु सेव ए ॥ संवत निधि गुण अश्व शशि शनि योग [illegible] दिन, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद्र मन [illegible]

ज्ञणे ॥ ३३ ॥ इति दस पच्चरकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चरकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चरकाणके ज्ञेद उर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल ज्ञगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, उर किसीके दश पच्चरकाण तप करणेकी इछा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरे स्तवन मुजब १० पच्चरकाण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावे, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अछी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, ज्ञाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल ज्ञेटियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेविये, धर कर शुज्ञ परिणाम लाल रे ॥ तीजे ज्ञव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मकार लाल रे ॥ सुणजो ज्ञवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूपण शुज्ञ महुरते, उचरीजै ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवझाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ए अरु, विनय १० नमूं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज्र १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत ज्ञणी १ए, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पमै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदे निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ए ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पमिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उलीरुपे वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसे, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे, कीजे जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुभ मन साचवे, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरे, मुखसुं बोले सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए पट् मास मांहिनें, व्रत महिये वमभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजे शक्ति विचारीने, द्रव्य विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूग आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजे दरवाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा भणी, उद्दिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गछ खरतर भणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो महीनेसे लेकर ६ महीने पूरी करै. कदास ६ महीनेमें पूरी नहीं कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पड़ती है. एक उलीके वीस पद है (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते है, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधै. और उससें कम शक्ति होय तो छठसें आराधै. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करकै आराधै. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधै. उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करकै आराधै. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवरपदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधै. जो इतनी

जी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करे, सावद्य व्यापार
गमे, सो शक्ति जी नही होय तो यथाशक्ति तप करके आराधे,
अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप
नही गिणे जावै, स्त्रियां जी ऋतुसमयका तप नही गिणे, तथा तपके
दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो
सके तो तपके दिन उजय टंक पमिक्कमण करे, तीन टंक देववंदन
करे, दो हजार एक पदका जाप करे, ब्रह्मचर्य पाले, जूमि शयन
करे, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै,
सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे
तो पारणेके दिन जिनजक्ति करके पारणा करे, जो तपके दिन पो-
सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनजक्ति करे करावे, जावना
जावे तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासें काउ-
सग्ग करे. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करे.
उस पदका गुण याद करके उदात्त स्वरसें स्तवना करे, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते हैं॥

(णमो अरिहंताण) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउ-
सग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का का-
उसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ७
का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना
लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना
लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो ह-
जार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए स-
व्वसाहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥
(णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥
॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ (णमो विणयसंपन्नाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअना- णस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करै ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्छव महो- च्छव प्रभावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्छवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरूका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्था- नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़े, वीस स्थानकजीकी पूजा करावै, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप- करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वच्छल कैर, इत्यादिक करें तर जावे विधि संयुक्त शु
जावसें जो जव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सं
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरे जव अनंत सुखकों प्रा
होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप तको विधि सं० ।

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥
जव जोजविछयणेवारणाणं, णमोवोहियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ
सिद्धपूजा ॥ लोगग्गजागोपरिसंठियाणं, वुद्धाणसिद्धाणमंसि-
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मरकयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥
॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-
णदयागिहस्स, णमो२ संघचन्नविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणं
मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ समम
ससंयमपतितजविजन अतिदृथिरकरताजला ॥ अवगुणअउविः
गुणविभूपित चंद्रकिरणसमोज्वला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरु
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सबोहिवोजंकुरकार-
णाणं, णमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोहदंतीहरिणेसराणं ॥ विणो-
घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-
णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो२होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ हदयपङ्क

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणेधुरस्स ॥ मिछत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनयपद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुधम्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्विनयेनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ कम्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुहकारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्गसुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्वयाजूपणजूपणस्स, नमोव्हिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ब्रह्मचर्येनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविजूपणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसुपोपणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुरुडुद्दवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्तवसे नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौतम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकरस्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोगणाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुससवातिसयासयाणं, सुरा२धी सरवंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंव्हिनमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद ॥ सविंदियापारविकारहारी, अकारणासेसजणोवगारी ॥ महात्र-

ज्ञातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगृचारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंडणस्स ॥ मुत्तीजगाय नसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगृज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव ह्नीवनवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणालय्स्स, नमोदयामंदिरसत्तयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगृश्रुतये नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशं कराय, तुभ्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगल मंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंडनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यगृतीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढ़ावै (पीछै) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढ़ावै ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानें द्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्त्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअच्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरणेंद्राय नमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः ॥१९॥ ॐहरिस्स हेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण वेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलंबेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषें द्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥
ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय
नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥
४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः ॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषें
द्रायनमः॥४३॥ ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥
४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीत-
यशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानि-
केंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः
॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥
ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रा-
यनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥
५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यरतेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥
ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्वे-
तेंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-
देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ ॐरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ-
प्रज्ञप्त्यैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्राकुशयैनमः
॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐका-
ल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ
गांधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यै-
नमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुतायैनमः ॥ १४
॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-
डश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-
पारी चढावै ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपा-
र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः
२१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐक्षायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐष-एमुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजाय-नमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखा-यनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्या-मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकु-शायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः १७ ॥ ॐधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअं-बिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायै-नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्प्पका-यनमः १ ॥ ॐपांडुकायनमः २ ॥ ॐपिंगलायनमः ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ इति नव निधान पदे ए कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्व-र्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

नैर्ऋतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्यैनमः ॥६॥
कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥९॥
ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥
चंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभौमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥
बृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः
७ ॥ ॐराहवैनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवैनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह
म ॥ इहां वीस स्थानक मंम्ल पूजनकी विधि विशेष लिखी
। सो नाममात्रस्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंम्ल प्रतिष्ठा
वाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंम्ल पूजामें लिखआए
उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधी कराणी होय तो वि॰
ज्ञन गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंम्ल पूजा वि॰सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुझ सानिध कीजै, भुलो
र जगति जणो समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए
ारा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥
दक्षिण भरते अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै
जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इण नामे,
पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे
का ए सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी
वै चंद्रतणी कला ए जिम पख ऊजवाले, तिम ते कुमरी धाय
पांचै प्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरी रूपें रूवमी ए घर अंगण वैठी,
राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन भुवन विच एहवो
ही दूजी नारी, रंभा पदमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४
प न दीपै कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल
तिण चयन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेड़ाया,

सबल सजाई सार्थ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छे कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखमी ए तिणसेती लागी ॥ कन्या देखे सकल लोक चढिया केड़ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व खत कन्यारो जाम्नो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाम्नो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल–प्रजु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंजणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री म्ना अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी ढुटे पमी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खमी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो डुख हुओ ॥ (उल्लालो) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनें कूदे कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुझने त-मासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचने रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए डुखणी रे पूत्र मुझे तम्फम करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो नेहना बालकतणी ॥ सातमा जूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पुत्रतणें शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या भरी ॥ पड़तो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोड़ आगे करै नाटक देवता, गोदे खिलावै के हसावै पायपंकज सेवता ॥ रूपनो भूपतने अचंभो देख ए कारए किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ । (चाल) चिंतवतां रे चारणिया आया जिसै, राजा विण रे पुहत वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वाम रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो भवांतर अने राजानो वल ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै भव रोहणी तप आदरयो, तपतणे सगर साधुभगते तुम्म भवसायर तरयो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजी ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसे राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चंद रोहणत आवियै, उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भावियै ॥ बा रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा ल कीजे तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनत ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करियै हो भजमण एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजे आगे हो आठे मंगलीक

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीः साहमी, मनरंगे हो करइ पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूं वना, मिल लेखण हो फिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वींटणा गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल—धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकाशे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पूत्रे आदरी, दिख्या वारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, मैं तवियो शिव-पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्यें सेवा पामी ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन ऊगमुनि चंद्र वरसे (१४२ पोष श्रावण सुदि भली ॥ मैं कही रोहणतणी महिमा सुगुरु ख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चित्तनी चिं टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करे, रोहणी दिन उपवास करे, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूज आगे अष्ट मंगलीक रचना करे, अष्ट द्रव्य चढावे, देव वंदना

दिक करके धर्मोपदेश सुणे (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः) इसका दो हजार गुणना करे. एसें सात वरस तप करणेसें सुख शोभाग्य वधेगा, पुत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधिकार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय ॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलिश वांदु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ भावन भंजण सेव्यां सुख करै, गातां नव निधि थाय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोमी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशण डुरित पुलाय ॥ व० ३॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणिये, एक कीयो छम्माश ॥ पांचे ऊणा छ वलि जाणिये, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जग जीपता, छ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें बेला जिनजीरा जाणियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतोस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी॥ सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति छम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसें उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणेसें इकसार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोभी छम्मासीके १८० उपवास करणेसें जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. और देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेकों जावै, शुद्ध भावना भावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रभाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उलट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुझ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुझ सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थिकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हण्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादृरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सेरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसें साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण भवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पडिक्क मणादिक जावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स माधि शुज जावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहे उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ए ॥ काल अनादि संसारमें, ज न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवे सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरजव पुन्यथी, वलि ल ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ हे मुझे, हिव मिल्यो म नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, मैं कियो हिवे परिहार रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे ॥ जव२ जे मुऊ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे ॥ धन२ जे नर आदरै, काटे ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, मैं थुएयो धन दिन आजनो मुऊ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारे माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषजदेवस्वामी उत्कृष्ट बारे मासी तप स्या करी. इस वास्ते जव्यजीव बारेमाशी तपस्याका जाव लायके (३६०) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन देववंदनादि क्रिया करै, बारे माशी तपका स्तवन सुणै ॥ (श्री ऋषजदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका २००० गुणना करै. तपस्या पूर्ण होनेसें सिद्धगिरी यात्रा करणेकों जावै. शक्ति माफक उद्यापन उत्सव करै. इस तपस्याके प्रशाद जव्यजीवोंके कजी दुख

सौभाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वधता रहै ॥ इति श्रीसमशी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥ लबधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधां अठावीस ॥ एहिव परगट थरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल संसारनी ॥) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लबधिना नाम परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबधि है नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र ऊषध समा जाणियै, बीय वप्पोसही लबधि वखाणियै ॥ श्लेष्म ऊषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसही नाम है तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवे, चोथी जल्लोसही नाम तेहनो हवे ॥ केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका नाम संभिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लबधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥) हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि तिहां जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते ऋजुमति नामे अठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रिय जे है तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावें ऊभी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्जाचारण लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापे खिणमें खेह थाय, ए लबधि

इग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लबधी बारमिये सहू थोक ॥ गणधर पद लं हिये तेरम लब्धि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरव जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लब्धि, सोलम सुखदाई चक्रवर्त्तिपद रिद्ध॥बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अढारमी आखी वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरै मेळ्या जेह सवाद, एहवी लहै वाणी उगणीशम परसाद ॥ जणियो नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार, ते कुट कबुद्धी वीसम लब्धि विचार॥१३॥ एके पद जणियां आवै पद लख कोम्फ, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम्फ ॥ एके अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सोलह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीसमी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥एआंकणी ॥१५॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, ऊपजंता संदेह॥ रूप नवो रचि मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोलेश्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै रूप ॥ सदगुरु कहै छवीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप॥ च० १८ ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीमै केइ लाख ॥ तेह अक्खीणमहानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीतनी रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या विहुं रे, तेम पुलाक विचार ॥ भगवतीसूत्रमें भाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ भ्रमदणा आहारनी रे, कल्पसूत्र गणधार॥ तीन२ इक२ मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, वाकी ठे वधां घीश ॥ सान्नलतां सुख ऊपजे रे, दोलत हुवे निशदीस ॥ च० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरेसे ठवीसे मेरुतेरस दिन न्नले, श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाउले ॥ वाचना चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन न्नणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं॥

॥ अथ अठाइस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुन्न दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करे. अन क्रमसें २८ उपवास करे, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ पवास होय उसही नामका गुणना करे. तप पूर्ण होणेसें शक्ति मुजब उद्यापन करे. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा आनंद रहे. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥१॥ चवदे पू व नाम, सूत्रे जूजूवा, वीरजिनंदे न्नापिया ए॥ ते हिव सुगुरु पर य, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पू उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए। ॥३॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणे ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ए, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमे कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो क्रियाविशाल तेरम न्नणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इण नाम, ए कह्या, सास्त्र थकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ॥ पट भाव प्रगट वे ते जिहां, त्रिपदी भाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी, संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, भाषी तीजै तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाखनी, सप्तभंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आणयो जोम ॥ मत्यादिक पण भेदसुं, पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद उठो कहूं, भापुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोमनी, भाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ॥ उवीस पद कोम जेहना, सूत्रे आएया भाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवे, प्रगटपणे अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना, कोमी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवे, नामे प्रत्याख्यान ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ए ॥ अतिशय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम सातसै, कोमी वरस लख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इग्यारमो, उवीस कोम प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, उप्पन्न लख इग कोमि, प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोम ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक जे क्रिया, छंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोमनी, तेरमी क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंडु चवदमो, नामे अरथ निहाल ॥ पद संख्या इग कोमनी, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस अरु तीनसै, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या ए कही, गुणमालाथी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथे गणधर अरथे अरिहंत न्नाखे रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जि नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषा तजी करी, ग्यान न्नगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरे प्रन्नु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥वा० ४॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजे रे॥ नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीये, चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, उज मणो हिव कीजे रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरन्नव लाहो लीजे रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ॥ नव करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति का रण ठेदे रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदे रे॥ ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि न्नणी, आगम वचने जोई रे ॥ न्नविषण पिण तुमे आदरो, ज्युं न्नवन्नमण न होई रे ॥वा०११॥ (कलश) इम सयल सुखकर गछ खरतर तपे रवि जिम क्रांत ए, सौन्नाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए ॥ संवत अठा वरस विक्रं नयर श्रीबालूचरें, ए स्तवन न्नणतां श्रवण सुणतां स ५ मनवंछित फले ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदे पूर्वकी तपस्याके १२ उपवास करे, जिस दिन बां

र्वेका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करे, तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरूसें समजके करें. यह तपस्याके करणेसें ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित भणी वगसिये, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै ॥ ए देशी) कमला जिम कुंडणपुरे, भुजबल नरपति भीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरे मासे रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकासे रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंभा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंभा रे ॥ प० ३॥ प्रतिमा पूजे शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवझायाधिप श्रीनिपदनो, नल लिखियो निलाडे रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघाडे रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिनमणी, जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूछिये एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म वलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सवला रे ॥ संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ दुहा ॥ मणि तेजें मुनि तरुवये, रथ थकी स्त्री नरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ कों तप परन्नव तिलक है, कहिये श्रीमुनिराय ॥ १० (ढाल—न्नरत नृप न्नावसुं ए ॥ ए देशी)॥ मधुर स्वरे मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुन्नाशुन्न परन्नवे ए, इह न्नव फल निपजाय, करम गति वंकमी ए ॥ ११ ॥ ज्ञदिनाण न्नव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल न्नाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जाणयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२॥ चोय प्रमुख नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, न्नले चित न्नावसुं ए ॥ ॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रयण कंचण जड्या ए॥ १३॥ तिलकरसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम सफलो गिणे ए ॥ न्नगवन तप विधि न्नाषिये ए, नल कहे बोधरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् जपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए॥ चोय दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए॥ जद्यापन संघ न्नक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधे मन साधिये ए॥ १६॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त क्षमाहीयो ए ॥ इण पर जे न्नवि आदरे ए, थावै चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए ॥ १७॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता न्नविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखे सूरीय साखे सुगुरु न्नाषे सुण थया, शुद्ध ध्यावे न्नविक न्नावे विजय विमल जिनवर कह्या ॥ १८ ॥ इति॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुन्न दिन गुरूके पास तिलकतपस्या ग्रहण करके तीन

उपवास करै. प्रथम श्रीऋषन्नदेवस्वामीके ७ उपवास करै, जब (श्री ऋषन्नदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै. और श्री अजितनाथस्वामीकों आद लेकै (२२) बाईस न्नगवंतोका बाईस उपवास करे. जब जन२ न्नगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर न्नाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, न्नवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ न्न० वी० १ ॥ कोध वरघ तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास ॥ न्न० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ न्न० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ न्न० ॥ रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आपाढन्नूति गणिका साथ ॥ न्न० वी० ३ ॥ च्यार कपाय वे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले न्नेद ॥ न्न० ॥ इम न्नव२ न्नमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ न्न० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस उख हाण ॥ न्न० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ न्न० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लब्धि अपार ॥ न्न० ॥ उपवास करतां न्नावसुं रे लाल, पामे न्नवनो पार ॥ न्न० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ न्न० ॥ देव गुरु पूजा करे रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ न्न० ॥ नर सुर रिद्धि पिण न्नोगवे रे लाल, निश्चे मुगति जाय ॥ न्न० वी० ७॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोन्न ४, यह च्यार कपायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार२ भेद करणेसें १६ होते हे, इनोंकों दूरकरणेकों प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसें १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैंतालीस आगम तप विधि ॥

गुरूके पास शुभ दिन पैंतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसें उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढनेवालोंकों साहाय करै, अपणी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसें तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसें पैंतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढावै. इस तपस्याके करणेसें मुर्खपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

१ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः २ श्रीसुयगडांगजीसूत्रायनमः
३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०
५ श्रीभगवतीजीसूत्रायनमः ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०
७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा० ८ श्रीअंतगडदशाजीसूत्रा०
९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० १० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा०
११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

१ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन०

३ श्रीजीवाभिगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
५ श्रीजंबूद्वीपपन्नत्तीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रायनमः
७ श्रीसूरपन्नत्तीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
९ श्रीकप्पवर्डिसियाजीसूत्रा० १० श्रीपुप्फियाजीसूत्रायनमः
११ श्रीपुप्फचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवण्हिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

१ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

१ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
३ श्रीतंदुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्झियासूत्रायनमः
५ श्रीगणिविज्झियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्झियासूत्रायनमः
७ श्रीवीरथुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगछाचारजीसूत्रायनमः
९ श्रीज्योतिष्करंडजीसूत्राय० १० श्रीमहापच्चक्खाणजीसूत्रा०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

१ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशवीकालिकजीसूत्रा०
५ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थे भाखे गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपे सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करे गणधार ॥ पंचागी युत विनय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें, भूले बाग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आग लिखे, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसें अब मिले, आग पैंतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६
(ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी)॥ आचारांग पहि लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगडांग दूजोअवे जी पाषंडी निरधार ॥ जगतगुरु नाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाण ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस छत्तीस नल प्रश्नो जी, नगवई अंग विख्यात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता नणी जी, दस श्रावक व्रतधार ॥ दसाउपासक सातमो जी, अंग कह्यो नि॰ धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगरु केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥ अंगुष्टादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल नाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अढार सहस आ॰ चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी, गण दुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक अंबरु रुप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल नविजन चूंप ॥ ज० ७ ॥ सूरियान पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ द्रव्य नाव बिहुं नेदसूं जो, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो अनिगम सही जो, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवानिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृत बहु विध नाव ॥ ज० ए ॥ पन्नवणामें जाणज्यो जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विमह गती जी, पन्नत्ती बिहुं जाण ॥ कप्पिया कप्पवडिंसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया जाणीये जो, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिछाणज्यो सांजलतां सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ रुपाली लाल

हाद गंगनी बूंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरजीका रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय देव वजिदारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि कने सिर नामी रे ॥ज०आ०॥ सामान्य विशेषे जाखी, निश्चय विवहार बे साखी रे ॥ ज० आ० ६॥ उत्सर्ग वचन बे केइ, अपवाद वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंछित सगला साधो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ (ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए ॥ ए देशी) ॥ पैंतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो हित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तणी रंग जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति बते उपवास ए, आंबिल निविश्री उल्लास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैंतालीस दिन आचरै ए ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्रमण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३॥ उजमणो हित चित करेए,गुरु जक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी ए, जे पढय पढावै ते जणी ए ॥४॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथी लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुज्ज नंद सर निधि चंद्र वरषे माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर बृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्त्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुज्ज दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११ दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर महाराजका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंद्रजूतिगणधरायनमः ॥ २ श्रीअग्निजूतीगणधरायनमः

३ श्रीवायुभूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तभूतिगणधरा

५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंडितस्वामीगण

७ श्रीमोर्यपुत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणध

९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरा

११ श्रीप्रभवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर भगवंत श्री महावीरस्वामीके
जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना क
भये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गण
की आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसें गणधरोकी
करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी भक्ति करै, यथाशक्ति
भोजनसे साहमी वच्छल करै ॥ इति एकादश गणधर तपवि

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो वि

प्रथम ५ साथिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके
मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पडिक्कमे, एक लोगस्सका
सग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठके मुंहपत्ती
है, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (भगव
मुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह) एसा कह चैत्यवंदन करै,
थुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थु० कह ४ थुई कहै,
गाथा कहके नीचा बैठके णमोत्थुणं कहै, फेर खडा होके (
तिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं अन्नत्थ०) कहके

पेश्रांशांतिर्गृहे२ ॥१॥) पीछे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी जुवनदेवता॰ की स्तुति काउसग्ग एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहै. पीछे शासनदेवताका काउसग्ग एक नवकारका करै (यापातिशासनंजैनं, सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साजिप्रेतसमृध्यर्थं, जूयाच्छासनदेवता ॥१॥) पीछे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं. अन्नत्थु॰ एक नवकारका काउसग्ग करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिन॰ शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह थुई कहके नीचा बैठके नमोत्थुणं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन करे. फेर खमासमण देके (जगवन् अमुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके (इच्छकार जगवन् अमुक तप ग्रहण दंमक उच्चरावो जी) गुरु कहै (उच्चरावेमो) पीछे (अहएणंजंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउपसंपज्जि॰ त्ताणंविहरामि ॥ तंजहा दव्वउ कालउ जावउ दव्वउणं अमुकतवं सित्तउणंइहवा अन्नत्थवा कालउणं जावपरिमाणं जावउणं जाव॰ गहेणंनगहिज्जामि जावबलेणंनउलिज्जामि सन्निवाएणंनजनिज्जामि जावअसेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप॰ रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नउरायाजियोगेणं गणाजियोगेणं बलाजि योगेणं देवाजियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाजोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥) जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास १ वार यह पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो थापनाचार्यजी समक्षे तीन वार यह पाठ पढे, पीछे गुरु कहे (हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुजयेणं सम्मं ॰ लिं सुरुगुरोहिंवुड्ढाहि नित्थारगपारगाहोहि) एसो गुरु कहै.

सो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः सं

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करके इरियावही पडिक्कमे, अ
मुहपत्ती पडिलेहे २ वांदणा देवे (इच्छाकारेण संदिस
तुम्हे अम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो
मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप
करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके १ नवकारका काउस
तिकी गाथा कहै, पीछे णमोत्थूणं कहे, बेठके भगवन
करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण ला
मन वचन कायायें कर मिच्छामिदुक्कडं. और ज्ञानभ
भावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु
ज्झारगंपारगाहोइ) पीछे पच्चख्खाण करै, अमुक तप आ
मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके ४ लोगस्सका का
प्रगट लोगस्स कहै, पीछे उपगरण पात्र भक्त पानादिक
क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले
णेवाले विद्यागुरुकी भक्ति करै, साहमी वच्छल करै, पह
पीछे याचकोंका दानसन्मान करै॥इति सर्व तपस्या पा

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगामे जैसी ..... ——

उपधान वहीं नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥
तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव
नी आण विराधै, भमस्यै भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अयज्या
घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता
आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरनै
खांम्हे भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहै
तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो
तप पहिलो वीसम्ह जाण, इरियावहीनो तप वीजो वीस
म्ह आण ॥ इण विहुं उपधाने निश्चै नाणं मंम्हाण, वारे उपवासै
गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसम्ह त्रीजो णमोत्थुणं उपधान,
त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो
थो चोकम्ह एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए॥ पांचमो
लोगस्स तप अठावीसम्ह नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि
ण ठाम ॥ पुरकरवरदी तप छठो ठक्कम्ह सार, साढात्रण उपवासै
वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान मा
ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि
गुरुमुख सरस रसाल, गछनायक पासै पहरै माल विशाल ॥११॥
माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन
वहु भंग ॥ अति उछव कीजे रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा
वे पावे अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान
विधिसों जे वहै, ते सूधो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,
जीव जतन करइ, पुंजि२ पगलां भरै ए ॥ १३ ॥ न करै
क्रोध कषाय, हम्२ हसै नहीं, मरम केहनो नवि कहै ए ॥
नाणे घरनो मोह, उरूही करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥
... ीम सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचे स्वर वोलै नही ए॥

मन मांहे जावै एम, धन२ ए दिन, नरजव मादि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अतिघणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पभे ए ॥ लाजै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर जुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जविय जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनीसरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्यान्ह समें सुहागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करकै ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसें सिर पर धरै, पीछै सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र बाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंहली करै, ओर स्त्रियां गहुंली गावै, पीछै गुरु उर्ध्व साससें वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्ठित करै. यथा ॥ ॐह्रींणमोअरिहंताणं । ॐह्रींणमोसिद्धाणं । ॐह्रींणमोआयरियाणं । ॐह्रींणमोउवज्झायाणं । ॐह्रींणमोलोएसव्वसाहूणं । ॐह्रींणमोअरहउ जगवउ वद्धमाणसामिस्स ॥ जएविजए जयंते अपराजिए सव्वसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछै वाजित्र वाजते स्वस्थानके आवै, वाजोट पर थाल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै, श्रीफलादिककी प्रजावना करै, पीछै मालामाहक प्रजात समें प्रतिक्रमण करके पडिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करै. पीछै

मुहुर्त्तकी वखत वाजित्रादि उच्छव संघ समेत गुरु पास आवै,
श्रीफल रोक द्रव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी
नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वम्री ववणी पर मोव
लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साथिया
उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे ज्ञेट करै. सा
यों पर अच्छे विदामादि फल चढावें. पीछे मालाग्राहक चरव
मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूके संग इरियावही पमिक्कमे. पं
श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पमिलेहे, फेर खमासम
देके इच्छकारज्ञगवन् तुह्ने अम्हं संघपति मालाआरोहावणि देवव
मणि वासनिक्षेप करो. तव गुरु वासक्षेप करै. पीछे फेर खमा
मण देई तुह्ने अह्मं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गु
कहे वंदेह, श्रावक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासमण देके इच्छा० ज्ञगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह
पीछे गुरु चैत्यवंदन बोलै. श्रावक णमोत्थुणं कहै अरिहंत चेइयाणं
कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, नमोर्हत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति
कहै. यथा ॥ अर्हंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः। अप्येंद्रीसकला
त्रेहि। रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीछे लोगस्सउज्जो० सव्वलोए०
वंदणव० अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं।
शासनस्यनतासदायदंह्रीच। श्राश्रियंतेश्रियांते। ज्ञवतोश्जिनापातु
॥ २ ॥ पीछे पुक्खरवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै.
नवतत्वयुतात्रिपदी। श्रिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी
र्त्तिविद्या। नद्यास्याज्जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ पीछे सिद्धाणंबुद्धाणं० त
तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु०
के एक लोगस्सका काउसग्ग करै, नमोर्हत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदां । सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं० एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो पांगासदास्फुरदुपांगा । नवतादनुपदतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥ ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । नगवतिकःश्रु तगमेत्थु । रंगतरंगमितिवर । तरणीस्तुभ्यंनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नत्थु० १ नवकारका० स्तुति॥ उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हृतमिहसमिही-तत्कृते । स्युशासनेदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीछै समस्त वेयावच्चकरा-णं शांतिकराणं सम्मदिट्ठिसमाहिकराणं अन्नत्थु० १ नवकारका का-उसग्ग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणौघनिधेसुवैया । वृत्यादिकृत्यकरणैक निबद्धकक्षा । तेशांतयेसदनवंतुसुरासुरीजिः । सद्दृष्टयोनिखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोत्थुणं जावंतिचे० नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहै ॥ ॐमितिनमो जगवर्ज । अरिहंत सिद्धाचारियउवज्झाए । वरसव्वसाहूमुणिसंघ । धम्मतित्थपवयण स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिवं संतिदेवयाय । सिपवयणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया । वरुणोवायुकुवेरईसाणा । बंजोनागुत्तिदशन । मवियसुदिसाणपाला ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचएहं । तहलोगपा-लयाणं । सुराईगहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं । मज्झमिणंचेव-धम्मणुणाणं । सिद्धिमविग्घंगच्छउ । जिणाणंनवकारउनणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीछै जगवान आगे पडदा करके मालायाह क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनायें वांदे, पीछै खमा होके कहे इच्छकार ज० तुझे अह्मं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसूत्र-

संजलावणी काउसग्ग करावो. गुरु कहे करेह. इच्छं. संघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सका का० प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्ग करै, पीछे मालाग्राहक खमासमण देइ इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संजलावो, तब गुरु खडा होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावे, नित्थारगपारगाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीछे श्रावक खमासमण देके इच्छा० संघपति माला उद्देसह, गुरु कहे उद्देसहं, फेर श्रावक इच्छामि० इच्छाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्तापवेह, खमासमण देके इच्छं तुम्हे अम्हं संघपति मालाउद्दिठं इच्छामो अणुसट्ठिं उविठिर स मासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुजयेणं जोगकरीजाहि गुरु गुणावुड्ढीजाहि नित्थारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुम्हाणं पवेश्ए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह, पीछे खमासमण देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप चढावे. गुरु १ प्रदक्षिणा देवे. पीछे मालाग्राहक मुहपत्ती पडिलेहे। खमासमण देके इच्छाका० तुम्हाणंपवेइयं संदिसहजगवन् काउसग्गं करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुम्हे अम्हं संघपति माला उरे सामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सको काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहे पीछे खमासमण देके बेसणो संदिसाउं, दूजे खमासणे बेसणो गउं, पीछे खमासमण देके जो विधि करतां अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायायें करी मि० इति नांदकी क्रिया ॥ पीछे मालाग्राहक जगवानके नव थंग नव रु पिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करे, मुहुर्तकी वखत मंडपके बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आके खडा रहे, पीछे मालाग्राहक गुरुके पास आके नव थंग पूजा करे, नव रुपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्त जेट धरे, पीछे गुरु उपगरासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीछै जो माला पहिरावे जिसकों माला पहिरणेवाला यथाशक्ति पहरामणी करै. माला पहिराणेवाला ऊर्ध्व-श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सचित्त कुशीलादिकका गुरु पासे पच्चखाण करै, पीछै मंदरजी पर चढाणे-की धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-दक्षणा देकर गुरु पास वासक्षेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावै, पीछै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधर्मी वात्स-ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोके लिखतसें कुछएक दे-देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसें एक घीहीज लेता है उर विकृती नहीं लेता १, उप-धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का-रणयोगसें खांड वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट द्रव्यादिक नही लेणा ३, घी तेलका वघारया साग भी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापड सीरा बडे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरपणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरपणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, भोजन करणेकी जगा झाडू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित करै अखंडित वस्त्र रखे तो शुद्ध ए, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं वो सब भोगाभोगकी दोनों वखत पडिलेहणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रक्खे है वो सब भोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पडिलेहणाकी वखतही पडिलेहणा दुसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंडलादिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपणे घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-
वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें
रातका दिनका नही वह उपधानवालीकूं देवै और वोही स्त्री प्रभात
समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र
आप अथवा मालकणके हाथसें पडिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब
क्रिया अनुष्टानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध
होय १४, क्रिया अनुष्टानकी कराणेवाली मालकण भी दोनुं वखत
पडिक्कमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात वेर देव वांदे तब शुद्ध
होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे
जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी
सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७,
प्रतिक्रमणमें प्रभात समें नवकारसीकाही पच्चखाण करै पीछे
क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल
२ नीवी ३ अथवा एकासणेका ४ करै १८, पच्चखाण पारती
वखत पहली नवकारसी पारै पीछे उपवासादिक पारै १९, पहले
जो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आडंबरसें देरी
हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा बण नहि आता इस
वास्ते तीसरे पहरकी पडिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पडि-
लेहके रातकूं निश्चे पोसा लेणा २०, प्रभातसमें उपधानवाही गुरु-
के पास आयके इरियावही पडिलेहके पोतय वपुन सामायक लेके
मुख पडिलेहणा ठर अंग पडिलेहणा करे, पीछे मुहपत्ती पडिले-
हके (उहीपडिलेहणसंदिस्साउं उहीपडिलेहणकरुं) एसे खमासमण
देय देवे पीछे दव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवे तसका
क्रम एसे हें बहुवेलसंदिस्साउं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणो-
ठाउं सिझायसं० सिझायकरुं० पांगरणोसं० पांगरणोपडिग्गहुं

कठासणोसं० कठासणोपमिग्गहूं) एवं१० ॥ २१, पीछे वंदन दिया बाद सुख तप पूछा २२, सांझकूं भी यही क्रिया करणी लेकिन् इतना विशेष है पट पमिलेहणा और अंग पमिलेहणा तो करै परंतु उपधि पमिलेहण नही करै, पीछै गुरुवंदन छव दिये बाद खमासमण दस देवै (उहीपमिलेहणसंदिस्सा० उहीपमिलेहणकरूं सिझायसं० सिझायक० वेसणेसंदिस्सा० वेसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरै २२, न्यारा पमिक्कमणा होणेसें पाक्षीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया सब करदेना २३, माला पहरणेमें सांझकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करके प्रभातसमें आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी यहां पोसा नही लिया हुआ भी है तो भी तिविहार एकासणा करताभया निरारंभी होकर रहै २४, सभी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके अभावमें श्रावक एकांतर उपवास और साधुओंने उपवास आमल निवी एकासणा करके उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन् दिन संख्याका नियम नहीं है ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरोपाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत भाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमतालीस एकासणा करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीछै पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसब्बसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमें लेवें, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमोक्कारो १, सब्बपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसब्बेसिं पढमंहवइमंगल॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनों की एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो छव तो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंबिल करे, फेर तेला करै, फेर आंबि
ल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें
वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेला मिलाणेसे उपवास १२ भये,
यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पो-
सा २० वीस करै उपवास १२ करे, विधिसुं वहे तो १६ पोसा
उपवास १२॥ यह पहिला वीसरूतप २०॥ अब दूसरा इरि-
यावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें भी
पहलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीछे इच्छाकारेणसंदिसहसु से-
कर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें ले-
कर ठामिकाउसग्गं तक दूसरी वाचना देणी, जर एकही वाचना
लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेला करके लेवै ॥ इ-
रियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसरू नामका अविधिसें पोसा २०
उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अ-
थ तीसरा भावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पै-
तीस कर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेला करै पीछे
नमोत्थुणंसे लेकर गंधहत्थीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६
आंबिल करे, लोगुत्तमाणंसें लेकर धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं तक दू-
सरी वाचना लेवै २, पीछे सोले आंबिल करके अप्पडिहयवरणाण
से लेकर सव्वेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह ती-
सरा उपधान नमोत्थुणका पैंत्रीसरू नामका जिसमें उपवास
१९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा
... उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका
उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन
कर अरिहंतचेइयाणं इहांसें लेकर वंदणवत्तियाए अन्नत्थऊससी-
एणं अप्पाणंवोसिरामि तक १ वाचना लैणी. यह थापनारिहंतका

चोया उपधान चउक्कम नामका जिसमें पोसा ४ उपवास ३॥ अढाई ॥ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थेका पहले तेला करै, पीछे लोगस्सउज्जोयगरे इहांसे लेके चउवीसंपिकेवली तक पहली वाचना लेवै, फेर बारे आंबिल करके उसन्नमजियंचवंदे इहांसे लेकर पासंतहवद्धमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तेरे आंबिल करके एवमएअभिथुआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना लेवै. ए नामारिहंत चउवीसत्थेका अठावीसमनाम तप विधिसुं वहतां दिन २८ पोसा २८ उपवास साढापनरे एकांतर करै, अविधि करता दिन अठाईस पोसा २८ उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥ सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीछै ५ आंबिल पीछै पुक्खरवरदीवड्ढेसें लेकर सुयस्सभगवउकरेमिकाउसग्गं तक एक वाचना देणी. यह छठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम छक्कम पोसा ६ उपवास साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीछे सिद्धाणंबुद्धाणंसें लेके तारेइनरंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब बहोत श्रावक अथवा बहोत श्रावकणया उपधान वहै तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंभरास है. अगर एक श्रावक अथवा एकही श्राविकाही उपधान वहै, तो अपणे नामसें चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांजकूं वाचनाचार्यके पास आयके इरियावही पडिक्कमके खमासमण देकेकहै (अमुक उपधान तपे पवेसह) गुरु कहै (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग पडिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहै (तहत्ति) इहां खमासमण दिये बाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा भोजन

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी नी कारण करके साऊकूं खमासण नही दिया होय तो तब पमिकमणेके वखतसे पहली पिछली रातकूं नी खमासण देणा काल वखत पमिक्कमणा करणा नवकारसीका पच्चरकाण मालकुण पास करणा पीछे सूर्य नदय नये बाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो नपधानमें (नवकारके और इरियावहीके) तो प्रारंनमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी और नत्क्षेप नी इन दोनों नपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी नपधानोंमें नंदीका नियम नही हे. तिसके बाद प्रन्नातसमें पहले नत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीछे दो वांदणा देके पच्चरकाण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पूछा वांदणा दोय देवै ॥ इति नपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पमिक्कमके मूहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके नपधानवाही कहे (पहले नपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवं नक्खिवह) गुरु कहै (नक्खिवामो) पहले पंच मंगलनपधान महाश्रुतकंध नखेवावणियं नंदीपवेसावणियं कानस्सग्गं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले नपधान पंच मंगल महासुयस्कंध नक्खेवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकानस्सगं अन्नच्छनससिएणं इत्यादि कानस्सग्गमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीछे खमासण देके पहले नपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध नक्खेवावणियं चेश्याइंवंदावेह, गुरु कहे वंदायेमो. वासक्षेपंकरावेह, गुरु कहे करेमो. पीछे वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करे. एसें सर्व नपधानोंमें नत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो नपधानोंका नत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी नपधानोके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही थापे तो प्रातसमें प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन् जो जो उपधान वहै उस२ का नामोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांझकूं पहिले चोविहारका पच्चक्खाण कर इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवे पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके काउसग्ग सागरवरगंभीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह पहिले उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीछे गुरु वासक्षेप करै, पीछे चैत्यवंदन करै, पीछे खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्धावनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिडुक्कडं एसें सब जगे वाचनाभिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांझकूं चोविहार करके अथवा प्रभातसमें इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहे—इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं अमुक तवंनिक्खिवह, गुरु कहे निक्खिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खिवणत्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छा०मि० अमुक तप निक्खिवणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करके खमासण देवे, अमुक तप निक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह, वंदावेमो गुरु कहे. पीछे संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रभातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण क्रिया इस

वास्ते मुहपत्ती पडिलेहके वंदन दव देवे (दो वांदणा देवे इसकूं दव वंदन कहते हे) गुरूके साथ पडिकमणा कीया होय तो वांदणा दोयही देवे. पीछे गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे प रूपुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीछे अपणी इच्छानुसार पच्चक्खाण करे पीछे गुरूके सामने कहे उपधानमें अजाकि आसातना हुई होय तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रभातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पडिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासणपूर्वक पडिलेहणा उर अंगपडिलेहणा करे, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके पहिले खमासणासें उहीपडिलेहणसंदिस्सावेमि, दूसरी खमासण देके उहीपडिलेहणकरूं, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके गुरूकूं दव वंदन देवे पीछे गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहे. इच्छा० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धंवातवंकरावेह. गुरु कहे उप वासे. आंबले निरूहेति एकाशणे, एसा कहे. पीछे दश खमासणासे अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं संदिसावेमि ३, वइसणं ठाएमि ४, सज्झायंसंदिस्सावेमि ५, सज्झायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपडिग्गहूं ८, कट्टासणो संदिस्साउं ९, कट्टासणोपडिग्गहूं १०. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवे. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रभात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पडिलेहणा जयं करू स्थापनाके आगे मांडलकीकि क्रमसें इरियावही पडिकमके पहिले खमासणासें पडिलेहण करूं १, दूसरी खमासणासें पोसहसाला प्रमार्जु २, एसा कहके मुहपत्ती पडिलेहे, एसें दो खमासण पूर्वक अंग पडिलेहणा उर मुहपत्ती पडिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछै वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन नोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकनी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीछै गुरु पास आयके इरियावही पमिक्कमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरूके सामने करे. पीछै सिज्ञायसंदिस्साएमि सिज्ञायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछै मुहपत्ती पमिलेहके दव वांदणा देवै. पीछै त्रिविहार अथवा चोविहारका पच्चरकाण कर दस खमासण अनुक्रमसें इस मुजब देवे–उहीपमिलेहणसंदिस्साउं १, उही पमिलेहणकरुं २, सिज्ञायसंदिस्साउं ३, सिज्ञायकरुं ४, बइसणो संदिस्साउं ५, वैसणोठाउं ६, कढासणोसंदिस्साउं ७, कढासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ९, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीछै मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछे, पीछै सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पातसिया) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन नोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपन्नोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिकमणामें असिज्ञाइका काउसग्ग नही करे तो आवती परकी तक सर्व सिद्धांतकी असिज्ञाई होय, इरियावहीका पाठ नी गुणणा नहीं सूझै. इस वास्ते असिज्ञाईमें नी असिज्ञाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिकूं पूछा तब एसाही जवाब दिया योगारंनकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंनमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृदुध्रुवचरक्षिपेः । वारेनौमं शनिंविना ॥ आषाढनंतपोनंद्या । लोचनादिशुन्नंर ॥ १ ॥ इति

आचारविन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपरिलेहा ॥ दंडे पणेसोलस । कप्पेपणवीसगोअना ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु कंबलतहयचेवसंथारे ॥ कठासरोअठारस । जगेदंडेअपंनेव ॥२॥ इति॥ प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठमंकुणइअठमंअंते ॥ नवकारनवदाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कथयंमितइएगं । अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयथए । चउत्थमायामतिय ॥ २ ॥ चउवीसथएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण थयंमिचउत्थं । आयामापंचनवदाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंनववासा । ए गासीअंबिलाणसबंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु । ४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअढइपाणपन्नरस ॥ अठयनवव । सबंगसठचउसठी ॥५॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमढअवढए जंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । बिलेहिंअढंवलेणंच ॥ ६ ॥ पण लाचउवीसं । सोलसचउरहिंअठहिंकमेणं ॥ चउइंदुहियएगेणय आयरणाइंइनववासे ॥७॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण

॥ अथ ऋषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं डलमें २४ कोठेमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रींनमः १ कों नमः वववववववववववव १, ववववववववववववव २, ववव ववववववववव ३, ववववववववववववव ४, ॐ ह्रीं अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रीं सिद्धेभ्योनमः ॐह्रींआचार्येभ्योनमः ॐह्रींउपाध्यायेभ्योनमः ॐह्रींसर्वसाधुभ्योनमः ॐह्रींज्ञानेभ्योनमः ॐह्रींदर्शनेभ्योनमः ॐह्रीं चारित्रेभ्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १॥ दूसरी वलयमें दश दिग पालोके नामकी दस चिठी दश कोठेमें धरे॥इति द्वितिय वलय २॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां ॥ इति तृतिय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर ककारादिक तेतीस वर्ण इंद्रभुति आदि इग्यारे गणधरोके नाम ॐह्रीं युक्त लिखे. पीछे अरुतालीश लब्धिपद ॐह्रींअर्ह एसा आदिमें देकर लिखे ॥ अरुतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंडलपूजामें लिखे हे उस मुजब लिखे. पीछे चोवीस तीर्थंकरोके पिता ॐनाभयेनमः १ इत्यादि लिखे. पीछे ॐमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थंकरोके माताका नाम लिखे ॥ पीछे ॐह्रियैनमः १, ॐश्रियैनमः २, ॐधृत्यैनमः३, ॐलक्ष्म्यैनमः ४, ॐगोर्यैनमः ५, ॐचंड्यैनमः६, ॐसरस्वत्यैनमः ७, ॐजयायैनमः ८, ॐअंबायैनमः ९, ॐविजयायैनमः १०, ॐक्लिन्नायैनमः ११, ॐअजितायैनमः १२, ॐनित्यायैनमः १३, ॐमदद्रवायैनमः १४, ॐकामांगायनमः १५, ॐकामबाणायैनमः १६. ॐसानंदायनमः १७, ॐनंदमालियेनमः १८, ॐमायायैनमः १९, ॐमायावित्यैनमः २०, ॐरौद्र्यैनमः २१, ॐकालायैनमः २२, ॐकाल्यैनमः २३, ॐकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवीसोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष उर २४ यक्षणीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीछे नव निधानोके नाम लिखे,फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पछली वीशस्थानक मंडलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके अष्ट सिद्धिका नाम लिखे ॐअणिमसिद्ध्येनमः १, ॐगरिमसिद्ध्येनमः २, ॐलघिमसिद्धियैनमः ३, ॐप्राकाम्यसिद्ध्येनमः ४, ॐमहिमसिद्धियैनमः ५, ॐईसित्वसिद्ध्येनमः ६, ॐविसित्वसिद्ध्येनमः ७, ॐप्राप्तसिद्धयैनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ ॐश्रीधरणेंद्ररक्षतु १, श्रीपद्मावतीरक्षतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवैरोट्यारक्षतु ४. इति श्रीऋषिमंडल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंडल वीस स्थानक मंडलपूजा मुजब चढावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण जिनप्रतिमा स्थापन करावे, आगे पंचपरमेष्टीपट्ट स्थापन करे भगवानके दक्षिण पासे दश दिग्पालपट्ट उर वांये पासे नव का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक बडा एक छोटा मट्टीआदिकका ऊपर खडी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साथिया पीछे ऊंची नीची दोय टिवची काठकी धरावे, नीची टिवची मोटा हंडा धरै, ऊंची पर छोटा हंडा धरै, छोटे हंडेके तले एक छिद्र करै, दोनुं मटकाके अंदर साथिया करै, बडे मटकेकी टि नीचे चावलका साथिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक २१ इकीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी धे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको बडो नीचला मोटा हंडामें लटक रखके ऊपरकी मोली छोटा हंडाके छिद्रमें पोकर ऊपर जो सूणी तणी वांधीदे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे संघ समुदायकी तरफसें शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कल लेवै उर एक जणेकी तरफसें होय तो शांति कराणेवालेके घर ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावि जीता होय, जिस स्त्रीकुं अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरायके कलस अंदर कुंकूमकेसरका साथिया करके चावल सुपारी पंचर की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खडा धर ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों त फ च्यार साथिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक व जित्रादि अनेक उच्छव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स

न्मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीछे पाच दश जणा इये हर जावे अपणा अंग शुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अगरे स्तुतिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वे लिखी है, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीछे सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मठकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल जरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर ढुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे, एसें सात धारा दे चूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीछे जक्तामर वमीशांति ठोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमे गुणता रहै, जर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले ठोटे कलशोंसे धारा देता रहै, ठींक कोई नही करै, आपसमे दुसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीछे तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीछे नीचेके ढंमेमेसे जिनप्रतिमाकुं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करे, जगवान्की अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती ऊतारे, मंगलदीपक करै, पीछे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपणे घरोंमें बांटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे ले राखभी बांधे. इससें संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक त रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसें ऋद्धि वृद्धि सुः सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछे आधा वलबाकुल परातमें रक्खा थ सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसें दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूः लिखी है उस मंत्रोंसें विसर्जन करे॥ इति शांतिक पूजा विधि सं

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण रूषभ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ डुसरी आरती मरुदेवी नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव रूषभदेव अवर न दूजा ॥ ज० २॥ पंचमी आरती प्रभुजोने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंछनकी में जाउं वलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ७॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८॥

करजोमी सेवक इम बोले, नहि कोइ माहरा प्रनुजीने तोले ॥ इति॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय२ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौंख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गछनी शासनदेवी, सकल संघने सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजे, काने कुंमल दोय रवि शसि गाजे ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे, नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूमी खलके, पागे घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुम चढथा बहु प्रेमे, तुज गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनमी जमामां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित२ मानी आरती ऊतारे, रोग सोग नय दूर निवारे ॥ ज० ए ॥ तसु घर पुत्र पुत्रादिक गाजे, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १०॥ देवचंद मुनि आरति गावे, जय२ मंगल नित्य वधावै॥ज०११॥इति।

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपम इण विध खेल रे ॥ अशुन्न करम मल जरके च० ॥ जाजम कर वैराग रे, बमीय विगायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे॥ अरे० १ ॥ दान शील तप नावना च०, चोपम एह पसार रे ॥ आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं नला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, नजन लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र नला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्त्व सात हिरदे धरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पमया अवारे रहण दे च०, पोबारा व्रत भार रे ॥ दश लक्षण दश धरम दे च०, हित

कर दिये विचार रे ॥ अ० ५ ॥ पट् काया ढकमी पमी च०, हिर-
दे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजमी पमी च०, पंच महाव्रत धार
रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुंइ विसन निवार
रे ॥ जे दुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, दुख सह्या भरपूर रे ॥
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ०८॥इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेत्रुंजकी घात, सख दोउं दल अपणे परायेकी जात ॥ काउ विध कर मोह बाद-स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आठुं कर्म पियादे आगे ऊुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंभ त नहीं थंभै ॥ लोभ ऊंट चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर वाके ढंग गाढो, वाके मारवैकों दल अपणो संभार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गाढो, आठों अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलकै अगाडी, पर दल कर मारो छिनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाके चल-नेकी काइ रहै नही ठोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरे शिर बंधेगो मोड़, ढाडे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगे चवर, तेरो भजन भजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण॥ टुक निजर महरकी करणा हो, टु० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-
ए ज्ञवनकी प्रीत हमारी, नवमे ज्ञव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२॥
रूपचंद ज्ञगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥
इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-
का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिला, फिटक
रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब,
ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी धजा
फरूके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन
नाम तुमारो, उरनकी क्या आसा हे ॥ लो०२ ॥ चोसठ इंद्र ख-
रे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं
जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
सखि सब बनठन, सखी० गहे नाभि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥
रिषभकुमरको जनम भयो हे, मंगल मुख उच्चारे री ॥ स० १ ॥
ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा
व भाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता
मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर
खत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः
हो जिन तेंम्हे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन भव२में
भटकंदा, अब मैंभी डर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मैंम्हे
लार लगे है, इनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु
साहे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
म्हारा रिषभ जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंबेली चंपा गु
लाब लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विच गुंथाऊं रे ॥ म्हा०
१ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु
ष्प पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ भाव भावुं रे ॥

रूपचन्दास पूरो आस गुण गाऊं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि भवतरणा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता, नंद रूपभ सुखकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग हग शशि वदन मनोहर, अंग कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्यान, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृत्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ पद अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहबहिया ॥ य० ॥ मैं नांहि जाणूं सहियां, य० ॥ मैं तारण तरण सुणयो है, मैं यातें शरणो गहियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश हुयकै, मैं भटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करके दाश निहारे, करजोडि पडि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजे, हो गोडीराय अरज सुणीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, रिसभर दरशण हो गो० १ ॥ गुणनिध गवडी दरसण दीजे, सकल भरम ...जे ॥ हो गो० २ ॥ रूपचिन्दुपको मोहन पभणे, महाकी प्र... ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेरा प्रभु इण ति

वसणावे, तेंम्हा तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता, भविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जिनचंद एसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ध्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ नाभिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी डर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि जिनेसर अंतरजामी, खामी कहु न विचारोगे ॥ हम० २॥ जगजीवन जगतारक तुमहो, एही विरुद संभारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिंदके साहिब, भवजल पार उतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः ॥ पंथीम्हा पंथ चलेगो, प्रभु भजले दिन चार ॥ पं० ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो, जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृद्धापण आयो धरम न पायो, पीछे करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पुण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंती, अब तेरोही आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज, जोरू थांरे कोण जुम्हेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विम्हारण नागकूं तारण, संभलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोम्हीने वीनवै, भव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंभायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, केसें० ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुलत फिरै ॥ म० केसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी भटकावत, जाहीसें मेरो प्राण म्हरै ॥ म० केसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रभु सेव्यांसें काज सरै ॥ म० केसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राजरी वधाई वाजै है, महा० ॥ सरणाई सूरै नोवत वाजै, घन ज्यूं अंबर गाजै

छै ॥ म्हा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावैं, मोतियन चोक पुरावै छै ॥ म्हा० २ ॥ सेवग प्रभुजीसें अरज़ करे छै, चरणारी सेवा प्यारी लागे छै ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अभाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंडल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहरके, नहिंय भजै तो काला, माणक पर प्रभु महिर करो तो, अपणा विरुद संभाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घूंघट पट उघारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ भव्र परणित परिपाक इते पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकडी करमगति जाय ना कही, चिंतत और बनत कछु औरे, हौंनहार सो होय रही ॥ हे माय वां० १ ॥ सकल साज सभियौ व्याहनकूं, राजुलकों तब चाह भई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥ हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिभ्रगता, जानत सब मही ॥ झूठो दोस दियो जब रघुपति, पावक कुंडमें धीज दही ॥ हे माय वां० ३ ॥ क्षायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक बंध गई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाए कही ॥ उलट पलट बाजी नटसीकी, नवल सरबंग व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो लागे छै जी थांरो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण उगुरु

मेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिं
दूर करणकूं, जगत वधावत हेत ॥ चंद फतै नित एहा चाह,
समकित सुखको खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
मेरो पिया पर संग रमत हे, मैं केसे मनाऊं री॥ मे० ॥ सोतन
संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत
सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति
उसह पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ-
नुभव आयो, सब परव सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारो दोउं हिल-
मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥
॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन झरी, हो सुगुरु
मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैं झमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु०
१॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति मरी ॥ हो सुगु०
॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सु-
गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुभाव धरी ॥ सु-
भरभर्यो सुमतारससागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥
प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप-
इया भविजन, बोलत भक्तिभरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत
संजम खेती, भविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,
सहज सभाव फली ॥ हो सुगु० ५॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या
घरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा
धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध भेटे, हरख
भयो अंग अंग ॥ व० या० २॥ एसी विध भव२ मांहे मिलियो,
धर्मप्रसाद अभंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥
॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अब घरर घरर
घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन झए घन जरसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुंढ सकल वन२में, कवहुं पिया ना दरसै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले पीज२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी विजुरी झरावै, दूजी विरह व्याकुल भई तनमें ॥ मो० १॥ झिरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम वेखण चाहे, राजुल भई विरागण छिनमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥राग विहाग॥ समझ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जेसें उरो ॥ स० १॥ या तनको कहो कोन भरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करै सो अवही करलै, पुनपरहो जिम झोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद भ्रसनाको बांध्यो, जानबूझ भयो भोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी भीत उसको मोती, कोइ घरी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल घर है ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटडी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुझ सरिखा तुझ लाख है, मेरे तूंही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे किसपें कहुं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठे टलै, मेरे मनका झोला ॥ नि० ३ ॥ चित्त विवेक कहे हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला॥ आणंदघन प्रभु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे भाग, वीरप्रभु आए हे ॥ आ० ॥ वंदना खमी उभार, चितसें करे विचार ॥ देखत दी दार हीया, हरख भराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो॥ सुकृत बहु तेरो, भगवान दिल भाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४॥ इति॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ० १ ॥ आप न आवै वारी न लिख भेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निजघर आवै, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रूपभ विहारी, थांरी तो छवि न्यारी हो ॥ रू०॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ रू० १ ॥ धनुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ रू० २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ रू० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु भो पर उपगारी हो॥ रू० ४॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो॥ रू० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाउं वलिहारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरै रे, सु० ॥ चित कहु उर विचारत है नर, उरही उर वले रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिमिया केसें वचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश रूस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया, क्यूं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न भजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक भूप चेलणाराणी, भक्ति करत है आज ॥ स० २ ॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमंग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतैं, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ भव २में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंद पार्श्व जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तार तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २ गंगा दरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विभाव त्यागै, अध्यातमरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, शमरसे भरी तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हैं अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल मांझ यादी राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं छार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसें विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल, प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थांरे सुखकारी हो वारी राज, प्यारी छवी वरणी न जाय ॥ था० ॥ शील मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंडल सोहाय ॥ था० १ ॥ मोहनगारी सूरत थांरी, देख्या म्हारो मनड़ो लोभाय ॥ थां० २ ॥ छरकत नेण भए दोउं निरखत, थांसु प्रभु प्रीतड़ी लगाय ॥ था० ३ ॥ भव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलड़ेमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानड़ो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरभव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक झरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ झूठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, भवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगड़ो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी मो० ॥ मैं मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि छानो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म पड़यो मुझ केड़े, किस विध छूटै पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं भववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संभारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ भक्ति सदाई शिवसुख दाता, संभवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रवानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागभैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी

मेहरवान भई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पगावै, तेरी सूरत कुरवान भई रे ॥ वी० १ ॥ सासणनायक एही अरज है, दीजै दरस वहो वैर भई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासकी पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विभास ॥ भोर भयो अब जाग बावरे, भो० ॥ कोड पुन्य तें नरभव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दाव रे ॥ भो० १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों, मोह मगन ए विकल भाव रे ॥ भो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुभाव रे ॥ भो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रभाव रे ॥ भो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं चूके अब पाय नाव रे ॥ भो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट ॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा० ॥ उदयो भवभावल रविमंडल, पुन्यकाल क्यूं सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलसंड वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जड संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोप अवस्था पइयें, नींद सुपन ए जड नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संभार आपणो, कब तुमरे घर कुमति धराणी ॥ जा० ५ ॥ सुघ बुध भूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर भयानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलावल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १ ॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम, पाछीतें कहा वदन दुरावणो ॥ आनंद राजुल चाकी प्रीत कपटकी, भयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २ इति

राग ललित ॥ आज रूपन्न घर आवै, देखो माई आ० ॥ रूपमनोहर जगदानंदन, सवहीके मन न्नावै ॥ दे० १॥ केइ मुगताफल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रन्नु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांसकुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावे ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावै ॥ वे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फव्यो री, हमारे माई अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिव्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे वरास मिव्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग टव्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिव, ज्युं पारेवो पव्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कृपासें, दुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगोने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण है अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवन्नव एहवो, जुरूवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघट है काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें न्नरियो हे जिनवर, पूरव पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लान्नकहै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ न्नज मन नान्निनंदन देव, न्न० ॥ ध्यान मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ न्न० १ ॥ चक्री न्नू-

पति वरुं सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ भ० २ ॥ असरण शरण हे बिरुद जाको, भक्ति वछल भेव ॥ राजसिंह प्रभु छत्र सिर पर, नाथ हे नितमेव ॥ भ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमकों न संतावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज छांडी वतन, तकसीर बतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी नव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब झूठे परूगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेउं दोऊ नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो बतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीवाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अंब कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ वीच भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा छाजै ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद झरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकूं आवै, निरख२ प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जमी मन प्रेम धरै, जगपति रुहसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान, हे ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नही देखा समोसरणा, किया भवदधिमें ऊदर भरणा ॥ दोऊ जो लेते प्रभु सरणा, दूर

दुख होते जनम मरणा ॥ वैठ जववरमें लगाया नही ध्यान, राजे शिवपुरमें हुवा अपमान, फरो अब देख काल खगवान, ना नि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठु मद तुमसें दूर रेते ॥ धार जों तिनके चरण सेते, शपी सुमताकों तुमें देते॥रहे तप जपमें सदा जों सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर॥करे कपूर करम चकचूर, देखशी जिन नूर हुवे दुखदूर, करो जवपार सुणो महरवान॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रजु तेरी सूरतिया लगे जली, नेणां हमारी प्रजु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रजु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल वली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुऊकूं आश दीनपति तेरी, उर न चाहूं देव वली॥ ने० प्र० ४॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जगी ऋद्धसार फली ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नही कोई, ढूंढ फिरयो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रजुजी अब, आन जई तुमसें जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करे वीनती सुणं, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांबाज ॥ घमीश पलश छिनश निशदिन, प्रजु कों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रजु समरण सब पाप कटत हे, अशुज करम सब हरले रे ॥ घ० १॥ मन वच काय लगी चरणन नित ध्यान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रजु गुण गावे, मन

वंछित फल वरसै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ सुमतानें क्या कर मारा रे, जिन मोह्य
स्याम हमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामें है, आली अपन
नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण जई है हमारी, वस किया आण
पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, गो
चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन नि
मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो ने
म तजे हो हमकूं, में न तजू पद थांरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ ल
न हमारी तोरी नही तूटे, कर वांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५
सव जग जो तुमसे हो जश्यै, तो क्यूं चलत संसारा रे ॥ जि
सु० ६ ॥ रूद्धसार राजुल प्रज्जुजीसें, पोहची मुगति मझारा रे
जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जले विराजो जी, सांवलिया महाराज शि
पर जले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक
पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, वांह पकर ले जावै ॥
१ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहै; तलै जीलनका वासा ॥ पैंर२
सींह हरूके, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर
विराजे, झालरेर झणकारै ॥ झालरेर झणकार सेती, वाजा
ह वाजे ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवे, पूजा आण रचा
अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावे ॥ तु० ४ ॥
मुनिवर वंदन आवे, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल
सेवक, हरख२ गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर
वारो रे ॥ जवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा

जग जोई रे ॥ न्न० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख पाया रे ॥ न्न० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद लीधा रे ॥ न्न० २॥ वीश चरण जिन सोहे, न्नविजन चात्रक मन मोहे रे ॥ न्न० ॥ धुवमठ मंदिर गाजे, जिहां पाशप्रन्नु महाराजे रे ॥ न्न० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो रे ॥ न्न० ॥ तीर्थ आसातन टालो, न्नविजन ब्रह्मचरी व्रत पालो रे ॥ न्न० ४ ॥ नरन्नव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ न्न० सय नगणीस तेतीसे, अगहन सुदि पंचमी दीसे रे ॥ न्न० ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावे, न्नवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ न्न० ॥ जात्रा करी मन रंगे, चंद शिखर न्नणै अति चंगे रे ॥ न्न० ६ इति पदं॥ पुनः ॥ (सांवरियां जेसैं वणे जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमैं) सां वरियामैं दीगे दरस तिहारो, मेरी न्नव न्नय वाधा टारो ॥ सां० ॥ अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो॥ नीलवरण द्युति श्री जिनवरकी, वामा उदर अवतारो ॥सां० १॥ कमठ विमारण शिव सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी, निर्यामक सत्थवारो ॥ सां० २ ॥ शिखर गिरी मंमण जिनवरजी, अदन्नुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

(श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल) ॥ त्रिन्नुवन नायक वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रन्नुजी ॥ थारी मोहनी मूरती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख छवि चंदनें निरखवा, लगन चकोर अन्नंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज झलामल न्नाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व० था० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीन्नुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर वगसीये, आनंद निज गुण साथ ॥ व० था० ३
॥ धन्न२ वेला जी आजनी, सेंमुख मिलिया हो आप ॥ व० ॥
सं घणी कहिवा तणी, वीतक उरुक संताप ॥ व० था० ४ ॥
नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ जगत
घल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय॥ व० था० ५॥ किरि
जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो वलिहारी
नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६॥ गुनही तारया जी
हु विषे, विबुध कहे तुम नाम ॥व०॥ हूं तो जी अनुचर
किम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७॥ अतिशय ज्ञानी जी
आरे, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुहासुं मन
के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुरू तन मन मंजूसमें
लत करूं जगनाथ॥ व०॥ तुम गुणरतननी मूंधरी, प्रेम जरी
हाथ ॥ व० था० ए ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण
स ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, जुवन रमण कैलास ॥
था० १० ॥ पावापुर उगणीशमें, अमृतालीश उदार ॥ व०
तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रूहिसार॥ व० था० ११

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

(नैणा सफल जये, प्रज्ञु दरसण पायो आज ॥ ए

निरख दिया दरख जरे, प्रज्ञू वासपूज्य महाराज ॥ नि०॥
सापा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज
रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा
दरू को नहि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक्त ७
ज ॥ नि० २॥ उखजंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख
थंतर राख्या नवि वने रे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जनी रे, अनु
नव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज
॥ नि० ५ ॥ नगणिसे अरूतालमें रे, कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥
चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥
कुशल निधान विबुधतणो रे, कलीअली जिम लीन ॥ रूपसार जिन
ध्यातमें रे, अंतरंग गुण चित्त ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ में मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो ज
नम सफल नयो आज ॥ में० ॥ अन्य देवकूं बहुत में ध्यायो, तो
य न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे में० १ ॥ नव२ नटकत शरणे
हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आज रे में० २ ॥ कमठ द्वारा
बण नागकूं तारण, संनलाव्यो नवकार ॥ आजरे में० ३ ॥ रूप
चंद कहे नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे में० ४ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोडी पाश जिनेसर, तुम
स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ उंचे२ गढ पर पाश विराजै, चारो तरफ
ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जाऊं
बलिहारी ॥ कि० २ ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा विराजै, कुंडलकी छबि
हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ ढूंढत२ में प्रनु पायो, पूरण पदवी अब पाई ॥
कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥
मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥
मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट
बजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द
वाजित्र बजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत
हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजे घननननन, इंद्रलोक हरख नयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर, वीतराग तननननन ॥ घं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, झलरी नाद झननननन ॥ घं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांइआं रे, सांइ मेरा टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा गेल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥ तुम अंवरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमझुम२ मेहला वरसे, गम२ नाचे मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी, प्रभुगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी सोर ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण झूंठा डोर ॥ रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न ओर ॥ नि० ४ ॥ इति।

राग कल्याण ॥ एसे सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजे मंझान है ॥ एसे० १ ॥ पांच इंद्रीके तेवीस तस्कर, नगरकूं करत हेरान हे ॥ एसे० २॥ प्रजा पुकार सुणी जब जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एसे० ३ ॥ ज्ञानको धाण वचनरस भेदे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एसे० ४ ॥ रूपचंद कहे तेने वारो, डुस्मन मान गुमान हे ॥ एसे० ५ ॥ इति पदं ॥ आय रहो दिल वागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ० ॥ चुन२ कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥ मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा वागमें ॥ सु० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥ सु० ३ ॥ इति पदं॥ रहो२ रे यादव दोय घडियां, दोय घडियां रे अब च्यार घडियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला वहोत मसाला, पीवत मधुरी सेलडियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो सांइ, फुलडा बिछाउं सेजडियां ॥ र० २ ॥ राजुल गोडि चले

गिरनारी, दीपत मोहन वेलम्हियां ॥ र० ३॥ रूपचंद कहे नाथ नि-रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलम्हियां ॥ र० ४॥ इति पदं ॥ विराजो बंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रभु गोम्हीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥ चुवा२ चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाव ॥ वी० १ ॥ शिर सोनेको छत्र विराजे, मोतियम्हे तपे रे निलाम्ह ॥ वी० २ ॥ भव सागरमें आण पम्हाहुं, बांह पकम्ह मुझ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥ आठ भवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥ सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥ आप चले गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥ कहे नथू प्रभु नेमनगीनो, कहुंवू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आसाउरी ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका करे रे निवेम्हा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन गया, विन फूले फल लागा ॥ शाखा पत्र नही कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥ अ० १ ॥ तरुवर एक पंछी दोउं वेठे, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंम्हलमें अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो भर२ पीवै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंम्हलमें गउआ वि आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, गठ जगत भरमाया ॥ अ० ४॥ थम्ह विन पत्र पत्र विन तूंवा, विन जी भ्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया ॥ अ० ५ ॥ आतम अनुभव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगा वे ॥ घट अंतर परखे सोही मूरत, आनंघन पद पावे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अवधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ२ भई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥ अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोभोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी हमारो पोढे पालणे, मैंहुं फुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहिं हुं परणी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारी ॥ कालीदाढीको में कोइ नही छोड्यो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खुटली, गगन उसीकूं तलाई ॥ धरतीको छेडो आभकी पिछोडी, तोय न सोड भराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंडलमे गाय वियाणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो भाई विलोवणा विलोवै, कोइक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहिं जाउं सासरीये नहि जाउं पीहरियै, पीयुजीकी सेज बिछाई ॥ आनंदघन कहे सुणो भाई साधो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हंसा तूं मानसरोवर वासी, वामे भूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥ नीर अगाध भरयो थो करदम, पसरो वेल जरासी ॥ आंकी वांक कबहू न सीधी, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चंडाल भूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ भूप पछतावै पर आंगणमें, भटके गया उर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी भूठो फेल मचावै, भागो माहावत जासी, डुनियां चढ२ नीचै गिरती, पछतें ही भाले फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै इक दासी ॥ रुद्रसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी२ रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर२ नहीं आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम२ सुख पावै ॥ अ० १ ॥ तन धन जोवन सबही भूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ० २ ॥ तन छूटे धन कोण कामको, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं भूठ न भावै ॥ अ० ॥ ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो ॥ ये० ॥ आठोंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे ॥ तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ भवका फेरा वारी करो जिनचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शोख हमारी प्यारे चित्तमें धरो ॥ थोमासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं छल परपंच करौ ॥ एती० १ ॥ कूम कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परभवथी न मरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ० ॥ समरस भाव भला चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वातां, जाणेगें नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें भेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढते गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त भारंम परे नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एता जन उत्तम, सो साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रभाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥ च० ॥ भया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत, सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरभीके बंध छुटे, घूघरू भये अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, बिलोवत बिलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

७५

परमाद त्याग, तूं भी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

केरवा राग ॥ समझ परी, मोहे समझ परी, जगमाया अब जुठी ॥ मोहे समझ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही भरोसा पल एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल छिनभर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

भलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ राजुल कन्नी अरज करे छे, भलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥ इके० १ ॥ तोरण आय चलै रथ फेरी, भलांजी वांतो पशुवनकी सुणी वे पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, भलांजी वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवै, भलांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः

रसना सफल भई, मेंतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम आनंद प्रगट भयो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ नाक नमन करतां प्रभुजीकूं, सारचा आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपंकज प्रभुके फरसतही, दूर गई दुख दाझ ॥ कहत क्षमाकल्याण सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी ॥ मुझें छोरुके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई आशकी निराश, उदाशीनता धरी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीरमें परी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम विना घरी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म थ्यादरी रा० ३ ॥ निशदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी झरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥
॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त,
सीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात जर जात सजन
निचिंत ॥ ज० १ ॥ सबही अपणे स्वारथके है,
प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० २ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीलुं सुविदीत ॥ज०॥ को नहीं तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक भगवान भजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदीसर जिनराज, त्रिभुवनके महाराज, आज हो आयो रे, मैं शरणें प्रभुजी तुम तणे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥ आज हो जागी रे, मुऊ मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लगी भरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो छोरूं रे, नहीं तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नाभिराय कुलचंद, मरुदेवीके नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रभु मुऊकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश क्षमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे, प्रभु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोभीगाइयैमन रंग, गो० ॥एक ध्याने एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजे अमृत पीजे, नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावे अंग ॥ गो० २ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजे, आणी मन उछरंग ॥ अभय तेहने उंघ मांहे, कदिय न होवे चित्त भंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमानें मटकै ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तकुं लीधुं चटके ॥ प्रभुजी केरी भक्ति करंता, करमतणी कस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुऊ मन

पर

लोभी भ्रमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि
को राचे, कहो कुण काचतणे कटके ॥ हांरे हूं० २ ॥ ए जिनगु
तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुख
दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हांरे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे
दिलमां न आणे, ते तो भूला भटके ॥ भाव भक्तिसुं उलग करतां
वंछित सुखमें सटके ॥ हांरे हूं० ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केरी,
जोतां हियडुं हटकै, नित्यलाभ कहे प्रभु ए मोटो, गुण गाउं हूं
लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब केसें
कर छूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें वाको जीयो, अपणा प्रभुजीसें
रूसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सु
ख लहस्ये री ॥ प्र० २॥ सेवाराम प्रभु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत
नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा दुर
करना, डु०॥ एक ध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० दू०॥ जब
लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥
१ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥
खत० २ ॥ संवर भाव सदा मन धरना, आतम दुरगति हरना ॥
ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मर
णा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख
वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्र
कार ॥ दान शीयल तप भावना, जगमें ए तत सार ॥ रे० १ ॥
वरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इक्षुरस दान वहराव
यो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघाड़िया, चलणी
काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा जस थयो, शीले सुरगिर धीर॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजिनंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य भावना भावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छांह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन निद्रा तूं कहांसें आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मैंतो बाली रे भोली, बडे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मैंतो जमकी दासी, एक हाथमें मूंकी दुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ वनिया, आप मूवे सारी डूब गई दुनिया ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रभुजीसें ध्यान रे, मोरी लागी लगनवा॥ चं० ॥ लागी लगनवा छोडी नहि छूटे, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोडके अरज करत है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ते शिवपुर गये रहे रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि० ॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमातम शिवधाम रे ॥ समाधान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम, अमृत पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे भले रे ऊगो छे थाको आजनो रे, मैंतो मुखडो दीठो जिनराजनो रे ॥ म्हारे भ० ॥ म्होर सुत सिद्धारथ महाराजनो रे ॥ जिन लंछन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥ म्हाने पाणी मिल्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिल्यो शुभ काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फल्यो काजनो रे, म्हारो

महीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरि महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो गं निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनं रे, मांहे बूटी दीसे भांतरनी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट मा जरूया बहु रे, काने कुंडलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुज सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सो· हामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवभव समा थया म्हारे आ जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्यूं रे॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊरेर करुणा करी रे ॥ ध० ४॥ इति पदं॥ पुनः॥ म्हारे आज आनंद वधाम णा रे, हुंतो लेडं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आग्रहता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरु रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानो जाय एक घडी, स० ॥ ए संसार जेता सांभला, धरूपण आपा घोड चढी॥ मांगी तूंगीनें छत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कडी ॥ स० १ ॥ सांपी नांह

जिनने संभारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे जीवो भज तूं भगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इतिपदं ॥

पुनः ॥ आवोश्नी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम भगत वछल भगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रभु केहवी यइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो ठबीलो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सपी आंबातणी जे स्हाम, आंवलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुझ दीदार नहीं तुझ जोमे रे, इण जग में जोतां कंत कहूं हूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मिं त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न भावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ०६॥ इम करतां बांधीप्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे ठेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम रुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रभु नेम राजुल सी प्रीत मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ कन्नो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमोहन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल ठिन घमी रे, मत मन प्रभुकूं भूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोभता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अभंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दास पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजे हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंद शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंदु शित सतमी
रुद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन ज्ञा
नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चा
लागी लगन गुण गावणकी ॥ छ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चट
मर, वरसे घटा जेसें सावणकी ॥ छ० २ ॥ बालपणे प्रज्ञु हम तं
खेले, अब तो ज्ञइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जिन प्र
रव प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे ज्ञरो
सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ सहजानंदी
एक लहरमें, दीजै सुख डुख जावनकी ॥ छ० ६ ॥ पारस ज्ञेट रहे
जो लोहा, होवे लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास आश
प्रज्ञुजोसें, रुद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥

✓ ॥ नेम जिनंदजीसें, आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण
सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत ज्ञइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख
चंद चंद्रिका निरमल, चंचल नेण चकोरमई रे ॥ सा० १ डर न
कीजै निज चरणनतें, सुरतरुकी छांह गही रे ॥ सा० ॥ हितज्ञर
प्रज्ञुसें अरस परस अब, बतिया डुखकी आण कही रे ॥ सा० २ ॥
विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३
॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, रुद्धसार लय लाग रही रे
सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सांवरिया पा
जी सुख दीजे, प्रज्ञु अरजी दिलज्ञर लीजै ॥ सां० ॥ मनमोह
मूरति धारी, आतम अनुज्ञव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी
सां० १ ॥ करुणारस अमृत कूंपी, लयलीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन
पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जब पारस नाम उचार्यो, रघुपति
को कारज सार्यो, प्रज्ञु धरणीधर निसतार्यो ॥ सां० ३ ॥ शिव

शेखरे रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता वारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववाणी सुंदर छा जै, जिनमंदिर शरस विराजे, हरिहर मंदिर बिच गाजे, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसें प्रेम लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अभिनव श्रीनपल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उगणपचासे, सुदि पांचम पतन विलासे, प्रभु माघव मास हुलासे ॥ सां० ९ ॥ हितवल्लभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववाणी सुमतेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे बेम चला विणजारा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋषभ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकअंतर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंदरपदर्प विपधारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पीयूप सहज सुखभीने ॥ माया छाया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूपा त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरे अनुरागी ॥ शेलेसी करणकूं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रमधर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दीव रंजनमें तुम वंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजे आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

नचंद शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश॥ निधि इंदु शित सप्त
ऋद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन
नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर
लागी लगन गुण गावणकी ॥ छ० १ ॥ सांमली सूरत लटक
पर, वरसे घटा जेसें सावणकी॥ छ० २॥ वालपणे प्रभु हम
खेले, अब तो भइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जि
रब प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे
सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ लहजा
एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ छ० ६॥ पारस भेट
जो लोहा, होवे लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास अ
प्रभुजोसें, ऋद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥
✓ ॥ नेम जिनंदजीसें, आंखरूली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुपु
सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत भइ रे ॥ सा० ॥ जिन मु
चंद चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ उर
कीजे निज चरणनलें, सुरतरुकी बांह गही रे ॥ सा० ॥ त्रिभ
प्रभुसें अरस परस अब, बतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २
विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा०
॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, ऋद्धसार लय लाग रही रे

शैकरै रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता वारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववाडी सुंदर छा जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसैं प्रेम लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अभिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उग णपचासे, सुदि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै ॥ सां० ९ ॥ हितवछभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववाडी सुम तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे गेरू चला विणजरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋष भ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकभर न्यारा, लग रहीलगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंद्रपदर्प विपयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पीयूष सहज सुखभीने ॥ माया गया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूयत्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरे अनुरागी ॥ शेलेसी करणकूं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीकम धर नमर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम वंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुंउर वाजे चोघमा, सवाइ मंका साहेबका ॥ ऊ
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसना
मका, नित२ वाजे चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब,
नाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे,
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोन्ने, जैसा सरद पूनमचं
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोन दे
मिलकर, ओछव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता,
नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरू
पार न पावें, जिनका गुण हे सवसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें अ
जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, व
झोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रभुकी, गेटेपनमें वहोत क
॥ वरोवरीके लिये सोवती, तपशोकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान
के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे ल
मेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहत
तोबी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तम
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, बमा नागकूं ज
दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ व
उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताक
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज गेमके चले
गलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंभीर प्रभूने, ती
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निरा
र खमा, कमठासुरने किया कमाका, नन्नमंमल बादल चमा ॥

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कड़कड़२ कर हुआ कड़ाका, चमक बी जका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वड़ी ऊड़ीमें, प्रभु खड़ा है मतवाला ॥ नाक वरोवर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वड़ा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण ड़ोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाड़२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोड़ ऊपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नही चलता ॥ तर णेवाला साहिव उनकूं, वलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोड़ खड़ा ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी क रता खड़ा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुभ मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल वनाया तेताला ॥ वड़े देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वड़ी जुगतसें सिंहा सण कर, कोट वनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुभ केवलका ॥ ज्ञामंड़लके आगे शोभता, मूल गुंभा- रा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरियां सोभित, सिरे काम सिंघा- सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रभु पार सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, वहू काम है सारसका ॥ अठारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास भला ॥ सुदी तीजकूं तखते वैठे, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ वहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वड़ो

तेरी अक्षजमाया ॥ धर्मचंद जोमता सवाईने, वमा साहमी वा-
त्सल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वमा शिखर निशान
दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥
पारसनाथकूं तखत वैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिवि-
जय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वमा ॥ गुलाबचंद साहेब
के आगे, जिनसासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग
सैं, ग्यान ध्यानसैं खमाश, हाथ जोमकै अरजी करता, पारसनाथ
की तूंदी वमा ॥ वमा काम तेरे है साहिब, मुखसैं नहि कहणे
आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, भविजनकुं सुखके
दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

ऋषभ तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा॥
वंश इक्ष्वाकू नभचंदा, भूमिपति नाभीके नंदा ॥ मात मरुदेवा
सुखकंदा, प्रगट भये जगजन आनंदा ॥ (दुहा–साखी) रेणु पुंज पर
आपकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप भयो सचिपतिको,
आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ भये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥
मौलि पर कनक मुगट राजै, माल गल मोतियनकी गजै ॥ श्रवण
युग कुंमल अति साजै, निरख रवि कोटि भान लाजै ॥ (दुहा–साखी)
शिर वीर सोभावणी, आप ताप झलकंत ॥ युगल अलंकृत देख
प्रभूकूं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥
सुनंदा सुमंगला राणी, भोगसें योग प्रीत ठानी ॥ भये शत पूत्र
गुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ (दुहा–साखी) चौसठ विद्या
नारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूनें, प्रजा-
की अभिधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाभ
अंतराय उदै आया ॥ वरसदिन भोजन नहि पाया, भेद मणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ (दुहा–साखी) हस्तिना-गपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभुकुं वहिराया, देव करत जयकार ॥ अक्षयतृतिया भई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम हन केवल चिदरासी, नाथ भये अविचलअविनासो ॥ शिखर केलाश आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु भासी ॥ (दुहा–साखी) ॥ कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जरी धरी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृष्ण घनस्याम मूरति नीकी, सजल घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरविंद भमरकीकी, भक्तिरस कुंरल पुर सीखी ॥ (दुहा–साखी) ॥ जगणीशय अरूतालमें, ज्ञानपंच मी रंग ॥ कूरू कपट तज भेट भई जिन, सुंदर कमला संग ॥ कुशल रूदतार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस वलिहारी, प्रभु पावापुर निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये, प्रभू चवद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण छवि गाये, भामंडल धजवर डुंडुभि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका वीच सिंहासण भारी ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगे, प्रभु शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम ओरेके भाव प्रगट गत रागे ॥ भापे सिद्धारथनंद सुणत भ्रमभागे ॥ तिहां नरपति सुरपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागे ॥ गौतमकूं भेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभुपा०२॥ अम्मावश पिछली रेन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोछव कीने ॥ गौ-

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तव जगत प्रकाशन ग्यान सुधा
रस पीने ॥ मेरी धन्य घमी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि
यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ नई दीवाली जग वीच तनीसे
नारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज क
ग लिया नरानरी ॥ तहां नया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन
ने किया नुवन विस्तारी ॥प्रनु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रनु
ो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल छवि नविकूं लागत
यारी ॥ प्रनु० ४ ॥ प्रनु घरमचंद हो आप आप जस राजा ॥
या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव
ागिया साजा, प्रनु सुनी चुनी अविचल वाजत वाजा ॥ सन
गणीसे अमताल कृष्ण पख गाजा, नये कार्तिक दिन निर्वाण
ाट माहाराजा ॥ प्रनु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रूहसारी ॥
नु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रनु रहम नजर
र दिलनर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसको
ागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ
न दूर वसे नमनागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी
नहि इस डुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक
ान नया अनुरागी ॥ जो पल नर पाउं संग अमृतरस पीजे ॥
नु रह० १ ॥ में नरतखंडके वीच सुपन प्रनु पाया, प्रनु अर
परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख नर
या ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो पतिय
हूं नाथ चरणकी गया, मेरा जनम सफल हो जाय करुं दिल
या ॥ तम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजे ॥ प्रनु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजे, धन२ वो नर उर नार सुणं-त धुन साजे ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजे ॥ तो आउं जिन तुम पाश देख छुख न्नाजे ॥ ये सुण जिन मेरा ख्याल कुटिलता लाजे, प्रन्नु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजे ॥ तुम वचनं मालती फूल न्नमर मन रींजै ॥ प्रन्नु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रन्नु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रन्नु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजे कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अन्नंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन न्नक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजे ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश वनारस गाजे, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै॥ वामोदर कंदर प्रन्नु पंचानन गाजे, प्रन्नु नरहरि दीनदयाल मदन मद न्नाजै ॥ प्रन्नु कमठ दीन उप देश दयाके काजै, प्रन्नु धरे जोग तज न्नोग अचलपद साजै ॥ पारसके संगत लोह कनक न्नयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उछव होत धर्म उजियासी ॥ प्रन्नु रामवाग विच न्नुवन वण्यो केलासी, क्या अदन्नुत महिमा चंद्रकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रन्नु उज्जन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंद सूरीश्वर विजयराजके सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पावक हितवल्लज्ञ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, संघ सवा कल्याण ज्ञक्ति वुध दीनी ॥ सन् ज्ञगणी सय अन्त माघ सुद लीनी, सुन्न वसतपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ हमी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्धसार कहै सुखकार ज्ञक्ति पीती॥ ज्ञइ कंचन काया प्रज्ञु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजे, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण आये फेर मत जाउ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन्न कोम जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिरवरकुं सिधाए, हमकुं गंमी नव ज्ञवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सलूणे, मैं इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी मैं तोकुं कहतहुं, देखूं शोज्ञा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठंमी॥ जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल, बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं गोम चले निरधारी, अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सुण हो राजुल, विषयारस हे विष सरपी ॥ यह संसार असार निरंतर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह ज्ञव पार उतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पोहता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोज्ञा हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल मांहे, फिर फेरा नहिं फिरनेकी ॥ ने० ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे भव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की ए है संसार ॥ करो प्रभु निहाल अभ्भो जिनदास, रखो प्रभु मुझ चरणोके पास॥१॥सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली॥सोबत समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली॥अनंत भव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी झाली॥अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढे केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन । साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद [illegible]ण जिनदास गावे, शीश चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ बोलत हे हि[illegible]ा मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्ममें ध[illegible]कर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खडा कमर कसकर, [illegible]टाया कर्मोंका लसकर॥श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास[illegible]या वासा ॥४॥ समझ मन मेरा मतवाला, तुझे नहिं कोइ हट[illegible]कवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ता[illegible] ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो भगवंत पर भाला ॥ द[illegible]तें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में [illegible]धर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्म[illegible]ती ॥ पूठ पर खमे जागता जती॥मुझे बलवंत भई शील सती, मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट दुरगतिका भारी, नीर ज्यां भरती कुमति नारी ॥ वरछी उन नेणोंकी मारी, मुव्या केइ कामी संसारी ॥ इनोंकी हो रहिये खुआरी, जीता कोइ सदय

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास
या ॥ ७ ॥ चेतन नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी
कुमतिकी पमी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमति
वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासी ॥ हि
खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नाहिं मानी ॥ कि
नही गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें व
रं गया पानी, गती तेरी दुरगतिकी गनी ॥ सेवक तोरा जिनदा
वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगान
शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कान
लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती ते
सुरगतिकी गनी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमह
काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये
कीसीकी भूंमी ना कहियें रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजं
का भेटो रे च०, भव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटे
॥ सुकृत कीजै–महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण भज लीजे, सम
कित अमृतरस पीजे ॥ लाभ जिनभक्तीका लहिये रे–लाभ०॥
चल०१॥ करो मत मुखसे वमाई, करो०, तज तामस तन मनका
सुमति कर घर रहणा भाई ॥ रीतसे बोलो–मेरी जान री० ॥
आतम समतामें तोलो, मत भरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन
मनसें रहियेरे–मो० ॥ च० २ ॥ जोबन दिन च्यारतणा संगी रे,
जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पमी नंगी ॥ प्रीत सब
तूटी–मेरी प्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया
रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियेरे–सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या मैं जिनराज कटी मेरी डुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा–मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे–मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे–मु० ॥ अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ मैं रुल्यो चोरासी मांहि जूल्यो मैं जरम, जूल्यो०॥ महारे उदय अनंता डुख बांध्या जब कर्म ॥ मैं कहियक हूउ रंक फिरयो तज शरम, फि०॥ अरु कहियक राजा जयो गरबको गरम ॥ जब गरब आणकर बोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत घमी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ मैं सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ मैं कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला० ॥ मैं उलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ मैं पमया लोजके फंद जोमतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आप कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब डुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बेन अर जाई रे ॥ वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन जायो सदा गुण गाउं, सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ मैं मन वच काया करी चरण चित ल्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा मैं चाउं ॥ स० ॥ ए

चोरासी के माहि फेर नही आऊं॥ यूं अरज करे जिनदास, कीरत ए गाई रे॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी॥ हांरे तूं कुमति कलेसण नार, लगी क्यूं केरू, ल० ॥ चल सरक खमी रह दूर तुझें कुण छेरू॥हांरे तुं सुमतीको भरमायो, मुझे क्युं छोरी, मुझे०॥मेरी सदा शाश्वती प्रीत विन कर्मे तोरी॥तुझ विन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोरी, क० ॥ अब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ तुं झुरर कुमति आंसुआंखसे रेरू, आं० च०१॥ हां रे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति में रुठे, सेति० ॥पकरूयो साचो जिनराज, संग तेरो छूटो ॥ तेरो मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ मैं सहज हुवो हुं दूर नार तेरो छूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेरू, आ० च० २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती के लागो संग मुझें क्यों टाली ॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुणावे गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरी अर काली ॥ तूं हम कूं वेले दूर सुमतिकुं तेरू, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल धायो, रती नहिं भिगियो, र०॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं भगियो, दू० ॥ जिनराज वचनको ध्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं वात खोटी मन खेरू, खो०॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस० तेरी असप ऊमर खूट जाय, नरक जब जाणा ॥ तें दिना चार जुग वीच लिया हे वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर वेठा काल, करे हे हासा ॥ में बोलूं साची वात, झूठ नहीं मासा, झू० ॥ तूं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक में खासा, खल० ॥ तेरे जोवन पतंगका रंग, झूठ सब

आंसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मीठा संसार भेद नहीं दीजे ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजे, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत भीजे ॥ अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजे, प्री० ॥ तोहे कुरगति के पोहचाय तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख दुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं०२ ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कुटंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लिया नहीं तें लाभ, वखत पर करका, व०॥तेरी वीती बात सब जाय जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया, आ० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास सुधारस पाया ॥ मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ मैं चाहुं चरणकी सेव सफल कर काया ॥ अब थो दोलत दरसणकी, मेरे एहि माया, मे०॥ यूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब घुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४॥इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार, सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गाजे ॥ ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्यान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम नवल इक वींद, अनोखो भाजे, अ०॥ सुरनर सब गावै गीत, गगन में गाजै ॥ अब दोरू२ सब दुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे० १ ॥ अब चढा नेम तोरणकूं, आनंद दिल भरकर, आ० ॥ सज आये सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरख

हिया भरकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥ सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, स्या० ॥ पशुअनकी सुणी पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्यागी, शिवरमणीके शिर वींद, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढी राजुलकूं, खरी विटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके स रवरमें, टिके नही पाणी, टि०॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी॥ अब कवन जीव डुरगतको, वन्यो मेंदानी, व० ॥ जिनदास करो भव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बेठ लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक वीच मगसी पारसका वाज रह्या डंका, मुगति गढ जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल वलकूं क्षय कीया रे, क० ॥मुगतिमहलमें केलि करै, अनुभव अमृत पीया ॥ शाशता जीया, माहाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पदवी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥मुल० १ ॥ प्रभु पारस भजले भाई रे, प्रभु पा०॥भाव भमरका मेट जोत तेरी जगमें सवाई॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥चंचल चितसे मत चालो, गुमान गरबकूं गालो, गरबसे धूल मिलो लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे शुभ भाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रभु मगसी पाया, पापसे डरता, महाराज पाप० ॥ भवि जीव ध्यान दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण दुख मिटया मेरे रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे, ॥ नहि ऊपजी मेरी आंख विलोया परब विना पाणी ॥ में जाण्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या, म:

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे, पुद्गलमें मान्यो सुख कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहि जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वेगो, विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥ मुगतीको मारग मेट, उवटमें जावे ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहि, विकल बुध भई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत भंडार भरया हे मोती, भरया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल फुलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत छिन मांहि सरब क्षय भई रे, स० ॥ पुद० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सुखभर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सझिया शोभे सणगार, नारिसें मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक निगोदकी वाट, पकड कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो माठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ, रे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥ चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आ गो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाड बना चंगी, ब० ॥ पलभर परवारयो पुन्यतणो तिहां भंगी ॥ पकडी परभवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंत गयो आकाश काया पडी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो० पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥ नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर के लागी, तुम त्याग चलै वनखंड भये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सत्तवंती त्र्यावसें त्यागी, त्र्या० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण त्र्यर२ रे, ने०॥ में० १ ॥ में अरज करूं करजोरू, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिर पर तुम सिरदार, देजो मोदे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवे नयणमें नीर लग्यो नित बरसन॥ मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठे, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे, जो० ॥ में चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥ पीछे नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परभात, नमुं पद-पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं उर जगतमें बेली ॥ युं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समझावे ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, दीयो हाथमें नहि आवे ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रीका परवसमें पड़ियो, ग्यानकला कहो केसें जगें ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो दे, कपट करी परयनकुं ठगे ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करे चूंथणी, चरचासें चित नहीं लावे ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नहीं देखे, दूजाका अवगुण भाखे ॥ हिंसादीमें हुओ हजूरी, दया दूर दिलसें राखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखे ॥ तीनूंही भुवनमें राग धरामें, सरसे जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर लम्पाई, धनके मिस इनकूं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणको भेरी लान आतमा, मजान होय तो मोहि पूजे ॥

नही गाममे रुंख अंबको, एरंरू अंब सरिखो सुझै ॥ पारख नहीं हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझै, गाम्र देख कहै मुझ घरमें, कामधेनु इतनी दूझै ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें म्हातो, लोभ मांहे लपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीरू पारकी नहिं सहतो ॥ भगति नहीं गुरु देव धरमकी, कवल वचन मुखसें कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पुठ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुलरू ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी हे॥ कनक कामनीके नही भोगी, वे पुरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर केवल पावै, ज्ञानगरथ गुण भारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रद्धासें सुमती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै, उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी हे॥ सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, भविजनके उपगारी हे॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सप्त भंग नय, देश काल आचारी हे ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २॥ सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु पाखंम खंमते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधे, कहे पाठक रूद्रसारी हे॥ करूं२ में० ४॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरुकी लावणी ॥ तजुं२ में उन कुगुरुकुं, कनक मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अट करमसें न्‍ हे ॥ तजूं० १ ॥ करी कपाल वभूत लपेटी, शिर पर जटा व री हे ॥ कान फाम्कर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तज २ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासे, वे मद्द मांस आहारी हे कूमा पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजूं० ३ कहूं उगुण कुगुरूका कथ लग, साध नही संसारी हे ॥ आप डु उरनकूं रूवावे, डुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजूं० ४ ॥ समकि श्रद्धा जेनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं ध्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीन वे, कुगुरु संग खुआरी हे ॥ तजूं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास ऊगो रे ऊगे, येने लेइ लाकमी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं जरतो, ध्यान दियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धमतां, जैसो लकमको ठुंगो ॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नाहिं आया, कोरोही पम रुयो पूगे ॥ गपोमा सुणकर लोक पूजता, ए अलग माखको वूंगो ॥ यो० २ ॥ पंमित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो, साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं वूटो ॥ यो० ३ ऊगोही बोले ऊगोही चाले, कपट करे एक मूगे ॥ साचो एह सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आउ घ तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंमल रवी चंद्रमा, सब्री चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां ऊलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया; उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागे, दुनिया जाय खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी है मंगलकी ॥ हंसा गांम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥ मनभावत तन चंचलहस्ती, मस्ती है बलकी ॥ सदगुरु अंकुश दीया आनके, वार्ता नई अलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई, सब अन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ झूठ कपट कर माया जोडी, कर वार्ता छलकी ॥ बोझकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊपजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन भांत तिरणा॥ हम दुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति को० ह० १ ॥ घेराघोर तरकके भीतर, नानादुख भरना ॥ मारन ताडन छेदन भेदन, उर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक तिरयंच जोनि पायके, गले फास परना ॥ क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर, देख२ झूरना ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरणा॥ दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके भक्यो, कहुं नांही थिरना ॥ साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून प्ररुप्या है दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या मुगति मझार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया भवजल पार ॥३॥ (चाल—हीर

रंकेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीये ॥ जिनसासन
पक, मुगती जाणेकी डिगरी दीलिये ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मु
ई बनादे, आउं करम मुदाला ॥ दावा रसना मुगति मारग
धोखा दे जाप टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया,
लखाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून बणाकर, अर
ध्यान गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमों
आ घेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूंट लिया सब मेरा जी ॥ जि
३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ दुख अ
नंता पाया मेने, अंत पार कछु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मि
वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, त
में अरजी भारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ
हुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर बण्या चौधरी, उसकूं पूछ मंगाव
जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी।
हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ।
जि० ७ ॥ आउं मुदा लै हाजर आये, मोह मुगत्यार
बुलाये ॥ च्यार कपायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये
जी ॥ जि० ८ ॥ (टेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन ना-
यक, झूठा दावा हे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया
इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब
मचाया जी ॥ जि० ए ॥ विपयभोगमें रमिया चेतन, घाटा नफ
न जाणां ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी
जि० १० ॥ हाजर खरूं गवाह हमारे, पूछिये हाल जु सारा
विना लियां करजा चेतनसें, केसें करे किनारा जी ॥ जि० ११
(टेर मुद्दीकी) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शास
न सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारे, जाणे सब संसार जी ।

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी, करम फरेबी भारी ॥ जीव अनंते राह चलतकूं, लूंट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे० १३ ॥ बड़े२ पंडित इन लूंटे, एसा दम बतलाया ॥ धरम कहा उर पाप कराया, एसा करज चढ़ाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ असल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म एनमें हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ भेद अर्थसें वेद पढ़ाया, हिंसक यज्ञ बताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुझे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म बताया, तपस्या सेती भिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनै, झूठा जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभूजी, अपील होण न पावे ॥ हकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनोंकों समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी, करमूंका करज बताया जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन डिगरी पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई जी, जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम चलाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी वारण सब श्रावगण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको लग्यो है मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए है ॥ रोसकी रसूम डर कमीसन जगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इसत्थार लटकाये हैं ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुबानबंधी, तबके कुछ स्वाल जवाब सतगुरुने बताए हैं ॥ ओमकार सा-

जी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी डिगरी कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेंनें करी हे तुमारे पास, साहब जिनराज अरज मेरी सुण लीजीये ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत हे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥ मैंतो हूं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयै ॥ हारुं तो हाजर हजूरीमें रह्या करुं, जीतूं तो लगाय जुगल चरणनेंमे लीजीये ॥ अब तो फरियाद नाथ करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीये तो रावरी बडाई हे ॥ मुनसबकी वात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अफील मान अरजी लगाई हे ॥ झूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो मत जैन जाकी अैन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों फूठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोडकार साजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी डिगरी कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति डिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी भारी, देखनकूं आवै नर नारी ॥ अनंता घोडा भर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ ठंठ पर धजा जो फररातो, धमकसें धरती थररातो (दुहा—साखी) समुद्रविजयजीका लाडला, नेम भनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन भई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥ कसुंबल वागा अति भारी, काने कुंडल छवि है न्यारी ॥ किलंगी तुररा सुखकारी, माल गल मोतियनकी डारी ॥ (दुहा—साखी) कानें कुंडल झगमगे, शीश मुगट झलकार ॥ कोडि भानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ बाज रह्या बाजा टंकसारी ॥ नेम० २ ॥ छूट रही भनकी ठरराई, ब्याहमें आये बडे भाई ॥ झरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (दुहा–साखी) उग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ वहोत जीव करि एकठा, वाको भ-रयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सवही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (दुहा–साखी) याको भोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४॥ पीछेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकड्यो छिन मांही ॥ कहां तूं जावे मेरी जाई, उर वर देरूं मुकताई ॥ (दुहा–साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम ० ५ ॥ सहेल्यां सवही समझावे, हिये राजुलके न-हि आवे ॥ जगत सब झूठो दरसावे, मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ (दुहा–साखी) तोड्या कांकण दोरडा, तोड्या नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्यां सवही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आभूषण रत्न-जड्त सारा ॥ लगे मोहे सवही सुख खारा, वोडकर चाली निर धारा ॥ (दुहा–साखी) मात पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ झूरति छोडि मा प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो छिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन छुडवाई (दुहा–साखि) नेम राजुल गिरनारपें; लिनो संजमभार ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

गई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह दुख भारि

गा० ॥ चोमासा लग्या रस भिना, अलि अषाढ रंग
हिना ॥ च्यारुं तरफसें वादल पिना, विजलिने चमकणा
कना ॥ दिल होत धरूकता सिना, में अवला सखो
ति हीना ॥ (झमाना) सररररर चलत समीर, थररररर
रत सरीर ॥ मरररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदवीर,
री तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें
ाम घनघोर, जरजोर वोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते शोर,
डर पपइया सोर ॥ झरु लग्यो वूंद झमझोर, विच चमके दा
नी कोर ॥ (झमावनी) खरुरुरुरु रवघनमाला, तरुरुरुरु
ल परनाला, अरुरुरुरु नाला खाला, में डुखी हुई वेहाल, हीयेमें
ल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना, वाद
नें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर झीणा, ज्युं बाजे मनोहर
णा ॥ अव एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे डुख दीना ॥
झमाना) युं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौरु जगाई,
विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्री
गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद
ै वे पीर ॥ छव चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर ॥ प्रीतमसें
यो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (झमाना) शिव राजुल
सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, भविजन मिल शीश नमाए ॥
न कहे कपूरचंद, प्रेमसे छंद, जाऊं वलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ झगडा
धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोउं नारीका० ॥ वि० ॥
ति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उ
याग इस्कमें भूल गया सुधवुध सारा ॥ तूं वेरण हे जनमरकी

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होता न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत डंदगारीका ॥ ऊगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क नमर है, इंद्री पांच सवादीका ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मैंहुं मोहरायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा बालम वो है फूल हजारीका ॥ ऊ० २ ॥ सुण रे वैरन बात हमारी तेरे संग डुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीछे पछतावेगा, आखिर छेह देवेगी वैरण केसें प्रीत निन्नावेगा ॥ में समजाउंगी प्रीतम मेरा जो मानें दिलदारीका ॥ ऊ० ३ ॥ कुमता बोली बात सुमतसें तेरे संग क्या होणा है, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख डुख दोनुं खोणा है ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही सोणा है, नही ऊजाला नहीं अंधेरा शिला सहज विछोना है ॥ एसा मेरा नोग छोमके सहे न डुख अणगारीका ॥ ऊ० ४ ॥ कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, टुक इक सोच करो दिल नीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद इसकी बेठ कठिन है समजके बूजके नहिं पमना, पहली सुखसें फिर डुख उपजे वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं है नोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ऊ० ५ ॥ एसे बोल सुणे सुमताके चिदानंद उठके चल्ला, नेणोंमें आंसु नर रोती प्रीतमका पकड्या पल्ला ॥ मत ना छेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके सल्ला, मैं अबलासें दगा करोगे केसें होय तुमरा नल्ला ॥ मैंहुं दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ऊ० ६ ॥ तजके संग कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया है, संजमसे सिणगार बणाकर

ल सुगंध लगाया हे ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय मुगतिम
त जब पाया हे, सीख सुरंगी मानो नविजन अपणां दिल सम
या हे ॥ कहे रामकृष्सिार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥
० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रनूकी लावणी ॥ सज शोले
णगार हुई हुसीयार सहेल्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे०॥
केसरिया वेस छिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो
ते केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, बणी तो दिलदार
। जेसी चाली, मधुर मुख वेण उच्चारी रे॥ (ऊलावणी) नेण
। कजरा हद नीका, सिर सोहे रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा
ान परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें
ी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण
सम दिल वाते, गुने विन क्युं छिटकाते रे ॥ में सरणनकी
ा रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोरू कर शीश नमाते रे ॥
ऊलावणी) आठ नवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम
री ॥ साजन प्रीत निन्ना इकतारी, तेरे विना नहीं चेन, नींद
ं रैन, सन्नी तो लगे खारी ॥ च० २ ॥ सजके खुब वरात साथ
ो राम कृष्णासे नाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब
। देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरफाई, कहो मुफकूं सम
ई रे ॥ (ऊलावणी) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें
ज हमरी लाणा, सुखसें रंगनर चैन उलाणा ॥ नेणा वरसे
लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रनु वे
ा एक धर ध्यान सदा निज जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥
ाली जेसी चमक दमक जेसें ठस बूंदका पाणी, अंत मोती
जावे रे॥ (ऊलावणी) ज्योतिरूपका नज ले सरणा, नितर
उसीसे करणा, डर किसीके फंद नहीं पडणा, मेरा वचन ले

मग्न, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोका संग रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली जाय सब खलक पलकका नहीं भरोसा जाणी, करो सुकृतकी निसाणी रे ॥ (झमावणी) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास बसाया, कहे राम रूद्धसार, करो तो एसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंद्रावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, राजुल झमी अरज करत हे प्रीतम कब घर आवोगे ॥ उप भर गाती मनमें चिंता नेणामें आंसु झरते, हाथ जोमके राजुल झमी वार वार विनती करते ॥ ज्यान वणाई ब्याहन आए घर२में आनंद वरते, किस विध गांम चले गिरनारी मेरी दया नहिं दिल धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते, ज्यूं सागरमें जल विन मछली प्राण घमी पलमें हरते ॥ (झमावणी) हे तुं मंदिर निजर कर आव फेर रथला रे, तूं चंद्रवदन दीदार मुझे दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी घुंमी खोल सूक वतला रे, हे तुं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निभावोगे ॥ रा० १ ॥ उखसुं भरी वातां मत वोलो राजुल मन धीरज धारो, एकर थांसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ भर नार नही दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सिधावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन थांसुंमें कीनो राखो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं वितारो ॥ (झमावणी) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली, हे तुं मिरगानेणी मुख चंद्र मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी ब्रमशेनकी लाली, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न भुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर वोले मनकी गुंझी

नहि खोले; या दुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहिं बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभणी मुसकल होले, धन मानव जो प्रीत निभावै तर२ अधकी रंगरोले ॥ अरज वीनती करकै राजुल वचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमझोलै ॥ (झूमावणी) देवा चंदकपूर अपूरब ख्याल वणावे, देवा नरनारी मन रंग रागसुं गावे ॥ देवा झांझ ताल डफ ढोल मृदंग वजावे, देवा आनंद हर्ष वधावे हे जी मन वंछितफल पाउंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देखया रे हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वसेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हांरे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हर्यो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल हद न्यारी रे, कर श्रीफल भुजबंध झलक छवि न्यारी रे, गल मोतियनको हार वण्यो गुलझारी रे ॥ हांरे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वडाई रे, पारस२ नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हांरे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत बद जाणा धूलेवा ॥ गढपति उनका बडा अडंगा, मत छेडो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥ सकतावत चंडावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ दीडुपति वाकूं हाथ जोडे, तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सवेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवे, निर्धनियाकुं धन देवे ॥ वांझ खिलावे सुंदर लडका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवरका ॥ नूप भुजंग मद्द र करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा वाजे, दशो दिशामें हे भंका ॥ भाग तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूंछ मरोरु चढा अभिमाने, जहर भरा हें निजरूमें ॥ रूपभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद, बरूे सितंवर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घरर घोमा, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ए ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्हवरायो ॥ इसो रूपभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खरुगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता हे ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, वलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

पकरम अरु आपकरमकी, भई लभाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपकरमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई, करम लिखी सो वन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरे मनकंदरपें ॥ ए ॥ (मोतीदाम छंद) तूंहि अरिहंत तूंहि जगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तुंहि जवजंजन भाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन जूप, तुंही अविनासी तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वरुजाग ॥ २ ॥ तूंही गुणधाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंही अघनाश तंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही गुण केवलरूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय तूंही जग ध्यान, तूंही चिदरूप तूंही जगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम तात तूंही मम मात, तूंही मम भ्रात तूंही मम गात ॥ तूंही सरणागत राखणहार, तूंही उुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते ॥ पूरव करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुरु शासन जगत देखना, जगत ढंढेरा वाजत है ॥ आपकर्म अरु जैनधर्मको, फल पाई यों लाजत है ॥ २ ॥ यो उुख मोसें सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग निवारण, गुण कीजे जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यकु प्रसन्न हुय फल बीजेरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास भई मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु कुष्टरोग सब नासत है ॥ कामदेव अरु अमर समोवड, [illegible] सोहानत है ॥ ५ ॥ या कीरत प्रनु तिहारी भूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देश२में प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागडदेश वडोद नगरमें, जग पर प्रभु करुणा कीनी ॥ कितने वरस लग मही में महिमा, अविचल भूतल ऋद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान भयो तब, पातस्याह चढ़ावा आयो ॥ बूत भूत पत्थरकी मूरत, जडमुल्लासें भखरायो ॥ ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की बिलराइ, थाको यों वाचा बोले ॥ देव हिंदको बडो जागतो, यूं बोलत फिर२ मोले ॥ ए ॥ सुनो बात काजी मुल्लां तुम, एक बातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निजरे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब भये महाबल, शस्त्र झडोझड विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करणे लगे, घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गाडली, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥ (चाल लावणी ॥) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हें प्रभु भरती ॥ गाय एक कोडी बनियनकी, आइ वाहां चरती२ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांझ समें फिर नही दूजे ॥ रीस करी तब गोपालन पर, गोपाल थरहर धूजे ॥ दूजे दिन गो लारे आयो, लह्यो भेद कह्यो बनियनपें ॥ शेठ आप जब नजरे देख्यो, चकित भये हे तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषभनाथकी मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, भीतर मूरत पूरत हे ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो सेवकें हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु उ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं उधार बाधा, कब प्रभुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ२ महाराजकी मूरत; संघ सबे लीनो आडो ॥ ७ ॥ जबरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

मंदिर तब कीने, अंतर२ भर भण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥
॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो, संघे निज देवल कीनो ॥
मध्य विराजे ऋषभ तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ९ ॥
(दूहा) संवत अढारे तेसठे, भाउ सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो
उपने, भाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद ॥) सदा-
शिव राय चिंते मन एह, लूंटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ भिल्लां
पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग द्रव्य भंमार सुणाय ॥ १ ॥
जावां अब लूंटण गाम धुलेव, महुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो
निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २ ॥
कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, छंग भर साथ लिया कोकवाण ॥
तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥
॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति
हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव भूप, ग्रहां सब माल
अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत दुष्ट करूर, कीयो नज
राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, भयो मन
चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत भंमारी बुलाय, मीठे
वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मझार, कियो
तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार२, भंमारी सबे
इ पुकार२ ॥ करो अब वाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज
गरीब निवाज ॥ चढो अब वाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ (दुहा)
उण समें कोउ सेवको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्टायक
नाथजी, भेरूं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी
सहेर धुलेव मझार ॥ कियो अकारज उपने, शीघ्र चलो जन तार
॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संभाल ॥ दो घोडे
होने चढे भेरूं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ भिल्ल कोप आपे कियो, द-

शा दिशि फौज हजार ॥ मार२ चो तरफतें, भई लमाई त्यार ॥ ४ ॥ (भुजंग प्रयात छंद) कूकू कुकू कुकू वदे कोकवाणं, सणंसणं सणणं तीर तरकस्स वाणं ॥ धुवाके धमाके वदे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्ररा घाव लागे, किते मारतें कंपते दूर भागे ॥ किते दंतपें तिरण लेंव चराका, किते थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुल्लाहअल्ला पुकारे, किते दीन होके खुदापें संभारे ॥ किते नाथपें केसरा खून माणे, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणे ॥ ३ ॥ सदाशिवनें घाव लागो अटारो, पुनी भाग जसवंत दोनुं संहारो ॥ वमो कोप जाणी सबे फोज भाजी, हुई केशरीनाथकी जोत वाजी॥४॥ सदाशिवने आलमी अटक लानो, सवारांचसें रकमरो खून दीनो॥ इसो नाथ धूलेवरो महंगाजी, सदा केशरानाथरी जोत वाजी ॥५॥ (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, तारथा केई जिनराज ॥ दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अष्टसिद्ध, तूंही मनवंछित वंछित रूद्ध॥ तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥ तूंही कामकुंभ तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥ तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वरू सेव ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इच्छित दायक नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम रूद्ध भंडार अगाह ॥ ४ ॥ तूंहि मम मंत्र तूंहि मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम तंत्र ॥ तूंही गछनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्य तूंही जगपूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश२ रूप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिसावर, फिरे दुहाई नाथनकी ॥ हिंदु

मूसल वरू राणा हाजर, पूरे इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाटघाटमें, रण रावल दुख दूर हरे, इक चित्त ध्यान जे नित समरे, अखय खजाना अन्नर नरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गमगम दौ गमगम दौ गमगम, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह कमेपुर, नीमसिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वर्षे, फागुण सुदि तेरश दिवसे ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, नरण पौप पावन करन ॥ जुगलधर्म नीती हरन, सब करम बंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद चंद पदजुगल सेवन, जगत विरुद तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज वहाडुर, रूपन्ननाथ असरनशरन ॥ १ ॥ रूपन्ननाथ महाराज, सबे दुख दालिद नंजन ॥ रूपन्ननाथ महाराज, सबे नूप मनरंजन ॥ रूपन्ननाथ पृथ्वीनाथ, समरथो वाहर धाये, रूपन्ननाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज वहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रनूकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जब कमगासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु आ गाज जल मूसलधारा, धरू धरू काजन शंका ॥ आ० २ ॥ थररर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तब, ऊपर जाय प्रनु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

त्र पद्मावत्ती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ धमकर
मैं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी
कट नौवत वाजे, धौं धौंकट ढुंढुंनि धौंका ॥ या विध गीत संगीत
जन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत
ाल सब, रुरु मौं मौं करते रुंका, झेरण फेरणके ऋनकारे,
ागरुद्दी ऋालरके ऊंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद्र सब जै जै करते,
जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो
सुख, को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥
घडा एकसो आठ शेलडी, रस भरिया है नीका ॥ उलटभाव
श्रेयांश वहिरावै, मांड दिवीआलूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव दुंदुभी
वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,
गई भूख सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनोका-
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये
धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोडी
नानु कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर
जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा
वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा
शरण, चली दुख दवमें ॥ कोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,
लग्या मुऊ केडे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, वेक वंठेडे

॥ आ मुजरो मुझ जगवान, करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी ॥ धा० ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या छे पाप, सुणजो आप, करुं करजोमी ॥ क० ॥ मुझ जूंमामां जगवान, जूल नही ओमी ॥ जो बहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ जूठं बहु बोली, साचने सुं हरवुं ॥ तुझ खोलामां मुझ शीश, जाण जगदीश, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म, धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो थइ यारो आण में ज उत्थापी ॥ में मुरख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हरखायो ॥ क० ॥ परदारा देखी लबारू, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केश लाल, आणीतें व्हाल, छुःख तुं हरजी ॥ छु० सेवक० ३ इति पदं

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो ॥ समुद्रविजै सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक ती नों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ वदोत हर्गांह व्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ पद्पंचाश कुल कोटि प्रमाणे, जादव उनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब बरात बणायके रे, उग्रशेन दरबार ॥ आए प्रजुजी हरखसूं रे, चढगये गिरनार ॥ मो० ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अव गुण बोमो मती रे, कोइ नही छे दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद पटी दिने रे, इंद्र चंद्र परिवार ॥ दीक्षा लीवी शुज मने रे, करम दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदकू रे, चैत्र शुक्ल शुज वार ॥ श्रीजिनदंत सूरीसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो० ६ ॥ राजुल पहलो नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निजावं जुगतसुं रे, रूदसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक पोथी अरु पदमनी, नहि दीजे पर हस्त, जा

विगमै पंमित विना, वा विगमे पर सत्र ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजो प्रन्नाते चाली रे ॥ आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुनें, मोतोमे थाल पूरावो ॥ चार२ आंग चतुर सुहागण, चरण कमल चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ २॥ धन धूज धनतेरस दिवसे, काले चव दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजै, कर्म मेलो सब टाली रे ॥ आ० ३ ॥ अमावसकी परव दिवाली, फरती झाकझमाली, घर२ तो दीवलिया झलके, रात दीसै अजुवाली रे ॥ आ० ४ ॥ अम्मा वशाकी पिछली राते, आठ करम सब टाली, श्रीमहावीर निरवाणे पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ५ ॥ पमिवाने दिन जुहा रपटोला, ए रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीऊ पामी रहियाली रे ॥ आ० ६ ॥ बीजे तो वली न्नावम्बीजरू, बे नमलो अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होथा रे पनोता, एवे२ ह रखे गाई रे ॥ आ० ७ ॥ हरख विजय पंमित इम बोलें, करो स हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंमित गुण गावै, जय२ वाजै ताली रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे थई आज, प्रन्नुमुख जोवाने, सरया२ रे सेवकना काज, न्नवडुःख खो वाने १ ॥ महावीरस्वामी मुगते पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रन्नु निरवाण ॥ जिन मु० २ ॥ चारित्र पाल्या निर्मलानें, टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एह वा प्रन्नुने वांदियेतो, उतारे न्नव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला वहोरया वीरजोने, तारी चंदनबाला रे ॥ केवल लइ प्रन्नु मुक्ते पो हता, पाम्या न्नवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांदिये जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रन्नु ता

नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा ०.तार रे ॥ करजोमी कवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाल ॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रजु आलस अंग हुलसाई, पूछे मरूदेवा माई ॥ पो० १॥ प्रजु नंदा सुमंगला राणी, जन रुच२ सेज विछाणी ॥ पो० २ ॥ प्रजु नवलसु नेह सनेहा, प्रजु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अजर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजे मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजे० ॥ पहिले मंगल प्रजुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे मंगल आरती उतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मंगल प्रजुगुण गाउं, नाचू थे थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥ प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रुषज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल गला प्रजु जेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥ [illegible]मुख बिंब मनोहर अद्भुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलना [illegible] श्रीआदिजिनेश्वर, पूजत उख सहु यारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥

मात चक्केसरी गिरवर ऊपर, चक्र दस्त विच धारा ॥ दुष्ट निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥ ४ ॥ खरतर गच्छ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गुण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५ ॥ संवत नगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुदारा ॥ पंचमी दिन मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज०सि०६॥धर्मशील प दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना गुण, पन्नणे मुनि रूपसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले जारी ॥ प्रथम पद तीर्थपती राजे, दोष अष्टादशकूं त्याजे ॥ आठ प्रातीहारज गाजे, जगत प्रनु गुण बारे साजे ॥ (दोहा–साखी) अष्ट करम-दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनंता नजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रगट नयो निज स्वरूप नारी ॥ ज० १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद सूरज जेशी ॥ उमास्यो राजा परदेशी, एक नव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा–साखी) चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवज्झाय ॥ सब साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाएयो वीरजिणंद नारी ॥ ज० २ ॥ द्रव्य षट्की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावे ॥ विना यह ग्यान नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ (दुहा–साखी) ज्ञान पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें, निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोरी सब राणी ॥ यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ (दुहा–साखी) करम निकाचित कापवा, तप कुगर कर ध्याय ॥ क्षमा युत नव-

मा पद धरे, कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र भजो भाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, भाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा–साखी) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहे नवपद भवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल ईडरआंकी ॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जैसा जगसें तारण, मिलणा नही अेसान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ट भगंदर राजरोग सब, भूत प्रेत बल नाश ॥ नवपद जैसा निरभय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्हं पद अरिहंत ॥ सिद्धसूरि उवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगें, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग बरणूं, मैंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥ सुरनर भूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्केसरि मात ॥ उछव विविध करे मन शुद्धसें, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्न दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जयर श्रीरुद्धसार ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (रथ चढ जउनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तरुित्कांति प्रभ, मदन इ भवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासें, व:

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर छाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, ज्योति अरुज सब भ्राजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी बालूचर, अंतरंग अरि दाझत हे ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावे, गोविंद चरणा माजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति उपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम जपी नामकी, लखमी लोल पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान भक्तिजन, रुद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि भक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥ धन२ आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुबस थिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामबाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसे अरुतालीश शुभ दिन, वसतपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्ठ सारो, कुशल निधी कहै रुद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं छांड चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी; पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, ऊरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुपनकी, हिलमिल ज्ञमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत ज्ञरी पिचकारी, पेलूं प्रज्ञूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो छतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषज्ञ गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनसें ज्ञई उदासा, प्रभु रुषज्ञ गये वनवासा ॥ (दूहा–साखी) रुषज्ञ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ ज्ञरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी मगन होय रहे घनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ ज्ञरतादिक जी सौ पूत्रनके रूरसें, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा–साखी) नगर अयोध्या युं फ़ुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंज्ञा ज्ञरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ ज्ञादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ ज्ञरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ (दूहा–साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहे जोगविलाश ॥ सब माया या रुषजकी, छोड गया वनवास ॥ देखो जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आसू महीने जी सूरतकी छिब लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके सब लोभी जी पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो वडभागी ॥ (दूहा–साखी) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद्र पद सेवे जी नहीं हे रती वियनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो रुषभ घर आवै, मोहे नेणा आण वतावे ॥ नही कागद जी मुझकूं पूत्र पठावे, मेरा जीव वहोत दुख पावे ॥ (दूहा–साखी) झुरती निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती रुषभसें, जो देत विधाता पांख॥मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे॥ मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे लडाई ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढकर आई ॥ (दूहा–साखी) बारा वरस लडते भये, इंद्र दिये समझाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, भये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा जी रुषभ जगत प्रतिपाला, में रटुं रुषभकी माला ॥(दूहा–साखी) कोइ परवतकी छदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै वहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें॥ मे० ७॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुषभका हेरा ॥ (दूहा–साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥ राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भरतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यूं करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा—साखी) भरत विविध तर भांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ आय ॥ प्रभू पधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए॥ चैतका महीना जी हय गय रथ सव त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ (दोहा—साखी) इंद्रध्वज आगे चले, भामंमल हे लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, डुंडुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी, मरुदेवा मन हरखै, जव रुषभप्रभू मुख निरखै॥ नैशपट उघरूया जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा—साखी) गज ऊपर मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी हुई, एसें रु-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रुषभ चरण लई लाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ (दूहा—साखी) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका वारे मासा ॥

(मोह लियो महाराज कूवरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रसेन घर वटत वधाई सव मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी—मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन बीच पीया इंदर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन छायो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढ़ी मोकूं छिटकाइ दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही लागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, केसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी झारी गले फासी-मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग झीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या न्हासी-मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढ़गये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो कामण, लगी तुमें प्यारी॥ पीया मैं चरणनकी दासी-मोह लि०५॥ पोश पीया छलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं छोडूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर झारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फ़ेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी-मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी झंझ वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मुझकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण भांजै, नहीं वझन कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजै ॥ पिया विन करुं मैं गति काशी-मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, मैं अवला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग मैं खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥ कंत मैं दरशनकी प्यासी-मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करै, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद परै ॥ प्रीत जिन नव भवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोरी ॥ नेम विन हो रही उदासी-मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूं चलकै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज दुलारी गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद्र चंद्र सेवित पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी–मो० १० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजे कंत धुरी, नदी रैण सुख चैन शखोरी चल रही प्रेमछुरी ॥ पाप कोइ पूरब उदे आया, छोड चले घनस्याम आज मैं दरशण सुख पाया ॥ तजी मैं सब घरकी फासी–मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम चरण भेव्या, घर करणी भव तिरणी होकर धंद सभी मेव्या ॥ प्रीत तुम अजर अमर राखी, रूद्धसार आधार तुमारो प्रेम शिवा शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी–मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजितोत्तम भक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज सुंदर सद्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकश्वरं ॥ अति सुवर्ण सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदि भक्तिर्भविनां भवेभवे, भवेदभीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदा दम समुद्भवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्माभितप्तात् भवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो भवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धये जिनराज शीतलः ॥ ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्त्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्त्तिः, जयतु गत भवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कत पदाब्जेयस्य भृंगीव पद्मा ॥ अविकृतमति कायोत्सर्ग मुद्रान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि बिभ्रत् सत्फणानां सहस्त्रं, बहुल विमल भास्वद्भूषणोभासि गात्रः ॥ गुरुतर वर भक्त्या सक्त चित्ताङ्गभाजां, भवतु शिव समृद्ध्यै चाश्वसे निर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक भंकापहर्त्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु भुजग लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेंद्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्याश्र्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै, रधाधस्या नधा गुणाः ॥ स्मर्यंते येन सस्मार्यो, भवेत् प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यतामहयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन, येन कल्पद्रुमा अपि ॥ भवेदभ्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृतागचः ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाभ प्रदायकः ॥ कल्याणकारको भूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥ यक्षेश पार्श्वं शित पाद पार्श्वं ॥ नुवामी पार्श्वं भवभेद पार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसी सून सम प्रभावा, सम प्रभावा भवदीय मूर्त्तिः ॥ विभाति वामां प्रभव त्रिलोके, भव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥ तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता भवेदेक

पदे परापा, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष नूत्रर्षित दान वारि, यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गन्युत्तम दानवारी, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदेवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि इरस्त्वमे सुज्ञान सुज्ञानविबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णनूयः, कल्या कल्याण रुदं गजाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिर मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्माजिधै रुझित नूघनास्ते, विसारि लोकेः विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोद्दाम धाम न्वितं, पादाप्जं परजाग नृत् त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दद कर्म विपक्ष पक्ष दलने जव्या जवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्ति मानु मखिलंतीर्वा जवाम्नोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंदः ॥ गौमोग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव ल्यां पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे नूमौ नागलोके प्रशिद्धं॥ श्री पा० ॥ २ ॥ जित्वा जेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंजोजार्क सर्वदा सुप्रसन्नं॥ श्रीपार्श्वे० ४॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्जाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनवना घननाद विजाजितं ॥ जजत जक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं १॥ विविध वर्ण विजूषित विग्रहाः, विदित उर्द्दम दर्पक निग्रहाः॥

वसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रनवंतु शिवंकरा ॥२॥ रुचिरवर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रनिवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल नव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-वरानन पद्म गतोन्मुदा, नवतु वाग्जिनलान शुनार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांनोनिधेः, सद्भा-वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भुत प्रतिबिंब तस्तु-सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो नव्याव्रजंतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि डुष्टजंतुनिवहै र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो, सःश्रीपार्श्वविनुर्ध्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-नंकेपांनवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणाभुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-वितां, धृत्वानिर्मलनावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लन्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीऋषनस्ततोजितजिनः, श्रीशंनवस्तीर्थकृत् ॥ सुश्रीमानभिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रनः ॥ पृथ्वीकुक्षिनवसुपार्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रनः ॥ सर्वज्ञः सुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्रीशीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रनुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांतिःकुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हंतोनमिनेमिशुद्ध सुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रनुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, र्निःशेषो-त्तमनव्यजंतुहृदयांनोजप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवंद्यविशदश्लो

कमजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ १ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिररत्नप्रभा, भास्वत्पादनखें
प्रवचनांभोधींऽप्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठ
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्य
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्म्मःसूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्चया
प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजि
धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोच
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशत
त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभ
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेद
लेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाण
विनयःप्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावना
रगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता, जंबुशाल्मलिचैत्यशाखिषुतथावक्षाररूप्
दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंडलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्त
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भावतरोजयत्यर्हतांजन्माभि
षेकोत्सवे, योजातः परिनिष्क्रमेवचभवो यःकेवलज्ञानभाक् ॥ यःकै
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचोषधिऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगतापंचये
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि
बलिनोयेबुद्धीऋद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥
देव्यःश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृका
श्चजनकायक्षाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपानिधिसुरा दिक्कन्यका
श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमंगलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिस-
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृण्वंतिपठंतितैश्चमनुजै र्धर्मार्थकामा
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति
मंगलाष्टकं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥
न श्रंगं नसंगं नइछा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥
नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नज्नोगं नव्याधि नेशोकं ॥
नक्रोधं नमानं नमाया नलोज्नं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ
नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नचिंता, नक्षुद्र
नज्नीतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नज्नृत्यं नदेवो नमर्त्यां, चि० ४॥
त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विद्धंस कर्म्मारिजालं
॥ नपुण्यं नपापं नअक्षानमाणं, चि० ॥ ५ ॥ नशाब्दं नवृद्धं
नविद्धि नमूढा, नछेद्यं नज्नेद्यं नमूर्तिर्नमीश॥नकृष्णं नशुक्लं नमोहं
नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्रव्यं नक्षेत्र
नदृष्टो नज्नव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआयो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णं नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो
ज्निज्निसं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनि
धिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेज्नूतगतागते सुख दुख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवं-
श हर्ष हृदयं श्रीमानज्नूदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्ठति चिरंपापं, छिद्र हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाव विनाशाय, वृंदणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति२, जिनेभक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु२, सदामेस्तु भवे२ ॥ ५ ॥ नहित्राता२, नहित्राता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नभूतो नभविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभं ॥ नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्म्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा ह्यर्हतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हतः, शिद्धा शरण मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्म शरण मर्हतां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिसलातणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान वडवीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछे गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मारग आराधियें, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरे, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुन्न करणी अनुमोदियै, न्ना व न्नलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु जाण ॥ ७ ॥ शुन्नगति आराधनतणा, ए छै दश अधिकार ॥ चि त्त आणीने आदरो, जिम पामो न्नव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह न्नव पर न्नवना, आलोइये अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु उलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तडुन्नय करी सूधा, न्नणिये वही उपधान रे ॥ प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव प र न्नव वलिय न्नवोन्नव, मिछाडुक्कम तेहरे ॥ प्रा० समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अन्निलाप ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥ प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा हमीने धर्मे करि थिरता, न्नगति प्रन्नावना करिये रे ॥ प्रा० स० ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे वको जे विणसाड्यो, विणसंतो उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ- त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ न्नव प०, मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ श्रावकने धर्मे सामायक, पो सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र म्होल्युं

जेह ॥ आन्नव०, मिच्छा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे भेदे तप नवि
कीधो, छते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि
फोरविउं नगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण
विविध विराध्या जेह ॥ आन्नव०, मिच्छामि० ॥ प्रा० चा० १३
वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर
चन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल
पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ क
करसण आरंन्न, खेत्र जे खेडीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१
घर आरंन्न अनेक, टांका नोयरां, मेडी माल चिणाविया ए।
लींपण गूंपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए।
२ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अप्पकाय, छोती धोती कर दु
हव्या ए ॥ नाठीगर कुंन्नार, लोह सोवनगरा, नाडनूंजा लिहालागरा
ए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ
णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधियाए ॥ ४ ॥ वाडी
वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंहक
पापडि शाक, सेक्या सूकव्या, छेद्या छूंद्या आथिया ए ॥ ५ ॥ अल
शीने एरंड, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू
मांहि, पीली सेलडी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-
द्री जीव, हण्या हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आन्नव
परन्नव जेह, वलिय न्नवोन्नव, ते मुज मिच्छामिछुक्कडं ए ॥ ७ ॥
क्रमी सरमिया कीडा, गाडर गंडोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥
वाला जलो चूडेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥
८ ॥ इम बेइंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मि० ॥ उद्देही जूं
मांकड मंकोडा, चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहिया
, कानखजुरडा, गींगोडा धनेरीयां ए ॥ इम तेइंद्री जीव,

जे मैं दूहव्या, ते मुझ मिच्छा० ॥ १० ॥ माखी मच्छर डांस, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकण विछु तीड, भमरा भमरीय, कौंता बग खडमांकडी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे मैं दूहव्या, ते मुझ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या, वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे मैं दू०, ते मुझ० ॥ १३ ॥ (ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल) क्रोध लोभ भय हासथी जी, बोल्या वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिच्छामि दुक्कड आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भवभव मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी भोजन जे कर्यां जी, कीधा भक्ष अभक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्यां परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई वीसारीया जी, वलि भांग्या पच्चक्खाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलडीनी देशी ॥) पंच महाव्रत आदरो, साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया संभारीये, सा० ॥ हीयडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ की जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमाविये, सा० ॥ जे ह नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनः सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज ध नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अ कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथु तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७ निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूडा न दीजै आल तो ॥ रत अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि विध२ वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर- णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कर्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वसे ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घडया घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भव२ मेली मूंकीया ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जन- मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

परनव जे करयां ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसिरावियें ए, आणो हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुःकृत निंदा इम करी ए, पाप कस्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए बहो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल वही ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्या डुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर जिन चैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए सातें क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पडिक्कमणा सुपरें कस्या, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवज्झायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ नाव नलो मन आणीयै, चित्त आणी ठाम ॥ समता नावे नावियें, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख डुख कारण जीवनें, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नोगवियें सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणूं, ऊखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ नावना नली परें नावियें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरें ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पच्चक्खी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी गंमी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आहार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीन रंक ॥ डुलहो ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिनइ खंधो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या नवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यै करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारे महा मंत्र नवकार, मनथी नवि मूंको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अवतार॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह नव ने परनव सुख संपति दातार॥ ५ ॥ जुड नील नीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या छे सुर जोग, इक नवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली मंत्र फळ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर नाख्यो, आराधनकेरो विधि जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली नवनय दूरे नांख्यो, जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ (ढाल ८ मी ॥ नमो नवि नावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनी तले तुमे अवतस्या ए, करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूफण आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं हुं एहथी उजग्यो ए, गेरुव देवदयाल ॥ ज० ४ ॥ आज मनोरथ मुफ फळ्या ए, नाठा डुःख दंदोल तो, तूठे जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ नव२ विनय तुम्हारुो ए, नाव नगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ (कलश) इय

रण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिणवर चरण थुणतां, अधिक मन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्र नसूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्य वा चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तस शिष्य वाचक विनय वि- जयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे, रही रानेर चोमास ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि लास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिझाय लिख्यते ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिभद्दो, वरय रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिभ द्दोअ ॥ भद्दोअ दसन्नभद्दो, पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबूपहू वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि- लाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण- गणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी ॥ जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी

॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणी कन्हट्ठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलभद्दस्स ॥ १२॥ इच्चाई महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिच्छंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ छव्विहआवस्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपथदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसुपोसहवयं, दाणंशीलं तवोअभावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणिणं, गुरूथुअसाहम्मिआणवच्छलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईछज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणंपभावणा तित्थे ॥ सड्ढाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमें वांदूं लाखज च्यार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवर भुवनतणो

धिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पचास ऊंचा बहोत्तर धार ॥ ५॥
कसो असो बिंब परिमाण, सज्ञा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम
ावन कोम संज्ञाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे ऊपर
ाठ विसाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहो-
ार लाख, जुवनपतीमां देवल जाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब
माण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि,
ाठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्छा-
ोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते
बेंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर
दूं तेह ॥ ऋषभ चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-
ोण ॥ १०॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥
विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥
शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-
काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर
ाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन
ीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-
ार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,
ाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते
मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे जव-
ायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ जूर्जुवःस्वस्त्रयी-
शान, मार्हंत्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यजावैः, पुनतःस्त्रिज-
गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-
मंपृथवीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, ऋषजस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लान केवलादर्शी, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्या तुल्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवान भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥ भगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासःपुष्णंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-भोगभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-र्मुर्त्तिसितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः पातुवोजिन ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनोवाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथंमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मातमःशांत्यै, शांतिनाथजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथोभगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-भिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुभ गवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥ सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्म्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमभि ष्टुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

ग़नावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुठंतोनमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणं ॥
रिष्टवाइवनमेः, पांतुपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यडुवंशसमुद्रेंडः,
र्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥
२४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्म्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो
त्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा
द्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृता
राधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र, श्रीवीरजिनने
योः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्री
ान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥
ोरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वक
निचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वी
स्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रंदिशः ॥
२९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्य
मानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां
भावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्त-
पालग, निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,
संतिसामि पायाणं ॥ ञौंस्वाहा मंतेणं, सव्वाशिवदुरिअहरणाणं
॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सौंह्रींनमो
सव्वोसहि, पत्ताणंचदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-
देवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्खंतुजि-
णभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ व-
ज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-
धारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्छुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउ, वंनोमाणुउसुरकुमारो ॥७॥ बम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधव्वतहयजरिकंदो ॥ कुबेरवरुणोनिउडी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआउरिआरि कालीमहाकाली ॥ अच्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवच्छा ॥९॥ चंडाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निबाणिअच्चुआधरणी. ॥ वइरुट्टछुत्तगंधारी, अंबपउमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरक्खणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरक्खंसयाअम्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिहिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मज्झविकरेउरक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिनाहसम्मदिट्ठी, रक्खंसरइतिकालंजो ॥ सबोवद्दवरहिओ, सलहइसुहसंपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुरकलवई विजयें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, नवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रज्नु जनमिया, वली योवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारना, संजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे; दीक्षा प्रज्नु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नांण ॥ वृषज्न लंडने शोनता, सर्व नावना जाण॥६॥ चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण नुवनमां जोयतां, नहि कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रज्नुजीनो

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं ताहरो, नहीं मेलूं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुझनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुझ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमें अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वरया रंगे, नमो० ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योतिनेंपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीनें जे चढे, तेने भव पार

ऊतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रस सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रण्य भुवन ना नायक छै, जस चोसठ इंदर पायक छै, नाण दरशण जेहना क्षायक छै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छै, जश धोरी लंछन पाया छै, पुंडरीगणी नगरीनो राया छै ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि विराजै छै, जश चोत्रीश अतिशय छाजै छै, गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजे छै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छै, रूप देखी भविजन मोहे छै ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो छूं, पण भरतमां दूरै वसिओ छूं, महा मोहराय कर फसियो छूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छै, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छै, तब कांइक मुझथी डरियो छै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहै पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखमियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दामो रे, लागे मुंनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा ो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर वारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो ाहो लीधो, वाला० देहमी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फू- ले वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखालीनें ेशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे ोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु- पति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ ोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद्र सरीखा ए ीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल ाले, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, ा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ- ंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां, वा० ाइ अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहे आज म्हारे पोते, श्री ादीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंमली, तेहां दीपे उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ करया, जात्राफल लहिये, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिये ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाभिराजांगजं वंदेरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेअजितंजिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतंस्यंभने, श्रीपार्श्वंप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवनेग्रैवेयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदराद्रिवसतो स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे कुंडले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्मह्रदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रविभवे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहृति त्रिपथगा ज्ञानांबुधौवृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्व वकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चंद्ररविग्रहाश्चधरणं ब्रह्मेंद्रशांत्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो सुखगण श्चक्रेश्वरीभारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुभद्रंकराः ॥ इति श्रीपंचतीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

(नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए देशी) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चल्या परदेश तपे मोरी गातियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कव मिले, नीर विछोह्या मीन के ते जुं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारूं मन भमे ॥ जो होवे सज्जन दूर तोही पासे वसे, किहां सायर किहा चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावे देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहने, साले रे साल समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड जोवनवय अति दहे, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहे ॥

झुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मि ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाल्यो ते नवि टलै, चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू ते नवि करे, जे नाह्या गंगा नीर ते छीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करे, नवजोवन तजी नेम वैरागी थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनें ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती मनरली, रूपविजय प्रभु नेम जेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिझाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा छोरूने दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंकी झूरसे रे, सहीसे इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊंचा चिणाव्या मंदिर मालि या रे, दे दे धरतीमें ऊंडी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं छडी चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र वर्त्ती हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे॥ झूरी२ने उवेही आयुष्य रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करता मुनि नवला तेह विहार रे ॥ भारंडपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम- ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पाले रूडी रीतसुं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जश लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि जाणपणानुं अभिमान रे, रूपी चोथमल सूत्र

वेखीनि रे, जोरू करी जालोर मऊार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू रुषन्न जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, न्नरते न्नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडूं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैन्नारकगिरि ऊपरे, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रुषन्न कहे जिन समरतां, पोहचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

छु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अन्निनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रन्नु, न्नवछुःख निकंदन ॥ १ ॥ छु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने न्नवि तजिये ॥ मुऊ परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव न्नजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहियें ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥ ५ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रन्नु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें, हुआ बहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडे वेठा वीरजिन, न्नाखे न्नविजन आगे ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

ोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें, पांचम रजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी ाह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, ाशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेद ॥ पूर्व कोडी वरसा ागे, अज्ञाने करे तेद ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥६॥ ंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच ाशनी, पंचमी करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, ाउसग्ग लोगस्स केरो, उजमणूं करो नावशुं ए, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति पंचमी चैत्य- ंदन सपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण ादि आठमें, संनव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या रुषनजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कस्या दूर ॥ अनिनंदन चोथा प्रनू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव- ावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ ेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण ादिनी आठमें, नमि जन्म्या जगनाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें, ासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥७

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रनुकेवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज यज्ञ ॥ इंद्रनुति आदे मिल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशते चतु गुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक शंसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलाशी ॥ ऋषन्न अजित सुमती नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिव वाश पास, नवनवना तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देहसें कल्याण ॥ वरश इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखावियें, एकादश पाठ ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी ॥ मसी कागल काठ ॥८॥ अग्यार अव्रत वांरुवा ए, वहो पमिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिब देव, अरिहंत सकलनी नाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर नापित वाणी, जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार वखते पण कहवाय ठे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतर प्रनु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ १ ॥ चत्रीस वन्नति

चउसठि मलिया, इगसय सठि उक्किठा जी॥ चउ अम अम मिली मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चउ च्यार जघन्य दश जंबू, धायई पुस्कर मझारे जो ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे, प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरव युत्त रचिया, गणधर लब्धि विकसिया जी ॥ अपज्झवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश ऋद्धो जी ॥ श्रीशुभ वीर कहे शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्रणमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंद विमानें शाश्वत जिनवर जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजे द्विविध धर्म भगवंत, जेम विमला कमला विउल नयण विकसंत ॥ आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजे पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्केसरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोडीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय, इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामव-

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखो ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरिये परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगच्छ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिषभदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी। आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंता जिनवर, फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य२ वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजे, समवसरण जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवभव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपथी, कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुजसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणा, एकशो ने पचास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये भव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मया, हृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनपनप्रभा धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्धमानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसांपयोधरभर, प्रस्पर्धिभिःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषेकःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगविशालं ॥ चित्रंबव्हर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतंव्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुभूति र्दिशतुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतितउ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुर विंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजा ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदु गोखीर तुसारवन्ना सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहा यसा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम चंद वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंश, कुलमांहे जिम ऋषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमा वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख [illegible], पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्री सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयास सेवो बहु वृद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांती, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथै बोलै, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषभ कहै सुणो भर तराय, छहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै, भवत्रीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख नें चक्केसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुषभदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्रे सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीसा विराजै रत्नना दीवा दीवे जी ॥ कुंकुमवर्णी गहुंली विराजै मोतीना अक्षत सार जी, त्यां बेठा सीमंधरस्वामी बोले मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन भरी रे कचोली कस्तूरी बराश जी, पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचिंदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहिं गुरूमज्झ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइअसुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिउकए, समणोइवसावऊहवइजहा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधें पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना दश वचनना बारे कायाना एवं बत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं॥

॥ अथ पोसह पारवानो गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवडिंसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइभयवं, दढव्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधें पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हु होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह जगभाव विअक्खण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विह त लब्भई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, भरुअच्छहि मुणिसुव्वय ॥ महुरिपास

डुइ डुरिय खंरूण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लरका ठपन्न अठ कोमीउ, वत्तीसय वासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लरक अरूवन्ना ॥ ठत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंवाइ पणमा-मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा न्नणिउ ॥ १ ॥ काले विणए वहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुन्नय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वि त्ति गिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायव्वो ॥४॥ वारसविहंमिवि तवे, अप्निंतर वाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वा सो त वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संलेवणं रसच्चाउ काय किलेसो संली ण याय, वझो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्छित्तं वि णउ, वेयावच्चं तहेव सझाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अप्निंतर उ त वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ वल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त मा उत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येपामन्निपेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षन्नरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाषितं, दिनागमे नौमिबुधैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति

॥ अथ सुयदेवतानी स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं० सुअ देवया जगवई, णाणावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहेरी जग्या पूंजी कटासण ऊपर बेशी मुंहपत्ती मावा हाथमां मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नत्थऊससिएणं कहे, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउस्सग्ग करे (पारी) प्रगट लोगस्स कहे, खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुंहपत्ती पडिलेहुं इच्छं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणाना पचास बोल कही मुंहपत्ती पडिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक संदिस्साउं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं इच्छं । एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी इच्छाकार जगवन् पसाय करी सामायकदंडक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख वडेल करेमिजंते कहे, पठी खमासमण देई इच्छा० बेसणो संदिसाउं । खमा० इच्छा० बेसणोठाउं, खमा० इच्छा० सिज्झाय, संदिस्साउं खमा० इच्छा० सिज्झाय करुं इच्छं, एम कही त्रण नवकार गणावा । पठी बे घडी सज्झाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पमिकम्याथी (यावत्) लोगस्स सूधी कही खमा० इछा० मुंहपत्ती पमिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पमिलेही खमासमण देई इछा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इछा० सामायकपारचुं तहत्ती कही पढी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पढी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पारवानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पढी पाणी वावर्युं होय तो मुहपत्ती पमिलेहवी अने आहार वावर्यो होय तो वांदणा बे देवा, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पढी यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं, पढी खमासमण देई इछा० कही वमेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन करवुं, पढी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही ऊन्ना थईने अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० कहीनें प्रथम थुई कहवी, पढी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पढी पुक्खरवरदी० कही सुअस्सन्नगवओ करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पढी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थ० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पढी वेसीनें नमोत्थुणं कहै, पढी चार खमासमण देवापूर्वक भगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः प्रते थोभवंदन करीयै. पढी इछाकारेण० देवसिक प्रतिक्रमणठाउं एम कही जमणोहाथ चरवला अथवा कटा-

सणा ऊपर आपीने इछं सवस्सवि देवसिय० कहेवुं, पछी ऊन्ना थ
करेमिज्ञंते इछामिठामिकाउसग्गं जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही
अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो, आठ गाथा न आव
तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो. ते काउसग्ग पारीनें लोगस्स
कहेवुं, पछी वेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा
बे देवा, पछी ऊन्ना थईने इछाकारेण० देवसियं आलोउं इछं आलो
एमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा. पछी अढार पाप
स्थानक आलोइये, सवस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीनें एक नव
कार गणी करेमिज्ञंते इछामिठामिपडिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवुं
पछी वांदणा बे देवा, पछी अप्नुठिउमिअप्निंतर देवसिअं खामीनें
वांदणा बे देवा, पछी ऊन्ना थई आयरियउवज्झाए कहीने करेमि
ज्ञंते० इछामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे
लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स
कही सवलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स
अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने पुक्खरवरदी० सुअस्सज्ञ
गवउ करेमिकाउसग्गं० वंदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार
नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं० कही सुय
देवयाए करेमिकाउसग्गं अनत्थु० कही एक नवकारनो काउसग्ग
करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहेली थुई कहवी
अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पछी खेत्रदेवतानी
बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पछी १ नवका
प्रगट गुणी. बेसीने छठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीनें बे
वांदणा दीजे, पछी सामायक चउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमणुं काउ
सग्ग अने पच्चक्खाण करुंछुंजी एम ए छए आवश्यक संन्नारवा. पछी
इछामो अणुसट्ठि नमोखमासमणाणं० कही नमोऽर्हत् कही पुरुष

नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण थुई कहे पछी नमोत्थुणं कही स्तवन कहवुं, पछी वरकनक कही भगवान आदे वांदवा, पछे जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अट्ठाइज्जेसु कहेवुं, पछी देवसिअपायछित्तनो काउसग्ग च्यार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो करवो, काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही वेसीने खमासमण देई इच्छा० सिज्झायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई इच्छा० सिज्झायकरूं एम सिज्झायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिज्झाय कहवी, पछी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःक्खक्खयकम्मक्खयनो काउसग्ग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वडेरे अथवा पोत पारीने नमोऽर्हत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे, पछी इरियावही० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी चउक्कसाय० नमोत्थुणं० कही जावंति वे कहीने उवसग्गहरं० जयवीयराय कही मुंहपत्ती पडिलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० सामायकपारुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० सामायकपारयुं तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवुं, पछी थापेली थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पछी इच्छामि० इच्छाका० कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहवो, पछी खमासमण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी कहेवुं, प-

च्यार खमासमणपूर्वक भगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधु
प्रत्येके वांदवा, पछी खमासमण बे देई सज्झायनो आदेश मांगी ए
नवकार भणीने भरहेसरनी सज्झाय कहीने फरी १ नवकार ग
वो, पछी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहवो, पछी इच्छाका० राईपडि
क्कमणोठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर थापीने पछी इ
सव्वस्सविराईय उच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिभंते कह
इच्छामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा
च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अ
रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो,
पछी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गा
थानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सि
द्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा
बे देवा तिहांथी लेने अब्भुट्ठिओमिखामी वांदणा बे दीजे तिहां सूधी
देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे
राईयं कहेवुं, पछी आयरियउवज्झाए० करेमिभंते० इच्छामिठामि०
तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवडे तो च्यार लोगस्स
अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स
कही छठ्ठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा, पछी स-
कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चक्खाण करवुं, पछी इच्छ
कारेण संदिस्सह भगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कम
काउसग्ग पच्चक्खाण करयुं छेजी, एम छ आवश्यक संभारवा, प
पच्चक्खाण करवुं होयतो करवुं छेजी अने धारवुं होयतो धारवुं छेजी
एम कहवुं, पछी इच्छामोअणुसट्ठिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्
कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक
नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही ज्ञगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवीराय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमासणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउसग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधियें सामायक पारवुं इति ॥

॥ अथ पख्की प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हत्नुं कहेवुं अने थोयो स्नातस्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह ज्ञगवान् देवसियं आलोइयंपडिक्कंता इच्छा० पख्कियमुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेहीये, पछी वांदणा बे दीजे, पछी इच्छाकारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्भुट्ठिओहं अप्भिंतर पख्कियंखामेउं इच्छं खामेमिपख्कियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअपत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पख्किअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपख्किउअइयारोकउ कही इच्छा० पख्की अतीचार आलोउं. एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकितमूलबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्षदिवसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिडुक्कडं ॥ सवस्सविपख्किअ डुच्चिंतिअ डुप्भासिय डुच्चिठिय इच्छाकारेण संदिस्सह ज्ञगवन् तस्स मिच्छामिडुक्कडं ॥ इच्छाकारिज्ञगवन् पसाउ करी पख्की तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पचाश येश्रांबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठबेआसणा बेदजार सज्झाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश कार्यो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीये पछी वांदणा वे दीजै, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अभिंन्तर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअपत्तियं० पछी वांदणा वे दीजे पछी देवसियआलोइयपडिक्कंता इच्छाका० जगवन् पक्खियंपडिक्कमुं समपडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपडिक्कमिउं जोमेपक्खिओ० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० पक्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहै, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा बैसी जमणोढींचण ऊभो राखी एक नवकार गणी करेमिजंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिजंते इच्छामिठामिकाउसग्ग जोमेपक्खिओ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थू० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मलयरा सूधी कहवा अथवा अडतालीस नवकारनो काउसग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे दीजै, पछी इच्छाका० समाप्तिखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अभिंतर० पक्खिअंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमासमण देई इच्छाका० कही पक्खीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पछी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कह्या पछी बे वांदणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व दैवसीनी पेठे जाणवुं, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्झायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोटी

शांति कहेवी ॥ इति पक्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पक्खीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छेहणं बे उपवास च्यार आंबिल छनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहजारसझाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पक्खीना बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एकशो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अट्ठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआसणा अने छहजार सिझाय ए रीते कहवुं अने पक्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिक्कमवी. थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे बेसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढी जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो. रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पच्चरकाण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमिये, पछी जगचिंतामणीनुं चैत्य वंदन जयवीयराय सूधी करवुं पछी मन्हजिणाणंनी सिझाय कहवी, मुहपत्ती पमिलेही इच्छामि० इच्छाका० पच्चरकाणपारूं यथाशक्ति० इच्छामि० इच्छाका० पच्चरकाणपारयुं तहत्ति एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी पच्चरकाण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखिये छिये ॥ उग्गए सूरे नमोकारसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चरकाणकरयुं चउविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पच्चरकाण फासियं पालियं सोहियं तीरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन आराहियं तस्समिच्छामिडुक्कमं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुक्खलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंमरीगणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह ॥ (आंकणी)। मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ गाम कुगाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वासियो रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे गे माहाराज ॥ मुझसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो ने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे भयभंजण भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनुं स्तवन ॥

(॥ फतमल पाणीभाने जाय ए देशी ॥) ॥ प्रणमी शारदमाय, शासन वीर सुहकरू जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आदरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदनतणो जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभ ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वरया मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित छोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चरकाण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभवरूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी सुख लीजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववंदन त्रिण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊजमणुं शुभ चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति जल्ल धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुन्नक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, न्नक्ति पामें सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ न्नूपनो रे, सिद्धारथ न्नगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, न्नाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ न्नवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान न्नक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतमतणा रे, मुख्यपणे तिहां होय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ न्न० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने नद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज नवज्झाय रे ॥ न्न० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ न्न० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासोरे ॥ न्न० ५ ॥ मइ सुअ न्नहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चन मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ न्न० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ न्न० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, न्नणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ न्न० ८ ॥ न्नणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लन्न चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ न्न० ९ ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ न्न० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्वीपना भरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें भणवा मूंकियो रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ मुर्भग पण परणे नही रें, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक भूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्मदेशना सांभले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परभवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे दुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख देत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, भाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुझ अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरतो महिनानी देशीमां)

धातकीखंमना भरतमां, खेटक नयर सुगाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव छै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामण पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥२ बालस्वन्नावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंमित मारे जाहरे मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, ज्ञणवानु नही काम ॥ पांम्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नहि रुचे, जेम करहाने द्राख ॥ ५ ॥ पामा परे मोहोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुऊ करणी जोय ॥ ६ ॥ ञटकी ज्ञाखे ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुऊ बेटी ऊपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ए ॥ मुर्छागत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ ऊज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार ऊपवास ॥ १२ ॥ पूर्व ऊत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि ऊदार ॥१३॥ दीवो पंच दीवटतणो, साथियो मंगल गेह। पोसहमान करी सके, तेण विधि पारणा एह ॥ १४ ॥ अथवा सौज्ञाग्यपंचमी, ऊज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये, ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वर तथा ॥ मसी कागल रे, कांबी खमिया लेखणी॥

कवली ऊावली रे, चंडुआ ऊरमा पुंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रा-
साद प्रतिमा तास जूपण, केसर चंदन ऊावली ॥ वासकूंपी वाला
कूंची, अंगलूहणा गावकी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें
धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती सादमी वछल, नोकरवाली थापना ॥
॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप
संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूवे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग
रे ॥ रोग ऊपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मु
निराज जासे जंबुद्दीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु
तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय
बंधव, पुण्य योगें गुरु मह्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म
धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी
लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,
अशुज उदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी जणी पोढ्यो यदा
॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥
ऊंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-
ग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतको ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरयो
पापतणो घको ॥६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुऊ लागुं पाप रे ॥
श्रुत अज्यासे रे, तो एवको संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, जोयण
खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥
(त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज
ध्याने आयु पूरी, नूप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम
पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो
सही ॥८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीठो रे,
गुरु प्रणमी कहे शुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी
वको ॥ गुण अवगुण रे, जासन जे जग परवको ॥ ए ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवशे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावशे॥ नृप पभणे पुत्रने प्रज्ञु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नृपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नृप ॥ त० ॥ भोग कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नृपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥१०॥ रमणी विजय शुभापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती परनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धरयुं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, नावे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

(ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंरूक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ माहनिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधरयो, हुं० ॥ चंरूकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांह्मणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषभदत्त वली विप्ररे, हुं० ॥ ब्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि ओषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदरयो में आसा धरी, हुं० ॥ मुज ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इण वीर लायक विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोडर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे गाम धरमना साढापचवीश देश जो, दीपे रे त्यां देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता ति आवी वीर समोसस्या रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे सा जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकस्या रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्य रसञर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीयवन ह रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु र्विध आवे कोमाकोम जो, त्रिगमुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण वेठ आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां० सुणतां दुंदुभि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम सूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवे जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पमे धोषे जर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी वेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिजूवननायक लायक तव जगवंत जो, आणी रंजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां कां पमो, उलखो धर्मनां गण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणिउ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ परिहारनो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामसे पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

ज्ञांखियो वीरे आगमतणो, ज्ञविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे ज्ञवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञण्यो रंगे स्तवन ए आगमतणो, जे ज्ञविक ज्ञावे सुणे गावै कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरया ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरया ॥ १ ॥ जगपति घीगुण फूल अमूल, ज्ञक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज्ञ परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ·

निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रवती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्टी शुर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूपण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि यें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन क, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वम्बीज, शुन्न अनुबंधी यो री ॥ २ ॥ मुनि न्नाषै महान्नाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए ादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी व, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, नजवो तप शु गे री ॥ ४ ॥ सांन्नलि सद्गुरु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ प सेवी नजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर य, पाली पुन्यवसे री ॥ सांन्नल केशवराय, आगलि जेह थसे ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धदत्त वसे री ॥ प्रीतिमती प्रिया स, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित न्न स्वप्ने री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ ल निक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्न्न दोहद अनु व, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र क न्नएयो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परएयो री ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चस्काण धरे री ॥ अगियार न कोमी, नायक पुण्य न्नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, ये अधिकार कहे री ॥ सांन्नलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, न्नक्तें तप उच्चरे री ॥ एक

वशी दिन आठ, पखेरो पोसो घरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढालत्री जी) पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनभ क्ते देवीशक्तें, थंभाणा ते बापडा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धरया रांकडा जी ॥२॥ पोसहपारी देव जुहारी, दयावंत लेइ भेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूंकावी, शेठे की धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरम' आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा करे जी ॥ दरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ॥ ५ ॥ पूत्रनें घरनो भार भलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउ नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय छठ सो अठ्म करे जी ॥ वीजा तप पिण वहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७॥ एक अधम सुर मिथ्याद्दष्टि, देवता सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८॥ कर्में नडियो पापे जडियो, सुर कहे जाउ औषधभणी जी॥ साधु न जाये रोष भराये, पादु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रव नेम कहे श्यामनें जी ॥ १०॥ (ढाल चोथी) कान पयंपै नेमने ए, धन्य२ यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुझ मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥ ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गह्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण हुं न करी सकुं ए, दुष्ट कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजे सीझे काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांभली ए, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाईस जिनवर बारमो ए, आवी चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य पुरंदर रेवताचल मंडणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे राजनगरे संथुणयो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिउं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जडियुं पालणुं, रेसम दोरी घूघरी वागे छुमछुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रभुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, वीता बारे चक्री नहि हुवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुजनें दोहलो उपन्यो जे बेसुं गजअंबाडीयें, सिंहासण पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहरा तेजनां, ते दिन संभारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करः

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छे, तेहथी निश्चय जाणया जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें भोजाइयो कही देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगला, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० । ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूडा मेंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नव- निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला भणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोटोटे साज ॥ पसलो भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखमली लेशुं नीशाळीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोटोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मारा वेउं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, माहरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ डुर वलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भर्या रे, केहना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांमीने यावत् लोगस कही पछी उगरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अरधुं जय राय आभवमखंमा सूधी हाथ जोमी कहे, वली चैत्यवंदन कही नमोत्थुणं कही यावत् च्यार थोयो कहीये छीये तिहां सूधी वधू देवुं, पछी नमोत्थुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी व कहेवुं, पछी नमोत्थुणं तथा वे जावंती कही स्तवन कही अरधुं पवीअराय आभवमखंमा सूधी कही पछी चैत्यवंदन कही नमोत्थु कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन जिणाणंनी सझाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांझें देववांदवा सझाय न कहेवी॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० क ही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीऋषभजिन आराधनार्थं चैत्य वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करे ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर ऋषभदेव, सवठथी चविया ॥ वदि चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि वसे प्रभु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणदिन दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुभ ध्यान ॥ महा वदि ते रशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्थुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये छीये ॥ (॥ अथ थोय जोडो प्रारंभ ॥) ऋषभजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषभ लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु काया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि करुणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगरू सूत्र मकार, सिद्धाचले सीधा बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार जिन भेटे थावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी शासननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करे संभाल ॥ गिरुओ जस महिमा संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उगरुी अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ० ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत भगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग वे जेहनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुलमंडणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ रुषभदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषभजिन स्तवनं ॥ पछी जयवीअराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनो तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें मुनि थया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ ३ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्ग करके थुईनी गाथा कहै. इसी तरे सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ थोय प्रार ते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ ज्ञविक नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुझ पद लीनो, जेम जल हे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ अजित थोय ॥ ॥ अथ श्री शंज्ञवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री शंज्ञव ॥ फागुण सुदि आठ दिनें, शुदि चवदशी अज्ञिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमी तणी पूनम संजम ॥ कार्त्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल नि पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ज्ञानविमल प्रज्ञु प्रणमतां, सीझै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ अथथोयप्रारज्यते ॥ जिन शंज्ञव वारू, ‍वने अश्व धारू ॥ ज्ञवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ तरुपरी वारू, उसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहनु ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अज्ञि नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अज्ञिनंदनराय ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारसे अदिय दिरक, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति ज्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारज्यते ॥ ॥ अज्ञिनंदन वंदो, साम्यमाकंद कंदो ॥ नृप संवरनंदो, घर्षिताशेषफंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंछने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति
थोय ॥   ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥   श्रावण
सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं,
पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संज
म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या-
रश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,
नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥   ॥ अथ
थोय प्रारभ्यते ॥   सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे
॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापै ॥ अविचलपद आपे,
जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदहो नावें, जो प्रभुध्यान ध्यापे ॥
१ ॥ इति थोय ॥   ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥
नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठदिवसें ॥ काती
वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संज-
म ग्रहे, पद्मप्रभस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी
॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन
राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥   ॥ अथ थोय प्रारभ्य
ते ॥   पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ मुगति वधू म
नावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य
पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि पावे ॥१॥   अथ श्री
सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास॥
भादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसो जण्या,
तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस स
प्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविम
ल सूरि नितु लहै, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥   ॥ अथ थोय
प्रारभ्यते ॥   फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासें ॥ सुरनर जस दास, ह
दानो निवास ॥ गाय भवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रभ जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रभ जिन अ
ठमा, चंद्रप्रभ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी
त्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण
दिनो सातमें, केवल निराबाध ॥ भाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूर
पूरण ध्यान ॥ अष्ट महासिद्धि संपजे, नय कहै जिनअभिधान ॥
॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥ शुभ नरगति पामी, उद्यो
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रभ नाम स्वामी ॥ सु
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति अनुगामी, ते
पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥
गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुप्फदंत ॥ फागुण वदि न
वमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस
छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शु
दि नवमी भाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल
सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थो
य प्रारभ्यते ॥ सुविधि जिन भदंत, नाम वलि पुप्फ
दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म
दुरंत, लच्छि लीला वरंत ॥ भव जलधि तरंत, ते नमीजे
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥
प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छ
ठे, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम लिया,
तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ व
दि बीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन
राजथी, सीझे सघला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारभ्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जे
गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम छै निर
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु ऽःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥
॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी
चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठ, करत वहु आ
नंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह
अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु
ख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए भगवंत ॥१॥
इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सवि जिन अवतंस,
जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतजय
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया,
ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या क
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ ३ ॥
॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस
गुण अवदात, शीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्याव
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं
दन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शु
दि महा त्रीजें जणया, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या,
र निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल
॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो
जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोयं प्रारन्यते ॥ विमल२ न्नावे, वंदतां ड़ख जावे ॥ न निधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुघर लंठन कावे, न्नोगि न्नरस्वेद थावै॥ मनु विनति जणावें, स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥१ इति

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत। वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चनदमाए, कीधा इष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते॥अनंत जिन नमीजे, कर्मनी कोटि ठीजे॥ शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दीजै, एटखुं काज कीजै ॥ मुऊ मन अति रीऊै, स्वामिनुं कार्य सीऊ ॥ ॥ १॥

॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमासनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाहि ऊजली, लिये संजमन्नार ॥ पोषिपूनमें केवली, गुणना न्नंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांहे न्नीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिन्नुवन सुख कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ न्नाद्रवा वदि सातम दिने, सवठथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जणया, ऊखदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥ केवल ऊजल पोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवमा ए शोलमा श्री जिनराज॥जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सप्त भय ईति वारी ॥ सहस चउसठि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव भोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन हष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, ...झ्यो पण तुम्हे नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न ...वो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर ...हो एम समझे, पण छैरु दीघाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना ...थी नवि चालै, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति ...ची मनमांहे आएयो, सहज स्वभावें पण में जाएयो ॥ सा० ॥ ...हरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥ ...० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल... ॥ सा० ॥ ५ ॥ अखयभाव निधी तुम पाश, आपी दासनें ... आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

नाई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्यवंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सवठथी चविया ॥ वदि चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, लीये संजमजार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ पडिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल गण ॥ छठा चक्री जप करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन कुंथु दयाला, गग लंछन सुहाला ॥ जश गुण शुज्जमाला, कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति ज्ञवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला ॥ त्रिज्जुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जएया, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्ज्ल वारसें, केवलगुण वरियो ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीनें नमूं, नय कहे जोडी हाथ ॥१८॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥ अरजिन एं जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारुं ॥ अहनिश संज्ञारुं, ताहरो नाम धारुं ॥ व्रत जयजयकारुं, भ्रात संसार सारुं ॥ नवि दोष ते सारुं, आपणो आप तारुं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि वारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर नीलडा ए, जगजीशमा जिनराज ॥ अपपरणया अणनूपपद, ना जन्न तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन मल्ली मल्लिना, वान छे जेह नीला, ए अपरज लीला, सौ परें नाम लीला ॥ ज्जुवन तरि पीव्हा, स्वामि गो ते नमीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १७ ॥ इति मल्लि स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपराजितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारडी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी नेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उजला, तिहुयण केरे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरनायक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्रतस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुज अंतरजामी कामदाता अकामी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचैत्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अरूप अनंता सुख ॥ नय कहे श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःख ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नहीं विश्व छानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंभ छे जे रुपानो ॥ सवि त्रुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीनेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण सुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी आठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए, राजीमतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २२ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शंख नज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ हरि

संशय धारे, एहनी कोइ तारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचा
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंडे,
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण जाम, भ
वजलनिधिने तारे ॥क्रोधादिक मोटा, मच्छतणा भय वारे ॥ जिहां
जीवदयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीनें चित्त करीनें
चाख्यो ॥३॥ जिनशासन सानिध्य, कारी विघन विडारे ॥समकित
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो भ
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति॥
॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ
डीयां, दो घडीयां दो चार घडीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज मंदिरा
ण शिवादेवी जाया, तुमें वो आधार अमघडियां ॥ रहो० १ ॥ ना
द विवाह थाइ करी आए, क्युं जावत फिर रथ चढियां ॥ रहो०
२॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गोन दीए पशुपंखी छिडियां
॥ रहो० ३ ॥ गोर विराहं में धरी जानें, कहं भीनती चाले च
डियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीठा ते वरिस समोवड, न गमे
स्वदनमें सेजडियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी फिरपति जोवन
वाडी वन पर सेरडियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट भवांतर नेह निभाव
त, नवमें भव ते वीउडीया ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी
कहीने, राजुल रेवतगिर चडियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु कर जिन
हिर हाथे देवा, व्रत चाले चारित्र गेलडियां ॥ रहो० ९ ॥ आद
स्य जिनदास नेमजी, राजुल मीठी नेजडियां ॥ रहो० १० ज्ञान
विमल दुहे ईसनी निवहन, हरसत प्रेम मेरी आंखडीयां ॥ रहो०
[illegible] ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तवन ॥
[illegible]

रम, त्रिजुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसें, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमगासुर उपसर्गनो, टाल्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथद दिनें र, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख जरपूर ॥२३॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विमारे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर जाण, श्रीनिवासादि गण ॥ २ ॥ दशविधि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्त प्रकार, पच्चरकाणादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जया जिहा उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे मदा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयविमल विशाला, ज्ञान लक्ष्मी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंज ॥ ॥ थारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो ठेगलो मारूजी ॥ प्रजु पास जिनेसर जुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर जूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तूं अकथ अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ षट् दर्शन जासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद्वाद विशालें सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेद नही त-

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखियें, सा० ॥ आत
म ततकामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा
मी छो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ अपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा
नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा०
॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या
सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका
शी कवि जणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक
नाथ छै, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ छै ॥
सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिभुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ
नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें
पुदगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न
वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं देखू समीयो सुरवर नमीयो सहु
कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा०
७ ॥ इम तुम गुण थुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥
पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे
नंदा त्रिभुवन इंदा संथुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय
वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान
जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें, प्राणतथी चवि
या ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि
दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर
केवल साधे ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै उद्योत ॥
ज्ञानविमल गौतम लहे, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति
॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ लह्यो भवजल तीर, धर्म कोटी
हीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूलार सीर ॥ दुरित दहन नी
माण ॥ कप्पें सग कर पणसय घणु माणुं. सासय असास

मेरुथी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कल्पद्रु कीर ॥
॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला,
धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥
सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी,
द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न-
यम रस रंगाणी, सिद्ध सुखनी नीसाणी ॥ दुह पीलण घाणी,
आंजलो जाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपा
ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,
टालीने मोहजाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥
॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ थी हुं समव
सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता
जाया जी ॥ हरि लंछन कंचन सम काया, मुज मनमंदिर आया
जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समयें शासन जेहना, शीतल चं
दन छाया जी ॥ जे सेवंता जविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया
जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां
जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया
जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर बिरुद जिन
पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, डुसमन दूर गमाया
जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिता तूं सहा
या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥
वंदो० ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजे, वर्द्धमान जिनराया जी
॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, शुद्ध समकित गुणदाया जी
॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीयराय कहेवो ॥
॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल
मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय ठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणाणं) २ (ए आकणी) विहुंतेर लख्क सगकोमि ज्ञवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, लगस ६ थिंबह परिमाणं ॥ सही० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वख्कारा कंचन, यमक कुंम इह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगएयासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, ज्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुचक कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अम शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौबारा अवर त्रिबारा, रुचक कुंम नंदी गणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोकें, जिन पमिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ए ॥ त्रिज्जुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लख्क वसें व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सुणजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश कोमी, तेम अठावन्न लख्का ॥ उत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिबारे प्रतिमा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सज्जा तिहां साठ वधारो, एकशत अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ ऋषज्ञ चंद्रानन नें वर्द्धमान, वारिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमिमा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ज्ञावना ज्ञावे, समकितगुण दीपावे ॥ परित्त संसार करी शिव जावे ॥ कुमति ते मन ज्ञावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाए ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रज्नु नाम जपंता, लहिये कोमि कव्याण ॥ मनह मनोरथ सगला सीऊै, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ ज्नयहर ज्नगवंताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ ॥ १ट ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउसग्ग पारी पठी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ ऋषज्नदेवे नमुं गुण निर्मला, डुधमांहे जिम ज्नेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठै, ज्नवर मुऊने चित्त रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पमिमा प्रणमुं नित ऊगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ ज्नविक देह सदा पावन करे, डुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्नासनकारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्नुताये दीपता, डुरित डुष्टतणा ज्नय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांज्नले ॥ पठी सर्व जणा काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥ पठी बेसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पठी सर्व जण मुखथकी आवी रीते कहे–श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीकायनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेंद्रायनमः ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३ श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनमः १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये छिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलडी रायणतरूतले, साहेलडियां ॥ पीलडा प्रभुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइयें, सा० ॥ एहीज मुग ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतडी छायाये बैसीये, सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे भवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अभंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ भव२ तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाछे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने उछाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु भाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होला० कामें० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करुं, हो लाल के ॥ सेव०॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंखलंछन गुणखाण के अंजन वान है हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परण्या विणुअ है हो० प० ॥ १ ॥ तूंहीज जीवनप्राण के आतमराम है हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम है हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो० नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरे हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह उदास एसी धरे हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्ले अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धोर महाव्रत उच्चरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमभार पहोंचाड्यी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुण्या हो० ते वि० ॥ राजामतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥ तुह्ले तो दीधा छेह के नेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिउ मुझ शिर हाथ होवे जेम संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नहीं हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोड्यो दोड्यो सही हो० घो० ॥६॥ सबला साथे प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ किण लागी जे थोड्यी किहां जाश्ये वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते भीडः न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि प्यारे होए तो कर्मन मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीनें कीजीये होला० म० ॥

॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइये ॥ ए चाल ॥

॥ आवो आवोनें राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइये ॥ श्रीजिनवरनी भक्ति करीनें, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसमवर, कंठे टोम्हर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखो, दुःख दो हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २॥ सिद्धाचल श्रीऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरिये॥ अे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्तधरिये ॥ आ० ३ ॥ मंरूप मंरूप विविधि कोरणी, निरखो हियरूै ठरियै ॥ श्रीजिनवरना विंव निहाली, नरभव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥ अचिलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभकरम सव हरिये ॥ पाश शां ति निरखी जव नयणें, मन मोह्यो रुंगरोयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे चढतां उजम बाधे, जेम घोरूे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के शर, पापपरूल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुनें ध्या तां, मनमांहे नवि रूरिये, ज्ञानविमल कहै प्रभु सुपशायें, सकल संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु ष्पक नामें विमाने वैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १॥ श्रीजिन पूजियें लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजै ॥ हीयरूै हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ (आं कणी) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन वैठा ॥ च उदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरब दिशि दोय जिण ॥ श्री० २

॥ संजव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वेगा सिंहतणे आकारै, जिनहर जरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत थापीनें, जग जशवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत वजावै ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥ श्री० ५ ॥ जक्तिजावें एम नाटक करतां, तूटी तंत विचालै ॥ सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥ द्रव्य जावशुं जक्ति न खंमी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीनें, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें जविजन जे जिन आगें, बहुपरे जावनाजावें ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि जेटीये रे, मेटवा जवना पास ॥ आतमसुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ जवियां सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ जवि० से० १ ॥ (आंकणी) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शिव वस्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज० से० २ ॥ सिद्धक्षेत्र मांहे वस्या रे, जाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूपमां रे, दोय नय अनुजीना सार रे ॥ ज० से० ३ ॥ आगमवचन विचारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ ज० से० ४ ॥ जयरयरायतणी परे, जात्रा करो मनरंग ॥ जवदुःखने देइ अंजली रे, थयें सिद्धवधूनो संग रे ॥ ज० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ जवहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज० से० ६ ॥ जेह समें समकित थयो रे, तेह समये दोय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु भाखियो रे, आवश्यकभाष्यनी वाण रे ॥ भ० से० ॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोछव कीजै जी ॥ ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण पूरव पुन्यें, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय करीनें, जिन चोवीश पूजीजै जी ॥ वडाकल्पनो छठ करीनें, वीरवखाण सुणीजै जी ॥ पडवानें दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहियें, जो शुभ भावे रहियें जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कल्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, ऋषभ चरित्र सुणीजैजो ॥ ३ ॥ बारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पडिकमियें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जो ॥ पारणानें दिन सामीवच्छल, कीजै अधिक वडाई जी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू भली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोरणथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पदमणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीयांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो पीउ ॥ प्रीतम विन दिव माहरो हो लाल, धीरज न धरे जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो दुख देण ॥

सो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पडे हो लाल, प्रीत संग पोढे नारी ॥ प्रीतम वि ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो लाल, पाश नही भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चाहणी रे ला ल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनें बालम विना रे लाल, रोवत जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोम लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछै मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, झनमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झमला- इ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण विहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ कालो कालाहण मिलो हो लाल, भाद्रवै वर खंत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसू झरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछो साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती हठ गती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ सेंहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतनी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद भणी यो करे दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगै, हांरे जिन आगे रे जिन आगै, हांरे ए तो अविचल सुखड़ा मागै, हांरे नाभीनंदन पाश ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हांरे दोय चरणे झांझर झमकै ॥ हांरे सोवनना घूघरी घमके, हांरे लेती फूदड़ी वाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशली डफ वीणा, हांरे रूड़ा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां, हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरव पून्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हूं तुं तारो, हांरे भवोभवना डुखड़ा वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखिश्च करजो, हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणीरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुभमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरीपुरहुंती हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसती तो सिणगास्या हो नेमीसर साहिब थे भला, घोड़लांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाड़ो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी [illegible] रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊभो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

यो, ए पशु बांध्या छै किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे छै महाराज ॥ ५ ॥ थोड़ा तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब छोडिया, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब छोडने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमन्नार ॥ ७ ॥ राजुल तो झूरे हो नेमीसर साहिब एकली, जल विन मछली जेम ॥ नव न्नवारी हो नेमीसर साहिब छोडनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समझावे हो राजुल दुःख मत करो, एतो कालो छै न्नरतार ॥ पाछो तो राजुल न्नाखैं हो सहेली मारी थे सुणो, इण न्नव ए न्नरतार ॥ ए ॥ राजुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परिवार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पाछै नीकल्या, एकली रही छै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अतिघणा, न्नीज्या छै सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति न्नली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना झणकार ॥ झणका तो सुणिया हो रहनेमी बैठे ध्यानमें, खोली छै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी बैठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मांनै छोडी छै नेमन्नरतार ॥ १३ ॥ न्नोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांडनो, उलटी करे नांखै तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पावो नही न्नखै, न्नखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, हुं वडी न्नाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम माहरे ऊपरां, तो पड़स्यो थे नरक मझार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपड़ा तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती है प्रभु दरबार ॥ १६॥ राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीयो संजमभार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती है मुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आगलै, मिलिया है मुगति मझार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रभूजी॥ अविचल थानक मैं सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रभूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया आतम काज प्रभूजी ॥ छूटा संसारना दुख थकी, रहवानो किहां ठाम प्रभूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे, तेहना बार नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाडी विचै, छेहे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजलो हार मोतीतणा, गोदुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली अतिघणी, उलटो छत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दीपती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसु जाई अड्या, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम॥ वैरी नहीं मित्रो नहीं, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ७ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गो- तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥ शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥ ॥शि० १०॥गाम नगर ए को नहीं, वसती नही उजाम हो गोतम॥ काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि० ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वमाई वास हो गोतम ॥ शि० १२ ॥ अनंता सुखमें झिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित है, केवलदर्शन खास हो गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवे उदाश हो गोतम ॥ शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥ शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि० १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहि वमेरो॥१॥ नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धि समृद्धि अलकानें जीपे ॥ राजा समुद्र विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥ नंदनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणासुं घाले हे बाथो ॥ आणंद घणें वसंत आयो, कुली बत्तीसें फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा सारू चलिया गोपालो ॥ मफ चंग वाजे रमे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतत्नामा, बीजाइी गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेमनाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥ राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई, जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुंगलने भेरी सखरी सफाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुदके करनाला, गोरीजी गावे गीत रसाला ॥ रथ बहलै बाजै घूघरमाला, मदझरता मेंगल झाकझमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ताम्रे राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग भराई ॥ सीस फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भाले टीकोजी सोहै, अणियाली आंख्यां काजल मोहै ॥ काने झंकोटा जम्रावकेरा, नकवेसर मोती झलके झलेरा ॥९॥ दाडिमकुलियां दांत बत्तीसे, बदनी बोलै सार बत्तीसै ॥ झुलरी तिलरी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूड़े नें गहणें जाइ न वखाणी, रूपेकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ झांझरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपे सुंदर हालंती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गरकाव कीधी ॥ फाबंते कपड़ै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां तिण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोडजी ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागे मिलिया वै जानी ॥ १४ ॥ दुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही जानी भूपति भलेरा ॥ धको मारे तो मेरु धूजावै, जातां कालनें झाल पछाड़ै ॥ १५ ॥ तिहां माहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता सुरपतिसुं जोर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ रुंधाया, अण-

परणया नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग२ संसार मायाजंजालो, जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥ प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित नमूं ॥ धुर रे तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपाध्याय मन आणियै ॥ (उल्लालो) आणियै निज मन भाव सुद्धे, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कच्छदेसै रे विजयसेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणे रे एहवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लालो) मन कियो एहवो तेण निश्चै पख अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टालस्युं ॥ इकअवै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्मजोगे रे मांहोमांहे विहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुउ विवाह सुहामणो ॥ तव विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुता पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संभरी ॥ मुझ शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पालो शुक्ल पक्ष हुं भोग भोगविस्युं पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इ- नांभल रे वि-

जया मन विलखी थई, पिउ पूछे रे किम चिंता तुझने जई। तव विजया रे कहे शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण निश्चो कियो ॥ (उल्लालो) बालपणेमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं, तो उजय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं। तुह्मे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख जोगवो, कृष्णपक्ष निज नियम पाली अन्निग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तव वलतो रे तसु जरतार कहे इसो, विषयारस रे कालकुटविष छे तिसो ॥ ते ठंमी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां ॥ (उल्लालो) मातपिता जब जाणस्ये तव दिख्य लेस्यां धर दया, इम अन्निग्रह लेईनें ते जावचारित्रिया थया ॥ एकत्र सज्या सयन करतां खड्गधारा व्रत धरे, मन वचन काया करी सूधो शील बेउं आचरे ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥ आणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहे विनयगुण परिवर्यो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु, मुझ घर पारणो, करे मनोरथ तो फले ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहे श्रावक सुणो, एह वात तो नवि मिले ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि सूझतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवे तेतलो ए ॥ ८ ॥ अछे हिवे कछदेश, सेठ विजय वली, विजया जार्या तसु घरे ए ॥ जावयती, ग्रहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ए ॥ जिणदास कहे जगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत छे घणा ए ॥ केवली कहे अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतणा ए ॥१०॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहे जग हूं वडो ए ॥ वेशी ॥ केवलीनें मुख सांजली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कछदेसें ॥

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो, शील शमो नही कोय रे ॥ शीले देव सानिध करै, शीलथी शिव सुख होई रे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजयाभणो, जगतसुं भो-जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥ ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूछे तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥ केवलीने मुख जिम सुएयो, तिम कहे तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ भाय रे ॥ कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती, भोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूओ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥ केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूकी, पालै निर-तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मु गते पहुंता, दंपत्ती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावे, भावे जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहे, पहुंचे भवनें पार ॥१९॥ ॥ कलश ॥ इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें शील पाल्यो निरमलो, ते दंपतीना भाव शुद्धें सदा शुभगुण सांभलो ॥ जिम दुरिय दो-हग दूर जाये सुख आवे बहु परे, वलि सकल मंगल मनह वंछित कुशल नित घर अवतरे ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बेठी राणी कमलावती, ऊभी तो जमे मारग खेद ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतक उपनो मनमें एह ॥ सांभल रे दासी आज नगरमें वद्दो किम थशो ॥ १ ॥ कांतो परधान सखी रूंमीया, कां केइ लूंट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-ऱ्यो धन नीसरयो, गाम्या रह्या छे गामो गाम ॥ सां० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी रूंठिया, ना कोई राजा लूंट्या

गांव ॥ भ्रगूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घणोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भ्रगू जसा तिणें मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इम सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोडी ऋद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोडी कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे ऋद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७॥ ए ऋद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भ्रगूप्रोहित ऋद्धि तज नीसरयो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संकलपियोडो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूछे लेतां नावै थांने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजा इक दिने, छोडीनें काम विशेष ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारे जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंडारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनडो थाय ॥ सांभल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं भापैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी फोजो वाजियो, का कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करडा वचन

र बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी झोलो वाजीयो, ना कोइ
कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण
आई हो नृपाल ॥ सांभल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने
इम कहै, इसभी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवे नही, तूं
बैठी छै घर मांय ॥ सांभल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे
नही, इसमी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोमीने नीसरी, थे
पिण छोमो हो नृपाल ॥ सांभल हो राजा आग्या देवो तो संजम
आदरुं ॥१६॥ रतन जमतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो
फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिने पामुं आणंद ॥ सांभल
हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमनें, आरंभ
धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो
सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मझै,
हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमां-
हे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा भांगा लग रह्या १९ ॥
मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ डुस्मन
तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥
सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोभी मूरख थका, मुरझ
रह्या भोगमांहि ॥ पहिलांने दुखियो देखी चेते नही, लागी राग
द्वेषरी लाय ॥ सांभल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी
पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम
भोग छोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांभल रे प्राणी संप
मथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छे, ते पाम्या छे
आपणे हाथ ॥ कामभोगमें रकत होय रह्या, ते तजदोय सांनाथ ॥
सांभलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा भोग छोमने, द्रव्य भावे
हलका थाय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखो ज्युं भोग जाणज्यो, ए काम वधारे संसार ॥ साप ज्युं मोर थकी मरतो रहे, ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार ॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण२ खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७ ॥ हस्ती ज्युं बंधण तोडनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटे संयम लियां, सुणो कहुं हुं महाराय ॥ सांभल हो रा० सं० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोडीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांभल हो राणी सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडके, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पाले सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमराती परे करे गोचरी, रिपि टाले दोष बयाल ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्यजीवनें उतारे पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव ॥ छएजणा थोडा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० स० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वमो, मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहुको तुमें, कुण छे मुऊ समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधांरी देवल चढे, सीधे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करूं, मुऊ मोटी छे वात ॥ कुण२ दानथकी तिरया, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद मैं दियो, तिणें मुऊनें अभिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हूं वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पमिलान्यो अणगार ललना ॥ कुम्मर सुबाहू सुख लहै, ते तो मुऊ उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलान्यो रुषिराय ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे, दानतणें सुपसाय ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो बोहरी आण ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो, ते पण मुऊ फल जाण ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमीरस वहरावियो, पाम्यो भवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पमिलाभ्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पडूर ललना ॥ दा० ९ ॥ गजभव शशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ
वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में
ऊधरया, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ
पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दा-
न तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आडंबर आठे पहुर, याचकसुं विव-
हार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरै, भोगकरम संसार ॥ जिन
कर नीचो करै, तुझने पड्यो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे द
तूं, मुझ पूठै सह कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं रा
होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन को
दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सह ट
शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करै, शील वड्यो वेराग ॥५
शीलै सर्प न आभडै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरि करी केसर
भय जावैं सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, मैं गो
व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७
॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील क
जग हूं वड्यो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै स
कनें, मैं दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण ज
जाणीयें, वलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद मैं सीझव्या
सुझ, जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिरया बेरखा, श
खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते मैं नवपल्लव
कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदे घर आणी
रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, मैं पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०
४ ॥ चंपाबार उघाडिया, वली चालणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय
सुभद्रा जस थयो, मैं तसु कीधी भीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मा-
रण मांडीओ, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

में कियो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, अ वतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध में करी, वली धरम काज आरंन्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट किया, में अष्टोत्तरसो वारो रे ॥ पांन्डवनारी द्रौपदी, में राखो माम न्झारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजोमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ९ ॥ इत्यादिक में ऊधरचा, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, पहिले मुझ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥

तप बोल्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुझ आगल तुं किसुं, सांभल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या; जगमें मीठा नाद ॥ देहतणी शोभा तजी, तुझमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुझ आदरै, भंजी सहु संसार ॥ आप एक तूं भांजतो, बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा, भांजु भवभय भीम ॥ अरिहंत मुझने आदरै, वरस छम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरै, मुझ लबधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुझ कर फरसै उपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में तारचा ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामसो, देशो मुझ साबास ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण भव ऊधरचो, मूक्यो मुगति मझार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप सरखो जग को नहीं, तप करै कर्मनूं सूर हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूड हो सुंदर ॥ त० २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन माली में ऊधस्यो, ठेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषेणनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अतेउरी, सुख भोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करे, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, लाख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूझव्ये, तिण मुऊ अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार हो सुंदर ॥ त० ८॥ कृष्ण नरेसर आगले, डुक्करकारक एह हो सुंदर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर॥ त० ९॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर॥वृष्टि करी सोवनतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १०॥ इम बलभद्रप्रमुख बहू, तास्या तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ भाव कहे तप तूं किसुं, वेरुधुं करे कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपे, क्षणमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें वाढ्यो सवि देश ॥ अशुभ नियाणो तूं करे, क्षमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियो द्वारिका दाह ॥३॥ दान शील तप सांभलो, म करो कूड गुमान॥ लोक सहूको साख दे, धर्मे भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपूंसक तो त्रिपदें, ये व्याकरणी साख ॥ काम सरे नहि कोइतुं, भाव भणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसं- वति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विध२कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंतता, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तारथा बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥ (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवे अति उजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रश्नचंद ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत- खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुझ परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला- पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुझनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गछनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसभणी रे, दीधी गौतम दिख्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुझ मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी गमव्या रे, आपे मुझ आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतांरे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे रे, देखी पुत्रनी रु.द्धि ॥ मुऊनें मनमांहे धस्यो रे, ततखिण पामी सि.द्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगे रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामे देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रज्ञु पाय पूजन नीसरी रे, डुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां करी रे, पोहती स्वर्ग मऊार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोज्ञा कारमी रे, रूप किसुं अज्ञिमान ॥ ज्ञरत आरीसाज्ञुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढज्ञूति कलानिलो रे, प्र गव्यो ज्ञरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल म- साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज्ञ ऊाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांज्ञल पृथ्वीचंद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में ऊधस्या रे, मूंक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रज्ञु वीरजी रे, मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें सांज्ञलो, दान शील तप ज्ञाव ॥ निंदा छे अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंम ज्ञरा- य ॥ वेढ राऊ वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स- रिखो पापीयो, ज्ञूंमो कोइय न दिठ ॥ वलि चंमाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो, सहुको ज्ञलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको ज्ञाव छे, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें ज्ञला, पण ज्ञाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजता, अधिको आणो रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको न्नाव विशेष ॥ ७ ॥ न्नगवंत इव न्नंजण न्नणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चन विध धर्म न्नणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम न्नणे रे, बेठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो न्नव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, न्नवियण सांन्नलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखै श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति न्नूलो न्नवि न्नर्म रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे छै जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे गसठ समे रे, सांगानेर मझार, पद्मप्रन्नु सुपसान्नले रे, एह न्नणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गच्छ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मुनींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ समयसुंदर वाचक न्नणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ दान शीयल तप न्नावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ न्नणतां गुणतां न्नावसुं रे, रूद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति दान शील तप न्नाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमा नित्य धारो, अरि क्रोधनें मनथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाठ नन्नाही ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंमी भुलां
कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी
समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदीगंग
मुकी गलीमां पमो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ
देव घाले गले रुंमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेछे वामा, केइ
देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ
मांस भक्षी महा विकराला, केइ योगणी भोगिणी भोग मागे,
केइ रुद्रणी छागनो भोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश रा
खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोभना थोकनो पार
नाव्यो, तदा मधनो बिंदुछ मन भाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपए
आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेश चाखे ॥ दीन हीननी भी
ते केम भाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मू
भ्राता भजो मोक्षदाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ १
रत्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं म
राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेछे, सवि धर्म एकत्व भूल
भमेछे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू
रवीरं ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंभखंमं ॥ किहां कोद्रवान
किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु
किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूमवाणी, किहां
रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवभोगी, किहां
इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म
धारी, नमो वीरस्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न
थी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह हामी ॥ १२ ॥ अथिर
सुख संसारनां मन्न माचे, जना मूढनां श्रेष्टसुं इट राचे ॥ तजो
मोह माया हरी दंन रोसो, सजो पुण्य पोसी भजो ते भरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रज्ञु
ाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रज्ञु परमरागी, ज्ञवफेरनी शृंखला मोह
रागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजो वै एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं
सवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें
ह्यो मैं प्रज्ञु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमसठ अक्षर
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सेंमुख वदे, पंच
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरयां संपति
थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल
मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु ज्ञापित सार, सोज्ञवियां मन शुद्धमें,
नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी
श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु
मरने सोवनपुरुपो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारे, पामे ज्ञ
वनो पार ॥ सो ज्ञवियां ज्ञत्ते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥ ५
॥ बांधी वमसाखा छींके बैसी हेठल कुंमहुताश, तस्करने बलि मं
त्र समप्यों श्रावक ऊड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष
धर विष टाले ढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महा
बल व्यंतर दुष्ट विरोध, जेणे नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्र
तिबोध ॥ नवलाख जपंता थावे जिनवर एहवो छे अधिकार ॥
सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध,
परज्ञव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी
अमरापुर पहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी काशी
तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग अधबलतो

ते टाले ॥ संज्ञलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टव्युं उंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थाये धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णभुजंगम थाव्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रजावे हारफूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार, पद पंच सुणंता पांडुपतधर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर जवडुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या संकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम जाखे जगवंत ॥ पूरबदिसि चारैं आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंडरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी ऋद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित्य जपिये नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य जणीजे, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार

वे कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्तै आराधतां ऋद्धिसिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा है ॥ जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख ज्योति झिगामिग झिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप वखाणाहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स थुणंदा है ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आगनिकाढ्या नाग, किया वरूभाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी ऊर्द्धाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अखै कुण तो परखे, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घूघरमाला जाण हेमाला, दंताला ओपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलाली झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी पक्खर सझी लस्कर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खरू रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाड़ उफाड़ दिखाले लक्कड़, वरू फणाधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा है ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोम्री सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥ हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन सुतन महाराज विषय दुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रभु अप्रतिबंध वि- हार कियो तब, रनवन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वम्म असुराणा वली हेराणा, पिठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार विरोध, महा अभिमान धरंदा हे ॥ वादल मतवाली नीली काली, वायु महा वाजिंदा हे ॥ ए ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट, दिवाकर तेज छिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु वाजू गाजंदा हे ॥ गरम्राटा वाटा सुणिया थाटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥ हुआ अकाला धुर वरसाला, वीजलिया पीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी धारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चल्ले जल खाला नदियां नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा हे ॥ ११ ॥ वम्मे पाहाम्मां झंगी झाम्मां, सझाम्मां ढाहंदा हे ॥ सम ढाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ वहु वासर वूठा जाण किरुठा, फूग मन असुरंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, काउ सग्ग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसग्गाइंदी केल करंदी, पाग नांहि मुरंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान धरंदा हे ॥ प्रभु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥ दिवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा- वत्ती देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ इयके देराना वेठ वि

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस तारा, उत्तर ज्यूं उावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब प्रीत सुखंदा हे ॥ इंद्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग झिल कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सूंदर रूप सो हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा हे ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा हे॥ उढण पाटंबर झीणी अंबर, आभूषण झलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूबा हरिया दूबा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कड़ियां सोने जड़ि यां, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां; पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले झांझर ताला ताल कंसाला, पखावज वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला वीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥ वाजे सरणाई सखरी धाई, नगारा रोरंदा हे ॥ १८ ॥ पउमा वै रुट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त ननां, रस भेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न बीता, पा वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिछाण्या, कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्ती आंख्या रत्ती, किती रीस आवंदा हे ॥ रे मुठा धिग चित्त विणठा, क्यूं नांही समझंदा हे ॥ साहिब बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए क्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई रीस भराई, हिकाइ वजरंदा हे ॥ किती बहु गल्लां पड़े दहल्लां, धड़हड़ देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र डराया तब ते आया, पावां आय लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोड़ि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा हे ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुसंदा हे ॥ तें रीस न धरियां किणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किती बहु विनती, निज अपराध खमंदा है ॥ २२ ॥ सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा है ॥ सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा है ॥ सम्मेतशिखर पर चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा है ॥ तेरी कीरती जग ऊपती, पार न को पावंदा है ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखे भेद परखे, गुमानी मोरुंदा है ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा है ॥ तूं दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा है ॥ तूं अल्ला पीर फकीर मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा है ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद अटल्लां, तूंही शेष फरींदा है ॥ तेंही उपाया धंदे लाया, मायामें मुलकंदा है ॥ तूं बूढा वाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा है ॥ तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा है ॥ २५ ॥ बावागो-सांई भेद न पाई, भीरू पच्यां आवंदा है ॥ तूं नारायण जोगपरा-यण, माधव तूंही मुकंदा है ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा देवंदा है ॥ तूं एकां थप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध थापंदा है ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वटंदा हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, कोणे सुर गावंदा है ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेका धुखंदा है ॥ कुंकुम कसतूरी केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा है ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूलाहंदा, टोमर कंठ ठवंदा है ॥ चंपा गुलाबां जरीया गयां, परमल तिहां वासंदा है ॥ कसाबोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फाबंदा है ॥ आभूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंडल कान झिगंदा है ॥ २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा है ॥ तेरी अति जाउं मोजां पाउं, वीनती तूंहि सुणंदा है ॥ २९ ॥ क्या कहूं गत्तां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा है ॥ सिद्धांदा वासा तिदा रहासा, गुरु सेवक विलसंदा है ॥ घग्घर नीसांणी पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला ॥ सुपसाथैं गुरु चढती कला, सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थाये सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर तिसाण घुरै, नर वे दरबार खड़ा पुहरै ॥ जय२ करजोड़ी उचरै, सानिद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम माद्दल नाद धुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुर मंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ तल खल घल खंच्यो आवे, करि स्यांमघटा मेह वरसावै ॥ तिसीयां तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै, प्रवहण भवसायर मझ फरै ॥ बूडंता वाहण जे समरै, ते आपद निश्चेसुं उबरै ॥ ९ ॥ खड़खड़ खड्ग प्रहार वहै, सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खेमकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचा पूरै, श्रीनागपुरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर भय टालै दूरै ॥११॥ वीरमपुर वाने सुधरै, खंभायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पाटै पवरै, जसु कीरति महीमंडल पसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षण आगै, उत्तर गुरु दीपै शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै,

श्रीखरतरगछनी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद गामे, गाईजे कुशल नयर गामै ॥ पूजे जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखे, सेवकजननें सुखिया राखे ॥ समरयां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक न्नाखै ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी डुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, शुतधार रुपालक शीलवती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥ शुन्न मंगल लील विलाश सदा, डुख रोर डुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश बावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न परूं बीजलियां, न्नूत प्रेत न कर सके छलवलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध बाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ बरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेप सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंन्नो दोय खंन्न कियो, पोथी परगट परन्नाव थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सक्रियो, वर नयर उजेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंबन्न वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहरूदे कूखे जनम न्नणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ९ ॥ इग्यार बत्तीसें जनम न्नणूं, इग्यार इगताले दिक्ष गुणूं ॥

युगवर इग्यारे गुणहत्तरे, स्वर्गे वारेसे इग्यारे ॥ १० ॥ जिनवल्लन सूरी पटोधरणं, परन्नाव उदेसर न्नयहरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंन्न सकल श्रीअजमेरे, गढमंमो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल नेरे, दीपे गुरु गाजीखान म्रे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा गे, न्नावठ दालिद्द दूरे न्नागे ॥ म्रे असमालखानके सोन्नागे, गुरु पुर२में कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तिरनवन पूजा जेह करे ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरै, कवि सूरि उदय जिनकीरति करे ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंदिय पायकमल, जग सहू पूरे आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद कुलांवर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंम्ल सवियाणो गाम, धण कण कंचन अति अन्निराम ॥ जिहां वसे जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म, सेतालें सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट, निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ न्नूमंम्ल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रन्नु प्रताप नवि माने सोय, में नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीण पामें वहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपति मिलै ॥ आंधी व्याधी चिंता संताप, ते ढंम्नि नवि मंम्ने व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उच्छंग जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी वांह, निम्ने दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ विसहर

विसनरें विस नरनाद, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राद ॥ प्रजु नामें तें न करै पीम, जाजै जावठ जवजय जीम ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंमित थाय, प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ विम२ जिनसासन ज-द्योत, जिहांअछे जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेट्यो आज, रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-मण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, जदयो पर-मानंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्न गिणियो, जुगपवरागम जो में थुणियो, चंद्रगछ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥१४॥ वार२ एक चित्त जणीजे, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजे, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम२ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर जवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अजिनंदे, रुद्धि समृद्धे सो चिरनंदे, मनवंछित फल मुऊ हुवो ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ दिव अलगा गे तो वेगा आवो, दिव ढील घमीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गच्छ साचो, कोइय न जाणे तुऊने काचो ॥ इण संक टमें आलश म करो, दादा डुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक पमी सदगुरु हमसुं, तो ज्युं कहसो तिण पर खमसुं ॥ दिवणा ह

थे मत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सघ श्रीसंघ आगा लगै, पाछा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले उजवालो, परघल निज छेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाश्रे ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली, जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे सांभलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अनेक हो ॥ थां समरयां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥ सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामांहे बीजली, वली२ ऊबकाय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उछव करतां उच्चमें, मूंझ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, संभ्रमांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ बडनगररे ब्राह्मणें, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या वलै, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सहू डुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥८ ॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, उझेरीमांहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छे ताहरा, कहतां नावे पार हो ॥ भागसंजोगे दादो भेटियो, भरूअडियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥१०॥ हुं हूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो ॥ कनककीरत सुपसाउलै, लाभउदय सुख सिद्ध हो ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु त्राता ॥दा० ॥१॥ दादो परचा जग सगले पूरै, दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥२॥ दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो लोगालां सेहर छाजै, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकड़ घोली, हाथे लेइ सोवन क चोली, पूजो दादाजीनें मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत माहाराजा, दादो राजै खरतर गछ राजा, दादो समरथां सफ्य करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणवा दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं बलिहारी दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजे गुणियन हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ए ॥ दादा महि निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीड़ा डुख हरियै, दादा जि जग जयकमला वरिये ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध क ज्यो, दादा डुसमणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंछित फलज्यो दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥

पुनः गाजै जिनकुशल गणाले सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरे सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ वतरीनितरी छबि गाजे विधर्में थिर थुंभ विराजे हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे पात्री मिल

आवे, दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति वहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ए ॥ अलगांथी रोग गमावे, गुरु पूज्यां वंछित पावै हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजालै, पीडा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजे जग जशना वाजा, राजै खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिव्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सहाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरू ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगट्यो, खरतर गछ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विडारण, दालिद दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन२ साहिब चढते वानें, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना जशना वाजा, गवी गामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमें अरूसठे, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गफालै चरण नमंता, तूठे कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देरावरतें ध्यायोजी ॥ स०
॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥
पंचनदी हम बैठे बेरी, हरीगे चित्त रुरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥
दादा भखभणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥
समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०
॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ भाया भक्तिसूं पूर रहो रे,
दुरिजन सब दुर हरो रे ॥ भा० ॥ मेरे मनमें भक्ति वैरागी, चित्त
परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी भाग्यदशा अब जागी, जीया हो
भा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पुरावो ॥
वलि अक्षत थाल वधावो, जीहा हो भा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत
सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया
हो भा० ॥ ३ ॥ घस केसर भरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम
घोली ॥ गुरु पूज रचो भर झोली, जीया हो भा० ॥ ४ ॥ श्री
जिनहर्ष सूरीसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न कौ
सुभ काजा, जीया हो भा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः
॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं, कु० ॥
कश्मार चंदन कपूर अरगजा, भाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०
१ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करै भवि रुच-
सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो
आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा
पूरे गुरु घणुं हतसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारे ज्ञान वधारे, रूप रंग
देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिधका
री, परतिख परचा पूरे सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा
सुविलासी, सत्यरत्न सुख लही व्रतसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥
॥ राग देवभीचलत ॥ आज करो रे उछाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आछी वेला नें ठ आगो दाव, इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै वध सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ऊन्ना करजोम, कोण करै म्हारा दादाजोनी होम आ० ॥ ४ श्रीखरतर गछपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु गरीवनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उठरंग, सत्यरत्न मन ग्यान उमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग वंगालोघाटो ॥ मैं निरख्या गुरु माहाराज, ठतियां हर्षन्नरी ॥ मैं० ॥ अमल अनंत गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमातमा रे, वं छित दायक स्वाम ॥ ठ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ न्नविजन न्नक्के न्नावसुं रे, ध्यावै न्नर२ थाल ॥ ठ० २ ॥ केशर चंदन कुमकुमारे, न्नरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती रे, पूजै सहियर साथ ॥ ठ० ३ ॥ कुसल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन चंद सूरी पाट ॥ वलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥ ठ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीसरू रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ ठ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रन्नाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाउं गुरुराय चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल घमी सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा, अशुन्न करम सव हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिद्रन्नंजन अरि सव गंजण ॥ प-र२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सरण मही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको ग्रा

शा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी जात करो मेरे सदगुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलभर पीजै ॥ सुरतरु शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥ परमभगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो भरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरथां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवे श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सद्गुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल भेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गम्हाले दीपता, ज्यांरी महिमा महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरयां संकट चूरता, कुशल करण अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गछ अधिकारी हे माय ॥ स० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सझ सिणगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोभावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ विवध्या साजन मेलवे, धनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवे, परघल खलनी ढावे हे माय ॥ स० ६ ॥ गिरधी गेडा वाटमें, समरयां सानिध थावे हे माय ॥ भूख्यां भोजन मेलवे, तसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ पार्श्वी आवे नित नवां,

थान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामठी, गावै गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगले, नवि नित भावना भावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमें, परमानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीसदगुरुजीसें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अरज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सुधकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणकमल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट दुख मेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवे, अतर गुलाब केवमो व्हावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी दुस्मन चूरै ॥ धनर सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ नगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन भलसै ॥ गछपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुझे समझीजे ॥ जगमें सुरतरु सारखो रे, कीरति वारही थांरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटरणं व रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल सूरिंद धणी रे, कहै रामऋद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ चाल भरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गछपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिनमणी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, राजेन्द्र कुल उदयाचले ॥ जिल्हासाह पितेश, जेततिरी अंबर भलै ॥ २ ॥ गछपति चंदमुणिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्रकाशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सर देश, झिगमिग ज्योती जी

झिगमिगे, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचे अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुंदर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ्र थिर थुंभ वीकाण, वालूचर महिमा घणी ॥ कीरतवाग प्रधान, दुखभंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, छांया तुम सुनिझरतणी ॥ साता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर भणी ॥ ७ ॥ पूजे पद गोविंद, चंदशिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसे अमृताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुरुगुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेमिया पार उतारो, तूं वण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता भाइव नीर जलधि ज्युं, यो संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही भर मझ धारो ॥ में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण दास गणपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्ययाशिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु टै कोइ ईसा, अल्ला उमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरजी आये गढ लमदर, तुरतही विघन विमारो ॥ रामवाग पुर गंज रजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी ावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मां

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत उगणीसे अरुताखीश, मेरुत्रयो-
दशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार ति
हारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस
कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद
गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु
आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख
ाज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुझ मन निरमल काज ॥ दे०
२ ॥ गुण रुद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब
निधि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये आज ॥ दे० ३ ॥ गुरु
_ल परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज
थांन पुर२ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर
राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रानरुद्ध
सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥
ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, यो दोलत गुरु
रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटे, दिन२ वधे
सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज
परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधा
रण, नितप्रति हरख उछाह जो ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहु,
गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप भय पड़ियां,
सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमो विरियां संकट पड़ियां,
समरया आवै धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिसियां पाणी,
निरधनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसाता,
जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक थिरता परगल भोजन,
ग२ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदगुरु,
वनिधि वंछित आयजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित पर मपदं,

झिगमिगे, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचे अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुंदर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुन्न थिर थुंन्न वीकाण, वालूचर महिमा घणी ॥ कीरतवाग प्रधान, डुखन्नंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, गांया तुम सुनिझरतणी ॥ दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर न्नणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंड्शिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसे अमृताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुरुगुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेमिया पार उतारो, तूं वण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता न्नाइव नीर जलधि ज्युं, यो संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही न्नर मझ धारो ॥ में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥ न्नक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण दास गसपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु रटे कोइ ईसा, अल्ला उमया प्यारो ॥ मैं ध्याउं जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरजी आये गव तमहर, तुरतही विघन विमारो ॥ रामवाग पुर गंज अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केश्यक गुरुसे लखमी पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ मैं इक सेवा चरणकमलकी, मांगूं

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत उगणीसे अरुतालीश, मेरुत्रयोदशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार तिहारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद गुरु महाराज़ ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुझ मन निरमल काज ॥ दे० २ ॥ गुण ऋद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज़ ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये भाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु तुझ परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुभ थांन पुर२ सोहे, मुलक बीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामऋद्ध सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥ ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधे सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुभ परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधारण, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहु, गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ रोखी दुसमन नृप भय पड़ियां, सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमो विरियां संकट पड़ियां, समरयां आवै धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिसियां पाणी, निरधनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ थानक थिरता परगल भोजन, पग२ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदगुरु, नवनिधि वंछित पायजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित पर सपदं;

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुशलसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजर, देश देशांतर कांइ भमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुथिर थांनक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, कुनि थांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, म्हारा राज दादेरे दरबार ॥ केसर अंबर केवडो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय चंपेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगुलियांनें पांव समावै, आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणांने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थांने ओलगे जी, रंग वणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, मैं मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरया, थांही थांरी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावे, तुरत कटत दुख वेरी ॥ भक्त उधार कहावत जगमें, तादे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं मैं नही ध्याउं, शरण ग्रही मैं तेरी, दूरथकी मैं भेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका मैं हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्रमारजकी वीनती सुणके, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित लाय२, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर, थांभो वज्र विस्तार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नामसें अरूसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः॥ होरी खेलो भविक सदगुरुके संग, नित आनंद उछव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत आनंद पिया संग, गोरी गावत बजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित्त उमंग ॥ हो० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥नेमश्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणांरी पूज रचानी ॥ धूप दीप बलि आगल दोवी, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सदानी ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिके साहिब, वंछत

काज करानी, सदा गुरु मंदिर ललानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनदयालकेसनमुख गावै, पगत मधुर धुन गुण गोरी ॥ स० ॥१॥ केशर घोली भरी रे कचोली, पूजत हे वारीभोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल मच्यो सदगुरुके, अबीर उडावत भरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धन२ भाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकड़ी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरंजण दुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामितदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामऋद्धिसार सुपाठक, वंदत हे दुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रभाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल भरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारो, चिंता दूर निवारो ॥ अबकी विरिया भूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, बड़ा भरोसा भारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः॥ श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, भीडभंजण अति भारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति ॥ पुनः ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलभर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी भांति करूं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरूकी, वेर२ वलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥ जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण भर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंमले गाजे, फरशतां पाप सब भाजे ॥ पूजतां संपदा पावे, अचिंती लछ घर आवे ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु, मुझ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोमनेः जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नें कुमकुमा जी, काई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थांरै घुमटां रे आगल

घूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम
नी जी, काई निरख करे जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थांरी गत्री
ठोमे थापना जी, काई उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा न्हली
गुरु मेरुते जो, कांइ सालूरेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी
ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ वधती गढ वीकाण॥ स० ॥
आंसा पूरण आवजो जी, थेतो देरावरा दीवाण ॥ स० ५ ॥
म्हारी वीनतमी न्हलै मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥
स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०
सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख
तिहां राजै रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी वलिहारी ॥ मनवंछित पूरो
म्हारा, म्हेतो चरण पखालां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन न्हरिय
कचोलो, मांहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु
पाया, पूज्यां सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमनें सोमवारा,
थांरे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजै, दुख
दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां
हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अ
वर न कोई, दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूरेवा
जी सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल
तिहां आवै, जिहां लूणियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान
तार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंद-
न गुण गावे, करजोडी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गच्छपति साहिबा ॥
॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद
महर करीज्यो मुझपर, ज्युं छिंननकूं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटे, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ नरइरियांमे ज्याज भगारी, जिन गुरुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणलेती, पापतिमर हट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण शोजागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर रणकाती, लिये अलो बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृड समीर झणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबार ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ रूद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावे ॥ जात्री आवे जात्र करणकूं, केशर रंग मचावे हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन जरुखर, करे सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अश्वि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ स्तैप माश प्रतिपत् दिन जेव्या, शुक्ल पक्ष शुन वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहे, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उदार हो स० ॥१०॥ सदगुरु धर्मशील परजावे, कुशल होत नित साय ॥ ऋद्धिसारपे मंदिर करीनें, अविचल लील बताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेल्यां आज चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगछना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनम२ जक्ति धरीनें, आवे संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजे विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

ए७

, सऊ शोले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेऊ
ाकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवे चित
ाशाय ॥ श्रीसद्‌गुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ।
० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ।
हारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥
त उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम
लामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ
ाकर सोभागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि
तनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज
क, कुशल सदा सुखकार ॥ रूद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित
हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥
मित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह
वर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर
ल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंडल
महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा
य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥
ही हरखित जयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥
पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौभाग्य सूरी
गछपति हो, खरतर गछ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोठ
दीपता, गुरु गछपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥
ादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ सं
रे वासठे, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अग
ारे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाण
पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोभ
करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु०

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ नगणीसे सतरे समें, गु० पायो देवविमान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऋतुपती, गु० माघमाश सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणें हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम ऋद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ परखद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अजरपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पानथी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर वरसतारे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसायथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिंदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजे ॥ थांरी देशना सुण मन रीझै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमंडल ऊपर छायो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव-

ांधार, वलि भैरव राग मल्हार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥
ंच सबद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर झालर वाजै ॥ सहु
रज्ञा थया धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो,
श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥
सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपे धर्म उपदेश ॥ टालो भव
कोरु कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो
तविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत
ाि ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख
र, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, भर मोतियां थाल वधावै॥
ावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जमाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचं
ूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गछराय हो ॥ श्रीजिनलाभ प
ाधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोभ सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सो
ागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १॥ सुगुरु म्हारा
शना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृ-
वाण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० थे छो अवसर जाण
ो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरथा, सु० विकस्या कमल
लाप हो ॥ राग विभास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप
ो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार
ो ॥ इम बहु विध भूमंडले, सु० वरत्या जयरकार हो ॥ म्हा०
॥ संघ सकल भगते करी, सु० जोवै थांरी वाट हो ॥ नाचे
धारो गछपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ४ ॥ तिण
वसर सिंघासणें, सु० पावधारे उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरे
े, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु भवियण प्रति-

वूझवैं, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु० टाले भयदुख भोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण छत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी क्षमाकल्याण हो ॥ म्हा० ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, भविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरै उरनकूं तारै, शरण तिहारी गहियै ॥ भ० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशैं वहियै ॥ भ० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशैं, लहै भविक सुख कहियै ॥ भ० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गोजन महियै ॥ भ० ॥ वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ भ० ३ ॥ एक असंजम दोय विधि वंधन, त्रिविध दंड परिहरियै ॥ भ० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ भ० ४ ॥ षट् काय रक्षक महाभय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ भ० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ भ० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ भ० ॥ हिरदयकमल नितप्रति राखीजे, आनंद शिवपद लहिय ॥ भ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः भवि तुह्म वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोभत तेज समाज ॥ भविजन वंदो रे भावै गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे, रे सुधरम गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पूरवधर चंग ॥ भ० २ ॥ प्रभव सज्यंभव जगमें परगमा रे, श्रीयशोभद्र मुणिंद ॥ श्रीसंभूतविजय भद्र दुजो रे,

श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हु वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूनले रे, सुरनर नामत शिश भ० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्र उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमा परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगट तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शीस जि श्वर सूरिजी रे, डुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवडं रे, गच्छपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपत रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गच्छपती रे श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गच्छमें थ या रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुवि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री जिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमां परगडा रे, श्रीजिनचंद मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गंभीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भंग पदारथ अति विस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंडी वांवल आदरे रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धार- क आचारज छे घणा रे, पंचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमां को नहीं रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लाव ... पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख ... रे, पातिकनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियडे मेह वरसीयो, सखि आज हुओ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें सौभाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्षांतिगुणे करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छत्तीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरसना भंडार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी परे गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम भलहल भाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साधै जेहनें शोभता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजै तेह त्रिकाल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गच्छ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ सहु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा भरतार रे ॥ जेहनें प्रणमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ बिसतारता, सखि देता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप भावना, बारे भावन सुविशेष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षणमें कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ थाय निज ज्ञान प्रकाश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुभाष रे ॥ सखि० ७ ॥ इति बधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

ुरु संगे, जगतितणे उवरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराय। ाजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी, वविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टाले, ांच महाव्रत सूधा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरे पंच ुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि राजै, इम छत्रीश ुणें गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम ानुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम भंग वादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुभ ेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अभ्यासी, भविजन चितकमल विकासी ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुभ भावे रे ॥ ही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर भरमने चूरे रे ॥ सही० ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै प्राणी रे ॥ ० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः देशना ॥ नणदलचाई चुन्दले जोबन झिल रह्यो ॥ ए ाल ॥ सुणीये सद्गुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥ दगुरु म्हारा, थो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उ स्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी ि ली ए सहियां, च्यासे घ२ चूंप ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजे ाजता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिणंद ॥ स० ॥ तेज झलामल सु ़ ए सहियां, मुखछवि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरु सींच ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधर सहियां, भाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ भगति त प्रावचे ए सहियां, पूरव पुन्यसुथान ॥ सद० ॥ तारण तरण ाहाज ज्युं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगछ महिमा निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥ ऋद्धसारनी नावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदेशना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा न्याजनी पर तारो, गुरु मनभो थे मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु न्याजनी० ॥ अमृत उपम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारश खाणी, श्रुति नय निक्षेप प्रमाणी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर नाखी, गणधर मुनि सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु ज्ञानी गुणवंता, नवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण ऊलकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ नविजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक ज्यूं जलधर हसिया, उपदेशे दुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु धर्म शील सोनागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, ऋद्धसार वचन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥

॥ अथ श्रीखरतर बृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चक्खाण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, उर जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि बराबर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हें तेसेंइ अमावस पूनम ज्ञी चिरंतन पक्षीका दिन हें, यह दोनों दिन धर्मकृत्य क रणेके हें, पारणे उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क्षय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हें, उसमें स अन्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रखा हे, लेकि न् सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जै नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते ...ो चौदश कम हो तो उपवास तथा पक्की प्रतिक्रमण निस्संदे पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क तिथिके वितल्येको न करे, उर जो वेला करे तोहरीछोडेतो दो दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवछरीकी चो कम हो तो पांचमके दिन संवछरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीज ...दन कदापि काले ज्ञी नहि करे, उर जो चोथ दो होय तो पह चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ ज्ञी तिथि दो होयतो पह तिथि माननीय हे, दूसरी लोंकतिथि हे. उसरा यह प्रमाण साठ घडीकी तिथि छोडके उसरी घडी अधघडीकी तिथि मान

बुद्धिमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो उदयतिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि होयतो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अधघडी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? इस प्रश्नका उत्तर–हे भव्य, जो पहले दिन तिज मानी हे, और तीजके दिन चोथ बहुत घडी भुगतेगा, लेकिन् वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घडी अधघडी चोथ होणेसें चोथ मानीजेगा, लेकिन् जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय और अस्त दोनोंमें रहेगी, तबतो एसी संपूर्ण तिथिकों छोडके दुसरी थोडीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही. कार्त्तिक माश वढे तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. फाल्गुण तो बढताही नही, अगर बढेतो दुसरे फाल्गुणमें चोमासा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ चोमासेकी चौदससें पच्चास गुणपच्चासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भाद्रवा आसोज वढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो होयतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससे पच्चास दिन लांघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीकल्पसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ हे, और जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे वढे महीनाका शुक्लपक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूक जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पच्चखाण नहि करे, यह तिथियोका प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध हे, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखते हे ॥ निहिपक्खेपुव्वनिही, क.यथा

॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चरकाण ब पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, ऊर जो चवदस कम होय तो १ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह हे व यह दोनों तिथि बराबर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हें तेसेंइ अमाव पूनम भी चिरंतन पक्षीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य रणेके हें, पारणे उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वख जैन) पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथि गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोका क्ष वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हें, उस स अभि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रक्खा हे, लेकि न् सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते आगमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते जो चौदश कम हो तो उपवास तथा पक्खी प्रतिक्रमण निस्संदे पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क तिथिके विलत्येको न करे, ऊर जो वेला करे तोहरीगेरेतो दोन दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवछरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवछरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले भी नहि करे, ऊर जो चोथ दो होय तो पहली चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ भी तिथि दो होयतो पह तिथि माननीय हे, दूसरी ... वह प्रमा साथ पर्वोकी तिथि छोड़के ...

द्धातमें भी नही हे, पर्युसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-
ी एसा वंधाण नही, अधकी भी करे। तथा आंबिलमें एक
द्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका क
हे इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रह
करणा नहिं चाहिये। तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी
ा करणी प्रमाणीक आचार्योने मना किया हे, कारण इस का
ं प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट
ना दीखरहा हे, तथा श्रावककूं पच्चखाणमें पाणस्सलेणवाका
ठ कहणा युक्त नहीं, यह पाठ साधूका हे, तथा दिनप्रति एक
वाश पचखावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें
रणा रखे, लेकिन् पच्चखाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे।
ा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब विदलकी गिणतीमे
इस द्विदलधान्यकूं गोरस दही छाछके साथ भक्षण नहिं करे,
ा मरण जन्मका सूतक जिस घरमें होय उस घरका आहार
णी साधू वर्जन करे, लेकिन् संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं
ाने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी हे.
नेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके हे जिसमे सरल शुद्धोपयोगी स-
यसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सू
ंके पाठ संयुक्त हे सो अनेकांती बुद्धिवानोने गुरुगमसें देखके
ारणा ॥ यह खरतरगच्छमेसें चोरासी गच्छ भया हे, जिस वास्ते
रतरगच्छमें चोरासी नहिं हे, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के
निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४
निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वे
्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० का शालमें अ-
ाहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उरासी गणवालेकूं श:: उर क्रिया

काके जीता, तब दुर्लभराजाने खरतर विरुद दिया, तबसे कोटिक गछ चंद्रकुल वज्रशालावाले खरतरगछ कहलाणे लगे, लेकिन् यती रत्नविजयजीने खरतरगछकूं संवत् बारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसें हुवा एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोमें लिखा हे, लेकिन अपणे पूर्वाचार्योंके बणाये सम्यक्तसत्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिःके दो शिष्य हुये, बडे जिनचंद्रसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये उर श्रीमाल गोत्र थापा, दूसरे श्रीअभयदेवसूरिः, जिनोने नवांगकी वृत्ति शासनदेवताकी बीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिः, जिनोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिनदत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंसी माहेश्वरी तथा ब्राह्मनोंको श्रावक बणाये, राखेचा लूंणीया पारख, सांवसुखा मालू कोठारी, बोथरा नाहटा, वगेर गोलछा भावक चम्म डुगड़ सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनसें गोत्र स्थापक भणशाली प्रमुखगोत्रोंकूं उसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोके नाम लिखणेसे ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समझ लेणा. एक अठारे जाति रत्नप्रभसूरिजीने उसियामे उसवाल बणाये हे, बाकी प्रायें सर्व उसवाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरिः माहाराज तक खरतरगछके प्रतिबोधक हे, पीछे उसवालवंशी हुये पीछे संवत १५ सें से लेकर आज दिन तक उर२ गछियोने तथा मताव... इनोपर अपणा सिक्का जमाया हे, मूल वंशावली देखो ... दोलत खरतर बृहद्गछकी हे, यह बात हमने बहोत ... तपासके लिखी हे, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री ... हुये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिते ... गच्छि दाणगढ़में पांचसे राजन्यवंशीयोकूं दीक्षा देणे

ते प्रसिद्ध ज्ञई, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधुगुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु ज्ञये, जिनोंके शिष्य पंमित श्रीकुशलनिधानमुनिः ज्ञये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाञ्जचंचरीक उ० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंमली पं। क्षेमचंदमुनिः चि। पेमचंद अमरचंदादि शिष्योंके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोंके उपगारार्थ छपायके प्रसिद्ध करा है.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बमा उपासरा विद्याशाला उ। श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी गणिः ॥